श्री उत्तराध्ययन सूत्र मूळ, भाषान्तर तथा टीका.

छापी प्रसिद्ध करनार—महेता मोहनलाल दामोदर,
राजकोट—काठिआवाड

प्रस्तावना.

घणाखरा धार्मिक संप्रदायोमां अमुक काळ व्यतित थतां एक एवो समय आवी लागे छे के, तेना अनुयायीओनुं स्वधर्मना मूळ उद्देश प्रति दुर्लक्ष्य थाय छे अने तेओ धर्मना मात्र बाह्याचारोनेज वळगी रहे छे, एथी परिणाम ए आवे छे के मनुष्य जीवन उपर धर्मनो जे उमदा असर रहेवी जोइए ते रहेती नथी, आवो समय आवे छे त्यारे केळवायेल वर्ग धर्मना ए पडछायाने तत्व तरीके स्वीकारवा तरफ उदासीनता धारण करे छे, अने अशिक्षित वर्ग जे मार्गे जतो होय ते मार्गे तेने जवा दे छे, एवे वखत सामान्य जन मंडळ धर्मना अमुक आचार अने क्रियाने वळगी रहे छे खरा, परंतु परापूर्वथी चालता आवेला रीवाज अने रूढीने लइनेज तेओ तेम करे छे, जिंदगीना सत्यमार्ग दर्शक भोमिया तरीके, तत्त्वज्ञानने अभावे, धर्मनो तओ उपयोग करी शकता नथी

घणाखरा धर्म अने पंथनी अत्यारे आवी स्थिति जोवामां आवे छे, जैन धर्मनी सांप्रत स्थिति पण ए प्रवाहना वेगने मळती छे, जैन मातापिताने पेटे जन्मेला केटलाक केळवायेला युवानो जडवादना संस्कारोने लइ, स्वधर्मने तत्वने बदले पडछायारूप माने छे, तेओ पोते एम समजे छे अने अन्यने एम समजावे छे के मनुष्य जीवनमां धर्म जेवी संस्थानी कशी जरूर नथी, एटलुंज नहिपण धर्म व्हेमो अने न मानी शकाय एवी कल्पनाओनुं संग्रहस्थान छे अने तेथी ते नुकशानकारक छे, अने आपणने आगळ वधता अटकाववामां ते रुटक समान छे, अर्थात धर्मने तेओ एक दर्दरूप माने छे अने ए दर्दथी मुक्त थवाने पोते प्रयत्न करे छे अने अन्यने प्रयत्नशील थवा उपदेश करे छे.

केळवायेला वर्गने धर्म तरफ आवो अणगमो शाथी उत्पन्न थयो हशे अने ए गेरसमज केम दूर थाय ए प्रश्नो अति महत्वना छे. धर्मने नामे मात्र बाह्याचार पाळनारा अने अमुक अमुक क्रिया करनारा मनुष्योना विचार, वाणी अने कर्ममां परस्पर विरुद्धता मात्र जोइनेज तेओ एम मानवाने उतावळ करे छे के धर्म मनुष्यने उन्नतिना मार्गे चढाववाने अशक्त छे.

बीजुं कारण ए जणाय छे के ऐहिक सुख एज जिंदगीनुं सार्थक मनावा लाग्युं छे अने संसार-विषय-वासनाना तृप्त साधवान तन, मननी तमाम शक्तिओनो उपयोग पण एज मार्गे थतो जणाय छे, स्वधर्मनी अज्ञानता अने पाश्चात्य प्रजाना रीत-रीवाज अने रहेणी करेणीना अनुकरणनु ए परिणाम छे एम कहीए तो खोटुं नथी.

गृह अने शाळामां अपाती केळवणीमांथी धार्मिक शिक्षणनो बहिष्कार अने प्रचलित भाषामां धर्म-पुस्तकोना भाषान्तरोनो अभाव ए पण धर्मनी अवनतिनां अन्य कारणो छे.

ए गेर समज दूर करवाने ज्ञाननो प्रसार एज मात्र एक उपाय छे. जीव-दया याने प्राणी मात्र प्रति भ्रातृभाव उपर रचायेला जैन धर्मनो पायो अति उंडो अने सुदृढ छे. आत्मवत् जगतने जोनार प्राणी समजे छे के सकळ सृष्टि एकज शरीर रूप छे अने तेमा वसता प्राणीओ तेना अवयव रूप छे; अने तेथी तेमाना एकाद अवयवने इजा करता आखा शरीरने व्यथा पहोंचे छे अने तेना परिणाम तमाम अवयवोने भोगववा पडे छे. धर्मनो आवो प्रौढ अने उच्च सिद्धान्त होवा छतां जैन कूळमां जन्मेल तरीके ओळखावनार केटलाकनु वर्त्तन एथी विपरित जोवामां आवे छे तेनुं कारण शु? कारण मानी लीधेलो स्वार्थ अने अज्ञानता. आपणे हाथे थती प्रत्येक भूल, अपराध अने पापनुं मूळ तपासीशु तो स्वार्थ सिवाय बीजुं भाग्येज हशे. अने ए स्वार्थ बुद्धिनु उत्पति स्थान अज्ञानताज छे. तेटलाज माटे जैनधर्मनां पुस्तकोमा फरमाव्यु छे के प्रथम ज्ञान अने पछी दया. उंडो विचार करी जोवाथी जणाशे के अन्यना भोगे पोतानो स्वार्थ साधनार अज्ञानी पामर प्राणीज हशे. अर्थात ते स्वार्थ-परायण छे कारण के ते अज्ञान छे.

विचार ए एक प्रबळ शक्ति छे. वाणी अने कर्म एतो मात्र विचार वृक्षनी शाखाओ छे. प्राणी मात्र तरफ प्रेमभावना विचार वृक्षने प्रेमना, अने द्वेषभावना विचार वृक्षने द्वेषना फळ लागे ए कुदरतना निर्विकल्प नियम छे. तेटला माटे काम, क्रोध, लोभ, मोह मदादिने विचारमा पण स्थान आपवु ए केवळ अज्ञानी मनुष्यनु काम छे पशु पक्षीओ तरफ दर्शावेलो प्रेमभाव पण व्यर्थ नथी जतो, तो पछी मनुष्य तरफनो ए भाव निरर्थक नज जाय ए वात स्वतः- सिद्ध छे अने सुख अने शान्तिनो एज साचो मार्ग छे अने जैन धर्मनी पण एज प्ररूपणा छे.

आवा आवा विचारोने लइने ज्ञानना प्रसार अर्थे सूत्रना भाषान्तर करवानुं कार्य हाथ धर्युं छे. श्री उत्तराध्ययन सूत्र मूळ सूत्रोमा प्रथम पद भोगवे छे तेनो उद्देश दाखला दलीलोथी कर्त्तव्यनुं ज्ञान आपवानो, संसारना भय अने लालचोथी चेतववाने अने जैन धर्मना मुख्य सिद्धान्तो समजाववाना छे. तेमां अन्य मत मतान्तरोनु स्पष्टीकरण अने खंडन पण काइ कोइ स्थळे करेलु छे. जीव दया उपर रचायेला जैन धर्मनो प्रथम अने मुख्य हेतु जीव-अजीवना भेद समजाववानो होवो जोइए अने तेथी छेल्ला एटले छत्रीसमा अध्ययनमा जीव-अजीवना भेदनु वर्णन विस्तार अने स्पष्टताथी करवामा आवेलु छे

समर्थ विद्वानोए पोताना अपूर्व ज्ञान अने व्होळा अनुभवने परिणामे निष्पक्षपात बुद्धिथी, सर्वानुमते एकत्र थइ जे सूत्रो, स्मरण स्थानपरथी आपणा माटे पानांपर लखवा श्रम कर्यो ते सूत्रोनो सुरम्य प्रकाश, शब्दद्वारा प्रदर्शित करवानु काम सहेलुं नथी परमात्मानां वास्तव स्वरुपनी झांखी निर्दोष शब्दो अने रसात्मक वाक्यो वडे सूत्रोमा घणी सरळताथी करावावामां आवी छे ए चमत्कृति मात्र अनुभव गम्यज छे. शब्दोथी तेनुं संपूर्ण वर्णन कोइथी कदि थइ शकेज नहि तेमांथी ज्ञानामृतना कीरणो स्फुरे छे– बोधामृतना झरा तेमांथी उछळे छे वाचता के सांभळताज अलौकिक अमर उत्पन्न थवा मांडे छे फील्सुफीना संगीन तत्वोथी ते भरपुर छे. तेनो 'दिव्यनाद' श्रवण करवा अने 'मर्म वाक्यो' समजवानो आपणो प्रयास, ए शुभ भविष्यनु सूचन छे. जैन तत्विकनु जीवन गाळवा माटे, सूत्रो ए कीमती कायदाओ छे. जे महाप्रभुना एक अक्षर मात्रथी अनेक अमूल्य शिक्षाओना प्रवाह छुटे छे, तेवी शिखामणोना संग्रह-भंडार रुप आवा उपयोगी पुस्तकोनु ज्ञान स्वधर्मी बन्धुओमा प्रसारवु, ए उत्तम सत्र भक्ति छे– ए उत्तम अमूल्य प्रभावना छे– ज्ञानावर्णीय कर्मनो क्षय करवानी ए अचुक औषधी छे.

वर्तमान जैन शासन प्रवर्तक महाप्रभु श्री महावीर स्वामी–चरम तीर्थकरनी चरम प्रासादि रुप श्री उत्तराध्ययन सूत्र विशेष उपकारी अने विशेष चमत्कारी मनाय छे. आयुष्यना अवशेष छेल्ला बे दिवसो गुजराती आसो वद १४–०)) ने उपवास–छठना व्रतमा श्रीवीरभगवाने ५५ पुण्य फळना अने ५५ पाप फळनां विपाक, ते समये एकठा थयेला विद्वान मुनी, राजा माहाराजाओना

प्रश्नोना उत्तर रुपे फरमाव्या बाद, अनुयायीओनां उपकारार्थे ग्गर *पुज्ये आ सूत्रना ३६ अध्ययनो फरमाववानी कृपा करी. जे पराक्रमी नररत्न पासे, इंद्रभूति प्रमुख चौदहजार मुनि, चदन बाला प्रमुख छत्रीस हजार साधवि, शखजी, शतकजी प्रमुख एक लाख ओगणसाठ हजार श्रावक, मुलसा अने रेवती प्रमुख त्रण लाख ने अढार हजार श्राविका, सातसें केवलज्ञानी, सातसें वैक्रीय लब्धि धारी, तेरसें अवधि ज्ञानी, पाचसें मनः पर्यव ज्ञानी, त्रणसें चौद पूर्वधारी, वीगेरे परिवार हतो; ते प्रभुश्रीना, छेवटना शब्दो केवा असरकारक होय तेनो ख्याल वाचको पोतेज करी शके. एक साधारण ससारी पण, मृत्यु समये पोता पासे गुप्त राखेलुं द्रव्य तथा बाकी रहेलुं ज्ञान पुत्रो वीगेरे ने आपे छे अने साधारण वातो करता अंतनी शिक्षाओ संसारीने पण वधारे उपयोगी अने महत्वनी होय छे, तो परम उपकारी अने सर्व प्राणीओने पोता समान गणनारा प्रभुश्रीना अंतना उद्‌गारो अवर्णनीय, अलौकिक होय तेमा आश्चर्य नथी. आ सूत्र आवा उद्‌गारोना अपूर्व सग्रह रुप छे. ते श्री सघना चारे अंग-साधु-साधवि-श्रावक श्राविकाओने बोधक अने एक सरखुं उपयोगी छे.

पाश्चात्य प्रसिद्ध जैन शास्त्राभ्यासीओ प्रोफेसर जेकोबी, कोल्ब्रूक, बुहलर, लेसन, वेबर, बार्थ, विल्सन वीगेरे जेओ परधर्मी छता, जैन सूत्रोनी स्याद्वाद वाणीपर आटला बधा आग्रहथी ललचाया छे, ते अपूर्व ज्ञान मृतथी आत्माने शान्त करवाना, छता साधने, आपणे जैनो जो आळस करीए तो, पाकी बोरडी नीचे सुता छतां पासेज पडेला बोर माटे अन्यनी मदद मागता, जेवी निर्माल्य अने हास्य जनक दयाजनक स्थितिना भोगतो नहि थइ पडीए, ए वात आपणे खास विचारवी जोइए.

सूत्रोनी भाषा आपणामाना घणा, ते भाषाना खास अभ्यासने अभावे, वाची समजी न शकता होवाथी, तेनो जोइए तेवो लाभ लेवातो नथी अने अमूल्य शीखामणोना भडारथी अज्ञान रहेवु पडे छे. अशुद्ध गुजराती भाषामा आ उपयोगी सूत्रोनी टीकाओ छे. छता सरळ स्वभाषामा तेना भाषातर थवानी जरूरीयात विषे श्री श्वेतांबर कोन्फरन्स अने विद्वान् श्रावको ठराव करीनेज बेसी नहिं

* पट्त्रिंशतम प्रश्न व्याकरणान्य भिधाय च । प्रधान नामाध्ययन जगद्गुरु र भावयत । स्वामिनो मोक्ष समय विज्ञावासन् कपतः ।

रहेता, तेनो अनर्थ तुरतमां थयेलो जोवा इच्छे छे पण सूत्रोना भाषान्तरथी श्रावक वर्ग माहित थाय ए केटलाक शिथिलाचारीने भयरूप लागे छे अने अनेक विघ्नो नाखे छे. वर्तमान समय आवी अडचणो तरफ लक्ष आपे एम नथी.

देरावासी प्रसिद्ध थाउए घणा सूत्रो छपाव्या छे जाणीता जैन बुकसेलर श्रावक भीमसींह माणेके ते परथी केटलाक सूत्रो छपाव्या छे. पण तेमां लखाण क्लिष्ट छे अने भाषा वर्तमान समयने अनुसरती सरल नथी स्थानकवासी विद्वान् डोक्टर जीवराज घेलाभाइ, एल. एम. एन्ड एस. प्रमणे जर्मनीना प्रो. हर्मन जेकोबीनी सलाह लइ श्री दशवैकालिक अने श्री उत्तराध्ययनजी सूत्रोना भाषान्तर प्रसिद्ध करेल छे अने हजी बीजा सूत्रो माटे तेवो स्तुत्य प्रयास चालु राख्यो छे. देरावासी प्रो.रवजी देवराज तथा मोरवीना स्था. जैन स्कोलरोए घणी उपयोगी प्रथम अंग श्री आचारांगजी सूत्रनु भाषान्तर प्रसिद्ध करेल तेनी प्रथमावृत्तिनी तमाम नकलो खलास थतां बीजी आवृत्ति छपाववा पडी आ बधी बीनाथी साबीत थाय छे के अनुयायीओ आ अगत्यता स्वीकारी उत्तेजन आपवा तैयार छे. आवी जागृतिए अमारो उत्साह टकावी राख्यो छे. श्री प्रश्न व्याकरण सूत्रमां पण परम उपकारी भगवान आवा उपयोगी सूत्रोना अर्थो समजी शीखवानु खास फरमान करी गया छे.

उक्त सूत्रनु भाषान्तर करवामां कलकत्ता आवृत्ति अने ते उपर श्री लक्ष्मीवल्लभनी टीका संस्कृतमां करायेली, भाव विजयी अने शान्त वैताली टीकाओ तथा प्रो. हर्मन जेकोबीकृत अंग्रेजी भाषान्तर उपर खास आधार राखवामां आवेलो छे. ए बन्नेनी वच्चे ज्या ज्या गाथा अथवा अर्थमां तफावत जणायो त्या त्या विद्वान साधु मुनिराजनी अने अन्य आवृत्तिओनो आशय लइ शक्ति अनुसार स्पष्टीकरण कर्यु छे, अने पृष्ठने तळीये ते सबंधे खुलासो कर्यो छे. उपरात अल्पज्ञान ने अवकाश मळ्यो त्या सुधी पुस्तकोमा समज आपेली छे मूळ पाठ तमाम प्रतोनो मळतो नथी. ह्रस्व दीर्घ दोष थवाना आ सबळ कारणो छे. शा. १५१२ नी साळवानी प्रत तथा बीजी हस्त लीखित प्रतो साथे मूळ पाठ मेळववा प्रयास कर्यो छे छता अमने भीति छे के आ पुस्तक ते दोषथी मुक्त रही शक्यु नथी.

जैन आगमोनी मूळ संख्या ८४नी हती. तेमाथी हाल ३२ आपणी मान्यता मुजब विद्यमान छे, एम कहेवाय छे. राज्य बदला, उत्तेजननो अभाव, पुस्तकोने भंडार दाखल करी उधाइने खवडावी देवानी कुटेव, अने प्राकृत भाषाज्ञ पंडितोनी गेरहाजरी वगेरे कारणोने लइने संख्याबंध आगमो लय पाम्यां छे. प्राचीन काळमां छापवानी कळानो शोध नहोतो थयो ते वखते नाश थवाना भयथी धर्म-पुस्तकोने भंडारमां साचवी राखवानुं धोरण सकारण गणी शकाय, परंतु सांप्रत समये तेम करवानी जरुर नथी. जुदा जुदा भंडारमाथी अकेक ग्रंथनी जुदी जुदी प्रतो मेळवी, संशोधन करावी, प्रचलित भाषामा तेनां भाषान्तरो करावी, तेनो प्रसार करवानी खास जरुर छे; अने कोन्फरन्स अने अन्य मंडळोनी ए पवित्र फरज छे. तेम थशे त्यारे अने त्यारेज जैन धर्मना उत्तम सिद्धान्तो अने अप्रतिम तत्त्वज्ञाननो प्रकाश जगतमा फेलाशे अने अनेक जीवोनी उन्नतिनो मार्ग खुल्लो थशे.

अमे अंतःकरण पूर्वक मानीए छीए अने जाहेर करीए छीए के आ सूत्रनुं भाषान्तर प्राकृत भाषानुं ज्ञान धरावनार अने धर्मना सिद्धान्तोनो विशाळ अनुभव धरावना। कोइ विद्वानने हाथे थयुं होत तो वधारे सारुं परतु ए आशामा काळ व्यतीत करवा करता गजा विनापण अल्प शक्ति, अल्प ज्ञान अने अल्प अनुभवना आधारे आ साहस उठाव्यु छे, तेमा जे जे दोष दृष्टिए आवे तेने माटे अमे क्षमा याचीए छीए. निर्दोष एको हरिः ।

भाषान्तर करवामा शब्दार्थ करता वाक्यार्थ उपर खास लक्ष्य आप्युं छे, कारणके सूत्रनां फरमान अने भावार्थ सरळताथी समजाय अने वर्त्तनमा तेनो सदुपयोग थाय एज अमारो उद्देश छे. ए उद्देश केटला अंशे पार पड्यो छे ए निर्णय करवानुं काम वाचक वर्गनु छे, अमारु नथी. गुचवाडा भरेली भाषामा न गुंचवाता, सरळ अने समजाय तेवी भाषा वापरवानी खास काळजी राखी छे.

आ सूत्रना पहेला त्रीश अध्ययननु भाषान्तर आजथी पाच वर्ष पहेलां तैयार करवामा आव्युं हतुं. त्यारपछी व्यवसाय, विपत्ति

अने शक्तिना शंकाशीलपणाने लीधे ए कार्य पडतु मूकवामा आव्युं हतुं. परतु केटलाक विद्वान सन्मित्रोनां आभिप्राय अने सलाहथी उत्तेजित थइने ए कार्य पुरु करवाने अमे शक्तिमान थया छीए, तेने अमे श्री वीर प्रभुना अनुग्रहनुंज फळ मानीए छीए.

स्त्री पुरुष, आबालवृद्ध वगेरे सौ कोइ तेनो एक सरखी रीते लाभ लइ शके ए उमदा उद्देशथी ते चखतना देश काळने अनुसरीने जेम सूत्रों सस्कृतने वदले प्राकृत भाषामा लखाया हता तेज धोरणे हालनो देश काळ ध्यानमा लइ सरळ गूजराती भाषामा तेनु भाषान्तर करवाने अमे प्रेराया छीए, अने तेनो लाभ गूजराती भाषा जाणनार सौ कोइ ले एज अमारी इच्छा एज अमारी उमेद अने एज अमारी प्रार्थना छे.

भाषान्तर बीजी प्रतो साथे मेळवी, सुधारो वधारो करवामा शंका लागे त्यां विद्वान् मुनीराजोनी सलाह लेवामां, अने अवकाश मळ्यो त्यां सुधी फुटनोटो लखवामां, मारा वनित शिष्य झवेरी दुर्लभजी त्रीभुवनदास मोरवीवाळाए मने सारी मदद करी छे. आ स्तुत्य श्रम वाचको प्रत्यक्ष जोइ शकशे. ए उपयोगी सहायतानु स्मरण आ पवित्र पुस्तक साथे जळवाइ रहेशे. आवी धार्मिक उन्नति अने दलालीना कार्यो माटे, आ भाइ विशेष उत्साही वनी रहे ए मारी अतःकरणनी आशीश छे.

आ पुस्तकनी प्रसिद्धि, राजकोट प्रिन्टिंग प्रेसना स्वधर्मी मालिक भाइ मोहनलाल दामोदरना उत्साह ने आभारी छे. जेणे साहस करी, श्रावकोना उत्तेजननी आशा उपर आ काम माथे लइ यत्ना पूर्वक छापी, एक उपयोगी पुस्तक श्री संघनी सेवामां रजु कर्युं छे.

वीर संवत २४३९.
भाद्रपद शुदि ५.

भवदीय
नागरदास मूळजी ध्रुव,
भाषान्तर कर्त्ता.

ग्रन्थ मळवाना ठेकाणा :—

राजकोट—प्रसिद्ध कर्त्ता मेहता मोहनलाल दामोदर.

अमदावाद—शा. बालाभाइ छगनलाल, ठे:—फीका भटनी पोळ.

„ —शा. जीभोवनदास रुगनाथदास, ठे:—आका शेठ कुवानी पोळ

मोरबी—सजरी अमेचद वृजपाळ, जेन लाइब्रेरीना सेक्रेटरी.

मेहता मोहनलाल दामोदरे 'श्री राजकोट प्रिन्टिंग प्रेस'मां छापी प्रसिद्ध कर्युं-राजकोट.

॥ ॐ अमिआउसाय नमः ॥

श्री उत्तराध्ययन सूत्र मूळ, भाषान्तर तथा टीका.

अध्ययन १. *विनय

सजोगा विप्प मुक्कस्स अणगारस्स भिक्खूणो । विणय पाउ करिस्सामि आणुपुव्विं सुणेह मे ॥ १ ॥

आणा निद्दे स करे गुरूण मुववाय कारए इगिया गार सपन्ने सेविणीएत्ति वुच्चई ॥ २ ॥

जेणे बाह्य सयोगो[१] (धन, धान्य, पुत्र, कलत्रादि) तथा अभ्यंतर सयोगो [मिथ्यात्व, क्रोध, मान, माया, लोभ वगेरे]नो त्याग करेलो छे, एवा घर रहित साधुनो विनय अनुक्रमे प्रकट करु छु ते सांभळो.[१]. गुरुनी आज्ञा प्रमाण करनार, गुरुनी वृत्ति अने चेष्टा[२]ना जाणपणा सहित, गुरुनी दृष्टि अने वचनने विषे रहेला कार्यने करनार शिष्य विनित कहेवाय. [२].

---

* विनयथी मोक्ष मार्ग सधाय छे, जैन धर्म, विनय मूळ छेः—वीगेरे कारणोथी विनयने अत्र प्राधान्य आपेल छे. अन्य सूत्रोमां पण विनयने अधिक अगत्य आपवामां आवी छे. " विणओसासणेमूलं, विणओ निव्वाणसाहगो, विणयाओविप्पमुक्कस्स कओधम्मोकओतवो. विणयाओनाण नाणाओदसणचरणेहिं " वीगेरे घणा प्रमाणो अनुमोदन माटे मळी शके छे. १. सयोगनो खुल्लो अर्थ परिग्रह छे २. प्रोफेसर हर्मन जेकोबी आ गाथानो अर्थ करेछे केः— 'A monk who, on receiving an order from his superior, walks upto him, watching his nods and motions, is called well-behaved"

आणा निद्दे स करे गुरूग मणुववाय कारए। पडिणीए असंबुद्धे अविणीए ति वुच्चइ ॥३॥ जहा सुणी पुइ कन्नी निक्कसिज्जई सव्वसो । एव दुस्सील पडिणीए मुहरी निक्कसिज्जई ॥४॥ कण कुंडग चइत्ताण विठ भुजइ सूयरे । एव सिलं चइत्ताणं दुस्सीले रमई मिए ॥५॥ सुणिया भाव साणस्स सूयरस्स नरस्सय । विणए ठविज्ज अप्पाण इच्छंतो हिय मप्पणो ॥ ६ ॥ तम्हा विणय मेसेज्जा सील पडि लभेज्जओ । बुद्ध पुत्त नियागट्ठी ननिक्कसिज्जई कन्हुइ ॥ ७ ॥

गुरुनी आज्ञा प्रमाणे न वर्ते, गुरुथी दूर बेसी रहे, गुरुना काम न करे, गुरुना प्रत्यनीक वेरी सरखो होय अने तत्वनो अजाण होय ते शिष्य अविनित' कहेवाय. [३]. जेम कोहेला [रुधिर वहेता] कानवाळी कुतरीने ज्यां जाय त्यांथी काढी मूकवामां आवे छे, तेम भूंडा आचारवाळा, गुरुना प्रत्यनीक[2] वेरी सरखा, अने असम्बन्ध भाषि[3] शिष्यने [गच्छथी] काढी मूकवो जोइए. [४]. जेम सूकर [डुक्कर] अन्न कुंड छाडीने विष्टा भोगवे छे, तेम पशु जेवो अविनित शिष्य भला आचार छाडीने भूंडा आचारने विषे प्रवर्ते छे. [५]. श्वान अने सूकरनी साथे अविनित मनुष्यनी सरखामणीनुं आ दृष्टांत सांभळीने, जे कोइ पोताना आत्मानुं हित इच्छतो होय तेणे विनयने विषे दृढ थवुं जोइए. [६]. तेटला माटे तु विनय कर जेथी तु भलो आचार पामीश. मोक्षार्थी[4] बुद्धपुत्र। [विनित शिष्य]ने गच्छादिकथी कोइ काढी मूकतुं नथी [७].

१. अविनित अर्थ समजाववा टीकाकारे कूलवालुनुं दृष्टांत आपेलुं छे. २. पडिणीये=Insubordinate. ३. Talkative =वातोडीओ. ४. 'नियागट्ठी' हमेशां 'मोक्षार्थी'ना भावार्थमां वपराय छे, तेथी प्रोफेसर जकोबी ते माटे Who desires liberation लखे छे, परन्तु अहिं तथा २०मी गाथामां 'नियोग' तेना सामान्य अर्थ "आज्ञा order" मां वपरायो जणाय छे, तेथी 'मोक्षार्थी'ने बदले 'आज्ञार्थी' [He who waits for an order] लइए तो पण बंध बेसतुं थशे. ५. अहिं बुद्ध, आचार्य–गुरुना अर्थमां छे. बुद्ध पुत्र एटले गुरु पुत्र–शिष्य.

निसते सिया मुहरी बुद्दाण अंतिए सया । अठ जुत्ताणि सिक्खेज्जा निरट्ठाणिउ वज्जए ॥ ८ ॥अणुसासिउ न कुप्पिज्जा[1] खतिं सेविज्ज[2] पडिए । खुड्डेहिं सह संसग्गिं हासं कीडच वज्जए ॥९॥ माय चडालिय कासी बहुय माय आलवे। कालेण य अहिज्जित्ता तओ झाइज्ज एगगओ[3] ॥१०॥ आहच्च चडालिय कट्टु ननिन्हविज्ज कयाइवि । कड कडित्ति भासिज्जा अकड नोकडित्तिय ॥ ११ ॥

१ पाठांतरे 'कुप्पेज्जा' छे. २. केटलीक प्रतोमां 'सेवज्ज' छे. ३. केटलीक प्रतोमा 'एकओ' छे.

आचार्यनी समीपे सदा शान्त (क्रोध रहित) थवु; वाचाळ थवु नहि, सिद्धान्त वाक्यो (ज्ञान तत्व)नुं ज्ञान मेळववु अने *निरर्थक शास्त्र [स्त्री लक्षणादि दर्शक कोकशास्त्र, ज्योतिष, वैद्यक वगेरे]नो त्याग करवो (८) [सूत्रार्थ शीखवता गुरु] कठण वचने शिखामण दे त्यारे डाह्या शिष्ये कोप न करवो पण क्षमा राखवी. क्षुद्र मनुष्यनी साथे संसर्ग, हास्य, क्रीडा वगेरे त्यागवु. (९). नीच-कर्म अने मिथ्या भाषण करवु नहि, पण सिद्धान्त भणीने एकान्तमां धर्म ध्यान करवुं [१०]. कदाचित (क्रोधने लीधे) काइ दुष्कृत्य थइ जाय तो ते छुपाववु नहि, पण जो कर्यु होय तो एम कहेवु के 'में ते कर्यु छे'; न कर्यु होय तो एम कहेवु के 'में ते कर्यु नथी. [११].

* संसार त्यागी साधुओने संयम मार्गमा बाध करनारा होवाथी, तेमने ते तद्दन [Worthless] निरर्थक छे, त्यागवा योग्य छे. १ बालक तथा पासत्थादिक–प्रोफेसर हर्मन जेकोबी ते आखी गाथानो एवो अर्थ करे छे के :—"When reprimanded, a wise man should not be angry, but he should be of a forbearing mood, he should not associate, laugh, and play with mean man' २. चडालिय–क्रोधादिक–निचकर्म.

आणा निद्दे स करे गुरूण मणुववाय कारए। पडिणीए असंबुद्धे अविणीए ति वुच्चइ ॥३॥ जहा सुणी पूइ कन्नी निक्कसिज्जई सव्वसो । एव दुस्सील पडिणीए मुहरी निक्कसिज्जई ॥४॥ कण कुडग चइत्ताण विठं भुंजइ सूयरे । एव सिलं चइत्ताणं दुस्सीले रमई मिए ॥५॥ सुणिया भाव साणस्स सूयरस्स नरस्सय । विणए ठविज्ज अप्पाणं इच्छंतो हिय मप्पणो ॥ ६ ॥ तम्हा विणय मेसेज्जा सील पडि लभेज्जओ । बुद्ध पुत्त नियागट्ठी ननिक्कसिज्जई कन्हुइ ॥ ७ ॥

गुरुनी आज्ञा प्रमाणे न वर्ते, गुरुथी दूर बेसी रहे, गुरुना काम न करे, गुरुना प्रत्यनीक वैरी सरखो होय अने तत्वनो अजाण होय ते शिष्य अविनित[1] कहेवाय. [३]. जेम कोहेला [रुधिर वहेता] कानवाळी कुतरीने ज्यां जाय त्यांथी काढी मूकवामां आवे छे, तेम भूंडा आचारवाळा, गुरुना प्रत्यनीक[2] वैरी सरखा, अने असम्बन्ध भाषि[3] शिष्यने [गच्छथी] काढी मूकवो जोइए. [४]. जेम सूकर [डुक्कर] अन्न कुंड छाडीने विष्टा भोगवे छे, तेम पशु जेवो अविनित शिष्य भला आचार छांडीने भूंडा आचारने विषे प्रवर्त्ते छे. [५]. श्वान अने सूकरनी साथे अविनित मनुष्यनी सरखामणीनुं आ दृष्टांत सांभळीने, जे कोइ पोताना आत्मानुं हित इच्छतो होय तेणे विनयने विषे दृढ थवुं जोइए [६]. तेटला माटे तुं विनय कर जेथी तुं भलो आचार पामीश मोक्षार्थी[4] बुद्धपुत्र[5] [विनित शिष्य]ने गच्छादिकथी कोइ काढी मूकतुं नथी [७].

---

१. अविनित अर्थ समजाववा टीकाकारे कूलवालुनुं दृष्टांत आपेलुं छे. २. पडिणीए=Insubordinate ३. Talkative =वातोडीओ. ४. 'नियागट्ठी' हमेशा 'मोक्षार्थी'ना भावार्थमां वपराय छे, तेथी प्रोफेसर जकोबी ते माटे Who desires liberation लखे छे, परन्तु अहिं तथा २०मी गाथामां 'नियोग' तेना सामान्य अर्थ "आज्ञा order" मां वपरायो जणाय छे, तेथी 'मोक्षार्थी'ने बदले 'आज्ञार्थी' [He who waits for an order] लइए तो पण बंध बेसतुं थशे. ५. अहिं बुद्ध, आचार्य–गुरुना अर्थमां छे. बुद्ध पुत्र एटले गुरु पुत्र–शिष्य

निसते सिया मुहरी बुद्धाण अंतिए सया । अठ जुत्ताणि सिक्खेज्जा निरट्ठाणिउ वज्जए ॥ ८ ॥अणुसासिउ न कुप्पिज्जा[1] खंति सेविज्ज[2] पडिए । खुड्डेहिं सहससग्गि हास कीडच वज्जए ॥९॥ माय चडालियं कासी बहुय माय आलवे । कालेणय अहिज्जित्ता तओ झाइज्ज एगओ[3] ॥१०॥ आहच्च चडालियं कट्टु ननिन्हविज्ज कयाइवि । कडं कडित्ति भासिज्जा अकड नोकडित्तिय ॥ ११ ॥

१ पाठांतरे 'कुप्पेज्जा' छे २. केटलीक प्रतोमां 'सेवज्ज' छे. ३. केटलीक प्रतोमां 'एगओ' छे.

आचार्यनी समीपे सदा शान्त (क्रोध रहित) थवुं; वाचाळ थवु नहि, सिद्धान्त वाक्यो (ज्ञान तत्व)नु ज्ञान मेळववुं अने *निरर्थक शास्त्र[स्त्री लक्षणादि दर्शक कोकशास्त्र, ज्योतिष, वैद्यक वगेरे]नो त्याग करवो. (८). [सूत्रार्थ शीखतां गुरु] कठण वचने शिखामण दे त्यारे डाह्या शिष्ये कोप न करवो पण क्षमा राखवी. क्षुद्र मनुष्यनी साथे संसर्ग, हास्य, क्रीडा वगेरे त्यागवु. (९). नीच-कर्म अने मिथ्या भाषण करवु नहि, पण सिद्धान्त भणीने एकान्तमां धर्म ध्यान करवुं. (१०). कदाचित (क्रोधने लीधे) काइ दुष्कृत्य थइ जाय तो ते छुपाववु नहि, पण जो कर्युं होय तो एम कहेवु के 'में ते कर्युं छे'; न कर्यु होय तो एम कहेवु के 'में ते कर्युं नथी [११].

* संसार त्यागी साधुओने संयम मार्गमां बाध करनारा होवाथी, तेमने ते तद्दन [Worthless] निरर्थक छे, त्यागवा योग्य छे. १. बालक तथा पासत्थादिक-प्रोफेसर हर्मन जेकोबी ते आखी गाथानो एवो अर्थ करे छे के :—"When reprimanded, a wise man should not be angry, but he should be of a forbearing mood, he should not associate, laugh, and play with mean man" २. चडालियं-क्रोधादिक-नीचकर्म.

मा गलियस्सेव कस्सं वयण मिच्छेपुणो पुणो । कसव दट्ठु माइन्ने पावग परिवज्जाए ॥ १२ ॥ अणासवा थूलवया कुसीला मिउंपि चंड पकरंति सीसा चित्ताणुया लहु दुक्खो ववेया पसायए तेहु दुरासयंपि ॥ १३ ॥ नापुट्ठो वागरे किंचि पुट्ठोवा नालियं वए । कोहं असच्चं कुविज्जा 'धारिज्जा पियमप्पियं ॥ १४ ॥ अप्पाचेव दमेयव्वो अप्पाहु खलु दुद्दमो । अप्पादंतो सुही होइ अस्सिलोए परत्थय ॥ १५ ॥

१. पाठांतरे 'कुवेज्जा' 'धारेज्जा' छे

अणपळोटायेलो अश्व जेम चाबुकनी राह जुए छे, तेम तेणे गुरुना आदेशनी वारंवार राह जोवी नहिं; पण जातवंत [पळोटायेलो] घोडो जेम चाबुक देखीने श्वारना भावे चाले छे, तेम विनित शिष्य गुरुनी अंग चेष्टा समजीने तेना भावे वर्ते छे अने पाप कर्मने तजे छे. [१२]. गुरुनी आज्ञानो भंग करनार, दुष्ट भाषण करनार अने भूडा आचारवाळो शिष्य, क्रोध रहित गुरुने पण क्रोध उपजावे छे, पण गुरुनी इच्छानुसार वर्तनार अने वगर विलंबे कार्य करनार विनित शिष्य अति क्रोधी[1] गुरुने पण प्रसन्न करी शके छे. [१३]. पूछ्या विना बोलवुं नहि, अने पूछ्या पछी जूठ बोलवुं नहि, क्रोधने [2]निष्फळ करवो अने इष्ट–अनिष्ट वचन सांभळीने ते उपर [3]रागद्वेष करवो नहि. (१४). आत्मदमन कर, कारण के आत्मदमननुं काम अति दोहिलुं छे. आत्मदमनथी आ लोके अने परलोके सुखी थवाय छे.[4] (१५).

१. अहिं टीकाकार चंद्ररुद्राचार्यनी कथा आपेली छे. २-३. टीकाकार आ दर्शाववा कुल पुत्र अने मंत्रवादीनी कथा आपे छे. ४. आ सत्य दर्शाववा टीकाकार पल्लीपती चोर अने सिचानक हाथीना दृष्टांत टांके छे मनुष्य मात्रने मनन अने मुखपाठ करवा लायक आ बे गाथाओ प्रोफेसर जेकोबीना शब्दोमां स्मरीए:–" Subdue your self, for the self is difficult to subdue, if

वरं मे अप्पा दंतो संजमेण तवेणय । माहं परेहिं दम्मंतो बंधणेहिं वहेहिय ॥१६॥ पडिणीयंच बुद्धाणं वाया अदुव कम्मुणा । आवीवा जइवा रहस्से नेवकुज्जा कयाइवि॥१७॥न पक्खओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्ठओ । न जुंजे ऊरुणा ऊरुं सयणे नो पडिस्सुणे ॥१८॥ नेव पल्हत्थियं कुज्जा पक्खपिंडंव संजए । पाए पसारिए वावि न चिट्ठे गुरुणंतिए॥१९॥आयरिएहिं वाहित्तो तुसिणीओ न कयाइवि । पसाय पेही नियागट्ठी उवचिट्ठे गुरुं सया ॥ २० ॥

बीजाओने हाथे रसी (राढवा)थी बधावा करता अने लाकडीना मारथी जीतावा करता [सत्तर भेदे] संयम अने [बार भेदे] तपस्याथी हु ज मारा आत्माने दमु [जितेन्द्रिय थाउं] तो वधारे सारु (१६). वचने करीने अथवा कार्ये करीने जाहेरमां अथवा एकान्तमां *गुरु समीपे शत्रुभाव दर्शाववो नहि. (१७). गुरुनी साथे एक पक्तिए वेसवु नहि, गुरुनी अगाडी तेमज पूठे पण वेसवुं नहि, पोताना साथळे करीने गुरुना साथळने संघट्टो करवो नहि (साथळ घसाय एम अडोअड न वेसवु), अने पथारीमां बेठा बेठा गुरुने उत्तर आपवो नहि. [१८]. सुशिष्ये गुरुनी सामे बन्ने हाथ पगनी पलाठी वाळीने अथवा पग लांबा करीने वेसवु नहि, अथवा तो गुरुनी छेक पासे उभा रहेवु नहि. [१९]. गुरु बोलावे त्यारे अणबोल्या रहेवु नहि, पण मारा उपर गुरुए कृपा करी एम समजवु. मोक्षार्थी सुशिष्ये सदाकाळ गुरुनी विनय पूर्वक सेवा करवी. (२०).

that I should subdue my self by self-control and penance, than be subdued by others with fetters and corporal punishment "सर्व धर्मोमां आ सिद्धान्त प्रतिपादन छे अने पुष्टिने माटे जोइए तेटला प्रमाणो मळी शके एम छे. अत्र विशेष विवेचनने अवकाश नथी.

* 'बुद्धाण' अहि गुरु Superiorsना अर्थमां वपरायेल छे.

आलवंते लवंतेवा ननिसीइज्ज कयाइवि । चइऊण आसणं धीरो जओ जुत्त पडिस्सुणे ॥ २१ ॥ आसणगओ न 'पुच्छिज्जा नेव'सिज्जा ओ कयाइवि । आगमु क्कुडुओ संतो पुछिज्जा पंजली उडो॥ २२ ॥ एव विणय जुत्तस्स सुत्त अ-त्थंच तदुभयं । पुच्छमाणस्स सीसस्स वागरेज्ज जहा सुयं ॥२३॥ मुसं परिहरे भिक्खू नय ओहारिणि वए । भासा दोस परिहरे मायच्च वज्जए सया ॥२४॥ नलविज्ज पुट्ठो सावज्ज ननिट्ठं नमम्मय । अप्पणट्ठा परट्ठावा उभयस्सत रेणवा ॥२५॥

कोइ प्रतमां १. 'पुछेज्जा' 'सेज्जागओ' छे.

गुरु एकवार बोलवे अथवा वारंवार बोलावे, छतां अधीरा थवुं नहि. बुद्धिवंत शिष्ये आसनेथी उठीने, गुरु जे काइ आज्ञा करे, ते ध्यान अने आदर सहित पाळवी. (२१). पोताने आसने या पथारीमा बेठां बेठां (गुरुने) कांइ प्रश्न पूछवो नहि; परतु आसनेथी उठी, गुरु समीपे आवी, बे हाथ जोडीने पूछवुं (२२) उपर प्रमाणे विनय सहित शिष्य सूत्र अथवा सूत्रार्थ अथवा ए बन्ने विषे प्रश्न करे तो गुरुए पोताना गुरु पासथी सांभळ्यो होय तेवो उत्तर आपवो.[२३] साधुए मृषावाद (जूठ्ठं बोलवुं ते) तजवो; तेमज तेणे [भविष्यने माटे] निश्चयात्मक भाषा वापरवी नहि भाषा दोष परिहरवो [त्यागवो], अने दगा [माया]थी सदा दूर रहेवुं [२४]. 'पोताना आत्माने अर्थे अथवा तो बीजाना आत्माने अर्थे अथवा तो विना प्रयोजने साधुए पाप वचन, अर्थ रहित वचन, या तो मार्मिक वचन भाखवुं नहि. (२५).

१. भाषा सुमति संबंधीनी आ गाथाना प्रोफेसर जेकोबीए वापरेला अंग्रेजी शब्दो आ छे." He should not tell anything sinful or meaningless or hurtful, neither for his own sake nor for anybody else's, nor without such a motive."

समेरसु अगारेसु सधीसुय महापहे एगोएगि त्थिए सर्द्धि। नेव चिट्ठे न सलवे॥ २६॥जमे बुद्धाणु सासंति सीएणं फरुसेणवा। ममलाभोत्ति पेहाए पयओत्त पडिसुणे ॥ २७॥ अणुसासण मोवाय दुक्कडस्सय चोयण। हियं तं मन्नइ पन्नोवेम्'होइ असाहुणो ॥२८॥ हियविगय भया बुद्धा फरुसंपि अणुसासण। वेसंत होइ मूढाण खंति सोहि करं पयं ॥२९॥ आसणे उवचिट्ठिज्जा[1] अणुच्चे अकुए थिरे। अप्पुट्ठाइ निरुट्ठाइ निसीइज्ज[1] प्पकुकुए ॥३०॥

१. कोइ मतमा 'चिट्ठेज्जा' 'निसीएज्ज' छे.

*लुहारादिना मकानमां, सूना घरमां, बे घर वचेनी आंतरावाळी जग्यामां (नेळमां) अथवा राज्य मार्ग उपर, एकला साधुए एकली स्त्री सगाते उभा रहेवुं नहि अने तेनी माथे वात करवी नहि [२६] गुरु शीतल वचने अथवा कठोर वचने ज्ञानादि आचार शीखवे तो ए मारा पोताना लाभने अर्थे छे, एम समजी बुद्धिवंत शिष्ये गुरुनी शिक्षा प्रयास साथे प्रमाण करवी [गुरुना कठोर वाक्यो उपर क्रोध करवो नहि] (२७) गुरुनी शीक्षा, ते आपवानी रीत, अने दुष्कृत्यने माटे ठपको, बुद्धिवंत शिष्यने हितकारक लागे छे; पण कुशिष्यने ते द्वेषोत्पादक लागे छे [२८]. तत्वनो जाण अने सप्तभय रहित साधु आचार्यनुं अनुशासन कठोर होय तो पण ते हितकारक समजे छे, पण मूर्ख साधुने गुरुनुं ए शिक्षा वचन क्षमाकर अने आत्म शुद्धि करनारुं होवा छतां द्वेष कारक जणाय छे. (२९). सुशिष्ये नीचा अने निश्चळ आसन उपर बेसवुं अने विना प्रयोजने उठ बेस करवी नहि; तेमज हाथ पग हलाववा नहि [हरफर करवी नहि]. [३०].

* जकोबी 'हजामनी दुकान' लखे छे; टीकाकार 'लुहारादिनु मकान' लखे छे. बन्नेनुं तात्पर्य ए जणाय छे के 'एवा हलका वर्णना मकानमां'.

कालेण निक्खमे भिक्खू कालेणय पडिक्कमे । अकालंच विवज्जित्ता[1] काले काल समायरे ॥३१॥ परिवाडिए न चिट्ठिज्जा भिक्खू दत्तेसणं चरे। पडिरूवेण एसित्ता मियं कालेण भक्खए ॥३२॥ नाइदूर मणासन्ने नन्नेसिं चक्खुफासओ। एगो चिट्ठिज्ज भत्तट्ठा लंघित्ता तं नइक्कमे ॥ ३३ ॥ नाइ उच्चे व नीए वा नासन्ने नाइदूरओ । फासुयं परकडं पिंडं पडिगाहिज्ज[2] संजए ॥ ३४ ॥

१. पाठांतरे 'विवज्जेता' छे. २. पाठांतरे 'पडिगाहेज' छे.

विनित शिष्ये योग्य वखते गोचरीए जवुं अने वखतसर गोचरीथी पाछा फरवुं; अकाळे काइ काम करवुं नहि. समय साचवीने योग्य काळे योग्य क्रिया आचरवी (३१). साधुए जमणवारनी पगत बेठी होय त्यां जवुं नहि, परन्तु पृथक पृथक गोचरी करवी, स्थापित थयेला नियम मुजब शुद्ध आहार व्होरी लाव्या पछी तेमांथी क्षुधा शान्त थाय[1] एटलो भाग बराबर काळे विधि पूर्वक खावो. [३२]. अन्न पाणी आदि व्होरवाने अर्थे तेण ग्रहस्थने घेर साथेना साधुओथी अति दूर अथवा तो छेक नजीकमां उभा रहेवुं नहि. ग्रहस्थनी नजर तेनाज उपर पडे एवी रीते बीजा भिक्षुकनी आडे उभा रहेवुं नहि. अगाउथी आवी उभेला बीजा साधुने उल्घंघीने तेणे आगळ थइ जवुं नहि. (३३). अन्यने अर्थे तैयार करेलो [2]प्रासुक आहार साधुए छेक अक्कडपणे पण नहि तेम बहु नीचा नमीने पण नहि, बहु दूर उभा रहीने नहि तेम छेक नजीक आवीने पण नहि—एवी स्थितिमां वहोरवो. (३४).

१ नियमसर वर्तनार साधुने, शारीरिक मानसिक संपूर्ण सुखाकारी मळे छे ते आवा नियमोनेज आभारी छे. प्रोफेसर जेकोबीना शब्दोमां आपणे ते पुनः याद करीशुः– ' Having begged according to the sanctioned rules, he should eat a moderate portion at the proper time " २ जीव रहित—free from living beings.

अप्पपाणअप्पवीयंमि पडिच्छन्नमि संवुडे। समय संजए भुंजे जय अप्परि साडियं ॥ ३५ ॥ सुकडेत्ति सुपक्कित्ति सुछिन्ने सुहडे मडे। सुनिट्ठिए सुलठ्ठेत्ति सावज्ज वज्जए मुणी ॥३६॥ रमए पडिए सास हय भद्द ववाहए। बाल समइ सासतो गलियरसत्र वाहए ॥ ३७ ॥ खड्डुयामे चवेडामे अक्कोसाय वहाय मे । कल्लाण मणुसासंतो पाव दिठ्ठित्ति मन्नई ॥३८॥ पुत्तो मे भायनाइत्ति साहु कल्लाण मन्नइ। पावदिठ्ठिओ अप्पाण सास दासित्ति मन्नई ॥३९॥

उपरथी अने चोतरफथी ढकायेली जग्योए बेसी, बीजा साधुओ संगाथे, बे इन्द्रियादिक जीव अने बीज रहीत खोराकनो आहार, जयणा अने पोताना आचार विचार प्रमाणे करवो. [३५]. सारी रीते तैयार करेलुं अन्न वगेरे, सारी रीते पकवेल घेवर वगेरे, मसालादार शाक पादडुं अने अथाणुं, स्वादिष्ठ लाडु वगेरे, मीठां अने मसालेदार भोजन साधुए त्यागवा जोइए. (३६). जेम पळोटायेला घोडाने शीखवतां अश्वारने आनंद उपजे छे तेम विनित शिष्यने शिक्षण आपतां गुरुने आनंद उपजे छे, पण अणपळोटायेला अश्वने शीखवता जेम अश्वारने कटाळो उपजे छे तेम अविनित शिष्यने शिक्षण आपता गुरुने खेद उपजे छे. (३७). अविनित शिष्य एम धारे छे के:–'गुरु मने टोंके छे, मारे छे, दुर्वचन कहे छे, दंड दे छे, कोटवाळ जेम बंदीवानने मारे तेम मने मारे छे,' इकामा परम हितकारी शीख देनार आचार्यने ते पाप दृष्टिवाळो [द्वेषी] माने छे. (३८). विनित शिष्य गुरुने पोताना परम हितकारी समजे छे अने माने छे के:–'गुरु मने पोताना पुत्रनी माफक, भाइनी माफक अथवा नजीकना सगानी माफक राखे छे.' पण अविनित शिष्य एम समजे छे के गुरु मने दास जेवो गणे छे.१ [३९].

---

१. प्रोफेसर जेकोबीना शब्दो–" A good pupil has the best opinion (of his teacher), thinking that he treats him like his son or brother or a near relation, but a malevolent pupil imagines himself treated like a slave. "

न कोवए आयरियं अप्पाणंपिनकोवए । बुद्धो वघाइ नसिया नसिया तोत्त गवेसए ॥४०॥ आयरियं कुव्वियं नच्चा-पत्तिएण पसायए । विझविज्ज पजली उडो 'वइज्ज न पुणोत्तिय॥४१॥धम्मज्जियच ववहार बुद्धेहायरिय सया ।तमा यर तो ववहार गरहं नाभिगच्छइ ॥४२॥ मणोगयं वक्क गयं जाणित्ताय रियस्सउ । तं परि गिझ वायाए कम्मुणा उववायए ॥ ४३ ॥ वित्ते अच्चोइए निच्च खिप्प हवइ सुचोइए । जहोवइठ्ठ सुकयं किच्चाइ कुव्वईसया ॥ ४४ ॥ नच्चा नमइ मेहावी लोएकित्ती सेजायए । हवइ किच्चाणं सरणं भू याण जगईजहा ॥४५॥

१. केटलीक प्रतोमां 'वएज्ज' छे.

गुरुने कोपाववा नहि, तेम पोते पण कोप करवो नहि; तेमज आचार्यनां छिद्र खोळीने तेना उपघाति [कृतघ्न] थवुं नहि.१ [४०].आचार्यने कोपेला जोइने, तेमने विश्वास उपजे एवां वचनोथी तेमनो कोपाग्नि शान्त करवो, अने बे हाथ जोडी खमावीने एम कहेवुं के 'फरीथी एवो अपराध हुं नहि करूं.'[४१].बुद्ध पुरुषोए [तत्व ज्ञानीओए]क्षमादिक गुणोए करीने जे साधु धर्म प्राप्त कर्यो छे, अने सदा पाळ्यो छे तेवो आचार पाळवाथी अविनितपणाना दोषथी मुक्त थवाय छे.[४२].मनोगत भावथी अथवा वचनथी गुरुनो अभिप्राय जाणी लइने गुरुनुं कार्य प्रमाण करवुं. वचने करीने कहेवुं के 'हुं ए काम करीश.' अने कायाये करीने ए कार्य संपूर्ण करवुं. [४३]. विनित शिष्य अणप्रेर्यो कार्य करवाने सदा तत्पर रहे छे, अथवा तो गुरुनी सूचना मुजब वगर विलंबे करे छे. गुरुए जे रीते कार्य करवानुं कह्युं होय ते रीते सदा करे छे. (४४). आ विनय शिक्षा जाणीने जे बुद्धिवान साधु *विनय आदरे छे, ते आ लोकमां कीर्ति प्राप्त करे छे, अने एवो विनयवान साधु, पृथ्वी जेम सर्व जीवना आधाररुप छे, तेम सर्व उचित कार्यना आधाररुप थइ पडे छे. (४५).

१. अहिं टीकाकार कुशिष्यनुं दृष्टांत आपे छे. * नमई=नमति=शब्दार्थ Bows down.

पुज्जा जस्स पसीयति संबुद्दा पुव्वसंथुया । पसन्ना लाभइस्संति विउलं अट्ठियं सुयं ॥४६॥ स पुज्जसत्थेसुविणीय ससए मणोरुइ चिट्ठइ कम्मसंपया । तवो समायारिं समाहि संवुडे महज्जुई पंचवयाइपालि या ॥४७॥ सदेव गंधव्व मणुस्स पूइए चइत्तु देह मलपंकपुव्वय । सिद्धेवाहवइ सासए देवेवा अप्परए महिड्ढिएत्तिबेमि ॥४८॥

॥ इति विणयनामा झयण पढम सम्मत्त ॥ १ ॥

तत्वनुं शुद्ध ज्ञान धरावनार अने प्रथमथीज विशुद्ध आचार पाळनार[1] गुरु शिष्योना विनयथी प्रसन्न थइने तेमने विस्तीर्ण अने मोक्ष उत्पादक[2] ज्ञाननो लाभ आपे छे [४६]. एवा सुशिष्यना ज्ञाननी प्रशंसा थशे, तेना संदेह टळशे, ते पोताना सुकृत्योथी गुरुना अंत.करणने आनंद उपजावशे अने दश विध क्रिया [आचार] पाळीने, तप अने समाधीए करीने महाद्युति [महा तपना तेज-वाळा] समान ते साधु महा पंचव्रतनो पाळणार थशे[3]. [४७]. उपरना लक्षणोथी विभूषीत विनयी शिष्य, देव, गंधर्व अने मनुष्यथी पूजाशे अने मळ मूत्रथी भरेली आ देहथी मुक्त थया पछी ते कातो जन्म मरण रहित सिद्ध[4] थशे अथवा तो मोटी रिद्धि अने ओछी अविद्या वाळो देवता उपजशे. [४८] हु आम कहु छु.[5] ॥ प्रथम अध्ययन सपूर्ण ॥

१. पुव्वसथुया=शब्दार्थ=पूर्वे काळथी प्रसिद्ध- Already famous २.अट्ठिय=अर्थिक=मोक्षार्थी=Leading to liberation ३. आ गाथा माटे प्रोफेसर जेकोबी नाचेना शब्दो वापरे छे—" His knowledge will be honoured, his doubts will be removed, he will gladden the heart of his teacher by his good acts, kept in safety by the performance of austerities and by meditation, being as it were a great light, he will keep the five vows " ४ Liberated or perfected soul ५. त्तिबेमि=दरेक अध्ययनने अते आ शब्दो वपराय छे, श्री सुधर्मा स्वामी, श्री जंबु स्वामी प्रत्ये कही सभळावे छे.

दंसण परिसहे २२ परीसहाणं पविभत्ती कासवेणं पवेइया । तंमे उदाहरिस्सामि आणुपुव्विं सुणे हमे ॥१॥ दिगिंछा परिगए देहे तवस्सी भिक्खू थामवं । नछिंदे नछिंदावए न पये नपयावए ॥२॥ काली पव्वंगसंकासे किसे धमणि सतए । मायन्ने असण पाणस्स अदिण मण सोचरे ॥३॥ तओ पुट्ठो पिवासाए दोगुछी लज्ज सजए । सी उदग न सेविज्जा वियडस्से सण चरे ॥४॥ छिन्नावाएसु पथेसु आउरेसु पिवासिए । परिसुक्क मुहादीणे त तितिक्खे परिसहं ॥५॥

---

[२२]. [1]दंसण [दर्शन, सम्यक्त्व] परीसह. ए बावीश परीसहना स्वरुप काश्यपे (श्री महावीर भगवाने) मने (सुधर्मा स्वामीने) कह्या छे ते हवे हुं तमने [जंबु स्वामीने] अनुक्रमे समजावुं छुं. [१].* (१) शरीरने विषे क्षुधा व्यापी होय छता तप अने संयमने विषे दृढ साधुए पोते फळ वगेरे छेदवां नहि, तेमज बीजा पासे छेदाववां नहि. पोते अन्न पकववुं नहि, तेमज बीजा पासे पकाववुं नहि. (२). कागडाना पग जेवां दुर्बळ गात्र थइ गयां होय अने शरीर हाडकाना माळा जेवुं बनी गयु होय, छतां पोताना उदर पोषणने माटे अन्न पाणीनुं प्रमाण साधुए जाणवुं अने [आकुल व्याकुळ न थता] प्रसन्न मनथी संयम मार्ग प्रवर्त्तवुं[2] (३.) (२) तृषाए पीडावा छता अनाचारनो त्यागी साधु लज्जाए करीने सचेत जळ पीतो नथी; पण अचेत पाणी मेळववानो प्रयत्न करे छे (४) वन, अटवी, आदि निर्जन रानमां तृषाथी अति पीडातो होय, म्हों सूकाइ जतुं होय, अत्यंत व्याकुल थतो होय, छतां साधुए तृषानो परीसह सहन करवो.[3] (५).

---

*आ अध्ययननो आ पहेलांनो भाग गद्यमां छे; त्यार पछीनो श्लोकमां छे. प्रत्येक परीसह उपर बब्बे श्लोक छे. १. सूत्रोना मूळ पाठमां 'दंसण' शब्द छ पण प्रो. जेकोबी 'समत्त' शब्द वापरे छे. २. अहिं टीकाकार हस्ति मित्र अने तेना पुत्रनुं दृष्टांत आपे छे. ३. अहिं टीकाकार धन मित्र अने तेना पुत्रनुं दृष्टांत आपे छे.

चरंत विरयं लूह सीयं फुसइ एगया । ना इवेल मुणी गच्छे ¹सुचाणं जिणमासणं ॥६॥ न मे निवारण अत्थि छवित्ताणं नविज्जई । अहतु अग्गि सेवामि इइ भिक्खू नचिंतए ॥७॥ उसिण परिया वेण परिदाहेण तज्जिए । धिंसुवा परितावेण सायं नो परिदेवए ॥८॥ उन्हाहि तत्तो मेहावी सिणाण नोवि पथ्थए । गाय नो परिसिचिज्जा नविएज्जाय अप्पयं ॥ ९ ॥ पुट्ठोय दम मंसएहिं समरेव महामुणी । नागो सगाम सीसेवा सूरो अभि हणे परं ॥ १० ॥

¹. कोइ मतमां 'सोच्चाणं' छे.

३ शीत काळने विषे एक गामथी बीजे गाम जता शरीरे टाढ व्हाय तो पण साधुए, जिन शासननी शिक्षा लक्षमां लइने, कवेळाए स्थानान्तर करवुं नहि. (विहार करवो नहि.) [६]. टाढ दूर करवाने माटे मारे घर नथी, शरीर ढाकवाने वस्त्र पण नथी, माटे हुं अग्नि सेवुं एवो विचार पण साधुए करवो नहि १ (७). (४) तापे करीने तपेली जमीनथी, वाय (परसेवो, मेल वगेरे) अने अभ्यतर [तरस वगेरे] गरमीनी थती पीडाथी, ग्रीष्म रुतुना सूर्यना तापथी पीडावा छतां, साधुए शीतळतानी वाच्छना करवी नहि. [८]. तापनी अत्यत पीडा पामवा छतां मर्यादावंत साधु स्नाननी इच्छा करे नहि, शरीर उपर पाणी रेडे नहि, अथवा पत्तावति पवन नाखे नहि.²[९] [५] डास मच्छरादिनी पीडा महान साधुए सहन करवी जोइए जेवी रीते हाथी संग्रामने मोखरे रहीने शत्रुने हणे छे, तेम महा मुनिए क्रोधादि अभ्यतर शत्रुने हणवा जोइए. (१०).

१. अहिं टीकाकार चार वणिक मित्रोनुं दृष्टांत टांके छे. २. अहिं टीकाकार दत्त अने भद्रनुं दृष्टांत आपे छे.

नसंतसे नवारिज्जा[1] मणंपि नपओसए । उवेह नहणे पाणे भुजंते मंससोणियं ॥११॥ परिजुन्नेहिं वथ्थेहिं । हो-
क्खामित्ति अचेलए । अदुवा सचेलएहोक्ख इइभिक्खू न चिंतए ॥१२॥ एगया अचेलए होइ सचेलयावि एगया।
एयं धम्म हियं नच्चा नाणीनोपरिदेवए ॥१३॥ गामाणुगामरीयंतं अणगारंअकिंचणं । अरई अणुप्पवेसे तातितिक्खे
परिसहं ॥१४॥ अरई पिठ्ठओ किच्चा विरए आय रक्खिए । धम्मारामे निरारंभे उवसंते मुणी चरे ॥ १५ ॥

१. कोइ मतमां ' वारेज्जा छे.

डास, मच्छरने त्रास उपजाववो नहि; चटको भरतां अंतराइ न करवी, तेमज मने करीने पण तेना उपर क्रोध करवो नहि. पोतानुं मांस अने लोही तेओ खाइ जाय, छता सर्व [illegible] पण तेमने हणवा नहि.[1] [११]. [६] ' महारां वस्त्र जीर्ण थइ गया छे, तेथी हुं वस्त्र रहित [illegible]थइश अथवा तो म्हारां फा[illegible] [illegible]पडां जोइने कोइ धर्मात्मा दाता मने नवा कपडां आपे तो ठीक ' एवा विचार साधुए करवा नहि. [१२].कोइ वखत [जिन कल्पावस्था प्रमाणे] वस्त्र रहित थइ जाय, अथवा कोइ वखत [स्थविर कल्पावस्था प्रमाणे] वस्त्र सहित होय, तो वस्त्र रहित अने वस्त्र सहितपणाना बन्ने धर्मो हितकारी जाणीने ज्ञानी साधुए खेद करवो नहि.[2] (१३). (७) परिग्रह रहित अणगारने गामो गाम विचरतां संयम मार्ग तरफ अधीर उत्पन्न थाय तो ते परीसह तेणे सहन करवो. (१४). डाह्या साधुए आवुं अधीरपणुं त्यागवुं, अने हिंसादिकथी दूर रहीने, दुर्गतिना मार्गथी आत्माने दूर राखीने, धर्म रुपी आराममां विषे आनंद मानीने आरंभ रहित थइ, संपूर्ण शान्तिथी संयम मार्गने विषे विचरवुं.[3] (१५).

१. अहिं श्रमण भद्रनुं द्रष्टांत आपेलुं छे. २. अहिं सोम देवनुं द्रष्टांत आपेलुं छे. ३. अहिं अपराजीतनुं द्रष्टांत आपेलुं छे.

उ अ २.

१७

सगो। एस मणुस्साण जाओ लोगंमि इत्थिओ। जस्स एया परिन्नाया सुकडं तस्स सामन्न ॥१६॥एव मादाय मेहावी पंकभूयाओ इत्थिओ । नो ताहि विहन्नेज्जा चरेज्जत गवेसए ॥ १७ ॥ एगएव चरे लाढे अभि भूय परीसहे । गामेवा नगरेवावि निगमेवा रायहाणिए॥ १८ ॥ असमाणो चरे भिक्खू [1]नेव कुज्जा परिग्गह असंसत्तो गिहत्थेहि अणिकेओ परिव्वए ॥ १९ ॥

१. कोइ प्रतमां ' नोयकुज्जा ' छे.

[८]आ संसारमां मनुष्योने स्त्रीनी कुदरती इच्छा होय छे, ते जाणीने जे कोइ तेनो परित्याग करे छे तेज खरा श्रमण तरीके पोतानो साध्वाचार सफळ करी शके छे (१६.) जे बुद्धिमान पुरुष स्त्रीने खुंची जवाय एवा कादव समान,(मुक्ति मार्गने विषे बंधनरूप) माने छे, तेने तेनाथी काइ इजा थती नथी,पण ते आत्माना उद्धारने अर्थे धर्मानुष्ठान आचरे छे.[1] (१७). (०)एकलो, राग द्वेष रहित, निर्दोष आहार उपर निर्वाह करीने, अने सघळा परीसह सहन करीने, साधुए गाम, नगर, निगम[2] अथवा राजधानीने विषे विहार करवो (१८) गृहस्थादिकथी(संसारीथी)अलग रहीने साधुए विहार करवो, परिग्रहने विषे ममता करवी नहि, पण गृहस्थनो परिचय त्यागीने घर रहित थइने विचरवु. (अमुक स्थळेज विना कारण पडी रहेवु नहि.)[3] (१९).

१. आ गाथानो प्रो. हर्मन जेकोबी एवो अर्थ करे छे के- A wise man who knows that women are a slough, as it were, will get no harm from them, but will wander about searching for the self आ परिसह माटे टीकाकार शकडाल मंत्रीनु दृष्टांत आपे छे. २. वाणीआनो वास होय ते जग्यो. प्रो जेकोबी ते माटे Market place शब्द वापरे छे व्यापार वाणि आनोज प्राचिन समयथी होवो जोइए, एम साबीत थइ शके छे. ३. आ फरमानमां जेटली शिथिलता तेटली भ्रष्टता समजवी. ओ सबे आवी शिथिलता जती करवाथी अनेक अनर्थ उत्पन्न थया छे, अने थवाना छे. टीकाकार ३न्यदा दत्त शिष्यनु दृष्टांत टांके छे.

सुसाणे सुन्न गारेवा रुक्ख मूलेव एगओ । अकुक्कुओ निसीएज्जा नायवित्ता सए पर ॥२०॥ तथ्य से अथ्थमाणस्स उवसग्गाभि धारए । सक्काभीओ न गच्छेज्जा उठ्ठित्ता अन्न मासण ॥ २१ ॥ उच्चा वयाहि सेज्जाहि तवस्सी भीरखु थामव । नाइवेल विहनेज्जा पावदिठ्ठी विहन्नई ॥ २२ ॥ पइरिक्क वरसय लध्धु कल्लाण अदु पावग । कि मेगराइ करिस्सइ एव तथ्य हियासए ॥ २३ ॥ अक्कोसेज्ज परो भिक्खू न तेसि पडिस जले । सरिसो होइ बालाण तम्हा भिक्खू न सजले ॥ २४ ॥

[१०] स्मशानमां,सूना घरमां,अथवा तो वृक्ष नीचे,रागद्वेष अने कुचेष्टा रहित बनीने बेसवु अने अन्य जीवने[उंदर वगेरेने]त्रास उपजाववो नहि.[२०].एवा स्थळे रहेता साधुने उपसर्ग उपजे ते सहन करवो.पण ते उपसर्गथी डरीने त्याथी उठीने बीजे स्थानके जवुं नहि.[1] [२१].(११) तपस्वी अने धीरजवान साधु सारी शय्या[2] मळवाथी अति हर्ष पामतो नथी, तेमज खराब शय्या मळवाथी अति विषाद पामतो नथी, पण पाप दृष्टिवाळो आचार हीन साधु एवे प्रसंगे हर्ष विषाद पामे छे. (२२). स्त्री रहित सारा अथवा नरसा मकानमां आश्रय मळता तेमा तेणे रहेवुं अने विचारवु के, ' मारे तो आमा एक रात रहेवुं छे, तेमा सुख दुःख शुं थवानु छे ? ' [अर्थात्–समभाव राखवो].[3] (२३)[१२] कोइ ग्रहस्थ साधुने दुर्वचन कहे, तो पण तेणे तेना उपर क्रोध करवो नहि; तेने अज्ञान बाळक जेवो समजीने साधुए तेना उपर कोप करवो नहि. [२४].

१. टीकाकारे कुरुदत्त मुनीश्वरनुं दृष्टांत टांकेलुं छे. २. उपाश्रय Lodging house ३. यज्ञदत्त ब्राह्मणना बे पुत्रनुं दृष्टांत टीकाकारे टांकेलुं छे.

सोच्चाण फरुसा भासा दारुणा गाम कंटगा । तुसीणीओ उवि हिज्जा[1] न ताओ मणसी करे ॥२५॥ हओ न स जले भिक्खू मण पि न पओसए । तितिक्ख परमं नच्चा भिक्खू धम्मंवि चिंतए ॥ २६ ॥ समण स जय दंत [1]हणिज्जा कोई कत्थइ । नत्थि जीवस्स नासोत्ति एवं पेहेज्जा स जए ॥ २७ ॥ दुक्कर खलु भोनिच्च अणगारस्स भिक्खुणो । सव्वसे जाइयं होइ नत्थिकिंचि अजाइय ॥२८॥ गोयरग्गपविट्ठस्स पाणीनोसुप्पसारए । सेओ आगारवासोत्ति इइ भिक्खू न चिंतए ॥ २९ ॥

१. कोइ प्रतमां ' उवहेज्जा ' ' हणेज्जा ' छे.

कठोर, कंटक समान भाषा सांभळीने, मौन्य धारण करीने तेने काइ हिसाबमा गणवी नहि, ने एवी भाषा बोलनार उपर द्वेष करवो नहि १ [२५] (१३) साधुने कोइ मार मारे तो पण तेणे कोप करवो नहि, तेमज मनथी पण तेनु बुरु इच्छवुं नहि; परतु क्षमा ए उत्कृष्ट धर्म छे एम जाणीने दशविध यति धर्मनुं चिंतन करवु [२६]. कोइ अनार्य, संयममा दृढ अने जितेन्द्रिय साधुने, मार मारे तो तो तेणे एम विचारवु के ' एथी काइ मारा आत्मानो नाश थतो नथी. ' (अर्थात्–पण जो शरीर नाशना अवसरे हु कोप करीश तो मारा धर्मरूप जीवितनो नाश थशे एटले मारो धर्म हारी जइश.)[2] [२७]. (१४) सकेत रहित साधुने, याचनाथी सर्व वस्तु मळवी दोहिली छे, तेमज याचना सिवाय काइ मळी शकतुं नथी. [२८]. गोचरीने विषे फरता साधु तरफ [सर्व दाता, गृहस्थनो] हाथ हमेशा खुशीथी लंबातो नथी, पण तेथी साधुए एम न धारवु के आथी गृहस्थाश्रम वधारे सारो[3] (३०)

१. अहि अर्जुनमालीनु दृष्टांत टीकाकार आपे छे. २. स्कन्दाचार्यना पांचसो शिष्यनु दृष्टांत टीकाकारे अहि टांकेलु छे. ३ आ याचना परिसह उपर श्री बळदेव ऋषीश्वरनु दृष्टांत समजवु.

परेसु घासमेसेज्जा भोयणे परिनिट्ठिए । लद्धे पिंडे अलद्धे वा नाणुतप्पेज्जपंडिए ॥३०॥ अज्जेवाहं नलब्भामि अविलाभो सुएसिया । जो एवं पडिसचिक्खे अलाभोत नतज्जए ॥ ३१ ॥ नच्चा उप्पइय दुक्खं वेयणाए दुहट्टिए । अदीणो थावए पन्नं पुट्ठो तत्थ हियासए ॥३२॥ तेगिच्छं नाभिनंदिज्जा सचिक्खेत गवेसए । एयं खुतस्स सामन्नं जन कुज्जा नकारवे ॥ ३३ ॥ अचेलगस्स लूहस्स संजयस्स तवस्सिणो । तणेसु सुयमाणस्स होज्जा गाय विराहणा ॥ ३४ ॥ आयवस्स निवाएण अउला हवइवेयणा । एवनच्चा नसेवंति ततुजंतण तज्जिया ॥ ३५ ॥

[१५] ग्रहस्थने घेर तेमने माटे भोजन तैयार थयुं होय तेमांथी तेणे आहारने माटे मागी लेवुं; आहार मळे या न मळे तेने माटे पंडित मुनिए खेद करवो नहि [३०]. " आजे काइ आहार न मळ्यो, तो काले काइ मळी रहेशे. " जे साधु आ प्रमाणे विचार करे छे तने अलाभ परीसहथी काइ दुःख उपजतु नथी.१ [३१]. (१६) जो मंदवाड अथवा वेदना आवी पडे तो पीडाता मुनिए प्रसन्न मुखे मनने स्थिर राखवुं अने रोग परीसह सहन करवो.[३२]. रोग टाळवाना उपायने माटे तेणे आतुर थवुं नहि; (वैदक सारवारनी राह न जोवी) पण आत्माना गवेषक साधुए आत्म हित माटे पोतानुं चारित्र पाळवुं; पोते रोगनी चिकित्सा करे नहि अने बीजा पासे करावे नहि ते साचो श्रमण (साधु) कहेवाय.२ [३३]. [१७] जो के वस्त्र रहित अथवा अल्प वस्त्रवाळा, संयमवत, तपस्वी साधुने तृणने विषे सूता बेसता शरीरे पीडा थाय छे, अने ताप पडवाथी तेने असह्य वेदना थाय छे, तो पण तृण स्पर्शथी पीडाता छता जिन कल्पी साधु वस्त्र३ भोगवतो नथी.४ [३४–३५].

१. ढंढण कुमारनु दृष्टांत अलाभ परिसह उपर आपेलुं छे. २. अहिं कालवेस कुमारनु दृष्टांत टीकाकारे टांकेलुं छे. ३. 'तंतुज'=What is manufactured from thread ४. जीतशत्रु राजाना पुत्र भद्रकुमारनी कथा अहिं आपेली छे

किलिन्नगाय मेहावी पकेण वा रएण वा । धिसुवा परितावेण सायनो परिदेवए ॥ ३६ ॥ वेइज्ज निज्जरा पेही
उ.अ. २. आयरिय धम्म मणुत्तर । जावसरीर भेउत्ति जल्ल काएण धारए ॥३७॥ अभिवायण मब्भुट्ठाण सामीकुज्जा निमतण ।
जेताइ पडिसेवति नतेसि पीहए मुणी ॥ ३८ ॥ अणुक्कसाइ अप्पिच्छे अन्नाएसी अलोलुए । रसेसु नाणुगिज्झेज्जा
२१ नाणुतप्पेज्ज पन्नव ॥ ३९ ॥ [1]सेनूण मए पुव्व कम्मा नाण फलाकडा जेणाह नाभिजाणामि पुट्ठो केणइ कन्हुइ
॥ ४० ॥

१. कोइ मतमां 'सोनूण' छे.

(१८)उन्हाळाना तापे करीने शरीरे परसेवो थाय, अथवा मेल अने रजथी शरीर भराय तो पण मर्यादावंत साधुए सुख शातानी हानि माटे शोच करवो नहि.(१६) कर्मनो क्षय[1] करवा अने सर्वोत्कृष्ट चारित्र धर्म पाळवा साधुए आ सघळु सहन करवु, अने शरीरनो नाश थता सुधी कायाये मेल धारण करवो.[2][३७] (१९)कोइ ग्रहस्थ साधुने अभिवदन करे अथवा तेने आवतो जोइने पोताना आसनेथी उठीने तेनु सन्मान करे, अथवा भिक्षाने माटे आमंत्रण करे, आवी रीते सत्कार करनार तरफ साधुए अनुराग राखवो नहि. (३८). क्रोध रहित अल्प इच्छावाळो, अजाण्याने त्यांथी [आपनारनु जाति, कुळ, द्रव्य वगेरे जाण्या सिवाय] आहार लेनार, स्वादिष्ट भोजनने माटे लालच रहित, प्रज्ञावंत साधु रस, स्वादनी इच्छा करतो नथी अने पोतानो सत्कार न थवाथी कोप करतो नथी.[3] (३९) [२०] प्रज्ञावत साधु एम जाणे छे के निश्चे में पूर्व जन्मान्तरे, जेनु फळ अज्ञान छे एवा कृत्यो करेला होवा जोइए, कारण के कोइ माणस कोइ स्थानकमा काइ सुगम प्रश्न मने पूछे छे, तेनो उत्तर हुं आपी शकतो नथी [४०].

१. निर्जरा. २. अहि श्रेष्ठि पुत्रनु दृष्टात टाकेलु छे. ३. आ सत्कार परिसह उपर एक साधुनु दृष्टात टाकेलु छे.

अह पछा उइज्जंति कम्मा नाण फला कडा॥एव मस्सामि अप्पाणं नच्चा कम्म विवागयं॥४१॥निरठ्ठगंमि विरओ मेहुणाओ सुसंवुडो। जोसख नाभिजाणामि धम्म कल्लाण पावग॥४२॥तवो वहाण मादाय पडिमं पडिवज्जओ । एवपि विहरओ मे छउमथ्थ ननियट्टइ ॥ ४३ ॥ नथ्थिनूणं परेलोए इड्डी वावि तवस्सिणो । अदुवा वंचिओ मित्ति इइ भिखूनचितए ॥४४॥ अभूजिणा अथ्थिजिणा अदुवावि भविस्सई । मुसते एवमाहसु इइ भिखू न चितए ॥४५॥

हवे वळी पूर्वे जन्मातरे कीधेलां कर्मो, जेनुं फल अज्ञानछे; तेनुं शुभाशुभ परीणाम आगळ उपर आवशे; ते मारां ए कर्मोनुंज फळछे एम मानीने मारा आत्मानुं मारे आश्वासन करवुं जोइए१. (४१).(२१) में मैथुननो त्याग करेलोछे, अने इन्द्रिओने नियममां राखेली छे, छतां हुं शुभ अने अशुभ [धर्मनो स्वभाव अने मोक्ष नर्कनो हेतु] बराबर जाणी शकतो नथी, तो पछी मारो त्याग अने संयम निरर्थकज छे. [माटे ज्ञानने आवरण करनारा कर्मनो मारे क्षय करवो जोइए]. [४२]. हुं तप करुं छुं, सिद्धात भणु छुं अने द्वादश विधिए साधु धर्म पाळुछु, छतां ज्ञानावरण कर्म टळतां नथी. [माटे ज्ञानने आवरण करनारा कर्म मारे खपाववा जोइए].[2] [४३]. (२२) 'परलोके छेज नहि, तप करवाथी लब्धिरुप रिद्धि पण मळवानी नथी; आ तो हु ठगाउं छुं.' एवुं चिंतन साधुए कदि करवुं नहि. [४४]. 'पूर्वे सर्वज्ञ जिन थइ गया छे, वर्तमान काळे (महा विदेह क्षेत्रने विषे) सर्वज्ञ जिन [केवलि] छे, अने भविष्य काळमा पण सर्वज्ञ जिन थशे एम जिननी हस्ती कहेनार, माननार जूठाछे' एवुं चिंतन साधुए करवुं नहि.[3](४०).

१. श्री कालकाचार्यनुं प्रज्ञा परिसहपर दृष्टान्त समजवुं. २. अज्ञान परिसहपर अहिर पुत्रनुं दृष्टांत आपेल छे. ३, आषाढाचार्यनुं दृष्टांत टीकाकारे टाकेलुं छे.

एए परिसहासव्वे कासवेणं पवेइया । जेभिक्खु नोविहन्नेज्जा पुट्ठो केणइ कण्हुइ त्तिबेमि ॥ ४६ ॥

॥ इति परिसह ज्झयण विय सम्मत ॥ २ ॥

अध्ययन ३. *चार अंग (चत्तरंग–चोरंगी).

चत्तारि परमगाणि दुल्लहाणी हजंतुणो । माणुसत्त सुइसद्धा सजमभियवीरिय ॥ १ ॥

उपर कह्या ते बावीसे परीसह काश्यप गोतमा उत्पन्न थयेला श्री महावीर भगवाने मरूप्या छे. एमाना कोइक परीसहथी कोइक स्थानकने विषे पीडाया छता धीरजवान साधुए पोताना संयमनो भग करवो नहि.१[४६].

* ॥ बीजुं अध्ययन सपूर्ण. ॥ *

⊛ अध्ययन ३. ⊛

आ संसारमां मनुष्यने परम उत्कृष्ट, मोक्ष साधनना उपायरुप चार वस्तु प्राप्त थवी दुर्लभ छे :—(१) मनुष्य जन्म १ [२] धर्मनु श्रवण. [३] धर्म उपर श्रद्धा अने [४] चारित्र (सयम) ने विषे वीर्य–स्फोरण (उत्साह). [१].

---

१. मो. जेकोबी ए माट एवा शब्दो वापरे छे के–A monk should not be vanquished by them, when attacked by any anywhere

१ मनुष्य जन्म दश दृष्टाते दुर्लभ कहेल छे ते विषे एवी गाथा छे के ' चुल्लग, पासग, धन्ने, जूये, रयणेय, सुमिण, चक्रेय, चम्म, जुग, परिमाणु दसदि दता मणुय भमि । ' आ उपर दश कथाओ विस्तारवाळी छे, अने विस्तारना भयथी पडती मूकी छे.

समावन्नाण संसारे नाणागोत्तासु जाइसु । कम्मा नाणाविहा कट्टु पुढोविस्सं भयापया ॥ २ ॥ एगया देवलोएसु नरए सुविएगया । एगया आसुरं कायं आहाकम्मेहिं गच्छइ ॥ ३ ॥ एगया खत्तिओ होइ तओ चंडाल वुक्कसो । तओकीट पयंगोय तओ कुथु पिप्पीलिया ॥४॥ एव मावट्ट जोणीसु पाणिणोकम्म किव्विसा । ननिविज्जंतिसंसारे सव्वट्ठेसुवखत्तिया ॥ ५ ॥ कम्म संगेहि सम्मूढा दुक्खियाबहु वेयणा । अमाणुसासुजोणीसु विणिहम्मतिपाणिणो ॥ ६ ॥ कम्माण तु पहाणाए आणुपुव्वी कयाइओ । जीवा सोहि मणुपत्ता आययंति मणुस्सयं ॥ ७ ॥

---

[१] जगत अनेक जीवोथी भरपूर छे. तेमा जीव जुदा जुदा गोत्र अने जातिने विविध प्रकारनां कर्म कराने उत्पन्न थाय छे. (२). जीव पेतानी करणीए करीने कोइ वार देवलोके जाय छे, कोइ वार १नर्के जाय छे अने कोइवार असुर योनिमा उपजे छे. [अर्थात्–जेवां कर्म जीवे कर्या होय तेवी गतिए जाय छे]. [३]. कोइवार जीव मरीने क्षत्री थाय छे, तेमज चाडाळ अने २वुकस पण थायछे; अथवा तो कीडा, पतंगिया अथवा कुंथु३ अने किडी थाय छे. [४]. एवी रीते अधम प्राणी४ जीव योनिने विषे परिभ्रमण करवा छतां उद्विग्न थता नथी. जेम क्षत्री युद्धथी अने राज्य रिद्धिथी संतोष पामतो नथी, तेम ए जीव संसारमां फरता संतोष पामतो नथी.(५). कर्मे करीने मूढ थइ गयेला जीव दुःखी थाय छे अने [संसारमां फरता] घणी वेदना सहन करे छे, अने अमानुषिक [नारकी, तिर्यंच] गतिने विषे घणुं दुःख वेठे छे. [६]. पण अशुभ कर्मनो नाश थवाथी, कदाचित अनुक्रमे फरता फरतां, शुभ कर्मनो उदय थवाथी जीव निर्मळ थइने, मनुष्य गतिमा जाय. (७).

---

१. न+अर्क=सूर्य. नर्कमा हमेशा अंधकारज रहे छे २. बाप शुद्र अने मा ब्राह्मणीथी उत्पन्न थयेल प्रजा वुकस कहेवाय छे. ३. Animalcules. ४ Living beings of sinful actions.

माणुरस विग्गह लध्धु सुइ धम्मरसदुल्लहा। जंसोच्चा पडि वज्जति तव खति महिंसयं॥८॥ आहच्च सव्वणं लध्धुं सद्धा परम दुलहा। सोच्चा नेयाउय मग्ग वहवे परिभरसइ॥९॥ सुयच्च लध्धुं सद्धच विरिय पुण दुल्लह। वहवे रोयमाणावि नोयण पडिवज्जए॥१०॥ माणुसत्तमि आयाओ जोधम्म सोच्च सद्दहे। तवरसी विरिय लध्धु सवुंड निध्धूणेरय॥११॥

(२)कदाच मनुष्य देह मळे तो पछी धर्मनुं श्रवण दुर्लभ थइ पडे छे, जे धर्मनु श्रवण करवाथी जीव तप, १क्षमा, दया, आदि अंगीकार करी शकेछे [८]. [३]कदाचित धर्मनु श्रवण कर्यु, तो पछी धर्म उपर श्रद्धा थवी परम दुर्लभ थइ पडेछे, अने घणा जीव शुद्ध मार्ग[जिन धर्म] सांभळीने अंगिकार कर्या पछी ते थकी भ्रष्ट थाय छे (जमालीनी पेठे). [९]. [४] जीवे कदाच धर्मनुं श्रवण कर्यु, ते सांभळीने ते उपर तेनी श्रद्धा बेठी, तो पछी उत्साहथी चारित्र२ पाळवु दुर्लभ थइ पडे छे. [श्रेणीकनी पेठे] घणा जीव जाणे छे के धर्म छे तो सारो, पण पळातो नथी. [१०]. मनुष्यपणु पामीने, धर्मनु श्रवण करीने, ते उपर श्रद्धा राखीने, तप जप (चारित्र)ने विषे वीर्य-बळ दाखवीने साधु पुरुष आश्रवद्वारने३ रुंधवु जोइए अने कर्मरुपी मेलने फेडवो जोइए (११).

१ Combat their passions २. Do adopt religion—अहिं चारित्र एटले दिक्षा लइ लेवानो भावार्थ नथी. संसारमा रहेनारा जीवो धर्मना फरमान अनुसार वर्तन राखवाथी पण कर्म क्षय करी शके छे. ३. पाप लागवाना—कर्म बांधवाना साधनोने आश्रवद्वार नाम आपेलु छे. ते माटे नव तत्वमा कहेलु छे के :—"ज्यु ताल सदा भरे, ज्युं आवत जल ओर, एसे आश्रव द्वारसें, कर्म बंध को जोर." जेम जेम पाणी आवतु जाय छे तेम तळाव भरातु जाय छे एवी रीते आश्रवथी कर्म विशेष बंधाय छे. जेम टाकीनु पाणी खाली करवा प्रथम नळनु आवतु पाणी बंध करवुं जोइए, तेम मात्र कर्मोना क्षय करवा, प्रथम नवा आवतां कर्म रोकवां जोइए ४. नव तत्वमा आ भावार्थनो बोध छे के:—"ज्यु आवत जल रुकीए, सुके सरोवर पान, त्यु आतम संवर कीए, कर्म निर्जरा ही जाण." जल आवतु बंध थवाथी जेम सरोवर सुकाइ जाय छे. तेम संवर करवाथी—आवता कर्म रोकवाथी कर्मनी निर्जरा थाय छे. आ संबंधेनु विशेष विवेचन नव तत्वमा छे ते अवश्य मनन अने ग्रहण करवा लायक छे.

सोही उज्जुय भूयस्स धम्मो सुद्धस्स चिठ्ठइ । निव्वाण परमं जाइ घयं सित्तेव्व पावए ॥१२॥ विगिंच कम्मुणो हेउं जस सचिणु खंतिए । पाढव सरीर हिचा उड्ढं पक्कमई दिस ॥१३॥ विसालिसेहि सीलेहिं जक्खा उत्तर उत्तरा । महासुक्काव दिप्पंता मन्नता अपुणच्चय ॥१४॥ अप्पियादेव कामाणं काम रुवी विउव्विणो । उड्ढं कप्पेसु चिठ्ठंति पुव्वा वाससया बहु ॥१५॥ तथ्थठिच्चा जहाठाण जक्खा आउक्खए चुया । उवेंति माणुसं जोणिं सेदसंगेभि जायइ ॥ १६ ॥

माया–रहितने निर्मळता प्राप्त थाय छे; अने निर्मळ [पुरुष] शुद्ध धर्मने विषे दृढ रहे छे; अने घीथी सींचायेलो अग्नि जेम निर्मळ देखाय छे, तेम जीव निर्मळ (कर्म-रहित) थइने परम उत्कृष्ट निर्वाणने[1] पामे छे. (१२). कर्मना हेतु [मिथ्यात्व आदि] दूर करीने क्षमाथी यश उपार्जन कर.[2] (आ प्रमाणे वर्तनार पुरुष) पार्थिव [उदारीक] शरीर त्यागीने ऊर्ध्वदिशामां [उंचा देव लोकमां] जाय छे. (१३). सद्गुणोथी शोभता यक्ष लोक [देवता] (तप, जप आदि क्रियाये करीने) एक एकथी चढीआता निर्माण थयेला विमान (देव लोक)ने विषे जाय छे, अने चंद्र, सूर्यनी पेठे तेजथी देदीप्यमान [दीपता] जणाय छे; अने तेओ पोताना मनथी एम नथी मानता के अमारे अहिंथी चवीने कदी नीचे जवुं पडशे. (१४). देवताइ सुख भोगवतां अने पोतानी इच्छा प्रमाणे नवां नवां रुप धारण करतां, तेओ (यक्ष लोको) उंचा देव लोकने विषे असंख्य [3]पूर्वनुं आयुष्य भोगवे छे. [१५]. तेओ [यक्षो] ते स्थानक [देव लोक]ने विषे पोतानुं आयुष्य पूरुं करीने, पोताना अवशेष पूण्य कर्म बाकी रह्यां होय ते भोगववा दशांग मनुष्य योनीमां जन्मे छे. [१६]

1. मुक्ति–कर्म बंधन–जन्म, जरा, मरणथी मुकावु. २. मो. जेकोबी आ माटे असरकारक शब्दो वापरे छे. Leave off the causes of sin, acquire fame through patience ३. सातमा अध्ययननी १२ मी गाथानी फुटनोटमां पूर्वोनुं कोष्टक आपेल छे.

खेत्त वत्थु हिरणच पसवो दास पोरुसं । चत्तारी काम खधाणि तथ्य से उववज्जइ ॥ १७ ॥ मित्तवं नायव होइ उच्चा गोएय वन्नव । अप्पायके महापन्ने अभिजाए जसो बले ॥१८॥ भोच्चा माणुस्सए भोए अप्पडिरूवे अहाउय । पुव्वं विसुद्ध सधम्मे केवलबोहि बुझिया ॥ १९ ॥ चउरंग दुल्लह नच्चा सजम पडिवज्जिया । तवसा धूय कम्म सेसिद्धे हवई सासए त्तिबेमि ॥२०॥

॥ इति चउरगणीय झयण तइय सम्मतं ॥ ३ ॥

क्षेत्र अने गृह, सुवर्ण, पशु अने दास तथा सेवको ए चार काम स्कन्ध [चार प्रकारनी दोलत] ज्यां होय एवा सत्कुळमां ए पुण्यात्मा जन्म ले छे. *[१७]. मित्र, स्वजन, उच्च गोत्र, सद्वर्ण [सुंदर शरीर], आरोग्य, बुद्धि, (प्रज्ञा), विनय, यश अने बळने ते पामे छे. (१८). मनुष्य भवना एवा अनुपम सुख जाव जीव [जिंदगी पर्यंत] भोगवीने पूर्व जन्मना विशुद्ध सद् धर्म [चारित्र] ने अंगे यथाकाळे, ते पाछो शुद्ध समकित लइ प्रति बुझे. (१९). चार अग धर्म प्राप्त करवां दुर्लभ छे एम जाणीने ते सयमनुं प्रतिपादन करे छे [धारण करे छे], अने बारे भेदे तपथी कर्म रजने दूर करीने ते शाश्वत सिध्ध थाय छे. [२०].

* ॥ त्रीजु अध्ययन संपूर्ण. ॥ *

सोही उज्जुय भूयस्स धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ । निव्वाणं परमं जाइ घयं सित्तेव्व पावए ॥१२॥ विगिंच कम्मुणो हेउं जसं संचिणु खंतिए । पाढवं सरीरं हिच्चा उड्ढं पक्कमई दिसं ॥१३॥ विमालिसेहिं सीलेहिं जक्खा उत्तर उत्तरा । महासुक्का व दिप्पंता मन्नता अपुणच्चयं ॥१४॥ अप्पियादेव कामाणं कामरूवी विउव्विणो । उड्ढं कप्पेसु चिट्ठंति पुव्वा वाससया बहु ॥१५॥ तत्थट्ठिच्चा जहाठाणं जक्खा आउक्खए चुया । उवेंति माणुसं जोणिं सेदसंगेभि जायइ ॥ १६ ॥

माया–रहितने निर्मळता प्राप्त थाय छे, अने निर्मळ [पुरुष] शुद्ध धर्मने विषे दृढ रहे छे; अने घीथी सींचायेलो अग्नि जेम निर्मळ देखाय छे, तेम जीव निर्मळ (कर्म-रहित) थइने परम उत्कृष्ट निर्वाणने[1] पामेछे. (१२) कर्मना हेतु [मिथ्यात्व आदि] दूर करीने क्षमाथी यश उपार्जन कर.[2] (आ प्रमाणे वर्तनार पुरुष) पार्थिव [उदारीक] शरीर त्यागीने उर्द्धदिशामा [उंचा देव लोकमां] जाय छे. (१३). सद्गुणोथी शोभता यक्ष लोक [देवता] (तप, जप आदि क्रियाये करीने) एक एकथी चढीआता निर्माण थयेला विमान (देव लोक)ने विषे जाय छे, अने चन्द्र, सूर्यनी पेठे तेजथी देदीप्यमान [दीपता] जणाय छे; अने तेओ पोताना मनथी एम नथी मानता के अमारे अहिंथी चवीने कदी नीचे जवुं पडशे. (१४). देवताइ सुख भोगवता अने पोतानी इच्छा प्रमाणे नवां नवां रुप धारण करता, तेओ (यक्ष लोको) उंचा देव लोकने विषे असंख्य [3]पूर्वनुं आयुष्य भोगवे छे. [१५]. तेओ [यक्षो] ते स्थानक [देव लोक]ने विषे पोतानुं आयुष्य पूरु करीने, पोताना अवशेष पूण्य कर्म बाकी रह्या होय ते भोगववा दशांग मनुष्य योनीमां जन्मे छे. [१६]

---

१. मुक्ति–कर्म बंधन–जन्म, जरा, मरणथी मुकावुं. २. प्रो. जेकोबी आ माटे असरकारक शब्दो वापरे छे Leave off the causes of sin, acquire fame through patience ३. सातमा अध्ययननी १२ मी गाथानी फुटनोटमां वर्षोनुं कोष्टक आपेल छे.

खेत्त वत्थु हिरणच पसवो दास पोरुसं । चत्तारी काम खधाणि तत्थ से उववज्जइ ॥ १७ ॥ मित्तवं नायवं होइ उच्चा गोएय वन्नव । अप्पायके महापन्ने, अभिजाए जसो वले ॥१८॥ भोच्चा माणुस्सए भोए अप्पडिरूवे अहाउय । पुव्व विसुद्ध सधम्मे केवलबोहि बुज्झिया ॥ १९ ॥ चउरग दुल्लह नच्चा सजम पडिवज्जिया । तवसा धूय कम्म सेसिद्धे हवई सासए त्तिबेमि ॥२०॥

॥ इति चउरगणीय झयण तइय सम्मत ॥ ३ ॥

क्षेत्र अने गृह, सुवर्ण, पशु अने दास तथा सेवको ए चार काम स्कन्ध [चार प्रकारनी दोलत] ज्यां होय एवा सकुळमां ए पुण्यात्मा जन्म ले छे. *[१७]. मित्र, स्वजन, उच्च गोत्र, सद्वर्ण [सुंदर शरीर], आरोग्य, बुद्धि, (प्रज्ञा), विनय, यश अने बळने ते पामे छे. (१८). मनुष्य भवना एवा अनुपम सुख जाव जीव [जिंदगी पर्यंत] भोगवीने पूर्व जन्मना विशुद्ध सद् धर्म [चारित्र] ने अंगे यथाकाळे, ते पाछो शुद्ध समकित लइ मति बुझे. (१९). चार अग धर्म प्राप्त करवा दुर्लभ छे एम जाणीने ते सयमनु प्रतिपादन करे छे [धारण करे छे], अने तारे भेदे तपथी कर्म रजने दूर करीने ते शाश्वत सिद्ध थाय छे. [२०].

* ॥ त्रीजुं अध्ययन संपूर्ण. ॥ *

* मनुष्यना दश अग पैकी एक अंग आ गाथामा अने बाकीना नव अंग १८मी गाथामा वर्णव्यां छे.

अध्ययन ४. * प्रमाद [असंस्कृत].

असंखय जीविय मा पमायए जरोवणियस्स हु नथ्थि ताणं । एव वियाणाहि जणे पमत्ते किन्नुवि हिंसा अजया गहिंति ॥ १ ॥ जे पाव कम्मे हिधणं मणुस्सा समाययंती अमय गहाय । पहायते पास पयट्ठिए नरे वेराणुबद्धा नरय उवेंति ॥ २ ॥ तेणे जहा सन्धि मुहे गहिए स कम्मुणा किच्चइ पावकारी । एव पया पेच्च इहंच लोए कडाण कम्माण न मोख्ख अथ्थि ॥ ३ ॥

❀ अध्ययन ४. ❀

आयुष्य तूट्या पछी सांधी शकातु नथी१; (जींदगी लंबावी शकाती नथी] माटे हे भव्य जीव ! प्रमाद न कर. जरा प्राप्त थया पछी कोइनुं शरण रहेशे नहि, तेनो विचार कर. जे प्रमादी मनुष्यो जीव हिंसा करे छे अने इन्द्रिओने वश राखी शकता नथी तेओ कोने शरणे जशे ? (१). जे मनुष्यो कुमति ग्रहण करीने पाप कर्मथी (दगा कपटथी) धन उपार्जन करे छे, ते धन छांडीने (स्त्री, पुत्र, कलत्रादि) पासमां फसाई घणां पाप करीने, अने घणा जीवथी वेर बांधीने नरके जाय छे. (२). जेम कोइ चोर खातर पाडता खातरने मोढेज पोते करेला पाप कर्मथीज (खोदेली भींत तूटी पडवाथी२) दबाइ मरे छे. तेम हे लोको ! आ लोक अने पर लोके करेला कर्मना फळ भोगव्या विना छूटको नथी. (३)

१. श्री सुयगडाग सूत्रना प्रथम सूत स्कन्धना बीजा अध्ययनना त्रीजा उद्देशानी २१ मी गाथामा आवोज पाठ छे. २. श्री देवेन्द्र टीकामा आ विषे ने दृष्टांत टांके छे. तेमा एक विषे तो पाठमा पण इशारो जणाइ आवे छे तेनो भावार्थ एवो छे, के, घरमा दाखल थवा चोर दीवालमा बाकोरु पाडयुं अंदर दाखल थवा पग नाख्या तो अंदर घरनो धणी हतो ते पग खेंचवा लाग्यो, ज्यारे चोरनो सोबती बहार हतो ते तेने बहार खेंचवा लाग्यो, ताणा ताणमां उपरनी दीवाल त्रुटी पडी अने चोर दबाइ गयो.

ससार मावन्न परस्स अठ्ठा साहारण जंच करेइ कम्म । कम्मस्स ते तस्स उवेय काले न बध वाबधवयं उवेति
॥४॥वित्तेणताणं नलभे पमत्ते इमम्मिलोए अदुवापरथ्था । दिवप्पणठ्ठे व अणत मोहे नेयाउय दठुम मदठुमेव॥५॥
सुत्ते सुयावि पडिबुध्ध जीवी नवीससे पडिय आसु पन्ने। घोरा मुहुत्ता अबल सरिर भारंड पखी वचरे प्पमत्तो ॥ ६ ॥

कोइ मनुष्य संसारने विषे पोताना (मित्र, पुत्र, कलत्र, बाधवादि) अर्थ अथवा पारकाने अर्थे काइ कृत्य करे छे ते कर्म फळना विपाक समये (फळ भोगववा टाणे] सगा सगापणु साचवता नथी[1] पण अलगा जइने उभा रहे छे. (अर्थात–पोतानी कमाइ जीवने पोतानेज भोगववी पडे छे. [४]. वित्त अथवा द्रव्यथी आ लोके के परलोके प्रमादी पुरुष पोतानुं रक्षण करी शकतो नथी.[2] जेम कोइ मनुष्य हाथमा दीवो लइने (रस कुपिका लेवा माटे) जाय, पण दीवो बुझाइ जवाथी जेम तेने मार्ग न सूझे, तेम जीवे मुक्ति मार्ग दीठेलो छे, पण मोहनी कर्मने लीधे ते दीठो अण दीठो थइ जाय छे (५). मूर्ख लोक [द्रव्ये अने भावे] निद्रामा सूता छे, पण पंडित एवी निद्रानो त्याग करे छे. मज्ञावत पारके विश्वासे रहेता नथी, [पारकी आशा पण राखता नथी] सदा जागृत रहे छे, कारण के काळ अघोर छे, अने शरीर दुर्बळ छे. भारंड पक्षीनी माफक ते सदा अप्रमत्त–जागृत रहे छे. (६)

१ प्रो. जेकोबी ते माटे नीचेना शब्दो वापरे छे. At the time of reaping the fruit of his actions, his relations will not act as true relations (i e will not come to his help) २. पैसाथी कर्म क्षय कदी थइ शकतो नथी. कर्म उदय आवे त्यारे पैसानी लाचथी ते कदी शान्त थता नथी. कुदरत निष्पक्षपात न्यायाधीशनी पेठे, रंक श्रीमतनो भेद राख्या विनाज, करेला कर्म अनुसार, अदल इन्साफ आप्याज करे छे. ते श्रीमतोना बाह्य कुत्रीम तेजथी कदी दबाती नथी अने श्रीमतोए तेवा फाकामा कदी थाप पण खावी नहि. शुभ कर्मना सचयथी मळेली श्रीमंताइ साचववा, शुभ कर्मोनो सचय चालु राखवो जोइए.

चरे पयाइं परिसंकमाणो जंकिंचि पासं इहमन्नमाणो । लाभंतरे जीविय बूहइत्ता पच्छा परिन्नाय मलावधसी ॥७॥
छंद निरोहेण उवेइ मोक्खं आसेजहा सिक्खियवम्म धारी। पुव्वाइं वासाइ चरेप्पमत्तो तम्हा मुणिखिप्प मुवेइ मोक्खं ॥८॥
स पुव्वमेवं नलभेझपच्छा एसोवमा सासयवा इयाण । विसीयइ सिढिले आउ यमि कालोवणीए सरीरस्स भेए ॥९॥
खिप्पं नसक्के इ विवेगमेउ तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे । समिच्च लोगं समया महेसी अप्पाण रक्खीवचरप्पमत्तो॥१०॥

साधु पापथी संकोचाइने सयम मार्गे संभाळथी विचरे छे अने संसारनां कामकाज अने ग्रहस्थीना परिचयने पाशरुप माने छे. ज्यां सुधी ज्ञान, दर्शन, चारित्रादिनो लाभ प्राप्त थाय त्यांसुधी संभाळ पूर्वक जिवित धारण करवु. पछीथी प्रज्ञा बुद्धिए करीने सर्व वस्तुनो त्याग करी, अणसण लइ, पापरुप मळने फेडवो. (७). स्वच्छंदतानो निरोध करवाथी साधु मोक्षे जाय छे. जेम सुशिक्षित कवचधारी अश्व [अश्वारनी सूचना मुजब चाले तो] युद्धमा शत्रुने जीती आवे छे (तेम साधु पण इच्छाने रुंधे तो मोक्ष पामे छे). जे साधु पूर्व काळमा [जुवानीमा] अप्रमत्त रहीने विचरे ते साधु जल्दीथी मोक्षे जाय छे. (८). 'पुर्व काळमां अप्रमत्तत्व प्राप्त न थयुं तो ते पश्चात काळमा थशे.' [अर्थात--हमणां तो खाउं, पीउं, पछी मरण काळे धर्म करीश] एवो वाद शाश्वतवादी आयुष्यना धणीने शोभे[१] पण जेम जेम आयुष्य शिथिल थतुं जाय छे, अने मरणकाळ निकट आवतो जाय छे, तेम तेम तेवा मनुष्योने दुःख उपजेछे. [के में धर्म न कर्यो, हवे मारी शी गति थशे ?] (९). प्राणी मरण समये एकदम त्यागरुप विवेक पाळी शके नहि; तेटला माटे काम भोग छांडीने धर्मने विषे उद्यम करवो, आ लोकनुं स्वरुप ओळखवुं, ज्ञानी पुरुषनी माफक (शत्रु, मित्र तरफ) समभाव राखवो, आत्मानुं रक्षण करवुं अने कदि प्रमाद करवो नहि. [१०].

१. आयुष्यनो अंत नथी एवा अभिप्रायवाळाओनोज आ भ्रम मात्र छे. प्रो. जेकोबी पण तेना शब्दार्थमा आ शब्दो वापरेछे. " This is the comparison of those who contend that life is eternal."

उ अ. ४. ॥ ११ ॥ मदाय फासा बहुलो हणिज्जा तहप्पगारेसु मण न कुज्जा । रक्खेज्ज कोह विणएज्जमाण मायं नसेवेज्ज-
पहेज्जलोह ॥ १२ ॥ जेसंखया तुच्छपरप्पवाइ तेपेज्ज दोसाणुगया परज्झा । एए अह म्मुत्ति दुगंछमाणो कखेगुणे-
३१ जावसरिरभेउ त्तिबेमि ॥ १३ ॥

॥ इति असखयनाम झयण चउथ्थं सम्मत्त ॥ ४ ॥

जे श्रमण (साधु) वारवार मोहनी कर्मने जीते छे अने सयम मार्गे विचरे छे तेने नाना प्रकारना राग स्पर्श दु:ख नडे छे, छता साधुए मनमां तेनो हर्ष शोक करवो नहि. (११). एवा प्रकारना स्पर्श बुद्धिने मूढ करी नाखे छे अने घणाने लोभावे छे, माटे ते (स्त्री-स्पर्श वगेरे) तरफ लक्ष लगाडवुं नहि मायाथी दूर रहेवुं क्रोध करवो नहि, मानने फेडवु अने लोभने टाळवो (१२). जे मिथ्यात्वी[1] (अन्य धर्मी) सदा राग द्वेपने लीधे परवश पडेला छे अने तेमा मदाकाळ मच्या रहे छे, एवाओने अपवित्र मानी तेमनो अनादर करवो, अने शरीर पडता सुधी ज्ञान मेळववानी आकाक्षा राखवी. (अथवा—सयम—धर्मने विषे प्रवर्तवुं). [१३].

॥ चोथु अध्ययन सपूर्ण ॥

१. Heretics—तुच्छ परवादी.

अध्ययन ५. अकाम, सकाम, मरण.

अन्नवसि महोहसि एगेतिन्ने दुरुत्तरे तथ्थएगे महापन्ने इमपणह मुदाहरे ॥१॥ सतिमेय दुवेठाणा अख्खाया मारणतिया । अकाम मरणचेव सकाम मरण तहा ॥२॥ बालाणं अकामतु मरणं असइं भवे। पंडियाणं सकामतु उक्कोसेण सइं भवे ॥३॥ तथ्थिमं पढम ठाणं महावीरेण देसिय । काम गिद्ध जहा वालेभिस कूराइ कुव्वई ॥ ४ ॥ जे गिध्धे काम भोगेसुएगे कूडाय गछई । नमे दिठ्ठे परेलोए चख्खु दिठ्ठा इमा रइ ॥५॥

❀ अध्ययन ५. ❀

आ संसार समुद्र जेना महान प्रवाहथी (जन्म-मरणथी) पार उतरवानुं काम अति कठिन छे, तेना सामा तीरे मात्र एकज महा पुरुष [तीर्थंकर] पहोंच्या छे. [अर्थात-जन्म मरणथी मुक्त थया छे]. अने ते महा बुद्धिवंत पुरुषे नीचेना प्रश्ननो उत्तर आप्यो छे. [१]. प्रत्यक्ष रीते बे प्रकारे जीव मरणावस्थाने प्राप्त थाय छे (१) अकाम मरण अने (२) सकाम मरण. [२]. मूर्ख अने विवेक रहित मनुष्यने अकाम मरण वारंवार प्राप्त थाय छे; पंडित अने धार्मिक पुरुषने सकाम मरण एकजवार प्राप्त थाय छे. [३].* अकाम अने सकाम मरणमां प्रथम अकाम मरण विषे श्री महावीर देवे कह्युं छे के काम भोगने विषे मच्यो रहीने मूर्ख माणस अति क्रूर हिंसादिक कर्म करे छे. (४). जे मनुष्य काम भोगने विषे आसक्ति राखे छे, ते कुटिलतानी जाळमां फसाय छे. (जूठुं बोले छे अने क्रूर कर्म करे छे). ते एम माने छे के, ' परलोक तो में जोयुं नथी, पण काम भोगादि सुख तो प्रत्यक्ष देखाय छे., [५].

*केवळीने मात्र एकज जन्मे मुक्ति प्राप्त थाय छे. अन्य अणगारोने मुक्ति मळता पहेला सात आठ भव करवा पडे छे.

उ.अ. ५. हत्था गया इमे कामा कालिया जे अणागया । को जाणइ परेलोए अत्थिवा नत्थिवा पुणो ॥ ६ ॥ जणेणसद्धिं होक्खामि इइ बाले पगब्भइ । कामा भोगाणु राएण केसस पडिवज्जइ ॥ ७ ॥ तओ से दंड समारभइ तस्सेसु थावरेसुय । अट्ठाएय अणट्ठाए भूय गाम विहिंसइ ॥ ८ ॥ हिंसे बाले मुसावाई माइल्ले पिसुणे सढे । भुंज माणे
३३ सुर मसं सेय मेयति मन्नई ॥ ९ ॥ कायासा वयसा मत्ते वित्ते गिध्धेय इत्थिसु । दुहओ मल सचिणइ सिसुनागोव्व मट्टिय ॥ १० ॥

'ए काम भोग अत्यारे मारा हाथमाज छे, पण भविष्यना सुख तो अनिश्चत छे. परलोक छे के नहि ए कोण जाणे छे ? [६] एवो लपट बडाइ करे छे के, 'जेवी गति बीजानी थशे एवी मारी पण थशे.' पण एवा मूर्ख माणस काम भोगना रागे करीने अते क्लेश [दुःख] पामे छे [७]. आवी अज्ञानताथी ए मूर्ख माणस त्रस अने स्थावर जीवने दुःख देवानु आरभे छे अने निरर्थक कार्यने अर्थे घणा जीवोनो निरर्थक नाश करे छे. [८]. एवो मूर्ख माणस हिंसा करे छे, मृषावाद [जूठु] बोले छे, कपट आदरे छे, पारकी निंदा करे छे, ठगबाजी रमे छे, मद्य मास सेवे छे, अने एम माने छे के आ बधुं हुं बहु सारुं करु छुं. (९). जेम अळसीआ माटी खाय छे, माटीमा रहे छे अने अते माटीमाज सूकाइने मरे छे तेम कायें अने वचने करीने उन्मत्त तथा द्रव्य अने स्त्रीने विषे लुब्ध माणस, राग द्वेष करीने बने प्रकारे [मनथी अने कायाथी] पाप बांधे छे.२ (१०).

१ 'आ भव मीठो तो पर भव कोणे दीठो'–एवो अज्ञानतानो भ्रम. २. प्रो. जेकोबी आ गाथानो अर्थ करता नीचेना शब्दो वापरे छेः–Over bearing in acts and words, desirous for wealth and women, he accumulates sins in two ways (by his acts and thoughts) just as a young snake gathers dust (both on and in its body)

तओ पुठो आयकेणं गिलाणो परितप्पई । पभीओ पर लोगस्स कम्माणु प्पेहि अप्पणो ॥ ११ ॥ सुयामे नरए ठाणा असीलाणच्च जा गई । बालाण कूर कम्माणं पगाढा जथ्थ वेयणा ॥ १२ ॥ तथ्थो ववाइयंठाणं जहामे तमणुस्सुय । अहाकम्मेहि गछतो सो पछा परितप्पई ॥ १३ ॥ जहा सागाडिउजाण सम्मं हिच्चा महापहं । विसमं मग्ग मोइन्नो अक्खे भग्गंमि सोयइ ॥ १४ ॥ एवं धम्म विउक्कम्मं अहम्म पडिवज्जिया । बाले मच्चु मुहं पत्ते अक्खे भग्गेव सोयई ॥ १५ ॥ तओ से मरण तंमि बाले सतस्सइ भया । अकाम मरणं मरइ धुत्ते वा कलिणा जिए ॥ १६ ॥

पछी ते ग्लानि पामे छे अने रोगथी घेराय छे; अने पोतानां दुष्ट कर्मनुं चिंतवन करतो ते परलोकथी डरे छे. [११]. नरकनां स्थान, अने पापी जीवनी गति [ए बन्ने] विषे में साभळ्युं छे; ज्यां क्रूर कर्म करनार मूर्ख माणसने दारुण दुःख वेठवा पडे छे. (१२). पछी ते पोते उपार्जेला कर्म प्रमाणे जन्म धारण करवाने माटे (नरकना) उत्पत्तिस्थानमां जाय छे अने त्यां पश्चाताप करे छे (के अरेरे ! में बहु भूडुं कर्युं). एम में [श्री महावीर देव पासेथी] साभळ्युं छे. [१३]. जेम कोइ गाडीवान राज मार्ग [धोरी सडकनो रस्तो] जाणवा छता ते छोडीने विषम मार्गे गाडुं चलावे छे, अने पछी गाडानी धरी भांगी जवाथी शोच करे छे, तेम जे मूर्ख माणस श्री तीर्थंकर देवनो भाखेलो धर्म छोडीने अधर्म मार्ग अंगीकार करे छे ते मरण काळे (धरी भांगवाथी जेम गाडीवान शोच करतो हतो तेम) शोच करे छे. [१४–१५]. पछी ज्यारे मरणनो समय आखरे आवी पहोंचे छे त्यारे ते मूर्ख भयथी कंपे छे, अने ते 'अकाम मरणे' मरे छे अने दाव [द्युत दोष] थी जीतायेलो जुगारी जेम शोच करे छे तेम ते पापी जीव [तक गुमाववाथी] शोच करे छे. (१६).

एय अकाम मरणं बालाणं तु पवेइयं । एत्तो सकाम मरणं पंडियाण सुणेहमे ॥ १७ ॥ मरणंपि सपुन्नाणं जहा मे तमणुस्सुय । विप्पसन्न मणाघायं संजयाणं वुसीमओ ॥ १८ ॥ न इमसव्वेसु भिक्खूसु न इमं सव्वेसु गारिसु नाणा सीला अगारथ्था विसमंसी लाय भिक्खूणो ॥१९॥ सति एगेहिं भिक्खूहि गारथ्था सजमुत्तरा । गारथ्थेहिय सव्वेहिं साहवो सजमुत्तरा ॥ २० ॥

मुर्खनु [१]अकाम मरण (बाल मरण) आ प्रमाणे समजाव्या पछी हवे डाह्या पुरुषना सकाम[२] मरण [पंडित मरण] विषे कहुं छु ते सांभळो [१७]. पुण्यवंत मनुष्यो जे सयमथी पोताना आत्माने अने विकारोने वश राखी शके छे तेना पडितनुं सकाम मरण व्याकुळता अने विघ्न रहित होय छे, एम में गुरु मुखेथी सांभळ्यु छे. (१८). एवु मरण सघळा साधुने तेमज सघळा ग्रहस्थने प्राप्त थतु नथी. कारण के ग्रहस्थना आचार विविध प्रकारना होय छे अने साधुना आचार अति विषम छे. [१९]. कोइ कोइ संसारी केटलाक [नामधारी] साधु करता सयममा श्रेष्ट होय छे. पण [खरा] साधु सघळा ससारी करता संयममां उत्कृष्ट होय छे.[३] [२०].

१. Death against one's will २. Death with one's will. ३. मो. जेकोबीना आ सबंधना शब्दो स्मरणमा राखवा लायक छेः—Some householders are superior to some monks in self-control, but the saints are superior to all householders in self-control अहिं monk अने Saint वचेनो तफावत समजवो जोइए.

उ.अ. ५. चीराजिणं न गिणिणं जडी संघाडी मुंडिणं । एयाणिविन तायंति दुस्सील परियागयं ॥ २१ ॥ पिंडोलएव्व दुस्सीले नरगाओ न मुच्चइ । भिक्खाएव्वा गिहत्थेवा सुव्वए कम्मई दिव्वं ॥ २२ ॥ आगारि सामा इयंगाइ सड्ढिकाएण फासए । पोसह दुहओ पक्ख एगराइ न हावए ॥ २३ ॥

---

३६ चीर, वल्कल, अजाचर्म धारण करवाथी, या तो नग्न रहेवाथी, जटा राखवाथी, कथा धारण करवाथी, माथु मुंडाववाथी अने एवा एवा बाह्य–आचार–निशानो ग्रहण करवाथी काइ दुराचारी कुमार्गी (साधु) पोतने दुर्गतिथी बचावी शकता नथी. (२१). दुःशील भिक्षा मागीने आजीविका करे पण अनाचार सेवे अने पाप कर्म वर्जे नहि तो ते नरकथी छूटे नहि; पण पवित्र वर्तन राखनार [पोतानां व्रत रुडी रीते पाळनार] साधु होय के संसारी होय तो पण स्वर्ग जाय छे.१(२२). श्रद्धावंत श्रावके सामायिकना अंग कायाये करीने पाळवा जोइए. शुक्ल अने कृष्ण पक्षमां [आठम, पाखी वगेरेना] शुद्ध भावे पोषा२ करवा जोइए. कोइ दिवस ते करवानुं चूकवुं न जोइए३. (२३).

---

१. संसारमा रहीने ऐहिक अने आमुष्मिक–आ भव परभवनुं–श्रेय साधवानी इच्छावाळाए आ शब्दो सोनेरी अक्षरे लखी राखवा जोइए." A pions man, whethei monk oi householdei, ascends to heaven " २. पोपह व्रत-आत्माने पोषनो संसारी खटपटथी अळग रही, सर्व व्यापार, सर्व आहार [पाणी, मुखवास, मेवो वीगेरे] अब्रह्म, नोकर चाकर वीगेरेनी सेवा-आ बधु एक दीवस अने एक रात्रीने माटे त्यागी आश्रवनो रोध करी संवरमा प्रवर्तवुं. शान्त मने ज्ञान, ध्यानमा दीवस निर्गमन करवो. बुद्ध धर्मीओमां पण आवुं व्रत छे जे 'उपोसथ' (Up'osatha) कहेवाय छे. ३. मूळ पाठमा 'एगराइं' शब्द छे जेनो शब्दार्थ " एक रात्रीये पण पोसहनी हानी न करे " एम भाषाकार लखे छे. जेनो भावार्थ ए होइ शके छे के अष्टमी, पक्खीना पोषा कोइ दीवस चुकवा नहि. दीवस दरम्यान अवकाश न मळे तो देसावगासीक करवा.

एवं सिक्खा समावन्ने गिहिवासेवि सुव्वए । मुच्चई छविपव्वाओ गच्छे जक्खस लोगयं ॥ २४ ॥ अह जे संवुडे भिक्खूदुन्ह मन्नयरे सिया । सव्व दुक्ख पाहीणेवा देवेवावि महिड्डिए ॥ २५ ॥ उत्तराइ विमोहाइ जुइमंताणु पुव्वसो । समाइन्नाइ जक्खेहिं आवासाइ जस सिणो ॥ २६ ॥ दीहाउया इड्ढिमता समिद्धा कामरूविणो । अहुणो ववन्न सकासा भुज्जो अच्चिमालिप्पभा ॥२७॥ ताणि ठाणाणि गच्छति सिक्खित्ता सजम तव । भिक्खाएवा गिहत्थेवा जेसति परिनिव्वुडा॥२८॥तेसिं सोच्चा सपुज्जाण संजयाण वुसीमओ । नसततति मरणते सीलवंता बहुस्सुया ॥२९॥

आ रीते शिक्षा ग्रहण करीने जे कोइ गृहवासमा [ग्रहस्थाश्रममां] रहीने पण सुव्रत पाळे छे ते १ओदारिक शरीर छाडीने यक्ष लोकमां जाय छे.(२४).पोताना आत्माने संवरे करीने वश राखनार साधु वेमाथी एक गतिने प्राप्त थाय छे; का तो सर्व कर्मनो क्षय करीने ते सिद्ध थाय छे [मोक्षे जाय छे]; अथवा (जुज कर्म बाकी रह्यां होय तो) महा रिद्धिवान देवता थाय छे. (२५). अनुत्तर विमान ज्या मोहनी कर्म रहेलां नथी, जे ज्योति (तेज)थी भरपूर छे, ज्या यशस्वी देवताओनो वास छे, जेओ दीर्घायुषी, रिद्धिवंत, समृद्धिवान, अति तेजस्वी छे, जेओ नवा नवा रुप धारण करीने सुख भोगवे छे, तत्काळ उपज्या होय एवुं [तरतना जन्मेला बाळकना जेवु] जेनु स्वरुप छे, जेनी अनेक सूर्यना जेवी कान्ति छे; एवा देवलोकने विषे हरकोइ त्यागी अथवा ग्रहस्थ, जेणे बारे भेदे तप अने सत्तरे भेदे सयम पाळ्यो होय अने पोताना आत्माने वश राख्यो होय, ते जइ शके छे. (२६-२७-२८). जे पुज्य साधु पुरुषो पोताना आत्माने वश राखे छे अने दृढ सयम पाळनारा छे तेमनी पासेथी आ (बोध) साभळ्या पछी, बहु श्रुत अने शीलवत पुरुषो मरण काळे भय पामता नथी २ [२९].

१. जे शरीरमा हाड मास होय ते. २. प्रो. जेकोबी आ माटे एवा शब्दो वापरेछे केः–The virtuous and the learned do not tremble in the hour of death

तुलिया विसेस मादाय दयाधम्मस्स खंतिए । विप्पसीइज्ज मेहावी तहाभूएण अप्पणो ॥३०॥ तओ काले अभिप्पेए सड्ढी तालिसमंतिए । विणएज्ज लोम हरिसं भेयंदेहस्स कंखए ॥ ३१ ॥ अहकालंमि संपत्ते अघायायसमुस्सयं । सकाम मरणं मरइतिएहमन्नयरंमुणी त्तिबेमि ॥ ३२ ॥

❀ ॥ इति अकाम सकाम मरणं ज्झयणं पंचम सम्मत्तं ॥ ५ ॥ ❀

बुद्धिवान पुरुष (बन्ने प्रकारना मरणनुं) तोल [परीक्षा] करीने अने (सकाम अने अकाम मरण) ने मांथी वधारे सारुं होय ते पसंद करीने, दया, धर्म, क्षमादि आदरे तो ते [मरण काळे] पोताना आत्माने शान्त अने क्षमाशील राखी शके छे. [३०]. मरण काळ प्राप्त थाय त्यारे श्रद्धावंत साधुए पोताना गुरुनी समीपे मरण–भयने त्यागीने (हर्ष,-शोक तजीने) शरीर त्याग (देह क्षय)ने इच्छवो. [३१]. देह त्याग करवानो समय आवी पहोंचे त्यारे प्रज्ञावान पुरुषने *त्रणमांथी एक प्रकारे सकाम मरण प्राप्त थाय छे. [३२].

◇॥ पांचमुं अध्ययन संपूर्ण. ॥◇

*भक्त परिज्ञा, इंगित मरण, पादपोपगमन. भक्त परिज्ञा=पोते लीधेली प्रतिज्ञाओ पाळीने अणसण करी शान्तीथी शरीर छांडवुं ते. इंगित एटले सांकेतिक, धारेला प्रदेशमांज हरवा फरवाना निर्णयवाळुं अणसण करीने शरीर छाडवुं ते इंगित मरण. पादप एटले वृक्ष तेने उपगमन सरखा थवुं एटले वृक्ष माफक स्थिर रहेवुं. कोइ पण अंगोपांग हलाववा नहि एवा अणसणने पादपोपगमन कहे छे. आ विषे विस्तार पूर्वक विवेचन श्री आचारांगजी सूत्रना प्रथम श्रुत स्कंधना आठमा अध्ययनना ५, ६, ७, ८ उद्देशामां छे.

अध्ययन ६. * लघु निग्रन्थ [क्षुल्लक साधु].

जावंति विज्जा पुरिसा सव्वेते दुक्खसभवा । लुप्पं तिबहुसोमूढा ससार मिअणतए[1] ॥ १ ॥ सामिक्ख पडिए तम्हा पास जाइपहे बहू । अप्पणा सच्च मेसिज्जा[1] मित्तिं[1] भूएसु कप्पए ॥२॥ माया पियाएन्हुसा[1] भाया भज्जा पुत्ताय ओरसा । नालते मम ताणाय लुप्पतस्स स कम्मुणा ॥ ३ ॥ एय मट्ठ स पेहाए पासे समिय दसणे । छिंदे गहिं सिणेहच न कंखे पुव्वसथव ॥ ४ ॥

१. पाठांतरे ' अनतगे ', ' मेसेज्जा ', ' मित्त ', ' पियान्हुसा ' वीगेरे तफावत छे.

⊛ अध्ययन ६ ⊛

जे मनुष्यो तत्वना अजाण छे ते सघळा दुःखना भिागी थाय छे. अनन्त संसारमां ते मूढ पुरुषो अनेक प्रकारनी पीडा पामे छे. (१). पुत्र कलत्रादि मोहपास[1] अने (एकेन्द्रियादि) योनिमां भ्रमणनुं स्वरुप समजीने, तत्वज्ञ पुरुष पोताना आत्माने सयमने विषे स्थापे छे, अने सर्व जीव तरफ मित्रभाव राखे छे. (२). [ते एम विचारे छे के]–'माता[2], पिता, पुत्रवधु भ्राता, भार्या अने पुत्रादि ज्यारे हु मारा पोतानां कर्मने लीधे दुःख भोगवीश त्यारे ते थकी, तेमांनुं कोइ मारूं रक्षण करवाने समर्थ थशे नहि. (३). आ सत्य तत्वरुपी अर्थ बुद्धिवान पुरुषे सम्यग दृष्टिथी विचारवो-स्मरवो, मिथ्यात्व अने स्नेहने छाडीने पूर्व, परिचयनां (ग्रहस्थाश्रमना) सुख याद न करवां.[४].

१. श्री देवेन्द्र आहिं एक सस्कृत श्लोक टांके छे. " कलत्रानिगडं दत्वा, न सतुष्टः प्रजापतिः । भुयोऽपि अपत्या रुपेन ददाति गलशृखलम् ॥ " तनो भावार्थ एवो छे के, सृष्टिमा पुरुषोने स्त्रीरुपी पास-बेडीमा बांधवामां आवे छे एटलुंज नहि पण वधारामां बाळ बच्चां-संतानरुपी सांकळ तेमना गळानी आसपास वींटाळवामा आवे छे. २. आ ज पाठ श्री सुयगडांग सूत्रना प्रथम सूत स्कधना नवमा अध्ययननी पांचमी गाथामां छे.

गवासं मणि कुंडलं पसवो दास पोरुसं । सव्व मेयं चइत्ताणं कामरूवी भविस्ससि ॥ ५ ॥ थावरं जंगमं चेव धणं धन्नं उवक्खरं । पच्चमाणस्स कम्मेहिं नालं दुक्खाउ मोयणे ॥ ६ ॥ अज्झत्थं सव्वओ सव्वं दिस्स पाणे पियायए । नहणे पाणिणो पाणे भय वेराउ उवरए ॥ ७ ॥ आयाण नरयं दिस्स नायएज्ज तणामवि । दोगुंछी अप्पणोपाएदिन्नं भुंजिज्ज भोयणं ॥ ८ ॥ इहमेगेउ मन्नंति अपच्चक्खाय पावग । आयरियं विदित्ताणं सव्व दुक्खावि मुच्चई ॥९॥

गाय, अश्व, मणि, कुंडल, पशु, दास, सेवक इत्यादि सर्व वस्तु छांडवाथी (हे शिष्य! अथवा हे जीव!) तुं [१]स्वेच्छारूप धारी देवता थइश. (५). [२]स्थावर परिग्रह [घर, हाट वीगेरे] अने जंगम परिग्रह (धन, धान्य वगेरे) जीवने पोताना कर्मना दुःखथी मूकाववाने समर्थ नथी. (६). सर्व प्रकारना [३]सुख दुःख सौ सौना आत्मानेज लागु पडे छे. माटे प्राणी मात्रने पोत पोतानो जीव वहालो छे एम जाणीने कोइ जीवने हणवा नहि; अने तेमने भय उपजाववाथी तथा तेमना उपर वेर लेवाथी साधुए दूर रहेवुं.[७]. अदत्तने नर्कना हेतु जाणीने साधुए अण दीधुं तृण मात्र पण लेवुं नहि; शरीरना निभाव अर्थे काष्ठ-पात्रमां [पातरामां]ग्रहस्थनो दीधेलो सुझतो आहार जमवो. (८). आ समारमां केटलाक (कपिलादी ज्ञानवादीओ) एम माने छे के ' हिंसादिक[४] पाप कर्म तज्या विना पण पोताना यतना आचार पाळवाथीज सर्व दुःखथी मुक्त थवाय छे. (९).

१. देवताओ पोतानी मरजी मुजब रुप धारण करी शके छे, कारण तेमने वैक्रय शरीर होय छे. २.प्रो. जेकोबीना भाषान्तरमा आ गाथा नथी. केटलीक हस्त लीखीत प्रतोमा पण आ गाथा नथी एम तेनुं कहेवुं छे. ३. सुख दुःखनो ज्ञाता—जाणनार अने वेदनार आत्माज छे. सुख दुःख आत्मामाज रहेलुं छे. शब्दार्थ एवो छे के, पोताने थतुं सुख दुःख बधी रीते सर्वने थाय छे. ए पदनो संस्कृत अनुवाद एम छे के " आत्मस्थं सर्वतः सर्वं. " ४. ज्ञान मार्ग उपर आ आक्षेप रुप छे.

भणंता अकरिताय बंध मोक्ख पइण्णिणो । वाया वीरिय मत्तेणं समासा सति अप्पग ॥१०॥ न चित्ता तायए भासा कओ विज्जाणु सासण (विसन्ना पावकम्मेहिं वाला पडिय माणिणो ॥ ११ ॥ जे केइ सरिरे सत्ता, वन्ने रूवेय सव्वसो । मणसा काय वक्केणं सव्वेते दुक्ख समवा ॥१२॥ आवन्ना दीह मद्धाण ससारंमि अण तए । तम्हा सव्व

४१ दिस परस अप्पमत्तो परिव्वए॥१३॥ बहिया उद्ध मादाय नाव कक्खे कयाइवि। पुव्व कम्म खय ठाए इम देह समुद्धरे ॥ १४ ॥

आ जगतमा कटलाक एम माने छे के ज्ञानथीज मुक्ति छे,[१] क्रियानी काइ जरुर नथी. एवा मनुष्यो बन्ध मोक्षना साधननो स्वीकार करवा छतां ते प्रमाणे क्रिया करता नथी, अने मात्र वचनना आडम्बरथी पोताना आत्माने आश्वासन आपे छे. (१०). (पण ज्ञाननो अहंकार राखनार एम नथी जाणता के) भाषा ज्ञान जीवने नरके जतो बचावी शकशे नहि.[२] विद्या पठन [न्याय, मीमांसा वगेरे] मात्र जीवनुं पापथी रक्षण शी रीते करी शके? पाप कर्मने विषे मच्या रहेनार मूर्ख माणसो पापमा ऊंडाने ऊंडा डुबता जाय छे तो पण पोताने पंडित मानी वेसे छे. [११]. जे प्राणी मन, वचन अने कायाए करीने शरीर, वर्ण अने रूपने विषे आसक्त रहे छे ते दुःखी थाय छे.[३] (१२). तेओ आ अंतरहित संसारमा लांबे मार्गे भव भ्रमण करे छे, माटे साधुए गतागतनु स्वरुप ओळखीने संसारमां पाप कर्मथी दूर रहीने विचरवु [१३] संसारथी अति उत्तम जे मोक्ष [मुक्ति] ते मेळववा मनोरथ करीने रिद्धि विषयादिकनी कदि वाञ्छना करवी नहि, पण पूर्व कर्मना क्षयने अर्थे काया निभाववी. (१४).

१. तेओ मात्र ज्ञानथीज मोक्ष माने छे, आपणे जैनो ज्ञान अने क्रियाथी मोक्ष मळवानु मानीए छीए. वातो मोटी करवी अने वर्तनमा काइ नहि एम न थवु जोइए. २ वातोथी वडा पाकी जता नथी—Clever talking will not work salvation ३. मो. जेकोबी वे गाथा पछी आ गाथा राखे छे. अहिं मुळ प्रमाणे अनुक्रम राखेलो छे.

विगिंच कम्मुणोहेउं कालं कंखी परिव्वए । मायं पिंडस्स पाणस्स कडं लध्धूण भक्खए ॥१५॥ संनिहिंच न कुव्वेज्जा लेवमायाए संजए । पक्खी पत्त समादाय निरवेक्खो परिव्वए ॥१६॥ एसणा समिओ लज्जू गामे अणियओ चरे । अप्पमत्तो पमत्तेहिं पिंडवाय गवेसए ॥१७॥ एवं से उदाहु अणुत्तर नाणी अणुत्तर दंसी । अणुत्तर नाण दंसण धरे अरहा नायपुत्ते भयवं । वेसालिए वियाहिए त्तिबेमि ॥१८॥

⊛ इति खुड्डागनियंठिय ज्झयणं छठ सम्मत्तं ६ ⊛

कर्म-बन्धननां कारण दूर करवां[१] अने अवसरे (योग्य काळे) स्वक्रिया-अनुष्ठान करतां विचरवुं[२] [अवसरज्ञ थवुं] आहार पाणीनी मात्रा [केटलुं व्होरवुं ते] जाणीने, ग्रहस्थे पोताने माटे बनाव्यो होय तेवो सूझतो आहार लेवो. [१५]. साधुए अन्नादिकनो मुदल संग्रह करवो नहि; पातराने लेप थाय एटलुं पण घी वगेरे राखवुं नहि. पण पक्षी जेम पत्र [पांख] एकठी करीने उडे छे, तेम साधुए पात्र (पातरां) एकठां करीने कशी पण अपेक्षा राख्या सिवाय विचरवुं. [१६]. लज्जावान साधु निर्दोष आहार व्होरतो संयम मार्गे विचरे छे, अने गाम या नगरमां नित्य (स्थिर) वास करतो नथी. अने प्रमादी ग्रहस्थना समुहमां अप्रमादी रहीने सूझतो आहार ग्रहण करे छे. [१७]. सर्वोत्कृष्ट ज्ञानी, सर्वाधिकदर्शी अने अनुत्तर ज्ञान दर्शनना धारण करनार अरिहंत ज्ञातपुत्र वैशालिक[३] [सिद्धार्थ अने त्रिशलाना पुत्र] श्री महावीर भगवाने आ प्रमाणे कह्युं छे. (१८).

※ ॥ छठ्ठुं अध्ययन संपूर्ण. ॥ ※

१. मुळ पाठमां 'विगिंच' शब्द छे जेनो अर्थ टीकाकार-दूर करवुं-करे छे मो. जेकोबी Recognize शब्द वापरेछे. २. मो. जेकोबी मरणनी राह जोता विचरवुं एम अर्थ करे छे. ३. वैशालिकना घणा अर्थ छे. विशाळ शिष्योवाळा, वैशालीना रहीश, विशाळाना पुत्र वीगेरे.

अध्ययन ७. मेंढानुं आख्यान. (श्री एलक[1] अध्ययन).

जहाएसं समुद्दिस्स कोइ पोसेज्ज एलय । ओयण जव सदिज्जा पोसेज्जावि सय गणे ॥ १ ॥ तओ से पुट्ठे परिवूढे जायमेए महोदरे । पीणिए विउले देहे आएस परिकंखए ॥ २ ॥ जाव नएइ आएसे ताव्ज्जीवइ से दुही । अह पत्तमि आएसे सीस छित्तूण भुजइ ॥ ३ ॥ जहा से खलु[2] उरब्भे आएसाए समीहिए । एव बाले अहम्मिट्ठे इहई नरया उय ॥ ४ ॥ हिंसे बाले मुसा वाई अद्धाणमि विलोवए । अण्ण दत्त हरे तेणे माई कन्नू हरे सढे ॥ ५ ॥

१. एलय=एलक=A lamb. २ कोइ मतमा 'से' अक्षर 'खलु' पछी छे 'जहा खलु से' पण तेथी अर्थमा फारफेर थतो नथी.

❂ अध्ययन ७. ❂

परोणाने निमित्ते कोइ (मासाहारी) माणस मेंढाने उछेरे, तेने जव, मग, मठ विगेरे खवडावे छे अने पोताना घरना आंगणे तेने पाळी पोषीने पुष्ट करे (१). पछी ज्यारे ते रातो मातो, मोटा पेटवाळो अने पुष्ट शरीरवाळो थाय त्यारे घरनो धणी एम इच्छे छे के हवे परोणो आवे तो सारुं. [२]. ज्या सुधी परोणो न आवे त्या सुधी ते बिचारु प्राणी [मासाहारीने घेर] जीवतो पामे छे. पण परोणो आव्यो के तरतज तेनु माथु छेदाय छे अने ते खवाय छे [३] जेवी रीते परोणानी खातर मेंढानुं सारी रीते पालण पोषण थाय छे, तेवी रीते मूर्ख अने अज्ञानी मनुष्यो नरकनी जींदगी माटे पातेनुं पोषण करे छे. (४). एवो प्राण घातक मूर्ख माणस जीव हिंसा करे छे, मृषावाद बोले छे, वाटपाडुनो धंधो करे छे, चोरी करे छे, अदत्तादान ले छे अने कोइनुं धन हरवानु चिंतन मनमा कर्या करे छे. (५).

इथ्थी विसय गिद्धिय महारंभ परिग्गहे । भुञ्जमाणे सुरं मंसं परिवूढे पर दमे ॥ ६ ॥ अयकक्कर भोइय तुदिल्ले चियसोणिए[1] । आउय नरए कखे जहाए संवएलए ॥ ७ ॥ आसणं सयणं जाणं वित्त कामेय भुजिया । दुरसाहड धण हिच्चा बहु संचिणिया रय ॥ ८ ॥ तओ कम्म गुरूजतु पच्चुपन्न परायणे । अयव्व आगया एसे मरण तमिसोयर ॥ ९ ॥ तओ आउ परिक्खीणे चुयादेह विहिंसगा । आसुरीय दिस बाला गच्छति अवमातम ॥ १० ॥

१. कोइ प्रतमा ' लोहिए ' शब्द छे.

ते मूर्ख, स्त्री अने विषयमा लुब्ध रहे छे, महा आरम्भ अने परिग्रहमां मच्यो रहे छे, मद्य पीए छे, मांस खाय छे अने मस्त बनीने अन्यने दमे छे. (६) तेवा (विषयासक्त) अजा मास अति स्वादथी खाय छे, तेनुं उदर मोढ थाय छे, तेनी नाडोमां लोही उछाळा मारे छे, पण मेंढो जेम अंते परोणाने माटे हणाय छे तेम तेने अंते नरकनुं आयुष्य प्राप्त थाय छे. [७] सुखासन, छप्पर पलग, गाडी घोडा, द्रव्य, कामभोगादि भोगवीने, महा महेनते उपार्जन करेला धननो व्यय करीने, अनेक पापरुपी मळ भेगो करीने, आ जगतनेज सर्वस्व समजीने, भारे कर्मी जीव, जेम मेंढो, परोणो आववाथी दुःख पामे छे तेम ते मरण काळ आवी पहोंचवाथी शोच करे छे.–दुःखी थाय छे. (८-९). पछी प्राणी हिंसा करनार पापी मनुष्य पोताना आयुष्यना अंते मनुष्य देहथी भ्रष्ट (मानव भवथी विमुख) थाय छे, अने (पाप कर्मने लीधे) परवश पडलो होवाथी अंधकारमय असुर लोक (नरक गति) मां जाय छे. [१०].

जहा कागणीएहेउ सहसहारएनरो । अपथ्थ अबगभुच्चा रायारज्ज तु हारए ॥ ११ ॥ एवं माणुसगाकामा देव कामाण अतिए । सहस्स गुणीया भुज्जो आउकामाय दिव्विया ॥ १२ ॥ अणेगवासाणउया जासा पन्नव उठिई । जाणि जीयति दुम्मेहा उणेवाससयाउए ॥१३॥ जहायतिन्निवाणिया मूलवितूणनिग्गया । एगोध्थलहए लाभ एगोमूलेण आगओ ॥ १४ ॥ एगो मूलपि हारित्ता आगओ तथ्थ वाणिओ ववहारे उवमा एसा एव धम्मे वियाणह ॥१५॥

जेम कोइ माणस एक *कोडीने माटे हजार दीनार हारी जाय, जेम *पेलो राजा अहितकारी आम्रफल खावाथी पोतानु आखुं राज्य हारी गयो हतो, तेम देवताना कामभोग आगळ मनुष्यना कामभोग कोडी समान छे, वळी देवताना कामभोग अने आयुष्य मनुष्यना कामभोग अने आयुष्य करता सहस्र गणां अधिक छे. [११-१२]. उत्तम ज्ञानवाळा पुण्यशाळी देवता अनेक नियुतनु[१] [असंख्य वर्षनुं] आयुष्य भोगवे छे, दुर्बुद्धिवाळो मनुष्य सो वर्षथी ओछा आयुष्यवाळी जींदगीमां देवताना लांबा आयुष्यनो लाभ गुमावे छे (१३).त्रण वेपारी पुजी लइने घेरथी वेपार करवाने नीकळे छे. तेमानो एक लाभ मेळवीने, बीजो मूळगी मूडी लइने अने त्रीजो पोतानी सघळी पुजी गुमावीने पाछो आवे छे. आ व्यवहारिक दृष्टान्त जींदगीने लागु पाडतां शीखवु जोइए. (१४–१५)..

---

*आ बन्ने उदाहरणनुं स्पष्टिकरण करवा माटे टीकाकारे बे दृष्टांत आपेला छे, पण वगर दृष्टान्ते अर्थ स्पष्ट होवाथी ते अहिं उतार्या नथी. कोडी अहिं रुपियाना एंसीमा भागना नाना पुराणा सिक्का माटे वापरी छे. मूळ पाठमा 'कागणी' शब्द छे. टीकाकार ते माटे 'काकिण्य' (Kakini) शब्द वापरे छ, १. नियुत एटले ४९,७८६,१३६,०००,०००,०००,०००,०००,०००,०००, वर्ष तेनु कोष्टक नीचे मुजब छे. ८४००००० वर्ष=एक पूर्वांग. ८४००००० पूर्वांग=एक पूर्व. ८४००००० पूर्व=एक नियुतांग. ८४००००० नियुतांग=एक नियुत.

माणु सत्तं भवे मूलं लाभो देव गई भवे। मुल छेएण जीवाणं नरग तिरिक्खत्तणं धुवं ॥१६॥ दुहओ गई बालस्स आवई वह मूलिया। देवत्तं माणुसत्तंच ज जिए लोलुयां सढे॥१७॥तओ जिएसई होइ दुविहं दुग्गइंगए। दुल्लहा तस्स उम्मग्गा अद्धाएसु चिरादवि॥ १८ ॥ एवं जियं संपेहाए तुलिया बालच्च पंडिय। मूलियते पवेसंति माणुस्सं ज्जोणि मंति जे॥१९॥ वेमायाहिं सिक्खाहिं जेनरा गिहि सुव्वया। उव्वेंति माणुस्सं जोणि कम्म सच्चाहुपाणिणो॥२०॥

मनुष्य भव ए पुंजीरूप छे; देवगति लाभ रूप छे. ते पुंजी गुमाववाथी माणसने नरक अथवा तिर्यंच योनिमां (पशु योनिमा) जन्मवु पडे छे. [१६]. पापी मनुष्य माटे बे गति [नरक अने तिर्यंच] निर्माण छे; जे बन्ने गति दुःखदायक अने पीडाकारक छे, कारण के [स्त्रीने विषे] लुब्ध रहेवाथी ए शठ पुरुष मनुष्यपणुं अने देवपणुं हारी बेठो छे. [१७]. ए बन्ने (देवपणुं अने मनुष्यपणुं) हारी बेठेलो होवाथी तेने बेवडी दुर्गति [नरक अने तिर्यंच] वेठवी पडे छे; अने ए (अधो) गतिथी नीकळीने ल्यारे काळे पण उच्च [देव या मनुष्य] गति प्राप्त करवी दुर्लभ थइ पडे छे. (१८). मूर्खने आ प्रमाणे हारेलो देखीने प्रत्येक मनुष्ये मूर्खपणाना अने पंडितपणाना सारासारनी विचार पूर्वक तुलना करवी जोइए जे मनुष्य धर्म अंगीकार करीने मनुष्य योनी पामे छे तेनी तुलना मूळ मूडी लइ पाछा आवनार वेपारी साथे थाय छे.[१९]. जे ग्रहस्थो विनितपणानी विविध प्रकारनी शिक्षाए करीने सदाचार पाळे छे ते मनुष्य योनीने पामे छे; कारण के प्राणी मात्रने पोत पोताना कर्मनु फळ मळे छे. (२०).

---

१. मनुष्य गति चार कारणे मळे छे. [१] 'पगाई भद्दीयाए' दयाळु स्वभाव-प्रकृतिनो भेदीक (Kind disposition (२) 'पगाई वीणयाए' विनय (Love of discipline). (३) 'शानु कोशीयाए' अनुकंपा (Compassion) (४) 'अमच्छरीयाए' गर्व रहीत (Want of envy) आ संबंधे विस्तार पूर्वक विवेचन श्री ठाणांगजी सूत्रमां छे.

जेसि तु विउला सिक्खा मूलियंतेअइथ्थिया । सीलवंता सवीसेसा अदिणाजंति देवयं ॥२१॥ एव मदीणवं भिक्खुं अगारिच वियाणिया । कहन्नू जिच्च मेलिक्ख जिच्चमाणोनसविदे ॥२२॥ जहा कुसग्गे उदयं समुद्देण समंमिणे । एवं माणुस्सयाकामादेवकामाण अतिए ॥ २३ ॥ कुसग्गमित्ता इमेकामा संनिरुद्धंमि आउए । कस्सहेउं पुरा काउं जोगखेम नसविदे ॥२४॥ इह कामानियट्टस्स अत्तट्ठे अवरज्झइ । सोच्चानेयाउयंमग्गं जभुज्जो परिभस्सई ॥ २५ ॥ इह कामानियट्टस्स अत्तट्ठेनाव रज्झई । पूइदेह निरोहेण भवेदेवेत्तिमे सुय ॥२६॥

पग जे मनुष्य विपुल अने विस्तीर्ण शिक्षा [पच महाव्रतरुप] ग्रहण करीने ते पाळे छे तेनी तुलना पुजी उपरांत लाभ मेळवनारनी साथे थइ शके छे, एवा सर्वोत्तम आचारवाळो सदाचारी पुरुष आनदथी देवपणुं पामे छे. [२१]. एवी रीते सदाचारी साधु तथा ग्रहस्थ पेताना साधुपणाना अने ग्रहस्थपणाना लाभ समजे छे. तेथी पंडित पुरुषोए सावधान रहीने धर्म मार्गे प्रवर्त्तवुं जोइए. (२२). मनुष्यना कामभोगनी तुलना कुशाग्रे [दर्भनी अणी उपर] रहेला जळ बिन्दु साथे थइ शके छे, ज्यारे देवताना सुखनी सरखामणी समुद्रना (अगाध) जळनी साथे करी शकाय छे. [अर्थात देवताना प्रमाणमा मनुष्यना सुख नहि सरखां छे]. [२३]. मनुष्यना अति अल्प आयुष्यनां कामभोग कुशाग्र रहेला जळ बिन्दु समान छे तो पछी [देवताना अपार सुखनो] अलभ्य लाभ प्राप्त करीने ते साचवी राखवाने कयो मनुष्य न इच्छे ? (२४). जे जीव कामभोगथी निवृत थतो नथी ते आत्मानो खरो हेतु [मुक्ति] गुमावे छे. जो के मोक्षनो देनार शुद्ध मार्ग सांभळीने ते तेणे अंगीकार करेलो छे, छता ते थकी ते वारंवार भ्रष्ट थाय छे. [२५]. जे जीव कामभोगथी निवृत्त थयेलोछे ते आत्मानो खरो हेतु (देवलोकादि) गुमावतो नथी. ते एम माने छे के आ अपवित्र शरीर त्यागीने हुं देवता अथवा सिद्ध थइश. (२६).

माणु सत्तं भवे मूलं लाभो देव गई भवे । मूल छेएण जीवाणं नरग तिरिखत्ताणं धुवं ॥१६॥ दुहओ गई बालस्स आवई वह मूलिया । देवत्तं माणुसत्तंच जं जिए लोलुया सढे॥१७॥तओ जिएसइं होइ दुविहं दुग्गइंगए । दुल्लहा तस्स उम्मग्गा अद्धाएसु चिरादवि ॥ १८ ॥ एवं जिय संपेहाए तुलिया बालंच पंडियं । मूलियते पवेसति माणुस्सं ज्जोणि मतिजे ॥१९॥ वेमायाहि सिख्खाहिं जेनरा गिहि सुव्वया । उव्वेंति माणुस्सं जोणिं कम्म सच्चाहुपाणिणो॥२०॥

मनुष्य भव ए पुंजीरुप छे; देवगति लाभ रुप छे ते पुंजी गुमाववाथी माणसने नरक अथवा तिर्यंच योनिमां (पशु योनिमां) जन्मवुं पड़े छे, [१६]. पापी मनुष्य माटे बे गति [नरक अने तिर्यंच] निर्माण छे; जे बन्ने गति दुःखदायक अने पीडाकारक छे, कारण के [स्त्रीने विषे] लुब्ध रहेवाथी ए शठ पुरुष मनुष्यपणुं अने देवपणुं हारी बेठो छे. [१७]. ए बन्ने (देवपणुं अने मनुष्यपणुं) हारी बेठेलो होवाथी तेने नरडी-दुर्गति [नरक अने तिर्यंच] वेठवी पडे छे; अने ए (अधो) गतिथी नीकळीने लांबे काळे पण उच्च [देव या मनुष्य] गति प्राप्त करवी दुर्लभ थइ पडे छे. (१८). मूर्खने आ प्रमाणे हारेलो देखीने प्रत्येक मनुष्ये मूर्खपणाना अने पंडितपणाना सारासारनो विचार पूर्वक तुलना करवी जोइए जे मनुष्य धर्म अंगीकार करीने मनुष्य योनी पामे छे तेनी तुलना मूळ मूडी लइ पाछा आवनार वेपारी साथे थाय छे.[१९]. जे ग्रहस्थो विनितपणानी विविध प्रकारनी शिक्षाए करीने सदाचार पाळे छे ते मनुष्य योनीने१ पामे छे; कारण के प्राणी मात्रने पोत पोताना कर्मनु फळ मळे छे. (२०).

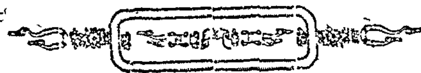
१, मनुष्य गति चार कारणे मळे छे. [१] 'पगाई भद्दीयाए' दयाळु स्वभाव-प्रकृतिनो भेदीक (Kind disposition. (२) 'पगाई वीणयाए' विनय (Love of discipline). (३) 'शानु कोशीयाए' अनुकंपा (Compassion) (४) 'अमछरीयाए' गर्व रहीत (Want of envy) आ संबंधे विस्तार पूर्वक विवेचन श्री ठाणांगजी सूत्रमां छे.

जेसिं तु विउला सिक्खा मूलियंतेअइच्छिया । सीलवंता सवीसेसा अदिणाजंति देवयं ॥२१॥ एव मदीणवं भिक्खुं अगारिंच वियाणिया । कहन्नू जिच्च मेलिक्खं जिच्चमाणोनसंविदे ॥२२॥ जहा कुसग्गे उदयं समुद्देण सममिणे । एवं माणुस्सयाकामादेवकामाण अंतिए ॥ २३ ॥ कुसग्गमित्ता इमेकामा सनिरुद्धंमि आउए । कस्सहेउं पुरा काउं जोगखेम नसंविदे ॥२४॥ इह कामानियट्टस्स अत्तट्ठे अवरज्झइ । सोच्चानेयाउयमग्गं जभुज्जो परिभस्सई ॥ २५ ॥ इह कामानियट्टस्स अत्तट्ठेनाव रज्झई । पूइदेह निरोहेण भवेदेवेत्तिमे सुय ॥२६॥

पण जे मनुष्य विपुल अने विस्तीर्ण शिक्षा [पंच महाव्रतरुप] ग्रहण करीने ते पाळे छे तेनी तुलना पुंजी उपरांत लाभ मेळवनारनी साथे थइ शके छे, एवा सर्वोत्तम आचारवाळो सदाचारी पुरुष आनंदथी देवपणुं पामे छे. [२१]. एवी रीते सदाचारी साधु तथा ग्रहस्थ पोताना साधुपणाना अने ग्रहस्थपणाना लाभ समजे छे. तेथी पंडित पुरुषोए सावधान रहीने धर्म मार्गे प्रवर्त्तवुं जोइए. (२२). मनुष्यना कामभोगनी तुलना कुशाग्रे [दर्भनी अणी उपर] रहेला जळ बिन्दु साथे थइ शके छे, ज्यारे देवताना सुखनी सरखामणी समुद्रना (अगाध) जळनी साथे करी शकाय छे. [अर्थात देवताना प्रमाणमां मनुष्यना सुख नहि सरखा छे]. [२३]. मनुष्यना अति अल्प आयुष्यना कामभोग कुशाग्रे रहेला जळ बिन्दु समान छे तो पछी [देवताना अपार सुखनो] अलभ्य लाभ प्राप्त करीने ते साचवी राखवाने कयो मनुष्य न इच्छे ? (२४). जे जीव कामभोगथी निवृत्त थतो नथी ते आत्मानो खरो हेतु [मुक्ति] गुमावे छे. जो के मोक्षनो देनार शुद्ध मार्ग सांभळीने ते तेणे अंगीकार करेलो छे, छतां ते धर्मथी ते वारवार भ्रष्ट थाय छे. [२५]. जे जीव कामभोगथी निवृत्त थयेलो छे ते आत्मानो खरो हेतु (देवलोकादि) गुमावतो नथी. ते एम माने छे के आ अपवित्र शरीर त्यागीने हुं देवता अथवा सिद्ध थइश. (२६).

इड्डीजुइ जसो वन्नो आउं सुह मणुत्तं । भुज्जोजथ्यमणुस्सेसु तथ्थसे उववज्जई ॥ २७ ॥ बालस्सपस्सबालत्तं अहम्मं पडिवज्जिया-। चिच्चाधम्मं अहम्मिठे नरएसु उववज्जई ॥ २८ ॥ धीरस्सपस्सधीरत्तं सव्वधम्माणु वत्तिणो। चिच्चा अधम्मं धम्मिठे देवेसु उववज्जई ॥ २९ ॥ तुलियाण बालभाव अबाल न्चेव पडिए। चइऊण बालभावं अबाल मेवइ मुणी तिबेमि ॥ ३० ॥

❀ ॥ इति एलयं नाम झयणं सत्तम सम्मत्तं ॥ ७ ॥ ❀



जे लोकमां रिद्धि, कान्ति, यश, कीर्ति, दीर्घायु अने सर्वोत्तम सुख रहेलां छे त्यां ते उत्पन्न थाय छे. (२७). अधर्म अंगीकार मूर्खनी मूर्खाइ तो तमे जुओ ! शुद्ध धर्मनो त्याग करवाथी ए जीव नरकमां उत्पन्न थाय छे. (२८). सत्य धर्मने अनुसरीने चालनार धीर पुरुषनुं धैर्य तमे जुओ ! ते अधर्म मार्ग त्यागीने धर्म मार्गे चालवाथी देवलोकने विषे उत्पन्न थाय छे-[२९]. डाह्यो पुरुष मूर्खनी मूर्खाइ अने पंडितना पंडितपणानी पोताना मनथी तुलना करे छे. साधु मूर्खपणुं छाडीने पंडितपणुं सेवे छे. [३०].

* ॥ सातमुं अध्ययन संपूर्ण. ॥ *

 अध्ययन ८. *कपील मुनीनो बोध. 

अध्रुवेअसासयमिससारमि दुख्खपउराए । किं नामहूज्जत्तकम्मय जेणाह दुग्गइ नगछेज्जा ॥ १ ॥

❀ अध्ययन ८ ❀

आ अध्रुव अने असाश्वत ससार जे अनेक दुःखोथी भरेलो छे, तेमा केवा कर्तव्यथी–कया धर्मनो अगीकार करवाथी हु दुर्गतिने विषे न जाउं [१].

* कौसंबीना कास्यप ब्राह्मणना ते पुत्र हता. तेना पिताना मृत्यु वाद अभ्यास माटे एक शेठने त्यां रहेल त्या चाकरडी साथे प्रेममा पड्या. ते स्त्रीए वस्त्रभूपणनी मागणी करी परन्तु पैसा न होवाथी दीलगीर थता ते स्त्रीए युक्ति वतावी के राजाने प्रभातमा प्रथम आशीर्वाद आपनारने ते सोनानु दान करे छे ते माटे प्रयास करो. प्रेम पासमा सपडायेला कपिल प्रभातमा व्हेला उठी गया पण वहुज व्हेलु थवाथी पोलीसे पकडी राजा पासे रजु कर्या. राजा पासे सत्य हकीकत रजु थता ते एटला खुशी थया के सात गुधीमा जेटलु द्रव्य मागे तेटलु आपवा इच्छा दर्शावी. विचार करवा माटे सामेनी वाटिकामा गया पण तृष्णा वधती गइ अने लोभनो थोभ न थता साज पडी गइ. प्रसन्नजीत राजाए आपेलु वचन व्यर्थ गुमाव्यु आ फटकाथी वैराग्यना फणगा कपिलना मनमा फूट्या. स्वयबुद्ध थया अने तप वीगेरे करी ससारथी विरक्त थया अने परमार्थ खातर राजग्रही नगरीना वनमा वलभद्र पाचसो चोरना परिवार सहित रहेता हता तेने वोध आपवा गया, चोरोए पकडी तेने केद कर्या अने जाणे वधनज न होय तेम कपिल मुनी नाचवा ने गावा लाग्या. आ अध्ययनना वधा पद गाया अने ध्रुव तरीके प्रथम पद वोलता गया. चोरो आ वोधथी प्रति बुझ्या–आ अध्ययननी १७मी गाथा पोताना अनुभवपरथी तेओए असरकारक भापामा कही संभळावी घणा जीवोने वोध आप्यो हतो.

विजहित्तुपुव्वसंजोग नसिणेहं कहिंचिकुव्वेज्जा । असिणेह सिणेह करेहिं दोसपओसेहि मुच्चएभिक्खू ॥२॥ तनोनाण दसणसमग्गेहियनिस्सेसायसव्वजीवाण । तेसिं विमोक्खणट्ठाए भासई मुणिवरोविगयमोहो ॥३॥ सव्वं गथ कलहंच विप्पजहे तहाविह भिक्खू । सव्वेसु काम जाएसु पासमाणो नलिप्पई ताई ॥ ४ ॥ भोगामिस दोस विसन्ने हिय निस्सेस बुद्धि वुच्चथ्ये । बालेय मंदिए मूढे बज्जई मछिया व खेलंमि ॥ ५ ॥ दुपरिच्चया इमे कामा नो सुजहा अधीर पुरिसेहि । अहसंति सुव्वया साहू जे तरंति अतर वणियाता ॥ ६ ॥ समणा मु एगे वयमाणा पाणवहमिया अयाणता । मदा निरयगच्छंति बालापावियाहि दिठीहिं ॥ ७ ॥

पूर्व संबंध छाडीने कोइ वस्तु उपर मोह न कर, पोताना उपर मोह राखनार उपर पण जे साधु मोह न राखे, ते आ लोक अने परलोकना दुःखथी छूटे. [२] ते मुनिवर (कपिल केवळी) जे पोते मोह रहित छे अने ज्ञान दर्शने करी सहित छे, ते सर्व जीवोनुं हित अने मोक्ष इच्छी, कर्म बन्ध टाळवाने कहे छे. (३). [आत्माना] सर्व बधन, क्रोधादिक प्रकारना कर्म बन्धना हेतुओ साधुए छोडी देवा जोइए. विषय [शब्द, रुप, रस, गंध अने स्पर्श] जाणवा छतां, तेमा तेण लुब्ध थवुं नहिं. (४). जेनी बुद्धि मंद, मूढ, निच्च कर्म करनारी अने आत्म हित करनार मोक्षथी विमुख छे, ते धर्मने विषे आळस करे छे, निच्च कर्म करे छे अने माखी जेम श्लेष्ममा बधाइ जाय छे तेम संसारमा बधाइ रहे छे. (५). ए काम भोग छाडवानु कार्य कठिन छे; कायर पुरुषो ए कामभोग सेहेल्लाइथी छाडी शकता नथी, पण व्यापारी (वाणीआ) जेम वहाणथी समुद्र तरे छे, तेम साधु पुरुष संसार समुद्र तरी जाय छे (६). जो के पोते पशुनी माफक अज्ञानताथी जीव हत्या करता होय, तो पण केटलाक परतीर्थि एम कहे छे के अमे श्रमण–साधु छीए; आवा विवेकहीन पाप दृष्टिवाळा मनुष्य मिथ्यात्वे करी नर्के जाय छे. (७).

नहुपाणवह अणुजाणे मुच्चेज्जकयाइ सव्वदुक्खाण । एत्रा यरिएहिं अरायं जेहिं इमोसाहु धम्मोपन्नत्तो ॥ ८ ॥ पाणेयनाइ वाएज्जा सेसमीइत्ति वुचई ताई । तओसे पावय कम्म निज्जाइउदय व थलाओ ॥९॥ जग निरिसएहिं मूएहि तरसनामेहिं थावरेहिच । नोतेसि मारमे दड मणसा वयसा कायसा चेव ॥१०॥ सुद्धे सणाओ नच्चाण तत्थ ठवेज्जा भिक्खू अप्पाण । जायए वासमेसेज्जा रस गिद्धेणसिया भिक्खाए ॥११॥ पताणि चेव सेविज्जा सीय पिंड पुराण कुम्मास । अदुबुक्कस पुलागवा जवणट्टाए निसेवए मथू ॥१२॥

कोइए माणी वधना कोइपण कार्यना अनुमोदन आपवु न जोइए, आथी वहुधा जीवो दुःखो–पाप कर्मोमाथी मुक्त थइ शकाय छे,–एम तिर्थंकर गणधरोए साधु धर्म मरुप्यो [कह्यो] छे. [८]. जे पुरुष माणी–जीवने मारे नहि ते समित* (सावध) कहेवाय छे, जेवी रीते पाणी उच्च प्रदेशपरथी ढळी जाय छे तेवी रीते ते पुरुषने पाप कर्म लागतु नथी. (९). जे जे त्रस अने स्थावर जीवो पृथ्विपर वसेला छे, तेने मन, वचन, कर्म करीने पिडा उपजाववी न जोइए [१०] साधुए शुद्ध निर्दोष आहारने जाणवो केवो आहार कल्पे तेनु ज्ञान मेळववु अने तेना नियम बराबर पाळवा. शरीर निर्वाहने अर्थेज आहार लेवो अने १स्निग्ध आहारमा लोलुपता न राखवी. (११). ठरेलो आहार, जीर्ण२ दाळ [मग, अडद, चणानी], वकस,३ पुलाक,४ जे निरस होय ते खावु अने शरीर निर्वाह अर्थे मथु५ (बदर चूर्ण) खावु. (१२).

---

* Circumspect आगळ पाछळनो विचार करनार. १. चीकणा–मसालेदार मीठा भोजन विशेष घी वाळा. जे खावाथी शियळनी नव वाड जळवाती नथी. २. Old beans, ३-४ आने मळता गुजराती शब्दो मळी शकता नथी. ५ ठळीआ सहित बोरनो भूको–[Founded jujube].

जेलख्खणच सुविणच अग विज्जच जेपउंजति । नहुतेसमणा वुच्चति एव आयरिएहिं अख्खाय ॥१३॥ इहजीवियं अणियमित्ता पब्भट्ठासमाहिजो गेहिं । तेकाममोगरसगिद्धा उववज्जतिआसुरेकाए ॥१४॥ तत्तोविय उवट्टित्ता ससारबहु अणुपरियट्ठति । बहुकम्म लेवलित्ताण बोही होइसुदुल्लहातेसि ॥१५॥ कसिणंपि जो इम लोग पडिपुन्नं दलेज्ज एक्कस्स । तेणाविसेन तूसेज्जा इइ दुप्पूरए ईमेआया ॥१६॥

पुरुष लक्षण,[१] स्वप्नना खुलासा, अने शरीर फरके तेना खुलासा–एटलां वानां जे कोइ कहे तेने साधु न कहेवा एम तीर्थकर भगवाननी आज्ञा छे. [१३]. जेओ पोताना आत्माने अनियन्त्रित राखे, तप विधान आदिमां अनियमित रहे, समाधी योगथी भ्रष्ट थाय, काम रस भोग अने भोजनमा लुब्ध रहे, ए असुर योनिमां जन्मे छे.[२] [१४]. ज्यारे ते असुर योनिमाथी नीकळे छे, त्यारे तेने संसारमा घणो वखत सुधी परिभ्रमण करवुं पडे छे.जेना आत्माने कर्ममळनो लेप लागेलोछे, तेवा पुरुषोने [३]जैन धर्म अने सम्यकत्वनी प्राप्ति दुर्लभ छे; (१५). आ आखी पृथ्वि द्रव्य वीगेरथी भरी, कोइने आपीए तोपण जेवी रीते तृष्णानो अंत आवतो नथी-संतोष थतो नथी, एवी रीते कोइ जीवने संतोषवो महा मुश्केल छे. [१६].

---

१. निमित्तिआ–नजुमी जेवा कार्योथी संसारी साथे घाटा परिचयमा आववाथी राग बंधन थाय अने प्रसंगे महाव्रतोमां दोष लागे. २. प्रो. जेकोबीना आ गाथा माटेना शब्दो असरकारक छे–Those who do not take their life under discipline, who cease from meditation and ascetic practices, and, who are desirous of pleasures, amusement and good fare, will be born again as Asuras ३. प्रो. जेकोबी 'बोधि' Bodhi शब्द वापरे छे. ते शब्द बुध जाणवुं-ज्ञान थवुं ए क्रियापद उपरथी थयेल छे. पूर्ण शुद्ध ज्ञान विना शुद्ध सम्यकत्वनी प्राप्ति महा मुश्केलछे.

जहा लाभोतहा लोभोलाभालोभो पवड्ढई । दोमासकयं कज्जं कोडीएवि नानीट्ठियं ॥१७॥ नोरक्खसीसुगिझेज्जा गंडवच्छासु णेगचित्तासु । जाउपुरिसपिलोभित्ता खेलति जहावदासेहि ॥१८॥ नारीसु नोपगिझेज्जा इत्थीविप्पजहे अणगारे । धम्मचपेसल नच्चा तत्थठवेज्ज भिक्खू अप्पाण ॥१९॥ इइ एसधम्मे अक्खाए कविलेणच विसूद्ध पन्नेणं । तरिहिंतिजेउ काहिंति तेहि आराहिया दुवे लोग त्तिबेमि ॥२०॥

॥ काविलीय नाम झयण अठमा समत्तं ॥८॥

यथा लाभ स्तथा लोभः जेम लाभ थाय तेम लोभ वधतो जाय छे १ बे मासाथी२ जरूरीआत पूरी पडती होय, छतां कोटि धनथी पण संतोष थतो नथी [१७]. स्त्री राक्षसीने विषे लुब्ध थवु नहि तेना हृदय उपर कुच रूपी मासना बे लोचा छे, तेनुं चित्त अनेक स्थळे भटके छे, ते पुरुषने ललचावे छे, लोभावे छे अने तेने [पासमा लइ] दास बनावी रमाडे छे. [१८]. साधुए स्त्रीने इच्छवी नहि. तेणे स्त्रीनो परित्याग करवो. साधु धर्म बराबर जाणीने पोताना कर्तव्यमा आत्माने दृढ करवो. (१९). विशुद्ध ज्ञानी कपिल केवळीए आ धर्म (पाचसो चोर पासे) कह्यो छे. जे ते धर्म करशे ते तरशे अने बन्ने लोक आराधाशे. आ लोक अने परलोक बन्नेनुं साधक करशे. (२०).

॥ आठमुं अध्ययन संपूर्ण ॥

१. Desires increase with your means "हती दीनताइ त्यारे ताकी पटेलाइ अने, मळी पटेलाइ त्यारे ताकी छे शेठाइने, सापडी शेठाइ त्यारे ताकी मंत्रिताइ अने, आवी मंत्रिताइ त्यारे ताकी नृपताइने."—मोक्ष माळा. २. एक तोलाना बार मासा लेखाय छे. आपणी आठ रतीनो एक मासो गणाय छे.

अध्ययन ९. नमि प्रव्रज्या. (नमि राजानी दिक्षा).

चइऊण देवलोगाओ उववन्नो माणुसंमि लोगंमि । उवसत मोहणिज्जो सरइ पोराणि यंजाइं ॥१॥ जाई सरित्तु भयवं सहसबुद्धो अणुत्तरे धम्मे । पुत्तठवितुरज्जो अभिनिक्खमई नमीराया ॥२॥ सोदेवलोग सरिसे अंतेउरवर गउवेर भोए । भुंजित्तु नमीराया बुद्धोभोगे परिच्चयइ ॥३॥

⊛ अध्ययन ९. ⊛

सातमा देव लोकथी चवीने मनुष्य लोकने विषे जन्म लीधा पछी १नमि राजा २मोहनी कर्मथी मुक्त थया अने तेमने पोताना पूर्व भवनुं जाति स्मरण ज्ञान थयुं. (१). ३जाति स्मरण ज्ञान उपजवाथी नमि राजा सर्वोत्कृष्ट जिन धर्मने विषे ४स्वयसम्बुद्ध थया. [पोतानी मेळे धर्मनो प्रतिबोध पाम्या]; तेथी पोताना पुत्रने राज्य सोंपीने पोते दिक्षा ग्रहण करी. [२]. पोताना अंतःपुरनी देवांगना सरखी स्त्रीओ संगाथे देव लोक सरखा भोग भोगव्या पछी, पोताने ज्ञान उपजवाथी नमि राजाए भोग छोडी दीधा. (३).

१. नमि राजानु जीवन वृत्तात टीकामा आपेलुं छे. श्रीमती मयणरेहानु भक्तिथी उभरातुं चरित्र पण टीकामा आपेलुं छे. २. आठ कर्म माहेना, चार घन घातीआ कर्ममा, मोहनी कर्म विशेष प्रबळ छे. मोहनी कर्म संसारमां रखडावे छे. ठेठ अगीआरमा 'उपशान्तमोह' गुण स्थानके तेनो क्षय थाय छे. ३.पोताना पूर्व भवनुं स्मरण आ ज्ञानथी थाय छे, मती ज्ञाननो ते भेद छे. अवग्रह, इहा, अपाय अने धारणा ए अनुक्रमे वृद्धि थता केटलाक सरल सुलभ बोधि जीवने जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न थायछे. ४.समकालिक चार प्रत्येक बुद्ध माहेना तेओ एक हता. जाति स्मरणादिक ज्ञानथी पोतानी मेळे बुझनार स्वयंबुद्ध कहेवाय छे. काइ देखीने वैराग्य पामनार प्रत्येक बुद्ध कहेवाय छे. गौत्तम बुद्ध गळतो बळद अने मडदु देखीने बुझ्या तेम.

मिहीलसपुर जणवय बलमारोहंच परियणं सव्वं । चिच्चा अभिनिक्खंतो एगंतमहिट्ठिओ भगवं ॥ ४ ॥ कोलाहलगभूय आसिमिहिलाए पव्वय तमि । तइया रायरिसिमि नमिमि अभिनिक्खमतमि ॥५॥ अभूठिय रायरिसि पव्वज्जाठाण मुत्तम । सक्कोमाहण रूवेण इम वयणमब्बवी॥६॥ कितुभो अज्जमिहिलाए कोलाहलग सकुला । सुव्वति दारुणा सद्दा पासाएसु गिहेसुय ॥७॥ एयमट्ठ निमामित्ता हेऊकारण चोईओ । तओ नमिरायरिसी देविंद इणमब्बवी ॥८॥ मिहिलाए चेइएवच्छे सीयछाए मणोरमे । पत्तपुप्फफलोवेए वहुणवहूगुणेसया ॥९॥ वाएणहिर माणमि चेइयमि मणोरमे । दुहियाअसरणाअत्ता एएकदंतिभोखगा ॥१०॥

मिथिला नगरी तथा देश, चतुरग सेना, अंतःपुर तथा पोतानो सघळो परीवार छोडीने महात्मा नमि राजा दिक्षा लइने एकातवासमां जइ रह्या. [४]. ज्यारे नमि राजर्षि प्रव्रज्यार्थ [दिक्षाथ] नगर थकी बहार नीकळ्या ते वखते मिथिला नगरीमा सर्व स्थाने कोलाहल मची रह्यो. (५). सर्वोत्तम प्रव्रज्या स्थानने विषे पहोंचेला नमि राजर्षि पासे शक्र (इन्द्र) देव ब्राह्मणनुं रूप धारण करीने आव्या अने तेमने नीचे प्रमाणे प्रश्न कर्याः–[६]. 'हे राजर्षि' मिथिला नगरीमा आ कोलाहल शानो मची रह्यो छे ? अने महेल तथा मंदिरोमा आ हृदयभेदक आक्रन्द शानु संभळाय छे ?'' (७). ए साभळीने देवेन्द्रना प्रश्ननो हेतु अने कारण समजी लइने नमि राजर्षिए नीचे प्रमाणे उत्तर आप्यो. *[८] 'हे ब्राह्मण ! मिथिला नगरीना उद्यानमा पत्र, फळ, फूले करी सहित शितळ छायावाळु मनोरमा नामे एक पवित्र वृक्ष छे, अने ते घणा पक्षीओनु आश्रय स्थान छे; वायराथी ए पवित्र वृक्ष मनोरमा चलायमान थवाथी दुःखथी पिडाता अने शरण रहित पक्षीओ आक्रन्द करे छे.' (९-१०).

---

* कार्य-कारण हेतुना पाच अवयव छेः–[१] प्रतिज्ञा. [२] हेतु. [३] उदाहरण. [४] उपनय अने [५] निगमन.

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारण चोईओ । तओ नमिरायरिसिं देविंदोइण मव्ववी ॥११॥ एस अगीय वाउय एयं डझइ मंदिरं । भयव अंतेउर तेण कीसणं नाव पेल्खह ॥१२॥ एयमट्ठं निसामित्ता हेउ कारण चोईओ । तओ नमीराय रिसी देविंद इणमज्जवी ॥१३॥ सुहं वसामो जीवामो जेसि मोनथ्यि किंचण । मिहिलाए डझमाणीए नमे डझइ किंचण ॥१४ । चत्त पुत्त कलतरस निव्वावाररस भिरूखूणो । पिय नविज्जए किंचि अप्पियपि नविज्जए ॥१५॥, बहु खुमुणिणो भद्द अणगारस्स भिख्खूणो । सव्वओ विप्पमुक्करस एगत मणुपस्सओ ॥१६॥ एयमट्ठ निसामित्ता हेउकारण चोईओ । तओ नमि रायरिसि देविंदो इण मव्ववी ॥ १७ ॥ पागार कारइत्ताणं गोपुरट्टालगाणिय । उसूलग सयग्घीओ तओ गछसि खत्तिया ॥१८॥

ए साभळीने राजर्षि नमिना हेतु अने कारणे प्रेरित एवा देवेन्द्रे नीचे प्रमाणे प्रश्न कर्यो. (११). 'हे भगवान! आ अग्नि अने वायु प्रत्यक्ष देखाय छे. तमारो महेल बळे छे. छता तमे तमारा अंतःपुर सामुं केम जोता नथी?' (१२). ए साभळीने नमि राजर्षि [गाथा ८मी प्रमाणे] बोल्या. (१३). 'हे ब्राह्मण! एमा मारुं कोइ नथी एम समजीने हुं सुखी छुं अने सुखे रहुंछु. मिथिला नगरी बळी जवाथी मारुं कांइ बळतुं नथी. [१४]. 'जेणे पुत्र कलत्रादिनो त्याग करेलो छे, गृहस्थना व्यापारथी जे रहित छे, तेवा साधुने कोइ वस्तु प्रिय नथी तेम अप्रिय पण नथी. (१५). 'जे मुनि अथवा घर रहित भिक्षुक ग्रहस्थना व्यापारथी अने सघळा आरम्भथी मुक्त छे, अने जे एकान्तमां रहीने मोक्ष मार्गनुं चिंतवन करे छे तेनुं कल्याण थाय छे.' [१६]. ए साभळीने देवेन्द्र बोल्या (गाथा ११मी प्रमाणे) [१७]. 'हे क्षत्रिय! प्रथम नगरना रक्षणार्थे कोट बंधाव, तेने दरवाजा मूकाव, तेना उपर बुरजो बनाव, तेना फरती खाइ खोदाव, युद्ध स्थान उपर शतघ्नयंत्र(सो सुभटने एकी साथे मारी शके एवा यंत्र)गोठव;*त्यार पछी [दिक्षार्थे] जाजे.' [१८].

---

*टीकाकार आ प्रमाणे अर्थ करे छे. पण प्रो. जेकोबी नवी गाथामां एवो अर्थ करे छे के, 'तो तुं खरो क्षत्री कहेवाय.'

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारण चोईओ । तओ नमीरायरिसी देविंदं इणमब्बवी ॥ १९ ॥ सद्धं नगरं किच्चा तवसंवर मग्गलं । खंतिनिउणपागारं तिगुत्तं दुप्पहसगं ॥२०॥ धणुपरक्कमं किच्चा जीवंच इरियं सया । धियचकेयणं किच्चा सच्चेण पलिमथए ॥२१॥ तवनाराय जुत्तेणं भित्तुण[1] कम्म कचुय । मुणी विगय संगामो भवाओ परिमुच्चई ॥२२॥ एयमट्ठं निसामित्ता हेउकारण चोईओ । तओ नमी रायरिसी देविंदो इण मब्बवी ॥२३॥

१. कोइ मतमां ' भेतूणं ' छे.

ए सांभळीने नमि राजर्षि बोल्या (गाथा ८मी प्रमाणे). [१९]. १धर्म तत्व उपर श्रद्धारुपी नगर वसावी, तेना फरतो क्षमारुपी कोट बांधी, तप संयमरुपी भूंगळवाळा दरवाजा मूकी, ए त्रणे २प्रकारे किल्लाने अभेद्य बनाववो. पछी पराक्रमरुपी धनुष्य धारण करीने, इरिया ३सुमतिरुपी तेनी प्रत्यंचा [तांत] करीने, संतोषरुपी तेनी मूठ बनावीने, सत्यरुपी बंधनथी तेनी मूठ लपेटीने तपरुपी लोहबाण चढावीने, कर्मरुपी कवचने भेदवाथी, बुद्धिमान साधु विजय मेळवीने संसारथी मुक्त थाय छे. (२०-२२). ए सांभळीने देवेन्द्र बोल्या (गाथा ११मी प्रमाणे) [२३].

१. आ गाथा मुख पाठ करी राखवा योग्य छे. मो जेकोबीना शब्दोमां आपणे तेने पुनः स्मरीए " Making Faith his fortress, Penance and Self-control the bolt (of its gate) Patience its strong wall, so that guarded in three ways it is impregnable, making Zeal his bow, its String Carefulness in walking, and its top (where the string is fastened) Content he should bend (this bow) with Truth, piercing with the arrow, Penance, (the foe's) mail, Karman—(in this way) a sage will be the victor in battle and gate rid of the Samsara " २. त्रण गुप्तिनो आशय अत्र दर्शाव्यो छे. ३. पांच सुमति मांहेनी, हालवा चालवामां सावचती राखवानी प्रथम इरिया सुमति छे.

अध्ययन १०. द्रुम पत्र.

दुमपत्तए पंडुयए जहा निवडइ राइ गणाण अच्चए। एवं मणुयाण जीवियं समयं गोयममापमायए ॥१॥ कुसग्गे जह ओस बिंदुए थोवं चिठइ लंबमाणए। एव मणुयाण जीवियं समय गोयममापमायए ॥ २ ॥ इइ इत्तरियंमिआउए जीवियए बहु पच्चवायए। विहुणाहि रयं पुरे कडं समय गोयममापमायए ॥३॥ दुल्लहे खलु माणुसे भवे चिरकालेण विसव्वपाणिण। गाढाय विवाग कम्मणो समयं गोयममापमायए ॥ ४ ॥

❁ अध्ययन १०. ❁

जेम वृक्षनुं पाकुं पान घणां रात्रि दिवस थवाथी आखरे धरती उपर खरी पडे छे, तेम मनुष्यनुं जीवित पण असाश्वतुं छे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. (१). जेम कुशाग्र रहेलु जळ बिन्दु क्षण मात्र रहीने खरी पडे छे, तेम मनुष्यनुं आयुष्य पण अस्थिर छे, माट हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. (२). १आयुष्य आवुं त्वरित छे, जीवित अशाश्वतुं अने अनेक विघ्नो वाळुं छे, माटे हे गौतम! पूर्वे करेलां कर्मनो क्षय करवो अने कदि प्रमाद करवो नहि. [३] लांबे काळे पण सर्व प्राणीने मनुष्यनो भव मळवो अति दुर्लभ छे, कारण के गाढ तिव्र कर्मना फळ जीवने सदा काळ लागेलां ज छे एम समजीने हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. [४].

---

* आ आखुं व्याख्यान श्री महावीर देवे गौतम गोत्रना पोताना शिष्य इन्द्रभूतिने कही संभळाव्युं हतुं. इन्द्रभूतिने ए बोध आपवानी शा माटे जरुर पडी तेने लगती कथा टीकामां लंबाणथी आपेली छे, पण ते अहि उतारवानी जरुर विचारी नथी. १.प्रो. जेकोबीना आ माटेना शब्दो—"As lifeis so fleet and exhistence so piecarious, wipe off all the sins you ever committed"

पुढविकाय मइगउ उक्कोसंजीवो उसंवसे । काल सखाइय समय गोय ममापमायए ॥ ५ ॥ आउक्काय मइगओ उक्कोसजीवो उसवसे । काल संखाइय समय गोय ममापमायए ॥ ६ ॥ तेउकाय मइगओ उक्कोसजीवो उसवसे काल सखाइय समय गोयममापमायए ॥ ७ ॥ वाउकाय मइगओ । उक्कोसजीवो उसवसे कालं सखाइय समय गोयममापमायए ॥८॥ वणस्सईकाय मइगओ उक्कोसजीवो उसवसे । कालमणन दुरत समय गोयममापमायए ॥९॥ वे इदियकाय मइगओ उक्कोसंजीवो उसवसे । कालसखेज्जसन्निय समय गोयममापमायए ॥ १० ॥

* पृथ्वीकायमा एक वखत उत्पन्न थवाथी जीवने एनी एज गतिमा असंख्यातो काळ रहेवु पडे छे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. [५]. अपकायमां [पाणी] एक वखत उत्पन्न थवाथी जीवने एनी एज गतिमा असंख्यातो काळ रहेवुं पडे छे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. [६]. अग्निकायमां एक वखत उत्पन्न थवाथी जीवने एनी एज गतिमा असंख्यातो काळ रहेवुं पडे छे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. [७]. वायुकायमां एक वखत उत्पन्न थवाथी जीवने एनी एज गतिमा असंख्यातो काळ रहेवुं पडे छे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. (८) वनस्पतिकायमा एक वखत उत्पन्न थवाथी जीवने एनी एज गतिमां अनन्तो काळ रहेवु पडे छे अने त्यार पछी पण तेनी स्थिति सुधरती नथी (मनुष्य भव प्राप्त थतो नथी) माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. [९]. द्वीन्द्रिय (काया अने जीभ) कायमां एक वखत उत्पन्न थवाथी जीवने एनी एज गतिमां संख्यातो काळ (हजारो वर्ष) रहेवुं पडे छे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. [१०].

* गाथा ५ थी ९ सुधीमां एकेन्द्रिय काय जेने मात्र स्पर्श-ज्ञानज छे तेनुं वर्णन करेलु छे.

तेइदियकाय मइगओ उक्कोसंजीवो उसंवसे । कालसंखेज्जसान्निय समय गोयममापमायए ॥११॥ चउरिंदियकाय मइगओ उक्कोसजीवो उसवसे । कालसंखेज्जसान्निय समय गोयममापमायए ॥ १२ ॥ पंचिंदियकाय मइगओ उक्कोसजीवो उसंवसे । सत्तट्ठभवग्गहणे समय गोयममापमायए ॥ १३ ॥ देवेनेरइय मइगओ उक्कोसंजिवो उ-संवसे । एक्केक्क भवग्गहणे समय गोयममापमायए ॥१४॥ एवभवसंसारेसंसरइ सुहासुहेहिंकम्मेहिं । जीवोपमाय बहुलो समय गोयममापमायए ॥१५॥

त्रीन्द्रिय (काया, जीभ अने नासिका) कायमा एक वखत उत्पन्न थवाथी जीवने एनी एज गतिमा संख्यातो काळ रहेवुं पडे छे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. (११). चउरिन्द्रिय (काया, जीभ, नासिका अने चक्षु) कायमां एक वखत उत्पन्न थवाथी जीवने एनी एज गतिमां संख्यातो काळ रहेवुं पडे छे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. [१२]. पचेन्द्रिय (काया, जीभ नासिका, चक्षु अने कान) कायमा एक वखत उत्पन्न थवाथी जीवने एनी एज गतिमा सात आठ भव सुधी रहेवुं पडे छे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि.(१३). देवता अथवा नारकी कायमां उत्पन्न थवाथी जीवने एनी एज गतिमां एक भव रहेवुं पडे छे. माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि (१४). * आ प्रमाणे प्रमाद वश जीव पोतानां शुभाशुभ कर्म करीने संसारमा नवा नवा भव करतो परिभ्रमण करे छे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. [१५].

---

* संसारमां परिभ्रमण वधारनार प्रमादज छे. जन्म मरणना फेरा वधारनार प्रमाद छे. प्रो. जेकोबी ते माटे एवा शब्दो वापरे छे के :—" Thus the soul which suffers for its carelessness, is driven about in the samsara by its good & bad Karman.

लध्धूणवि माणसत्तण आयरियत्त पुणरावि दुल्लह बहवेदसुयामिलखूया समय गोयममापमायए ॥ १६ ॥ लध्धूणवि आयारियत्तण अहीण पचिंदिययाहु दुल्लहा । विगलिंदिय याहुदीसइ समय गोयममापमायए ॥ १७ ॥ अहिणपचिंदिय तपिरे लहे उत्तमधम्मसुइहुदुल्लहा । कुतित्थि निसेवए जणे समय गोयममापमायए ॥ १८ ॥ लध्धूणवि उतमसुइ सद्दहणा पुणरावि दुल्लहा । मिछत्तनिसेवएजणे समय गोयममापमायए ॥१९॥ धम्मपिहु सद्दहतया दुल्लहयाकाएण फासया । इहकामगुणेहि मुछिया समय गोयममापमायए ॥२०॥ परिजूरइते मरीरय केसापडुरया हवतिते । सेसोय-बलेयहायइ समय गोयममापमायए ॥ २१ ॥

कदाच मनुष्य भव प्राप्त थयो, तोपण आर्य देशमा जन्म मळवो दुर्लभ छे, कारण के (यवनदेशमां) घणा जीव दस्यु (शुद्र, चोर) अने म्लेच्छ जन्मे छे, माटे हे गौतम ! कदि प्रमाद करवो नहि. [१६]. कदाच आर्य देशे जन्म मळ्यो तोपण सपूर्ण पचेंद्रियपणुं प्राप्त थवु दूर्लभछे, कारण के घणा मनुष्योने एकाद बे इन्द्रियनी खोड आपणे जोइए छीए, माटे हे गौतम ! कदि प्रमाद करवो नहि. [१७]. कदाच पाचे इन्द्रियो पामे, तोपण शुद्ध धर्म ३ श्रवण दुर्लभ थइ पडे छे, कारण के घणा लोक कुतीर्थनी १ (अन्य धर्मनी) सेवा करता जणाय छे, माटे हे गौतम ! कदि प्रमाद करवो नहि. [१८]. कदाच शुद्ध धर्मनु श्रवण कर्यु, तो पछी ते उपर श्रद्धा चोंटवी दुर्लभ थइ पडे छे, कारण के घणा लोक मिथ्यात्वने २ सेवे छे, माटे हे गौतम ! कदि प्रमाद करवो नहि. [१९]. कदाच धर्म उपर श्रद्धा बेठी, तो पछी मन, वचन, कायाये करीने ते प्रमाणे वर्तवानु दुर्लभ थइ पडे छे, कारण के घणा लोक ससारना भोगमा लुब्ध३ थइ जाय छे; माटे हे गौतम ! कदि प्रमाद करवो नहि. [२०]. ज्यारे तारु शरीर जराए करीने जीर्ण थशे, अने वाळ श्वेत थशे, त्यारे तारु श्रोत्र बळ (सांभळवानी शक्ति) ओछु थइ जशे; माटे हे गौतम ! कदि प्रमाद करवो नहि. [२१]

१. People follow heretical teachers २ Many people are heretics ३ People are engrossed by pleasures.

उ.अ. परिजूरइते सरीरय केसा पंडुरया हवंतिते । सेचखूबलेय हायइ समयं गोयममापमायए ॥२२॥ परिजूरइते सरीरयं
१०. केसापडुरया हवंतिते । सेघाणबलेन हायइ समयं गोयममापमायए ॥२३॥ परिजूरइते सरीरयं केसापंडुरया हवंतिते।
सेजिझबलेय हायइ समय गोयममापमायए ॥ २४ ॥ परिजूरइते सरीरयं केसापडुरया हवंतिते । सेफासबलेय हायइ
६८. समय गोयममापमायए ॥२५॥ परिजूरइते सरीरय केसापडुरया हवंतिते । सेसव्वबलेय हायइ समय गोयममापमायए
॥२६॥ अरइगंडविसूइया आयका विविहा फुसति ते । विवडइ विद्धसइ तेसरीरय समय गोयममापमायए ॥२७॥

ज्यारे तारुं शरीर जराए करीने जीर्ण थशे अने वाळ श्वेत थशे, त्यारे तारु चक्षु-बळ क्षीण थइ जशे; माटे हे गौतम ! कदि प्रमाद करवो नहि. [२२]. ज्यारे तारु शरीर जराए करीने जीर्ण थशे, अने वाळ श्वेत थशे त्यारे तारु घ्राण-बल [सुंघवानी शक्ति] ओछुं थइ जशे; माटे हे गौतम ! कदि प्रमाद करवो नहि. [२३]. ज्यारे तारुं शरीर जराए करीने जीर्ण थशे, अने वाळ श्वेत थशे त्यारे तारु जिह्वा-बळ क्षीण थइ जशे, माटे हे गौतम ! कदि प्रमाद करवो नहि. [२४]. ज्यारे तारु शरीर जराए करीने जीर्ण थशे, अने वाळ श्वेत थशे, त्यारे तारुं स्पर्श-बळ क्षीण थइ जशे; माटे हे गौतम ! कदि प्रमाद करवो नहि. [२५]. ज्यारे तारुं शरीर जराए करीने जीर्ण थशे; अने वाळ श्वेत थशे त्यारे तारुं सर्व बळ ओछु थइ जशे; माटे हे गौतम ! कदि प्रमाद करवो नहि. (२६). *अरति, वात प्रकोपथी उत्पन्न थतो चित्तोद्वेग [१], रुधिर प्रकोपथी उत्पन्न थता वमन, विरेचादि, [गंड विसूचिका, कॉलेरा] नाना प्रकारना आतंक [प्राण घातक] रोग आवी पडे छे अने शरीरने बळहीन करीने तेनो विनाश करे छे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करवो नहि. [२७]

---

*. Despondency—आशा भग. १. प्रो. जेकोबी तेनो King's evil-कंठमाळ अर्थ करे छे. टीकाकार 'चित्तोद्वेग' लखे छे.

वोछिदसिणेह मप्पणो कुमुय सारइयवपाणियं । सेसव्वसिणेह वज्जिए समयं गोयममापमायए ॥ २८ ॥ चिच्चाणंधणंच भारिय पव्वईओ हिसि अणगारियं । मावतंपुणो विआइए समयं गोयममापमायए ॥ २९ ॥ अवऊज्जियमित्तवंधवं विउलचेव धणोहसचयं । मातविइयगवेसए समय गोयममापमायए ॥३०॥ नहु जिणे अज्जदिस्सई वहु मएदिस्सईमग्गदेसिए । सपईनेयाउएपहे समय गोयममापमायए ॥३१॥

हे गौतम! जेम कमल पत्र २ शरद रुतुना जळ बिन्दुनो पण स्पर्श करतुं नथी तेम तु स्नेह बन्धनने तजी दे; सर्व स्नेह [राग] त्यागवो अने कदि प्रमाद करवो नहि. (२८). हे गौतम ! धन अने भार्यानो त्याग करीने तें साधुत्व ग्रहण कर्युं छे, तो पछी जे काम भोगवुं तें वमन कर्यु छे, तेनो फरीथी अंगीकार करीश नहि अने कदि प्रमाद करीश नहि. [२९]. हे गौतम ! तें मित्र, बांधवादि तज्या छे, अने संचेला द्रव्यनो पण त्याग करेलो छे, तो हवे फरीथी तेनी इच्छा करीश नहि अने कदि प्रमाद करीश नहि.]३०]. वर्त्तमानकाळे कोइ ³केवळ ज्ञानी [जिन] नजरे आवता नथी, तो पण मुक्ति-मार्ग देखाडनार (ज्ञान, दर्शन, चारित्रादि साधु धर्म) छे, तु हमणा मोक्ष मार्गने विषे विचरे छे, एम जाणीने हे गौतम ! कदि प्रमाद करीश नहि. [३१].

---

२. शरद रुतुनुं जळ निर्मळ अने मनोहर होवा छता ते कमळ पत्रने लोभावी शकतु नथी, तेम ससारनो स्नेह जीवने मनोहर लागे छे, छता तेमा लुब्ध थवु न जोइए एवो भावार्थ छे. ३ श्री महावीर भगवान पोते केवळ ज्ञानी होवा छता 'वर्त्तमान काळे कोइ केवळ ज्ञानी नथी' एम तेओ पोतेज बोले ए समजी शकातु नथी. आ उपरथी टीकाकार तेमज प्रो. जेकोबी शका करे छे कांतो आ गाथा पाछळथी के जे वखते केवळ ज्ञानी नहि होय त्यारे उमराइ हशे अथवा नवमा अध्ययननी ४२ मी गाथा मुजब भूल थती हशे.

अवमोहिय कंटयापहं उत्तिन्नोसिपहं महालय । गछसि मग्गंविसोहिया समयं गोयममापमायए ॥ ३२ ॥ अबले जहभारवाहए मामग्गेविसमे वगाहिया । पछापछाणुतावए समयं गोयममापमायए॥३३॥ तिन्नोहिसि अन्नवंमहं किंपुण चिठसितीरमागओ । अभितुरपारंगमित्तए समयं गोयममापमायए ॥३४॥ अकलेवर सेणिमुस्सिया सिद्धिं गोयमलोयं गछसि । खेमचसिवंअणुत्तर समय गोयममापमायए ॥३५॥

जे मार्गमांथी [पाखंड रुपी] कंटक दूर करेला छे एवो (सम्यकरुपी) महा मार्ग तने प्राप्त थयेलो छे, माटे हे गौतम! मुक्ति मार्गने विषे तुं चाल्यो जा अने कदि प्रमाद करीश नहि. (३२). * निर्बळ भार वाहकनी माफक तुं विषम [1] मार्गे वहीश नहि; नहि तो तने पाछळथी पश्चाताप थशे. माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करीश नहि. (३३). हे गौतम ! तुं संसार [2] समुद्र तरी गयो छे, हवे कांठे आवीने शा माटे अटकी बेसेछे? त्वराथी भव पार उतरी जा अने कदि प्रमाद करीश नहि.(३४). क्षपक[3] श्रेणीने विषे संयमथी उत्तरोत्तर चढीने अंते तुं सिद्ध लोकने विषे पहोंचीश[4]. ए सर्वोत्तम मुक्ति क्षेम कल्याणनी करणहार अने उपद्रव रहित छे, माटे हे गौतम! कदि प्रमाद करीश नहि. [३५].

* जेम कोइ भार वाहक सुवर्णादि धननो बोजो माथे लइने विषम मार्गे जतो होय अने घर नजीकमा होवा छता ते बोजो कंटाळीने फेंकी दे, अने पछीथी जेम तेने पश्चाताप थाय, तेम पंच महाव्रतनो भार युवावस्थारुपी विषम मार्गमा वहन कर्या छतां, पाछळथी ते फेंकी देवाथी (भंग करवाथी) तने पेला भार वाहकनी माफक पश्चाताप थशे एवो भावार्थ छे. १. Uneven road ३. अकलेवर श्रेणि. ४. मो. जेकोबी आ माटे नीचेना शब्दो वापरे छे :—" You have crossed the great ocean, why do you halt so near the shore? make haste to get on the other side "

बुद्धेपरिनि-व्वुडे चरे गामगएनगरेव सजए । सतिमग्ग चवूहए समयं गोयममापमायए ॥३६॥ बुद्धस्सनिसम्म भासिय सुकहियमठ्ठपउवसोहिय । रागदोसचछिदिया सिद्धिगइगएगोयम त्तिबेमि ॥३७॥

⊛ इति दुम पत्तय झयण दसम सम्मत्त ॥ १० ॥ ⊛



बुद्ध अने निवृत्त साधु संयम तत्वने बराबर जाणतो थको गाम अने नगरने विषे विचरे छे अने भव्य जनोने शान्ति मार्गनो उपदेश करे छे, माटे हे गौतम! कादि प्रमाद करवो नहि. [३६]. बुद्ध श्री महावीर देवनी सुभाषित अने उपमा दृष्टांते करी अलकृत वाणी सांभलवाथी गौतम राग द्वेषने छेदीने सिद्धिने पाम्या. [३७].

✻ ॥ दशमुं अध्ययन संपूर्ण ॥ ✻

अध्ययन ११. बहुश्रुत वर्णन.

संजोगाविप्पमुक्कस्स अणगारस्सभिखूणो । आयारंपाउकरिस्सामि आणुपुव्विंसुणेहमे ॥१॥ जेयाविहोइ निविज्जेथद्धे लुद्धेअणिग्गहे अभिखणं उल्लवइ अविणीएअबहुस्सूए ॥ २ ॥ अहपचहिंठाणेहिं जेहिंसिखानलभइ । थंभाकोहापमाएणं रोगेणालस्सएणय ॥ ३ ॥ अहअट्ठहिंठाणेहिं सिखासीलेत्तिवुच्चइ । अहस्सिरेसयादंते नयमम्ममुदाहरे ॥४॥ नासीले नविसीले नसिया अइलोलुए । अक्कोहणेसच्चरए सिखासीलेत्ति वुच्चई ॥५॥

अध्ययन ११.

जेणे बाह्य अने अन्तर सर्व संयोगो * छाड्या छे एवा घर रहित साधुनो आचार अनुक्रमे प्रकट करुं छुं ते साभळो. [१].
जे साधु विद्या रहित छे, [1]अहंकार करे छे, रसादिमां लुब्ध रहे छे, इन्द्रियोने अंकुशमां राखी शकतो नथी अने अति वाचाळ छे,
एवो साधु अविनित कहेवाय, ते बहुश्रुत गणाय नहि. [२]. पाच प्रकारे शिक्षा[2] ग्रहण थइ शकती नथी; ते पाच स्थानना नामः—
(१) गर्व, [२] क्रोध, (३) प्रमाद, (४) रोग अने [५] आळस. [३]. आठ प्रकारे साधु शिक्षा सील गणाय छेः—(१) हास्य
तजवाथी, [२] इन्द्रिय निग्रहथी, [३] पारकी निंदा न करवाथी, (४) अशील वर्जवाथी [शील रहित न थवाथी], (५) विशील
वर्जवाथी (शील-आचार विरुद्ध न वर्तवाथी) [६] अति लोभ न करवाथी, (७) क्रोध[3] न करवाथी, अने (८) सत्य उपर प्रेम
राखवाथी. ए आठ प्रकारे बहुश्रुतपणुं प्राप्त थाय छे.[४-५]

[1] Egoistical [2] Discipline

* प्रथम अध्ययननी प्रथम गाथामा "संयोग"नी समजण आपी गइ छे.

[3] Choleric

उ.अ ११. ७३

अहच्च उदसहिंठाणेहिं वट्टमाणेउसजए। अविणीए वुच्चइ सोउ निव्वाणच्चनगच्छइ॥६॥अभिखणकोही हवइ पवन्वपकुव्वई । मित्तिज्जमाणोवमई सुयलध्धूणमज्जई ॥७॥ अविपावपरिक्खेवी अविमित्तेसुकुप्पई । सुप्पियस्सावीमित्तस्स रहेभासइ पावग ॥८॥ पइण्णवाइदुहिले थद्धेलुद्धे अणिग्गहे । असविभागी अवियत्तो अविणीएत्ति वुच्चइ ॥९॥ अह पन्नरसहिठाणेहि सुविणीएत्ति वुच्चई । नीयावित्तीअचवले अमाइ अकुतूहले॥१०॥ अप्पचाहिक्खिवइ पवधच्चनकुव्वई

नीचना चौद प्रकारे वर्तनार साधु अविनीत कहेवायछे अने ते निर्वाणने [illegible] नथीः–(१) वारवार क्रोध करे. (२) दीर्घकाल क्रोध राखे. (३) मित्रनी शीखामण माने नहि (४) शास्त्र भणीने (जाणनो) मद करे, (५) पारकाना छिद्र जोवे. (६) पोताना मीत्र उपर पण कोप करे (७) पोताना [illegible] (८) [illegible] (९) मित्रादिकनो द्रोह करे. (१०) अहंकार करे (११) रसादिमां [illegible] [१२] इन्द्रिय [illegible] न करे. [१३] [illegible] सरखा भाग न आपे, अने [१४] अप्रीति करे, [illegible] [७–०] पण नीचेना [illegible] गुणयुक्त साधु सुविनीत कहेवाय–[१] नम्र [२] चपलता रहित [३] माया रहित [४] कुतूहल रहित. [५] कोईने कठोर वचन न कहे. [६] दीर्घरोषी न थाय [७] मित्रनी शिखामण माने. [८] शास्त्र भणीने (जाणनो) मद करे नहि, [९] पारकी निंदा करे नहि. [१०]

---

१ Positive in this assertion पूर्ण विचार विना वातने पकडी रहेवानो भावछे. ए चौद स्थानकमाटे टीकाकार नीचेना शब्दो वापरेछे १ क्रोधः २ क्रोध स्थिरी करण ३ मित्रत्वस्य वचन लाजन ४ [illegible] ५ परछिद्रान्वेषण ६ मित्राय कोपस्योत्पादन ७ प्रिय मित्रस्यैकान्ते दुष्ट भाषण मुखे मिष्ट भाषण ८ अनिवार्य भाषण ९ द्रोह कारित्व १० मद कारित्व ११ [illegible] १२ अजितेन्द्रियत्व १३ असम्विभागित्व १४ अप्रीतिकरत्व. २ Steady ३–४ Free from deceit & curiosity.

मित्तिज्जमाणोभयइ सुयंलध्धुनमज्जई ॥११॥ नयपावपरिखेवी नयमित्तेसु कुप्पई । अप्पियस्सावि मित्तस्स रहेकल्लाणभासइ ॥१२॥ कलहडमरवज्जए बुद्धे अभिज्जायए हिरिमपडिसलीणे सुविणीएत्ति वुच्चई ॥ १३ ॥ वसेगुरुकुलेनिच्चं जोगवं उवहाणवं । पियंकरेपियवाइ सेसिक्खंलद्धुमरहई ॥ १४ ॥ जहासखमिपयं निहित दुहओविविरायई । एवं बहुस्सुए भिक्खूधम्मो कित्तितहा सुय॥१५॥ जहासे कंबोइयाण आइणे कंथएसिया । आसेजवेणपवरे एव हवई बहुस्सुए ॥१६॥ जहाइण समारूढे सुरेदढपरक्कमे । उभओ नंदिघोसेण एवहवइ बहुस्सुए ॥१७॥

मित्र उपर कोप करे नहि. [११] खराब मित्रनुं पण तेनी पीठ पाछळ बूरु बोले नहि. (१२) कलह (कजिया-टंटा) करे नहि. [१३] गुरुनी सदा सेवा करे. (१४)¹लज्जावत होय. अने (१५) स्वभावे शान्त होय; एवो साधु सुविनीत कहेवाय. (१०–१३). जे नित्य पोताना गुरु कुळने विषे वसे छे, जे सूत्र पठनादिमा योग्यवान उत्साही अने उपधानवान-उत्कंठीत छे, जेना वाणी अने कृत्य प्रिय थइ पडे एवां छे, एवो सुविनीत शिष्य शिक्षाने योग्य ²गणाय छे. (१४). जेम ³दूधे भरेलो शंख बहारथी अने अंदरथी बन्ने तरफ उजवळ देखाय छे तेम बहु श्रुत साधु धर्म, कीर्ति अने ज्ञाने करीने शोभे छे. (१५). जेम कम्बोज देशनो सुजात ⁴अश्व कशा अवाजथी भडकतो नथी अने जेम बीजा अश्वोथी वेगमा ते अधिक गणाय छे, तेम बहु श्रुत साधु अन्य साधुओथी श्रेष्ठ गणाय छे.⁵[१६] कोइ शुरवीर अने पराक्रमी सुभट सुजात अश्व उपर आरुढ थइ, बन्ने बाजुए द्वादश तूरीना नाद वच्चे जेम विजय मेळवे छे, तेम बहु श्रुत साधु पण क्यांइ पराजित थतो नथी. [१७].

¹ Decent ² Deserves to be instructed-विद्या आपवाने लायक. ³ मूळमा 'दूध' होवा छता प्रो.जेकोबी 'पाणी' लखे छे. ⁴ कंथक जातना सर्वोत्कृष्ट अश्वनी अंहि उपमा आपी छे. ⁵ आ वाक्य –३० मी गाथा सुधी ध्रुपदनी पेठे छे.

¹ जहा करेणु परिकिण्णे कुंजरे सट्ठि हायणे। बलवंते अप्पडिहए एवं हवइ बहुस्सुए ॥१८॥ जहा से तिक्ख सिंगे जायखंधे विरायई। वसहे जूहाहिवई एवं हवइ बहुस्सुए ॥१९॥ जहासेतिक्ख दाढे उदग्गे दुप्पहंसए। सिंहे मियाण पवरे एव हवइ बहुस्सुए ॥२०॥ जहा से वासुदेवे संख चक्क गयाधरे। अप्पडिहय बले जोहे एवं हवइ बहुस्सुए ॥२१॥ जहासे चाउ रंते चक्कवट्टी महिड्ढिए। चउदस रयणा हिवई एव हवइ बहुस्सुए ॥२२॥ जहा से सहस्संखे वज्जपाणी पुरंदरे। सक्के देवा हिवई एव हवइ बहुस्सुए ॥ २३ ॥ जहा से तिमिरविद्धंसे उत्तिट्ठंते दिवायरे। जलंते इव तेएणं एव हवइ बहुस्सुए ॥ २४ ॥

¹. कोइ मतोमां ' जहासे ' छे.

हाथणीओना परीवारमां म्हाल्तो साठ वर्षनो बळवान हाथीने जेम [तेना] बीजा (शत्रु) हाथीओ पराजित करी शकता नथी, तेम बहु श्रुत साधुनो पण कोइ पराभव करी शक्तु नथी. [१८]. जेम तीक्ष्ण शींगडावाळो अने स्थूल स्कंध (गरदन) वाळो वृषभ गायोना युथमां शोभे छे, तेम बहु श्रुत साधु पण शोभे छे [१९]. जेम तीक्ष्ण दाढवाळो, बलवान दुर्जय सिंह सर्व पशुओमां श्रेष्ठ गणाय छे, तेम बहु श्रुत साधु पण सर्व मनुष्योमा श्रेष्ठ गणाय छे. [२०]. जेम शंख, चक्र, गदा, धारण करनार वासु देव अप्रतिहत बळथी (बाह्य) शत्रुने जीते छे, तेम (ज्ञान, दर्शन, चारित्र रुपी त्रण रत्नो धारण करनार) बहु श्रुत साधु पण पोताना (अन्तरना) शत्रुने जीते छे. [२१]. चतुरंगिणी सेना अने महाऋद्धिनो धणी, अने चौद रत्न (अने नव निधान)नो अधिपति चक्रवर्त्ति राजा जेवां सुख भोगवे छे, तेवां सुख बहु श्रुत साधु पण (दान, शील, तपादिए करीने) भोगवे छे.[२२]. जेम सहस्र नेत्रनो धणी, वज्रनो धारण करनार, दैत्य नगरने दमनार, शक्र (इन्द्र) सर्व देवनो अधिपति गणाय छे, तेम बहु श्रुत साधु पण सर्व साधुमां श्रेष्ठ गणाय छे [२३] जेम सूर्य अन्धकारनो नाश करे छे, अने तेजथी देदीप्यमान जणाय छे तेम बहु श्रुत साधु मिथ्यात्वरुपी अन्धकारनो नाश करे छे, अने पोताना तपे करीने प्रकाशे छे. [२४].

जहासे उडुवइ चंदे नक्खत्ते परिवारिए । पडिपुन्ने पुन्नमासिए एव हवइ बहुस्सुए ॥२५॥ जहासे सामाइयाणं कोट्ठागारेसु रक्खिए । नाणाधण पडिपुन्ने एव हवइ बहुस्सुए ॥ २६ ॥ जहासा दुमाण पवरा जंबूनाम सुदंसणा । अणाढियस्स देवस्स एव हवइ बहुस्सुए ॥२७॥ जहा सा नईण पवरा सलिला सागर गमा । सीयानीलवत पवहा एव हवइ बहुस्सुए ॥ २८ ॥ जहासे नगाण पवरे सुमहं मंदरो गिरी । नाणो सहि पज्जलिए एव हवइ बहुस्सुए ॥ २९ ॥

जेम उडुपति [1]चंद्र नक्षत्रना परिवार सहित पूर्णमानी रात्रे (सोळ कळाथी) शोभे छे, तेम बहु श्रुत साधु पण (साधुओना परिवारमां सर्व धर्म कळाथी) शोभे छे. [२५]. जेम [चोर, मुंपकादिना उपद्रव साथे] सुरक्षित अने नाना प्रकारना धान्यथी भरेला गृहस्थोना कोठार शोभे छे, तेम बहु श्रुत साधु पण शोभे छे. [२६]. जम्बूद्वीपना अधिष्ठाता देव ज्यां वास करी रहेला छे, अने जे सर्व वृक्षोमां श्रेष्ठ गणाय छे, एवा जंबु[2] अथवा सुदर्शन वृक्षनी माफक बहु श्रुत साधु शोभे छे. [२७]. जेम[3] नील पर्वतमांथी उत्पन्न थती अने समुद्रमां रहेती [4]सीता नदी सर्व नदीओमां श्रेष्ठ गणाय छे, तेम बहु श्रुत साधु पण अन्य साधुओमां श्रेष्ठ गणाय छे. [२८]. जेम सर्व पर्वतोमां श्रेष्ठ एवो मन्दरो-मेरु पर्वत नाना प्रकारनी औषधीना प्रभावथी शोभे छे, तेम बहु श्रुत साधु पण जिनशासनना प्रभावना प्रकाशरूप शोभे छे. [२९].

१ The queen of the stars २. Eugenic Jambu टीकाकार कहे छे के आ वृक्ष उपरथी जंबुद्वीप नाम पडेल छे. ३, आने बदले प्रो. जेकोबी लखे छे के- 'पोताना नील जळ सहित'. ४. जैन सृष्टि विद्या वर्णन प्रमाणे हिमालय पर्वतनी दक्षिण तरफनी शाखाना नील पर्वतमांथी नीकळी सीता नदी पूर्व महासागरमां मळे छे.

जहासे सयंभू रमणे उदही अक्खओदए। नाणा रयण पडिपुन्ने एवं हवइ बहुस्सुए॥३०॥ समुद्द गंभिरसमा दुरासया अचक्किया केणइ दुप्पहंसया। सुयस्स पुन्ना विउलस्स ताइणो खवित्तु कम्म गइमुत्तमगया ॥ ३१ ॥ तम्हासुय महिट्ठेज्जा उत्तमट्ठ गवेसए। जेणप्पाण परंचेव सिद्धिसंपाउणिज्जासि त्तिबेमि ॥ ३२ ॥

॥ इति बहुस्सुय पुज्ज झयणं एकारसमं समंत्त ॥ ११ ॥

अक्षय जळथी भरेलो अने स्वयंभुतु[1]रमणस्थान जे समुद्र ते जेम नाना प्रकारना रत्नोथी भरेलो छे, तेम बहु श्रुत साधु पण अक्षय-ज्ञानरुपी रत्नोथी भरेलो छे. [३०]. जे साधु समुद्रनी पेठे गभीर छे, जे (अन्य मार्गीनां) कपट कृत्योथी ठगाता नथी, परिसहो जेने त्रास उपजावी शकता नथी, जेओ सिद्धान्तना ज्ञानमां पूरा छे, अने जेओ जीवना रक्षक छे, एवा बहुश्रुत साधु सर्व कर्मने क्षय करीने उत्तम गति [मोक्ष]ने विषे जाय छे. [३१]. तेटला माटे हे उत्तमार्थ गवेषको! [मोक्षना अभिलाषी पुरुषो] सिद्धान्त भणो अने ते वडे तमारा पोताना आत्माने अने अन्य जीवोने सिद्धि प्राप्त करावो.[2][३२].

* अग्यारमुं अध्ययन संपूर्ण *

---

१. 'The Delight of Svayambhu' ए वाक्यनो भावार्थ Vishnu's sleeping on ocean' ने काइक मळतो आवे छे. २. प्रो. जेकोबीना शब्दो-"Therefore, seeker after the highest truth, study the sacred lore, in order to cause yourself and others to attain perfection "

अध्ययन १२. हरिकेशीबलनुं आख्यान.

७८ सोवागकुलसंभूओ गुणुत्तरधरो मुणी । हरिएसबलो नाम आसि भिक्खू जिइंदिओ ॥ १ ॥

१. हरीकेश [The yellow haired] चांडालनी एक जाति छे. गंगा नदीना कांठा परना प्रदेशमां चांडाल जातिना एक राजानो बल; पुत्र हतो जेथी ते हरीकेशबळ कहेवायो, तेनुं आगलुं जीवन जाणवाथी आ अध्ययन समजवुं सुगम थशे. हरीकेशबळ जैन मुनी थया पछी विहार करतां एक वखते बनारस नजीकनी तीनदुग गुफामां अइ पहोंच्या. ज्यां रहेतो यक्ष तेनो अनुयायी थयो. एक दीवसे कौसलीक राजानी कुंवरी भद्रा आ यक्षनां दर्शनार्थे त्यां आवी. यक्षने वंदन कर्युं पण आ मेला वस्त्रवाळा मुनीने जोइ तेने तिरस्कार उपज्यो. यक्ष आथी गुस्से थयो अने कुंवरीना शरीरमां पेठो. पवित्र मुनीनुं मान न जाळववानी शिक्षा खातर कुंवरीने अनेक कष्टो सहन करवा पड्या अने कोइ औषधीथी तेने आराम थयो नहि. ज्यारे कोइ उपायथी आ यक्षे तेनुं शरीर छोडयुं नहि त्यारे कुंवरीना आजीजीथी यक्षे छेवटनो उपाय बताव्यो के हरीकेशबळने परणवुं, राजाना घणा आग्रह छतां मुनी श्रीए परणवानी ना पाडता छेवटे राजाना पुरोहित रुद्र देवने ते परणाववामां आवी. आ पुरोहितनी यज्ञशाळामां जे वार्तालाप थयो छे तेनो आ अध्ययनमां संबंध छे.

❀ अध्ययन १२. ❀

हरिकेशबळ चांडाल (श्वपाक) कुळने विषे जन्म्यो हतो. ते सर्वोत्तम गुणने धारण करनार, जिनाज्ञापालक जितेन्द्रिय मुनी थयो. (१).

उ.अ. १२. इरिएसणभासाए उच्चारे समिईसुय । जओ आयाण निक्खेवे सजुओ सुसमाहिओ ॥ २ ॥ मणगुत्तो वयगुत्तो
कायगुत्तो जिइदिओ । भिक्खट्ठाबभइज्जामि जणवाड मुवट्ठिओ ॥ ३ ॥ त पासिउणमेज्जात तवेण परिसोसिय ।
पतोवहि उवग्गरण उवहसति अणारिया ॥४॥ जाइमय पडिबद्धा हिंसगा अजिइदिया । अबंभचारिणो बाला इम
७९, वयणमब्बवी ॥ ५ ॥ कयरे आगच्छइ दित्तरूवे काले विकराले पोक्कनासे । उमचेलए पसु पिसायभूए संकरदूस
परिहरिय कंठे ॥ ६ ॥

गमनागमन व्यवहारमां, [1]आहार व्होरवामां, बोलवा चालवामां, मळमूत्रादि क्रियामां, वस्त्रपात्रादि लेवा राखवामां संयमना नियम प्रमाणे वर्त्ततो, समाधिग्रस्त रहेतो अने सत्तर भेदे संयम पाळतो. [२]. मन, वचन, कायाथी करीने गुप्त[2] (त्रणे प्रकारे पापथी सुरक्षित) एवो ते जितेन्द्रिय पुरुष, एक वखत, ब्राह्मणो ज्यां यज्ञ करता हता त्यां जइ पहोंच्यो. [३]. तपे करीने जेनो देह सूकाइ गयेलो छे, जेणे जीर्ण, मलीन वस्त्रो धारण करेलां छे, एवा हरिकेशने आवतो जोइने अनार्य [दुष्ट] ब्राह्मणो हसवा लाग्या. [४]. जाति मदथी उन्मत्त थयेला, जीव हिंसा करनारा, अजितेंद्रिय, अब्रह्मचारी, विषयासक्त, मूर्ख ब्राह्मणो साधुने जोइने नीचे प्रमाणे बोलवा लाग्या :-(५). अरे विकराळ [मूळमां मश्करी रूप 'दीप्तरूप' शब्द वापर्यो छे] आदमी तु कोण छे? अने अहिं शा माटे आव्यो छे? काळा वर्णवाळो, दैत्य जेवो विकराल, म्होटा दांत वाळो, चपटा नाकवाळो, मलीन वस्त्रवाळो, धूळथी भरेलो, उकरडे पडेलां जीर्ण वस्त्र पहेरीने कोइ पिशाच अहिं आवेलो जणाय छे. [६].

---

१. पांच सुमति. २. त्रण गुप्ती.

कयरे तुमं इय अदं सणिज्जो काएव आसाएइह मागओसी। उमचेलगा पंसुपिसायभूया गच्छ खलाहि किमिहिंठिओसि॥७॥
जक्खो तहिं तिंदुयरुक्खवासी अणुकपओ तस्स महामुणिस्स। पच्छायइत्ता नियगंसरीरं इमाइं वयणाइं मुदाहरित्था॥८॥
समणो अहं सजओबभयारीं विरओ घणपयण परिग्गहाओ। परप्पवित्तस्सओ।भिक्खकाले अणस्स अठा इहमाग ओसि।९।
वियरिज्जइखज्जइ भुजइय अणंपभूय भवयाणमेय । जाणाहिमेजायण जीवणोत्ति सेसावसेस लहओ तवरसी ॥१०॥
उवक्खडभोयण माहणाण अत्तट्ठिय सिद्धमिहेंगपक्ख । नउव्वयंएरिसमणपाण दाहामुतुम्मं किमिहंठिओसि ॥११॥

अरे पिशाच! तुं कोण छे? अने आ यज्ञशाळामां शी इच्छाथी आव्यो छे? मेलथी भरेला वस्त्र अने धूळथी भरेला शरीरवाळा भूत! अहिंथी चाल्यो जा! केम उभोछे?[७].ए वखते ते यज्ञवाडामां एक तिंदुक नामनुं वृक्ष हतुं अने तेमां एक यक्ष वसतो हतो; तेने ते साधु उपर दया उपजी, तेथी पोतानुं शरीर अदृश्य करीने, *ते साधुना शरीरमां प्रवेश करीने,* ते नीचे प्रमाणे बोल्यो: -[८]. "हुं शुद्ध श्रमण छुं; ब्रह्मचारी छुं; धन, परिवारना परिग्रहथी मुक्त छुं; मारा पोताने माटे खोराक राधतो नथी; अन्यने माटे निपजावेल आहार, पाणी भिक्षाकाळे व्होरु छुं, अने ते कामने माटे अत्यारे अहिं आव्यो छुं. [९]. तमे न्हाना प्रकारना भोजन जमो छो अने अन्यने आपो छो; तमारे त्यां भोजननी न्युनता जोवामां आवती नथी; हुं भिक्षाथीज म्हारो निर्वाह चलावुंछुं. शुद्र आहारनो अवशेष भाग बाकी रह्यो होय तो ते आ तपस्वीने आपशो? (१०).ए सांभळीने ब्राह्मणो बोल्या, 'ए भोजन ब्राह्मणोने माटे बनावेलुं छे. वळी ते खास अमारा माटेज तैयार करेलुं होवाथी बीजाने [तारा जेवा शुद्रने] अपाय नहि. माटे ए आहार, पाणी अमे तने आपवाना नथी. नकामो शा माटे उभो रह्यो छे?" (११).

---

* मो. जेकोबीए आटलो भाग मूकी दीधो छे. पांच शरीर मांहेनुं वैक्रिय शरीर देवताओ अने नारकीना जीवोने होय छे जेथी तेओ शरीर नाना मोटा करी शके छे.

थलेसुबीयाइंववतिकासगा तहेवनिन्नेसुयआससाए । एयाएसध्धाएदलाहिमम्मं आराहएपुणमिणंखुखेत्तं ॥१२॥ खेत्ता-
णिअम्हविदियाणिलोए जहिंपकिन्नाविरुहतिपुणा । जेमाहणाजाइविज्जोववेया ताइतुल्खेत्ताइ सुपेसलाइं ॥ १३ ॥
कोहोयमाणोयवहोयजेसिं मोसअदत्तचपरिग्गहच । तेमाहणाजाइ विज्जाविहूणा ताइतुल्खेत्ताइ सुपावयाइ ॥ १४ ॥
तुम्मेथ्थभोभारहरागिराणं अट्ठं नजाणाह अहिज्जवेए । उच्चावयाइ मुणिणोचरंति ताइतुल्खेत्ताइं सुपेसलाइ ॥ १५ ॥
अझावयाण पडिकूलभासी पभाससे किंतुसगासिअम्हं । अविएयविणरसओ अन्नपाण नयणं दाहामुतुमनियठा ॥१६॥

ए साभळीने यक्ष [साधु शरीरे] बोल्यो, "जेम कोइ खेडुत धान्य मेळववानी आशाथी उच्च भूमिमां तेमज नीच भूमिमां पण बी वावेछे ए दृष्टांत लक्षमां लइने तमे मने पण आपो. हु पण कदाच पवित्र क्षत्र होइश तो [तमारा पुण्यनु] तमने फळ मळशे." [१२]. ए साभळीने ब्राह्मणो बोल्या, 'अमे [ब्राह्मणोज] उच्च क्षेत्र छीए एम सहु कोइ जाणे छे, जे क्षेत्रने विषे वाववाथी पुण्य उगी नीकळे छे; उत्तम जातिना अने विद्वान (वेद पारगत) ब्राह्मणोज मनोहर क्षेत्र छे.' (१३). ए साभळीने यक्ष बोल्यो, "जेओ क्रोध अने मानथी भरेला छे, जेओ प्राणी वध करे छे, जेओ मृषावाद बोले छे, अदत्तादान ले छे, परिग्रह सेवे छे, एवा ब्राह्मणो जाति अने विद्याए हीन छे, एवा ब्राह्मण क्षेत्र अति पापरुप छे. [१४]. "तमे ब्राह्मणो तो केवळ शास्त्र अने ब्राह्मण नामनो भार वहेनाराज छो. तमे वेद भण्या छो पण तेनो अर्थ समजता नथी. साधु पुरुषो उच्च अने नीचने घेर भिक्षार्थे जाय छे. तेज खरां पुण्य क्षेत्रो छे." (१५) ए साभळीने ब्राह्मणो बोल्या, 'अरे दरिद्री! अमारी-उपाध्यायनी सन्मुख आवां निंदा अने क्रोधना वचन उच्चारनार तुं कोण? आ अन्न, पाणी सडी जाय ते भले, पण हे *निग्रंथ! अमे तने आपवाना नथी.' [१६].

* 'निग्रंथ' शब्द अहिं बेवडा अर्थमां वपरायेलो छे :-(अ) त्यागी. (ब) शरम रहित नि=विना ग्रंथ=गांठ Without restraint Shameless.

समिईहिंमइं सुसमाहियस्स गुत्तिहिंगुत्तस्सजिइंदियस्स । जइमेनदाहिथ्थ अहेसणिज्जं किमज्ज जन्नाणलभिथ्थ लाभं ॥१७॥ केइथ्थखत्ताउवजोइयावा अझावयावासहखडिएहिं। एयंतुदडेणफलेणहता कंठंमिवित्तूण खलेज्जजोणिं ॥१८॥ अज्जावयाण वयणं सुणित्ता उद्धाइयातथ्थबहूकुमारा । दडेहिंवित्तेहिंकसेहिंचेव समागयातइसिन[illegible]न्ति ॥ १९ ॥ रन्नोतहिंकोसलियस्सधूया भद्दत्ति नामेणअणिंदियंगी । तंपासियासजयं हम्ममाण कुद्धेकुमारेपरिनिव्ववेइ ॥ २० ॥ देवाभिओगेणनिओइएणंदिन्नामुरन्नामणसाणझाया नरिंददेविंदभिवंदिएणजेणामिवंताइसिणासएसो ॥ २१ ॥

ए सांभळीने यक्ष[१] बोल्यो, "हु त्रण गुप्तिए गुप्त [मन, वचन, कायाये] अने पाच समितिए समित छु अने पांच इन्द्रिओने वश करुं छु[२]; एवा साधुने तमे सूझतो आहार नहि व्होरावो तो आ यज्ञनुं फळ तमने शी रीते मळशे?" [१७]. ए सांभळीने ब्राह्मणो बोली उठ्या 'अहिं कोइ क्षत्री, अग्निरक्षक, अध्यापक, अथवा तो पोताना शिष्यो सहित कोइ उपाध्याय नथी के जेओ आ निग्रंथने दंड अने बिल्ली फळथी मारीने, गरदन पकडीने बहार काढी मूके?' [१८] अध्यापकोना आवा वचन सांभळीने केटलाक युवान ब्राह्मणो धसी आव्या, अने लाकडी, नेतर अने चाबुक वति ते मुनिने मारवा लाग्या. [१९]. ए वखते कौशलिक राजानी दोष रहित अंगवाळी पुत्री भद्राए यतिने मार खातो जोयो, तेथी ते क्रोधे भरायेला तरुण ब्राह्मणोने वारवा लागी.[३] [२०]. हे ब्रह्म कुमारो! जे यक्षे मारा शरीरमां प्रवेश कर्यो हतो अने तेनी प्रेरणाथी मारा पिताए मने जे शख्सने अर्पण करी हती तेज आ यति छे; पण तेणे पोताना मनथी पण मारी इच्छा करी नहोती. मारो त्याग करनार ए महर्षि नरेन्द्र अने देवेन्द्रने पण वांदवा योग्य छे. [२१].

१ मुनी शरीरमां प्रवेशी यक्षे वात चीत करेली छे. २. Subdue my senses. ३. Appeased the angry oungsters.

एसोहुसोउग्गतवो महप्पाजिइंदिओ संजओबंभयारि । जोमेतयानेछइ दिज्जमाणिंपिउणा सयंकोसलिएणरन्ना ॥२२॥
महाजसो एसमहाणुभागो घोरव्वओ घोरपरक्कमोय । माएयंहीलह अहीलणिज्जं मासव्वेतेएण भिनिद्दहेज्जा ॥ २३ ॥
एयाइंतीसे वयणाइं सोच्चापत्तिएभद्दाइ सुभासियाइं । इसिस्सवेयावाडियठयाए जक्खा कुमारेविणिवारयंति ॥ २४ ॥
तेघो रक्खाठियअतलिक्खे असुरातहिं तजणतालयति । ते भिणदेहे रुहिरवमति पासितु भद्दाइणमाहुमुज्जो ॥२५॥
गिरिंनहेहिंखणह अयं दंतेहिंखायह । जायतेय पाएहिंहणह जे भिक्खू अवमणह ॥ २६ ॥

'ए उग्र तप करनार महात्मा छे; ते जितेन्द्रिय अने सप्तदश विधे सयमधारी पुरुष छे; मारा पिताए पोताना हाथे करीने मने अर्पण करी, छतां ए ब्रह्मचारी पुरुषे मारो स्वीकार कर्यो नहोतो [२२].' ए मुनि महानुभाव अने घोर पराक्रमी छे. ते पाच महाव्रतनो पालणहार अने अति सामर्थ्यवान पुरुष छे; माटे एवा अनिंदनीक पुरुषनी अवगणना करोमा; नहि तो तमे सौ तेना तपना तेजथी[१] वळीने भस्म थइ जशो.' [२३]. [पुरोहितनी स्त्री] भद्राना आवां सुभाषित वचनो ज्यारे यक्ष देवताओए सांभळ्या त्यारे तेओ साधुनी सहायता करवाने आव्या अने पेला तरुण ब्राह्मणोने वारवा लाग्या. [२४]. विकाळ स्वरूप धारण करीने अने अतरिक्षे रहीने असुरो ब्राह्मणोने मारवा लाग्या, ब्राह्मणोने भग्न शरीर अने मोढेथी लोही नांखता जोइने भद्रा आ प्रमाणे बोली :–[२५]. 'हे ब्राह्मणो! आवा साधु पुरुषनु अपमान करवु ए [२] नखवति पर्वत खोदवो, दातवति लोढु करडवु अने पगवति अग्नि मसळवो, तेना जेवु छे. [अर्थात सर्व अनर्थना मूळ छे]. (२६).

१. Fire (of his virtue) २.प्रो. जेकोबी आ माटे नीचे नां वाक्यो वापरे छे. Dig rocks with your nails, or eat iron with your teeth or kick fire with your feet

आसीविसोउग्गतवोमहेसी घोरव्वओ घोरपरक्कमोय । अगणिंव पक्खंदपयंगसेणा जे भिक्खूयंभत्तकाले वहेह ॥२७॥
सीसेणएयंसरणंउवेह समागयासव्वजणेणतुझे । जइ इच्छहजीवियंवाधणंवा लोगंपि एसोकुविओडहेज्जा ॥२८॥
अवहेडीयपिट्ठि स उत्तमंगे पसारियाबाहु अकम्मचिट्ठे । निब्भेरियच्छेरुहिरं वमंते उद्धं मुहेनिग्गयजीहणेत्ते ॥२९॥
तेपासिया खडियकट्ठभूए विमणोविसन्नो अहमाहणोसो । इसिपसाएइ सभारियाओ हीलंच निंदंचखमेहभंते ॥३०॥
बालेहिं मूढेहिं अयाणएहिं जंहीलियातस्स खमाहभंते । महप्पसाया इसिणोहवंति नहुमुणी कोहपराभवंति ॥३१॥

'उग्र तप करनार, घोर पराक्रमी अने घोर व्रत पाळनार आ महर्षि झेरी नाग समान छे; भिक्षार्थे नीकळेला साधुने पीडा उपजाववाथी तमे पतंगियाना [1] टोळानी माफक बळीने भस्म थइ जशो. [२७]. माटे जो तमारुं जीवित अने धन बचाववुं होय तो तमे सौ एकठा थइने, मस्तक नमावीने ए मुनिने पगे पडो, अने तेनुं शरणुं मागो; नहि तो ए साधु कोपशे तो आखा नगरने बाळीने भस्म करी नांखशे.' [२८].पोताना शिष्योने मस्तक अने पीठ नमावीने, पोताने सोंपायेलुं काम छोडी हाथ जोडीने, सजळ नेत्रे म्होंमांथी लोही नांखता, म्होंं वीकासीने, आंखो फाडीने, अने जीभ बहार काढीने, काष्टवत् जड उभेला जोइने, ते यज्ञ करावनार पुरोहित विषाद पाम्यो, निराश थइ गयो, अने पोतानी भार्या [भद्रा] सहित ते मुनिने प्रसन्न करवाने बोल्यो, 'हे पुज्य! अमे आपनी निंदा तथा अवगणना करी छे, ते क्षमा करो. (२९-३०). 'हे पुज्य! आ मूढ, अज्ञान बाळकोए आपने पीडा उपजावी छे तेना क्षमा आपो. ऋषिओ अति उदार मनना [2] होय छे, तेओ क्रोधने वश थता नथी.' [३१].

१. A swarm of moths २. मुनिराजोए आ शब्दो खास स्मरणमां राखवा लायक छे. "Sages are exceedingly gracious nor are the saints inclined to wrath."

पुव्विंच इणिंहंच अणागयंच मणप्पओसोनमे अथ्थिकोइ। जख्खाहुवेयावडिय करेंति तम्हाहु एएनिहया कुमारा ॥३२॥
उ.अ. १२. अथ्थच धम्मंच वियाणमाणा तुझेणविकुप्पहभूइपन्ना । तुझंतुपाएसरण उवेमो समागया सव्वजणेण अम्हे ॥३३॥
अच्चेमुतेमहाभागा नतेकिंचनअच्चिमो । भुंजाहिसालिमंकूरं नाणावंजणसजुयं ॥३४॥ इमंचमे अथ्थिपभूयमन्न तंभूज्जा
८५, सूं अम्ह अणुग्गहठ्ठा । बाढंति पडिछइभत्तपाण मासरसओपारणए महप्पा ॥३५॥ तंहिय गंधोदए पुफ्फवासं दिव्वात
हिं वसु हाराय वुठ्ठा । पहयाओ दुदुभीओ सुरेहि आगासे अहो दाणघुठ्ठ ॥३६॥

ए सांभळीने मुनि [हरिकेश] बोल्या, "हे ब्राह्मणो! मारा मनमां भूतकाळे कदि द्वेष उपज्यो नथी, वर्तमानकाळे उपजतो नथी, अने भविष्यकाळे उपजवानो नथी. यक्षो मारी भक्ति करेछे, तेमणे तमारा कुमारोने मार्या छे." [३२]. ए सांभळीने ब्राह्मणो बोल्या, 'हे स्वामि! आप सर्व शास्त्रनुं तत्त्व अने धर्म वस्तुनो स्वभाव जाणो छो. हे सर्व जीव रक्षक तत्त्व ज्ञानी पुरुष! कोप करशो नहि. सर्व परिवार सहित अमे सौ आपने शरणे छीए. [३३]. 'हे महानुभाग! अमे आपने वांदीये छीए. आप सर्व रीते पूजवा योग्य छो. नाना प्रकारना मसाला सहित पकावेलो आ शुद्ध भात आप जमो. (३४). 'अमारी पासे अन्न, पक्वान्न पुष्कळ छे. अमारा उपर कृपा करीने आप ते जमो.' "भले१" एम कहीने ते महात्मा मुनिए आहार पाणी व्होरीने मासखमणनुं पारणुं कर्युं. (३५). ए प्रसंगे देवताओए सुगंधी जळ अने पुष्पनो वरसाद वरसाव्यो अने दिव्य द्रव्यनी वृष्टि करी; दुंदभिना नाद कर्या अने आकाशमां 'अहो दान! अहो दान!' एवी गर्जना थइ रही. (३६).

१. सरल स्वभावी साधुओनी सहन शीलतानो आ प्रत्यक्ष पुरावो छे. असह्य शब्दो अने मार पड्या छतां, तेमनी आजीजी ध्यानमां लइ तेमनोज आहार लीधो. शब्दे शब्दे ने डगले डगले मोढुं मरडतां आजना लोकोए आवा दृष्टांतो परथी घणो धडो लेवानो छे. आवी शान्त वृत्तिनी कदर कुदरत अने देवताओ पण करे छे ते ३६मी गाथामां जणाइ आवे छे.

सक्खं खु दीसइ- तवोविसेसो नदीसई जाइ विसेस कोई । सोवागपुत्तं हरिएस साहु जस्सेरिसा रिद्धिमह णुभागा ॥३७॥ किं माहणा जोइ समारभंता उदएण सोहिं बहिया वि मग्गहा। जं मग्गहा वाहिरियं विसोहिं नतं सुदिट्ठं कुसला वयंति ॥३८॥ कुसचजूवं तणकट्ठमग्गि सायच्च पायं उदगं फुसंता । पाणाइ भूयाइं विहेडयंता भुज्जो वि मंदा पकरेह पावं ॥ ३९ ॥ कहचरे भिक्खु वयं जयामो पावाइं कम्माइं पणोल्लयामो । अक्खाहिणोसंजयजक्खपूइया कहं सुजट्ठं कुसला वयंति ॥४०॥

" ए जोइने ब्राह्मणो विस्मय पाम्या ('अने बोली उठ्या) के ' तपनो महिमा प्रत्यक्ष देखायछे ! जातिनो[1] महिमातो (तेनी आगळ) काइज जणातो नथी ! चांडाळ पुत्र हरिकेश साधुनो अद्भुत प्रभाव तो जुओ !' [३७]. ए सांभळीने मुनि ब्राह्मणोने उपदेश देवा लाग्या, " हे ब्राह्मणो ! तमे अग्निनुं संरक्षण करोछो अने जळ स्नानथी वाह्य शुद्धिने इच्छो छो. पण तत्वज्ञ पुरुषो ए वाह्य शुद्धिनेज खरी शुद्धि [जे मेळववानो मुमुक्षोनो प्रयास छे ते] तरीके स्वीकारता नथी. (३८). " तमे दर्भ, यज्ञ स्तंभ, तृण, काष्टनो उपयोग करो छो; तमे संध्याकाळे अने प्रभाते (अणगळ) पाणीनो उपयोग करोछो तेथी जीव हिंसा थाय छे, अने तमे मतिमंद लोको समजता नथी के एवा पापे करीने [उलटो] आत्मा मलीन थाय छे." (३९). ए साभळीने ब्राह्मणो बोल्या, 'हे साधु ! अमारे केवी रीते वर्त्तवुं ? केवी क्रिया करवी ? अने पाप कर्मथी केवी रीते दूर रहेवुं ? हे यक्ष पूजित, जितेन्द्रिय साधु ! केवे प्रकारे करेला यज्ञने पंडित पुरुषो उत्तम कहे छे ? [४०].

१. कुळना अभिमानमां अंध थयेलाओने आ उपरथी घणुंज शीखवानुं छे.

छज्जीवकाए असमारभंता मोसं अदत्तं च असेवमाणा । परिग्गह इत्थिओ माणमायं एयं परिन्नाय चरंतिदंता ॥४१॥ सुसंवुडा पंचहि संवरेहिं इह जीवियं अणवकंखमाणा । वोसट्ठकायासुइचत्त देहा महाजयं जयइ जन्नसिट्ठं[1] ॥ ४२ ॥ केतेजोई केवते जोइठाणं कातेसुया किंचते कारिसंग । एहायते कयरासंति भिक्खू कयरेण होमेण हुणासि जोइ ॥ ४३ ॥

१. कोइ मतोमां "जन्नसेठं" छे.

ए सांभळीने मुनि बोल्या, "छकाय जीवनी रक्षा करवी, मृषावाद बोलवो नहि, अदत्ता दान लेवुं नहि; स्त्री, मान, मायानो परिग्रह सेववो नहि अने इन्द्रियोने वश राखीने वर्तवुं. (४१). "पांचे आश्रव[1] जेणे रुंध्या छे, आ संसारमां जीवितनी वान्छना पण करतो नथी, जेणे पोताना देहनो [ममत्वनो] त्याग[2] करेलो छे, जे निर्मळ वृत्तिथी रहे छे, अने देहने कोइ अतिचारनो दोष लागवा देतो नथी, एवो मुनि [कर्मरूपी] महायज्ञमां विजय मेळवे छे." (४२). ए सांभळीने ब्राम्हणो बोल्या, 'हे साधु ! तमारो अग्नि कयो छे? तमारो अग्निकुंड कयो छे? अग्निमां घी होमवानो तमारो चाटवो कयो छे? तमारां इन्धन (छाणां) कयां छे? आ सर्व वस्तुओ विना यज्ञ शी रीते थइ शके? तमे अग्निमां होम हवन शानो करो छो?' [४३].

१. पवित्र आत्माने मलीन करनाराना कर्मोना चाल्या आवता प्रवाहने आश्रव कहे छे. गुप्ति अने गुप्तिथी ते प्रवाहने रोकवानी क्रियाने संवर कहे छे. आश्रवमां नवा कर्मोनो संग्रह थाय छे, संवरथी नवां कर्मो आवता रोकी शकाय छे बंधाइ चुकेला कर्मोनो तप वीगेरेथी क्षय करवो ते निर्जरा कहेवाय छे. २. अहिं काउसग्ग—कार्योत्सर्ग करवानो पण भावार्थ छे मो. जकोबी ते माटे "Who abandons his body" शब्दो वापरे छे.

तवो जोइ जीवो जोइ ठाणं जोगासूया सरिरं कारिसंगं। कम्मंपहासंजमजोगसंती होमं हुणामिइसिणं पसथ्थं ॥४४॥
केतेहरए केयतेसंतितिथ्थें कहंसिएहाओ वरयंजहासि। आइख्खणं संजयजख्खपूइया इछामोनाओ भवओ सगासे॥४५॥
धम्मेहरए बभे संति तिथ्थे अणाविले अत्तपसन्नलेसे। जहिंसिएहाओ विमलो विसुद्धो सुसीइ भूओ पजहामिदोसं ॥४६॥

एं सांभळीने साधु बोल्या, "तप[1]मारो अग्निछे; जीव अग्निकुंड छे; मन वचननो शुभ व्यापार[शुद्ध आचरण] ए मारो घी होमवानो चाटवो छे; शरीर इन्धन रुपछे अने कर्म तेमां बळेछे. सप्तदश विधे संयम योग अने शान्ति जेनी पंडित पुरुषो स्तुति करी गया छे, तेनो हुं होम हवन करुंछुं." [४४]. ए सांभळीने ब्राह्मणो बोल्या, 'हे यक्षपूजित ऋषि! आपनुं तीर्थ कयुं? स्नान करवा योग्य जळाधारी कई? मेल टाळवाने आप केवी रीते स्नान करोछो? ए सर्वे आपनी पासेथी जाणवाने अमे इच्छिये छीए.' (४५), ए सांभळीने मुनि बोल्या, "धर्म मारुं तीर्थ छे; ब्रह्मचर्य मारी जळाधारी छे; जे जळाधारी सदा शान्त अने आत्माने निर्मळ करनार [तेज, पद्म, शुक्ल] लेश्याए करीने सहित छे; तेमां हुं स्नान करुंछुं अने मळरहित, विशुद्ध अने शीतळ थइने सर्वे दोषने छांडुं छुं.[2] [४६].

१."ध्यान धूपं, मनोपुष्पं, पंचेन्द्रिय हुताशनः क्षमा जाप, संतोष पूजा, पूजो देव निरंजनं," तेने मळतुं आ गाथानु रहस्य छे. प्रो. जेकोबीना आ गाथाना शब्दो घणांज असर-कारक छे.—"Penance is my fire, Life my fireplace, right exertion is my sacrificial ladle, the body the dried cowdung, Karman is my fuel, self-control, right exertion and tranquillity are the oblations, praised by the sages, which I offer"

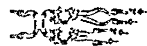
२. आ शब्दो सुवर्ण अक्षरे आलेखी हमेशां स्मरण करवा लायक छे. प्रो. जेकोबीना शब्दोमां आपणे ते पुनः स्मरीए. "The Law is my pond, celibacy my holy bathing-place, which is not turbid and thorough-out clear for the soul, there I make ablutions, pure, clean, and thoroughly cooled I get rid of hatred (or impurity)."

एयं सिणाणं कुसलेहि दिंठं महासिणाण इसिण पसत्थं । जह सिएनहाया विमला विसुद्धा महारिसी उत्तमठाणं पत्तेत्तिबेमि ॥४७॥

❀ ॥ इति हरिए सिज्जा झयण बारसम सम्मत्तं ॥ १२ ॥ ❀



अध्ययन १३. चित्र अने सम्भूत.



जाइपराजिओखलु कासिनियाणंतु हत्थिणपुरमि । चुलणीए बंभदत्तो उववन्नो पओमगुम्माओ ॥१॥ कंपिल्ले संभूओ चित्तो पुणजाओपुरिमतालमि । सेट्ठिकुलमि विसाले धम्म सोऊणपव्वइओ ॥२॥

" कुशळ पंडितोए एवा प्रकारनुं स्नान शोधी काढ्युं छे, ए उत्तम स्नाननी ऋषि मुनिओए प्रशंसा करीछे, महा मुनिओ तेमा स्नान करीने निर्मळ अने विशुद्ध थयाछे अने उत्तम स्थान (मुक्ति) ने विषे गयाछे " (४७).

❀ ॥ बारमु अध्ययन संपूर्ण. ॥ ❀

अध्ययन १३

चांडाळ जातिमा उत्पन्न थयाथी कंटाळीने [चित्रना न्हाना भाइ] सम्भूते (पुनर्जन्ममा) हस्तिनापुरमा चक्रवर्त्ति राजा थवानो पूरो संकल्प कर्यो, अने तेथी पद्मगुल्म [अने नलिनगुल्म] विमानेथी चवीने कंपिल्लपुर नगरमां ब्रह्म राजानी भार्या चुलणीना उदरे ब्रह्मदत्त नामथी जन्म धारण कर्यो [१]. चित्रनो जीव पुरिमताल नगरने विषे एक शेठना श्रेष्ठ विस्तीर्ण कुळमा उपज्यो. त्या अनुक्रमे धर्म श्रवण करीने तेणे दीक्षा ग्रहण करी. (२).

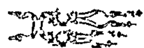
तवो जोइ जीवो जोइ ठाणं जोगासूया सरिरं कारिसंगं। कम्मंपहासंजमजोगसंती होमं हुणामिइसिणं पसथ्थं ॥४४॥
केतेहरए केयतेसंतितिथ्थे कहंसिएहाओ वरयंजहासि। आइख्खणं संजयजख्खपूइया इछामोनाओ भवओ सगासे॥४५॥
धम्मेहरए वभे संति तिथ्थे अणाविले अत्तपसन्नलेसे। जहिंसिएहाओ विमलो विसुद्धो सुसीइ भूओ पजहामिदोसं॥४६॥

ए सांभळीने साधु बोल्या, " तप[1]मारो अग्निछे; जीव अग्निकुंड छे; मन वचननो शुभ व्यापार[शुद्ध आचरण] ए मारो घीं होमवानो चाटवो छे; शरीर इन्धन रूपछे अने कर्म तेमां बळेछे. सप्तदश विधे संयम योग अने शान्ति जेनी पंडित पुरुषो स्तुति करी गया छे, तेनो हुं होम हवन करुंछुं. " [४४]. ए सांभळीने ब्राह्मणो बोल्या, 'हे यक्षपूजित ऋषि! आपनुं तीर्थ कयुं? स्नान करवा योग्य जळाधारी कइ? मेल टाळवाने आप केवी रीते स्नान करोछो? ए सर्व आपनी पासेथी जाणवाने अमे इच्छिये छीए.' (४५), ए सांभळीने मुनि बोल्या, " धर्म मारुं तीर्थ छे; ब्रह्मचर्य मारी जळाधारी छे; जे जळाधारी सदा शान्त अने आत्माने निर्मळ करनार [तेज, पद्म, शुक्ल] लेश्याए करीने सहित छे; तेमां हुं स्नान करुंछुं अने मळरहित, विशुद्ध अने शीतळ थइने सर्व दोषने छोडुं छुं.[2] [४६].

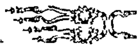
१. "ध्यान धूपं, मनोपुष्पं, पंचेन्द्रिय हुताशनं; क्षमा जाप, संतोष पूजा, पूजो देव निरंजनं," तेने मळतुं आ गाथानु रहस्य छे. प्रो. जेकोबीना आ गाथाना शब्दो घणांज असर कारक छे.—"Penance is my fire, Life my fireplace, right exertion is my sacrificial ladle, the body the dried cowdung, Karman is my fuel, self-control, right exertion and tranquillity are the oblations, praised by the sages, which I offer"

२. आ शब्दो सुवर्ण अक्षरे आलेखी हमेशां स्मरण करवा लायक छे. प्रो. जेकोबीना शब्दोमां आपणे ते पुनः स्मरीए. "The Law is my pond; celibacy my holy bathing-place, which is not turbid and thoroughout clear for the soul, there I make ablutions, pure, clean, and thoroughly cooled I get rid of hatred (or impurity)"

एयं सिणाणं कुसलेहि दिठ्ठं महासिणाणं इसिण पसत्थं । जह सिएनहाया विमला विसुद्धा महारिसी उत्तमठाणं पत्तोत्तिबेमि ॥४७॥ ❁ ॥ इति हरिए सिज्जा झयण बारसम सम्मत्त ॥ १२ ॥ ❁



अध्ययन १३. चित्र अने सम्भूत.



जाइपराजिओखलु कासिनियाणंतु हत्थिणपुरमि । चुलणीए बंभदत्तो उववन्नो पओमगुम्माओ ॥१॥ कपिल्ले संभूओ चित्तो पुणजाओपुरिमतालंमि । सेठ्ठिकुलंमि विसाले धम्मं सोऊणपव्वइओ ॥२॥

" कुशळ पंडितोए एवा प्रकारनुं स्नान शोधी काढ्युं छे, ए उत्तम स्नानने ऋषि मुनिओए प्रशंसा करीछे, महा मुनिओ तेमां स्नान करीने निर्मळ अने विशुद्ध थयाछे अने उत्तम स्थान (मुक्ति) ने विषे गयाछे " (४७).

* ॥ बारमुं अध्ययन संपूर्ण. ॥ *

अध्ययन १३

चांडाळ जातिमां उत्पन्न थयार्थी के ळीने [चित्रना न्हाना भाइ] सम्भूते (पुनर्जन्ममां) हस्तिनापुरमां चक्रवर्त्ति राजा थवानो ब्रो संकल्प कर्यो, अने तेथी पद्मगुल्म [अने नलिनगुल्म] विमानेथी चवीने कंपिल्लपुर नगरमां ब्रह्म राजानी भार्या चुलणीना उदरे ब्रह्मदत्त नामथी जन्म धारण कर्यो [१]. चित्रनो जीव पुरिमताळ नगरने विषे एक शेठना श्रेष्ठ विस्तीर्ण कुळमां उपज्यो. त्यां अनुक्रमे धर्म श्रवण करीने तेणे दीक्षा ग्रहण करी. (२).

कपिल्लमियनयरे समागया दोविचित्त संभूया । सुहदुक्ख फलविवागं कहंति इक्क मेगस्स ॥३॥ चक्कवट्टी महिड्ढीओ बमदत्तो महायसो । भायर बहुमाणेणं इम वयण मब्बवी ॥४॥ आसिमो भायरादोवि अण्णमण्ण वसाणुगा ।
१० अण्णमण्ण मणुरत्ता अण्णमण्ण हिएसिणो ॥ ५ ॥ दासा दसने आसी मियाकालिंजरे नगे । हंसा मयगतीराए सोवागा कासि भूमीए ॥६॥ देवाय देवलोगंमि आसि अम्हे महड्ढिया । इमाणो छट्ठियाजाई अण्णमण्णेण जाविणा॥७॥ कम्मानियाण पगडा तुझरायविचिंतिया । तेसि फल विवागेण विप्पओग मुवागया ॥८॥

-एक वखत काम्पिल्य नगरमा चित्र अने सम्भूत [जे नामे तेओ पूर्व जन्ममां ओळखाता हता ते] एक बीजाने मळ्या. त्यारे तेओ पोताना शुभाशुभ कर्मनां जे फळ तेमणे भोगव्या हता ते विषे परस्पर वात करवा लाग्या. [३]. महा रिद्धिवान अने यशस्वी चक्रवर्त्ति ब्रह्मदत्त राजा भवान्तरे जे पोतानो सहोदर हतो तेने बहु मानथी निचे प्रमाणे कहेवा लाग्योः—[४].'पूर्व भवमा आपणे बन्ने भाइओ हता; एक बीजापर माया राखता, परस्पर स्नेह भावथी वर्त्तता अने एक बीजानुं हित वान्छता.(५). 'प्रथम आपणे दशार्ण देशमां दास [गुलाम रुपे] जन्म्या हता; पछी कालंजर पर्वतने विषे मृग थया हता; पछी मृत गगा नदीने तीरे हंस जातिमां उत्पन्न थया हता; त्यार पछी काशीपुरीमा चाडाळ जातिमां जन्म्या हता [६]. 'अने त्यार पछी आपणे सौधर्म देवलोकने विषे महा रिद्धिवान देवता थया हता; आ आपणो छठ्ठो भव छे जेमा आपणे एक बीजाथी जुदा पडेला छीए.' [७]. ए साभळीने मुनि [चित्र] बोल्या, "हे राजा! भोगनी पापी इच्छा करवाथी कर्म बधाय छे[1]; अने तें एवुं चिंतवन कर्युं हतु. ए कर्मनो उदय थवाथी आपणो परस्पर वियोग थयो छे." [८].

१. मनमां माठा विचार करवाथी पण कर्म बधाय छे. पाप पुंज बंधे छे अने मनुष्योनो मोटो भाग माठा विचारने परिणामेज पाप बांधे छे. Karman is produced by sinful thoughts

सव्व सोयप्पगडा कम्मामए पुरा कडा । ते अज्ज परिभुज्जामो किं न्नु चित्ते विसे तहा ॥९॥ सव्वं सुचिन्नं सफलं
नराण कडाण कम्माण नमोख्ख अत्थि । अत्थेहिं कामेहिय उत्तमेहिं आया मम पुन्नफलो ववेए ॥ १० ॥
जाणाहि संभूय महाणुभाग महिड्ढिय पुण्ण फलो ववेय। चित्तापि जाणाहि तहेव राय इड्ढीजुई तरसवियप्पभूया ॥११॥
महथ्थ रूवावयणप्पभूया गाहाणु गीयाणरसघमज्झे । जभिख्खूणो सीलगुणो ववेया इहजयंतेसमणोमिजाओ ॥१२॥
उच्चोदएमहुकक्केय्बभे पवेइया आ वसहायरम्मा । इमगिह चित्तधणप्पभूय पसाहि पंचालगुणो ववेय ॥ १३ ॥

ए साभळीने ब्रह्मदत्त बोल्यो, 'हे साधु' हे भाइ! पूर्व जन्ममां में सत्य अने आत्मशुद्धिकारक सुकर्मो कर्या हता; ते [जप तप । शुभ कर्मनां फळ [सुख] आजे हु भोगवु छु हे चित्र ! तारा शुभ कर्मोना फळ क्यां [गुम थइ] गयां? [९]. ए साभळीने मुनि बोल्या, "हे राजन! सौ कोइने पोताना पुण्य कर्मनु फळ मळे छे. करेलां कर्मना फळथी कोइ जीव छूटी शकतो नथी.[1] अर्थ-द्रव्ये अने कामे करीने मारा आत्माने पोताना पुण्यनु फळ मळी चूक्यु छे. [१०]. "हे सम्भूत! तने तारा पुण्यनु फळ महारिद्धि अने महान भाग्य रूपे मळ्यु छे, चित्रनी (मारी) बाबतमां पण तेमज थयु छे एम समज. महान रिद्धि अने द्युति (कान्ति) चित्रने पण हती [११]. "जन समुदायमां गवाती महा अर्थ अने अल्प अक्षरवाळी गाथा साभळीने शील गुणे करीने युक्त एवा साधु पुरुषो जिन प्रवचनने (धर्म) विषे उद्यम करे छे. अने ए गाथा सांभळीने हु पण श्रमण (साधु) थयो छुं"[१२] ए साभळीने ब्रह्मदत्त बोल्यो, 'उच्च, उदय, मधु, कर्क अने ब्रह्म नामे पाच महारम्य अने मनोहर आवास मारे छे. हे चित्र! चित्र विचित्र धनथी भरेला अने पांचाळ देशनी लक्ष्मीथी भरपुर ए घरनो तु अधिकार कर. (१३).

१ कडाण कम्माण न मोख अत्थि-करेलां कर्म भोगव्यां विना छुटकोज नथी. There is no escape from the effect of one's actions आ सिद्धांत स्मरणमां राखी वर्तनार मनुष्य कदी पण पापमां प्रवृत्त थतो नथी.

नट्ठेहिगीएहियवाइ एहिं नारीजणाइ परिवारयंतो । भुजाहि भोगाइ इमाइ भिक्खू ममरोयई पव्वज्जाहु दुक्खं ॥१४॥ त पुव्वनेहेण कयाणुराग नराहिवकामगुणंसुगिद्ध । धम्मस्सिओतरपहियाणुपेही चित्तो इम वयण मुदाहरित्था ॥१५॥ सव्वं विलवियगीय सव्व नट्ट विडंबिय । सव्वे आभरणाभारा सव्वे कामा दुहावहा ॥१६॥ बालाभिरामेसु दुहावहेसु ननसुहंकामगुणेसु राय । विरत्तकामाण तवोधणाणं जभिक्खूणो सील गुणे रयाणं ॥१७॥ नरिंदजाई अहम्मानराण सोवागजाइ दुहओ गयाण । जहि वय सव्व जणस्सवेस्सा वसीय सोवागनि वेसणेसु ॥१८॥

'हे साधु! मुग्धाओना गीत, नाट्य, वादित्रना भोग तु भोगव; मारा धारवा प्रमाणे प्रव्रज्या (साध्वाचार) तने बहु दुःखरूप थइ पडशे. [१४]. धर्माश्रित चित्र पूर्व स्नेहने लीधे ब्रह्मदत्तनुं हित इच्छतो हतो, तेथी विषय सुखमा लुब्ध थयेला राजाने ते नीचे प्रमाणे कहेवा लाग्यो. [१५]. "हे राजन! सर्व गीत मात्र लवारा–विलाप तुल्य छे; सर्व नाट्य नाम मात्र मश्करी–विटंबना रुप छे, सर्व आभरण भाररुप छे; अने सर्व कामभोग परिणामे दुःखज उत्पन्न करे छे.१[१६]."हे राजन! जे काम भोग बाळक अने मूर्खने हर्ष उत्पन्न करे छे ते खरु जोता दुःखना मूळ छे; विरक्त अने तपस्वी साधु पुरुषो ए काम भोगमा सुख मानता नथी; पण तेओ तो २शीलगुणने विषे आसक्त रहे छे [१७]. "हे नरेंद्र! मनुष्यमा अधम जाति जे चांडाळ तेमा आपणे बन्ने जन्म्या हता; चांडाळ होवाथी सौ आपणने धिक्कारता अने आपणे चांडाळना झुपडामा वसता. [१८].

१. मोज शोखमां मशगुल थयेलाओ आटलु समजे तो पृथ्विपरथी केटला बधो अनर्थ दुर थाय? प्रो. जेकोबी ते माटे आ मुजब शब्दो वापरे छे :– All-singing is but prattle, all dancing is but mocking, all ornaments are but a burden, all pleasures produce but pains". २. Virtues of right conduct

तीसेउ जाईइउपाविंयाए वुछ्रामुसो चागनि वेसणेसु । सव्वस लोगरसदुग छणिज्जा इहं तु कम्माइं पुरे कडाइं ॥१९॥
उ.अ. १३. सो दाणिसि राय महाणुभागो महड्डिओ पुन्न फलो ववेओ । च इत्तु भोगाइ असासयाइं आयाणहेउं अभिनिखमाहिं ॥२०॥
इह जीविए राय असासयमि घणिय तु पुणाइ अकुव्वमाणो । से सोयई मच्चुमुहो वणीए धम्मंअकाऊण परमिले ए ॥२१॥
९३ जहेह सीहोवमिय गहाय मच्चूनरनेइहु अतकाले । नतस्समायावापि यावभाया कालमि तस्स स हरा भवति ॥२२॥
नतस्सदुख्खं विभय तिनाइओ न मित्तवग्गान सुयान वधवा । एगोसय पच्चणुहोइ दुख्ख कत्तारमेव अणुजा इकम्म ॥२३॥

"चाडाळनी अधम जातिमां उत्पन्न थवाथी आपणे चाडाळना झुपडामां रहेता सौ लोकनो द्वेष सहन करता. आ जन्मने विषे तारां पूर्व भवे करेलां शुभ कर्मनो उदय थयो छे. (१९). "हे राजन! आ काळने विषे तु महा रिद्धिवान अने महानुभाग राजा थयो छे ते तारा (पूर्वनां) पुण्यनुं फळ भोगवे छे. [1]अशाश्वत भोग छाडीने मोक्षदाता[2] चारित्र धर्म अगिकार कर. [दिक्षा ग्रहण कर]. (२०). "हे राजन! आ अशाश्वत मनुष्य जीवितमां जेणे सुकृत्यो अने धर्म कर्यो नथी तेने मृत्यु समये पश्चाताप थाय छे. [२१]. जेम सिंह मृगने पकडी जाय छे तेम मरण काळे काळ मनुष्यने लइ जाय छे. ते वखते माता, पिता, बांधव कोइ तेना जीवितने जरा पण बचावी शकतु नथी [२२] "स्वजन, मित्रवर्ग, पुत्र, बांधव कोइ तेना दुःखमां भाग लइ शकतु नथी; जीवने एकलानेज सर्व दुःख सहन करवा पडे छे, कारण के कर्मनां फळ ते करनारनेज भोगववा पडे छे. (कर्म करनारनी पाछळज कर्म जाय छे अथवा ते कर्मनो कर्ता एज कर्मनो भोक्ता[3] छे.) [२३].

---

१. Transitory २ The highest good. ३. खावावाळा खाइ जाय छे पण पापी कर्मनुं फळ पाप करनारने शीर रहे छे, माटे नीतिमय जीवनथी–पापथी बची कुटुंबनु भरणपोषण करवानो आशय आ गाथापरथी नीकळी शके छे.

चिच्चा दुप्पयं चचउप्पयं चाखित्तं गिहं धण धणं चसव्वं । सकम्मप्पबीओ अवसो पयाइं परं भवं सुदरं पावगंवा ॥२४॥
तमेकगं तुच्छ सरीरगं से विई गयं दहिय उपावगेणं । भज्जाय पुत्तोवियनायओय दा यार मन्नंअणुसंकमंति ॥२५॥
उवणिज्जइ जीविय मणमाय वणजराहरइनरसरायं। पचाल रायवयणं सुणाहि माकासि कम्माइं महालयाइं ॥२६॥
अहपि जाणामि जहेह साहुजमे तुमं साहसि वक्कमेयं। भोगा इमे संगकराहवति जेदुज्जया अज्जो अम्हारिसेहिं ॥२७॥
हथियण पुर मिचित्ता दट्ठूण नरवइ महिड्ढिय । कामभोगेसु गिद्धाण नियाणमसुह कड ॥ २८ ॥

"द्विपद (भार्यादि), चतुष्पद (अश्वादि), छाडीने, क्षेत्र, गृह, धन, धान्यादि सर्व वस्तु तजीने, परवश थयेलो जीव पोताना शुभाशुभ कर्म साथे लइने परलोके जाय छे अने तेना प्रमाणमां सारी माठी गतिने पामे छे. [२४]. "रोगथी भरेलो असार देह चितामां बाळी दीधा पछी तेनी भार्या, पुत्रो अने सगां वहालां बीजाने आश्रये जाय छे अने तेनी सेवा चाकरी करे छे. [२५]. "आयुष्य निरंतर क्षय थतुं जाय छे. जरा मनुष्यनी शक्तिने (रुप, वर्ण) हरे छे. माटे हे पंचाल राजा! मारां वचन श्रवण करीने महा रौद्र (भूंडा) कर्म करीश नहि."[२६] ए सांभळीने ब्रह्मदत्त बोल्यो, 'हे साधु! आपे जे उपदेश मने दीधो छे ते हुं सारी पेठे समजुं छुं. भोग, विलास धर्ममां अंतराय करनारा छे पण अमारा जेवा अज्ञानीथी ते छोड्या छोडी शकातां नथी. [२७]. 'हे चित्र! हस्तिनापुरमां सनतकुमार [1]चक्रवर्त्तिनी रिद्धि देखीने, काम भोगनी इच्छाथी ललचाइने ते वखते में अशुभ (दुष्ट) संकल्प कीधो हतो. [२८].

१. आ अध्ययनी प्रथम गाथा वांचवाथी आ संबध समजाशे. आगला भवमां ब्रह्मदत्त राजा सम्भूत नामे मुनिश्वर हता. सनतकुमारनी राणी सुनंदा ज्यारे आ मुनिने वाकावळी नमन करती हती त्यारे तेना सुंवाळा वाळनो, मुनिना पगने अकस्मात स्पर्श थइ गयो. आ अकस्माते मुनिश्रीना मनमां अनेक इच्छाओ उत्पन्न करी, अने पोताना तपना फळ रुपे चक्रवर्त्ति राजा थवानुं नियाणु कर्युं.

तरसमे अप्पडिक तरस इम एयारिस फलं । जाणमाणाविजंधम्म कामभोगेसु मुछ्छिओ ॥ २९ ॥ नागोजहापक्कजलावसन्नो दठुथलनाभि समेइ तीर । एव वय कामगुणेसूगिद्धा नभिक्खूणोमग्गमणुव्वयामो ॥ ३० ॥ अच्चेइकालो तुरियन्तिराइओ नयाविभोगा पुरिसाणनिच्चा । उविच्चभोगा पुरिसचयति दुम्म जहाखीणफल वपक्खी ॥ ३१ ॥ जइतसिभोगे चइउ असत्तो अज्जाइ कम्माइ करेहि राय। धम्मेठिओ सव्वपयाणु कपी तोहोहिसि देवोइउ विउव्वी ॥३२॥ नतुझ भोगे च इऊण बुद्धी गिद्धोसि आरभ परिग्गहेसु । मोह कउएतिओविप्पलाओ गछ्छामि राय आमंतिओसि ॥३३॥

'ए निदान मे आलोव्यु नहिं. (एवा दुष्ट सकल्पने माटे मैं पाछळथी पश्चाताप कर्यो नहि) तेथी तेनु एवु फळ आव्युछे के धर्मनो मार्ग हु जाणुं छु छता काम भोगने विषे आसक्त रहु छुं. [२९]. 'जेम पकजळ (कादवनाळी जग्या)मा निमग्न थइने खुचतो हाथी, काठो नजरे देखवा छता कादवमाथी बहार नीकळतो नथी, तेम काम भोगमा लुब्ध थयेला अमे साधु धर्म आचरी शकता नथी.' [३०]. ए साभळीने मुनि बोल्या, "हे राजन! काळ त्वराथी वहे छे अने रात्रि दिवस झडपथी पसार थइ जाय छे; मनुष्यना काम भोग पण अनित्य[१] छे. जेम पक्षी फळ रहित वृक्षने तजी जाय छे, तेम काम भोग मनुष्यनी पासे आवीने न्हासी जाय छे. [३१]. "हे राजन! काम भोग छाडवाने तु असमर्थ होय तो उत्तम कार्यो कर; धर्मने विषे दृढ रहीने सर्व जीव उपर अनुकम्पा राख; तेम करवाथी आ मनुष्य देहथी छूट्या पछी तुं शक्तिवान देवता थइश.[२] [३२]. "आटलु छतां पण काम भोग छाडवानी तारी इच्छा न थती होय, अने हजी पण तु आरम्भ, परिग्रहमा ग्रस्त रहेवा इच्छतो होय तो में जे वचमालाप कर्यो ते सर्व व्यर्थ गयो छे. तो-हवे तारी आज्ञा मागीने हु अहिंथी जाउ छु." [३३]

१. The pleasures of men are not permanent २. ससारमां रहीने पणजीवन सार्थक करवा।) आ कूंचीछे।

पञ्चालरायावियबंभदत्तो साहुस्सतस्सवयणं अकाउं । अणुत्तरेभुंजिय काम भोगे अणुत्तरेसोनरएपव्वीट्ठो ॥ ३४ ॥
चित्तोविकामेहिं विरत्तकामो उदत्तचारित्ततवोमहेसी । अणुत्तरं सजमपालइत्ता अणुत्तरं सिध्धिगइं गओ त्तिबेमि ॥३५॥

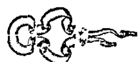
❀ ॥ इति चित्त संभूइज्जं झयण तेरसमं सम्मत्तं ॥ १३ ॥ ❀



पचाल देशनो राजा ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्ति ते साधुना उपदेश प्रमाणे वर्त्यो नहि, तेणे सर्वोत्कृष्ट काम भोग भोगव्या अने ते अंते अनुत्तर नरकने विषे उत्पन्न थयो.[१] [३४]. पण सर्वोत्कृष्ट चारित्र धर्म पाळनार अने उग्र तप करनार महर्षि चित्र (नो जीव) काम भोगनी इच्छाथी विरक्त रह्यो. ते सत्तर भेद संयम पाळीने अनुत्तर (सर्वोत्तम) सिद्ध गतिने प्राप्त थयो. [३५].

※ तेरमुं अध्ययन संपूर्ण. ※

१. Sank into the deepest hell



अध्ययन १४. इपुकार.



देवा भवित्ताण पुरे भवमि केइ चुया एगविमाणवासी । पुरे पुराणे उसुयारनामे खाए समिध्धे सूरलोय रम्मे ॥ १ ॥
स कम्म सेसेण पुराकएण कुलेसूदग्गेसुयतेपसूया । निव्विण सम्मार भया जहाय जिणिदमग्ग सरण पवन्ना ॥ २ ॥
पुमत्तमागम्म कुमार दोवि पुरोहिओ तस्स जसायपत्ती । विसाल कित्तिय तहा सुयारो रायथ्थदेवि कमलावइय ॥३॥
जाईजरा मच्चु भयाभि[illegible]ग बहिविहाराभिणिविठ्ठचित्ता । ससार चक्कस्स विमोख्खणठ्ठा दठूणते काम गुणेविरत्ता ॥४॥

अध्ययन १४

१ पूर्व भवे देवतानु पद पामीने, पद्मगुल्म विमानथी चवीने केटलाक जीव (आ लोकने विषे) पुरातन, समृद्धिवान, सुप्रसिद्ध अने देवलोक समान मनोहर इषुकार[१] नगरमा उत्पन्न थया. [१] पूर्व जन्मना उपार्जित करला अवशेष पुण्य कर्मने लीधे तेओ (देव लोकथी चवीने छए जीव) उत्तम कुळने विषे (उत्कृष्ट द्विज, क्षत्रिय जाति रुपे) उत्पन्न थया. संसारना त्रासथी भय पामीने तेओए सर्व भोग छाडी दीधा अने जिनेंद्रमार्गनु शरणु ग्रहण कर्युं [२]. बे अविवाहित द्विज पुत्रो, त्रीजो भृगु नामे पुरोहित, चोथी तेनी यशा नामे पत्नि, पाचमो विस्तीर्ण कीर्त्तिवाळो इषुकार नामे राजा अने छट्टी तेनी राणी कमळावती. (ए रीते छ जीव उत्पन्न थया हता). [३] पेला बे द्विज पुत्रो जन्म, जरा अने मरणथी त्रास पामीने मोक्षने विषे चित्त परोवीने[२], ससार चक्रथी पोताना आत्माने मुक्त कराववाने अने काम भोगने मोक्ष प्राप्तिमा विघ्नरुप मानीने, तेओ तेथी विरक्त थया. [४]

१ टीकाकारना कहेवा प्रमाणे आ शेहेर कुरुक्षेत्रमा हतु २. मूळपाठ अने टीकाकारने आधारे आ अर्थ करेलो छे, पण मो. जेकोबी एवो अर्थ करे छे के:—" There mind intent on pilgrimage "

पिय पुत्तगा दोन्नि विमाहणस्स स कम्मसीलस्स पुरोहियस्स। सरित्तुपोराणिय तथ्थ जाइ तहा सुचिन्नं तवसजमच ॥ ५ ॥
ते काम भोगेसु असज्जमाणा माणुस्सएसुजेयाविदिव्वा । मोख्खाभिकखी अभिजाय सद्धा ताय उवागम्म इम उदाहु ॥६॥
असासय दठु इम विहार बहु अतराय नय दीह माउ। तम्हा गिहंसि नरइ लभामो आमतया मोचरिस्सामोमोण ॥ ७ ॥
अह तायगो तथ्थमुणीएतेसि नवस्सवाघाय कर वयासी। इम वय वेय विदो वयति जहान होइ असुयाण लोगो ॥ ८ ॥
अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे पुत्ते परिठप्प गिहंसि जाया। भोच्चाण भोगे सह इथ्थियाहि आरणगा होह मुणी पसथ्था ॥ ९ ॥

पोताना पट्कर्मने विषे जे सावधान छे एवा भृगु पुरोहितना बन्ने प्रिय पुत्रोने जातिस्मरण उपज्यु, (पोताना पूर्व भवनुं भान थयुं) अने पोते पाछला भवमां जे जप तप कीधा हता ते सर्वेनुं तेमने स्मरण थयुं. [५]. मनुष्य अने देवताना कामभोगथी विरक्त थयेला, मोक्षना अभिलाषी, तत्वने विषे रुचीवाळा, एवा बन्ने कुमारो पोताना पिता पासे आवीने कहेवा लाग्या. [६]. "मनुष्यनी अवस्था अशाश्वत अने अनित्य[1] छे, तेमां अतराय घणा अने आयुष्य टुकु छे, तेथी हे तात! गृह सुखथी अमने संतोष थतो नथी, माटे दिक्षा ग्रहण करवाने कारे अमे आपनी आज्ञा मागवा आव्या छीए [७]. तेओना चारित्र–भाव (तप– वृत्ति)मा विघ्न नाखवाने (अंतराय करवाने) माटे तेमनो पिता (भृगु पुरोहित) हवे पछी थनारा मुनिओने (पोताना पुत्रोने) कहेवा लाग्यो, "हे पुत्रो! वेदने जाणनारा पंडितो एम कहे छे के 'अपुत्रने परलोकनी प्राप्ति थती नथी. [८]. "पुत्रो! वेदनु अध्ययन कर्या पछी, ब्राह्मणोने भोजनथी तृप्त कर्या पछी, तमारा पुत्रो उपर घरनो भार मूकया पछी, अने तमारी स्त्रीओ संगाथे भोग भोगव्या पछी तमे अरण्यमा जइने खुशीथी प्रशस्त मुनिओ थजो." [९].

---

१. Lot of man is transitory and precarious.

सोयग्गिणा आय गुणिं धणेण मोहा निलापज्जलणा हिएणं । सतत्त भाव परितप्पमाणं लोलप्प माण बहुहा बहुंच ॥ १० ॥
पुरोहिय त कमसोणुणन निम तय तच सुए धणेण। जहक्कम कामगुणेहिं चेव कुमारगाते पसमिक्ख वक्क॥११॥ वेया अही
यानभवतिताण भुत्तादियानिति तमत मेणं । जायाय पुत्तानभवतिताण कोनामते अणुमन्नेज्ज एय॥१२॥खणमित्त सुक्खा
बहुकाल दुक्खा पगाम दुक्खा अणिकामसुक्खा। मसारमोक्खस्स विप्पक्खभूया खाणी अणथ्थाणओ कामभोगा ॥१३॥

आत्मा गुणरागादिक इन्धनथी सींचायेलो अने मोहादि [१]पवनथी अधिक मज्वलित थता अग्निमां पुरोहितने बळतो जोइने, तेने अंत'करणने विषे दाझतो अने मोहनी कर्मने लीधे विलाप अने टळवळाट करतो जोइने, अने अनुक्रमे ते तेमने समजावी लेवानो प्रयास करे छे ते जोइने, तथा धन अने कामभोग तरफ ललचावे छे ते जोइने कुमारो पोताना पिताने कहेवा लाग्या. [१०–११]. "वेद पठनथी तरी शकातु नथी, ब्राह्मणोने जमाडवाथी अधकारमां ने अधकारमाज (नरकगतिमा) गोथां खावा पडे छे, पुत्र जन्म नरकथी बचावी शकतो नथी ; माटे हे तात! तमारु कहेवु अमाराथी केवी रीते मान्य राखी शकाय? [१२]. "कामभोग[३] मात्र क्षणिक सुखने आपनारा छे, पण ते लाबा काळ सुधी दुःख देनारा छे. ते अल्प सुख अने अतिशय दुःखकर छे. ते मुक्ति मार्गमां विघ्न [शत्रु] रुप छे अने अनर्थनी खाण रुप छे. (१३).

१ Wind of delusion २ सतान माटे अनेक उपाधी भोगवता मनुष्यो आ समजी सन्मार्गे द्रव्य व्यय करे तो घणु सारु
३ जाणी जोइने ससारमा सपडाता अने अनर्थनी उडी खाइमा गोथा खाता जीवो, आ शब्दो स्मरणमां राखे तो घणे दरज्जे जीवन सुधारी शके प्रो. जेकोबी पण आ माटे असरकारक शब्दोनो उपयोग करे छे. " Pleasures being only a moment's happiness, but suffering for a very long time, intense suffering, but slight happiness, They are an obstackle to the liberation from existence,and are a very mine of evils"

उ.अ. १४. परिव्वयंते अनियत्त कामे अहो यराओ परितप्पमाणे । अव्प्पमत्ते धणमेसमाणे पप्पोत्ति मच्चु पुरिसोजरंच ॥ १४ ॥
इमचमे अत्थि इमचणत्थी इमंचमेकिच्च इमअकिच्च । तएवमेव लालप्पमाण हराहरंतितिकह पमाओ ॥ १५ ॥
१०० धण पभूयंसह इत्थियाहिं सयगा तहाकामगुणापकाम । तवकए तप्पइ जस्सलोगो त सव्वमाहीणमिहेवतुझं ॥ १६ ॥
धणेणकिधम्म धुराहिगारे सयणेणवा कामगुणेहिंचेव । समणा भविस्सामो गुणोहधारी वहि विहारा अभिगम्मभिक्ख॥१७॥
जहाय अगी अरणी असतो खीरेघयतिल्ल महातिलेसु । एमेवजाया सरीरसिसत्ता समुच्छइना सइनावचिठ्ठे ॥ १८ ॥

काम भोग उपर आसक्त थइने माणस परिभ्रमण करे छे अने (अपूरी रहेली अभिलापाओने माटे) रात्रि दिवस (आर्त, रुद्र ध्याने) परिताप कर्या करे छे, प्रमादथी (पारका) धननी तपासमा फर्या करे छे अने अंते जरा अने मृत्युने प्राप्त थाय छे [१४]. "अमारी पासे आ वस्तु छे; अमारी पासे पेली वस्तु नथी; अमारे आ कृत्य करवुं छे; अमारे पेलु कृत्य नथी करवुं; ते आ प्रमाणे वात करतो होय छे एवामा काळ आवीने तेने घसडी जाय छे. अंते केवो प्रमाद कहेवाय? [१५]. ए साभळीने पिता कहे छे. "हे पुत्रो! आपणी पासे धन घणुं छे, स्त्रीओ पण घणी छे, विशाळ कुटुंब अने सुंदर कामभोग पण छे; के जे वस्तुओ मेळववा माटे लोको तप जप करे छे ससारना ए सर्व सुख तमने म्होंमाग्या मळी शके तेम छे" [१६]. ए सांभळीने पुत्रो कहे छे, "धर्मना अधिकारमा धन, स्वजन अने कामभोग शुं कामना छे? अमे गुणसमुहने धारण करनार श्रमण थइशु अने गामोगाम विहार करीने भिक्षा मागीशुं." [१७]. ए साभळीने पिता कहे छे, "जेम अरणीना काष्टमा अग्नि, दूधमा घी, अने तलमा तेल, रहेलुं छे तेम हे पुत्रो! शरिरने विषे आत्मा (समुच्छीए) रहेलो छे, सारे शरिरना नाशनी साथे तेनो पण नाश थाय छे अने ते सर्वे वस्तुओ अनित्य छे." [१८].

नोइदियगिज्झ अमुत्तभावा अमुत्तभावाविय होइनिच्चो । अज्झत्थहेऊनियउस्सबंधो संसारहेऊंचवयंति बंध ॥ १९ ॥
जहावयं धम्ममजाणमाणा पावपुराकम्म मकासि मोहा । उरुज्झमाणा परिरक्खियंता तन्नेव भुज्जोविसमायरामो ॥ २० ॥
अब्भाहयंमि लोगंमि सव्वओ परिवारिए । अमोहाहिं पडंतीहिं गिहंसि नरइंलभे ॥ २१ ॥ केण अब्भाहओ लोगो
केणवा परिवारिओ । कावाअमोहा वुत्ता जाया चिंतावरोहुमे ॥ २२ ॥ मच्चुणाअब्भाहओ लोगो जराए परिवारिओ
अमोहारयणी वुत्ता एवताय वियाणह ॥ २३ ॥

१. कोइ प्रतमां झाइओ छे.

ए सांभळीने पुत्रो कहे छे, "आत्मा इन्द्रिओथी अग्राह्य छे, कारण के ते अमूर्त्त (अरूपी) छे, अने ते अरूपी तथा अग्राह्य छे छतां ते नित्य अने शाश्वता छे. मिथ्यात्वादि दुर्गुणो कर्मबंधनना हेतु छे, अने ए बंधन, संसार परिभ्रमणनुं कारण कहेवाय छे.१ [१९]. "धर्मना खरा स्वरूपना अजाणपणाने लीधे अमे पूर्वे पापकर्म कीधां हतां, अमारा अज्ञाने अमने रुधी राख्या हता अने दिक्षा लेता अटकावी राख्या हता. माटे हवे अमे एवां पापकर्म नहि करीए [२०]. "हे तात! एक मनुष्यने पिडा उपजावे छे, बीजुं तेने वींटळाइ वळे छे, अने त्रीजुं अमोघ (निरंतर) वहाज करे छे, तेथी गृहस्थाश्रम उपर अमने रुची थती नथी." [२१] ए सांभळीने पिता कहे छे, "हे पुत्रो! मनुष्यने पिडा कोण उपजावे छे? तेने कोण वींटळाइ वळेलुं छे? अने अमोघ कोण वहाज करे छे? ते जाणवाने हुं आतुर छुं" [२२] ए सांभळीने पुत्रो कहे छे, "मृत्यु मनुष्यने पिडा उपजावे छे, जरा तेमने वींटळाइ वळेली छे, अने ३रात्रि दिवस अमोघ वहाज करे छे हे तात! ते तमे जाणजो (के जे रात्रि दिवस जवा करे छे ते आयुष्यने घटाडे छे) [२३].

१. This fetter is called the cause of worldly existence २. Wrong mindedness ३. मूळ पाठमां 'रयणी' रात्रि छे. प्रो. जेकोबी Days दिवस लखे छे पण भावार्थ रात्रि दिवसनो छे.

परिव्वयंते अनियत्त कामे अहो यराओ परितप्पमाणे । अन्नप्पमत्ते धणमेसमाणे पप्पोत्ति मच्चुं पुरिसोजरंच ॥ १४ ॥
इमचमे अथ्थि इमचणथ्थी इमंचमेकिच्च इमअकिच्चं । तएवमेव लालप्पमाण हरहरातितिकह पमाओ ॥ १५ ॥
धण पभूयंसह इथ्थियाहिं सयणा तहाकामगुणापकाम । तवकए तप्पइ जस्सलोगो त सव्वसाहीणमिहेवतुझ ॥ १६ ॥
धणेणकिंधम्म धुराहिगारे सयणेणवा कामगुणेहिंचेव । समणा भविस्सामो गुणोहधारी बहि विहारा अभिगम्मभिख्ख॥१७॥
जहाय अग्गी अरणी असंतो खीरेघयतिल्ल महातिलेसु । एमेवजाया सरीरसिसत्ता समुछइना सइनावचिठे ॥ १८ ॥

पहीण पुत्तस्सहु नत्थिवासो वासिट्ठि भिक्खाय रियाएकालो। साहाहि रुक्खोलभए समाहि छिन्नाहिं साहाहि तमेवखाणु २९,
पक्खा विहूणोवजहेह पक्खी भिच्च विहूणोवरणे नरिदो। विवणसारो वणिओव्वपोएपहीण पुत्तो मितहा अहंपि ॥ ३० ॥
सुसभिया कामगुणा इमेते सपिंडिया अग्ग रसपभूया। भुज्जा मुता कामगुणापगामं पच्छा गमिस्सामोपहाण मग्ग ॥ ३१ ॥
भुत्तारसा भोइ जहाइणेवउ न जीवियट्ठा पजहामि भोए। लाभ अलाभच सुहच दुक्ख संचिक्खमाणो चरिस्सामि मोणं ॥ ३२ ॥

(ए साभळीने भृगु पुरोहित पोतानी स्त्री प्रति कहे छे)–हे वाशिष्टि! पुत्रो विना गृहवास शुन्यवत् भासे छे, माटे हे प्रिये! मारे भिक्षुकधर्म अंगीकार करवानो अवसर आवी पहोंच्यो छे. वृक्ष शाखा वडेज शोभे छे; शाखाओ छेदाइ गया पछी ते वृक्ष टुंठु (खीलारूप) थइ रहे छे. (तेम पुत्र वियोगथी मारु चित्त गृहवासमा स्थिर रहेवानु नथी.)" [२९]. 'हे प्रिये! जेम पाख विनानुं पक्षी शोभतुं नथी, जेम संग्राममां सेवक विनानो राजा शोभतो नथी, वहाण भागी जवाथी *द्रव्यहीन थइ गयेलो वेपारी जेम शोक करे छे, तेवी पुत्र रहित थवाथी मारी दशा थशे' [३०] ए साभळीने वाशिष्टि कहे छे, "हे स्वामिन्! आपे सुसंस्कृत सर्व पदार्थो एकठां कर्या छे अने शृंगार तथा रसोत्पादक सुंदर वस्तुओनो संग्रह कर्यो छे, ते वडे आपणे (हमणा तो) कामभोग भोगवीए अने पछीथी आपणे मुक्तिमार्गने विषे विचरीशु" [३१]. ए साभळीने भृगु कहे छे, "हे भद्रे! आपणे भोग भोगवी चुक्या छीए. आयुष्यनो अंत नजीक आवतो जाय छे, भव भोगनी इच्छाथी (आ लोकार्थे) हु काइ कामभोग छोडतो नथी. परंतु लाभ अलाभ अने सुख दुःख तरफ समान वृत्ति राखीने हु साधु धर्म पाळीश" [३२].

* प्रो. जेकोबी लखे छे के 'वहाणमां माल विनानो वाणियो' A merchant on a boat without his goods

जाजावच्चइ रयणी न सापड़ि नियत्ताइ ।, अधम्मं कुणमाणस्स अफलाजंति राइओ ॥ २४ ॥ जाजावच्चइ रयणी
उ.अ. १४. न सापडि नियत्ताइ । धम्मंच कुणमाणस्स सफला जंतिराईओ ॥२५॥ एगओ संवसित्ताणं दुहओ सम्मत्त संजुया ।
पच्छा जाया गमिस्सामो भिक्खमाणा कुले कुले ॥ २६ ॥ जस्सथि मच्चुणासक्खं जस्सवथि पलायण । जोजाणे
 न मरिस्सामि सोहुकखे सूएसिया ॥ २७ ॥ अज्जेवधम्म पडिवज्जायामो जहिपवन्ना न पुणभवामो । अणागयं नेवय
अथिकिंचि सद्धाखमणेविणयतुराग ॥२८॥

"जे रात्रि दिवस व्यतित थाय छे त पाछा मळता नथी; अधर्म आचरण करनार जीवनां रात्रि दिवस निष्फळ जाय छे. [२४]. "जे रात्रि दिवस व्यतित थाय छे ते पाछा मळतां नथी: धर्माचरण करनार मनुष्यनां रात्रि दिवस सफळ थाय छे." [२५]. ए सांभळीने बाप कहे छे, "आपणे बने (पिता अने पुत्रो) गृहवासमा (अमुक काळ) साथे साथे रहीने अने सम्यक्तादि व्रत पाळीने पछीथी साधु थइने घरोघर भिक्षार्थे विचरीशुं." [२६]. ए सांभळीने पुत्रो कहे छे, "जे पुरुषने मरणनी साथे मित्राइ होय, अथवा तो जेने मरणथी न्हासी छूटवानी शक्ति होय, अथवा तो हु नहिज मरु एम जेओ जाणता होय. तेज मनुष्य एवा निश्चय उपर आवी शके के अमुक कार्य हुं काले करीश¹[२७]."हे तात! अमे तो आजेज धर्म अंगीकार करीशुं, जेम करवाथी अमारे फरीथी ससारमा जन्म लेवो न पडे; विषय सुखनी अप्राप्ति ए कांइज नथी. (आ जीवे संसारमा रहीने अनेक विषय सुख भोगव्यां छे); श्रद्धा² अमने रागथी मुक्त करी शकशे." [२८].

१. भविष्य उपर के वृद्धावस्था माटे मुलतवी राखनार मनुष्य परिणामे बहु हेरान थाय छे ए जग जाहेर छे. प्रसिद्ध अंग्रेजी कहेवत छे के :—Work as if you were to live for ever, but live as if you were to die to morrow. २. Faith will enable us to put aside attachment

वतासी पुरिमोराय नसोहोइप ससिओ । माहणेण परिच्चत्त धण आयाओ मिछसि ॥३८॥ सव्वजग जइतुह सव्व वाविधण भवे । सव्वपिते अपज्जत्त नेवताणायततव ॥ ३९ ॥ मरिहिसिराय जयातयावा मणोरमे कामगुणे पहाय । एक्कोहु धम्मो नरदेवताण नविज्जइ अणमिहेह किंचि ॥४०॥ नाह रमेपक्खिणी पजरेवा सताणछिन्ना चरिस्सामिमोणु अकिंचणाउज्जु कडा निरामिसा परिग्गहारंभ नियत्तदोसा ॥ ४१ ॥

" हे राजन! जेम कोई पुरुष वमन करेलो आहार फरीथी खाय ते प्रशसाने पात्र गणातो नथी, तेम तमे पण ब्राह्मणे त्याग करेलु धन ग्रहण करवानी इच्छा राखो छो ते प्रशसा पात्र नथी [१] [३८]. " हे राजन! कोइ तमने आखु जगत् अने ते उपरनुं सर्व धन अर्पण करे तोपण तेनाथी तमारी तृष्णा तृप्त थवानी नथी, तेमज वळी ते सघळु तमारुं रक्षण करवाने असमर्थ छे.[२] (३९) " हे नरदेव! ज काळे आप मनोहर काम भोग छोडीने मरण पामशो त्यारे धर्म सिवाय आ जगतनी बीजी कोइ वस्तु तमने [जीवने] दुर्गतिमां पडता बचावी शकशे नहि.[३] [४०] " जेम पक्षी पाजरामा पूराइ रहेवाथी सतोष पामतुं नथी, तेम भवपिंजरमा पडी रहेवाथी मने सतोष थतो नथी. सतति, द्रव्य, कषाय विषय, अने परिग्रह तथा आरम्भना दोषरहित थइने हु मुनिव्रत धारण करीश. [४१].

१. निन वारसी मिल्कत ए काळमां पण राज्यने जती एम आ उपरथी जणाय छे २. श्रीमतोए आ उपरथी घणु शीखवानु छे. एक हजारना रोजवाळो डोक्टर के मोटेरोनी थेलीओ आयुष्यमा एक क्षणनो पण वधारो करी शकती नथी माटे हमेशा शक्ति अनुसार सन्मार्गे पुन्य करवानु छे ३. महमद गीझनीए लूटमा मेळवेली दोलतनो ढगलो कराव्यो, मृत्यु समये तेपर बीछानु कराव्यु अन पोके पोक मूकीने रोयो पण ते हीरा, पाना के सोनु रुपु तलभार पण तेनी साथे गयुं नहि.

माहु तुमंमोयरिआण संभरे जुन्नोव्वहंसो पडिसोयगामी। भुञ्जाहि भोगाइं मए समाणं दुक्खं खु भिखायरिया विहारो ॥ ३३॥
जहायभोई तणुयं भुयंगो निम्मोयणीं हिच्चपलेइ मुत्ते। एमेते जाया पयहं ति भोए तेहं कहं नाणु गमिस्समेक्को ॥ ३४ ॥
छिंदितुजाल अबल वरोहिया मच्छा जहा कामगुणेपहाय। धोरेय सीलातवसा उदारा धीराहु भिक्खायरियं चरंति ॥ ३५ ॥
नहेव कोंचा समइक्कमता तय णि जालाणि दलितुहंसा। पलिंति पुत्ताय पईयमज्झं तेहं कहं नाणु गमिस्समेक्का ॥ ३६ ॥
पुरोहिं यंत ससुय सदार मोच्चाभिनिक्खम्मपहायभोए। कुडंबसारं विउलुत्तमंतं रायं अभिक्खं समवायदेवी ॥ ३७ ॥

ए सांभळीने ब्राह्मणी कहे छे, "जेम कोइ एक वृद्ध राजहंस अटले प्रवाह तणाताथी पश्चात्ताप करे छे तेम रखेने तमने (दिक्षा लीधा पछी) पाछळथी तमारां स्वजन वगेरे याद आववाथी शोच थाय! मारी संगाथे भोग भोगवो. भिक्षाचर्यानुं व्रत दोहिलुं छे." [३३].भृगु कहे छे, हे भद्रे! जेम कांचळी छाडीने सर्प न्हासे छे, तेम मारा पुत्रो ए भोग छोडीने दीक्षा लीधी छे तो पछी हुं मारा पुत्रोनी पाछळ शा माटे न जाउं? हुं एकलो रहीने शुं करुं? [३४]. "जेम रोहित[१] नामनी माछली नबळी जाळ छेदीने बहार नीकळी जाय छे तेम तप, शील अने उदारतामां प्रसिद्ध धीर पुरुषो काम भोग छाडीने भिक्षा चर्याने विषे विचरे छे." (३५). ए सांभळीने ब्राह्मणी कहे छे, "जेम क्रौंच पक्षी तेमज वळी राजहंस जाळ तोडीने आकाशमां उडी जाय छे तेम मारा बन्ने पुत्रो अने पति भोग जाळ छांडीने चाली नीकळे छे, तो पछी मारे तेमनी पाछळ शा माटे चाली न नीकळवुं? एकली रहीने शुं करुं?" [३६]. काम भोग छाडीने अने धन धान्यादि तजीने पुरोहित पोताना स्त्री पुत्रो सहित दिक्षा ले छे एम ज्यारे राणी (कमळावती) ए सांभळ्युं त्यारे ते राजाने [पोताना पतिने] कहेवा लागी [३७].

---

१. Cyprinus Rohita

नागोव बंधण छित्ता अप्पणो वसहिंवए । एय पत्थं महाराय उसुयारेत्तिमेसुय ॥ ४८ ॥ चइत्ता विउल रज्ज कामभेगेय दुज्जए । निव्विसया निरामिसा निन्नेहानिपरिग्गहा ॥४९॥ सम्म धम्म वियाणित्ता चिच्चाकामगुणे वरे । तवपगिझ हक्खायं घोरं-घोर परक्कमा ॥ ५० ॥ एवते कम्मसो बुद्धा सव्वेधम्म परायणा । जम्ममच्चुभओ व्विग्गा दुक्खस्सत गवेसिणो ॥५१॥

"जेम हाथी बंधन तोडीने पोताना स्थानके जाय छे, तेम आपे पण आपना पथे (मोक्ष तरफ) पडवुं जोइए हे इषुकार महाराजा! आ परम हितकारक सत्य में साधु मुखेथी सांभळ्युं छे." [४८]. आ उपरथी राजाराणीए पोतानुं विस्तीर्ण राज्य छोड्युं, तथा जे तजवा मोहिला छे एवा कामभोग तज्या; तेओ तृष्णा अने विषय रहित थयां, तेमणे स्नेह तथा परिग्रह छोड्या, अने कामभोग तजीने सम्यक धर्म ग्रहण कर्यो अने पराक्रम वडे द्वादश विधिए घोर तप आदर्युं. [४९–५०].* आ प्रमाणे जन्म मरणना भयथी उद्वेग पामेलां अने दुःखनो अंत आणवाने उत्सुक बनेला एवां छए धर्म परायण जीव (ब्राह्मण, ब्राह्मणी, तेमना बे पुत्रो, राजा अने राणी) प्रति बोध पाम्या. [५१].

* आ बन्ने गाथाओनु भाषान्तर राणी, राजाने बोध रूपे कहेती होय एवी रीते प्रो. जेकोबीए आज्ञार्थमां लीधेलु छे. अत्रे टीकाकारो अने मूळपाठनी पद्धति प्रमाणे भाषान्तर करेलु छे.

दवग्गिणा जहारन्ने डझमाणेसु जंतुसु । अ ो सत्तापमोयंति रागदोस वसंगया ॥४२॥ एवमेव वयंमूढा कामभोगेसू मुछिया । डझमाण नवुझामो रागदोसग्गिणा जगं ॥ ४३ ॥ भोगेभोच्चावमित्ताय लहुभूय विहारिणो । आमोयमाणा गछुति दियाकाम कमाइव ॥४४॥ इमेय बद्धा फदति ममहथ्थज्जमागया । वयच सत्ताकामेसु भविस्सामो जहाइमे ॥४५॥ सामिस कुललदिस्स बझमाण निरामिसं आमिस सव्वमुझित्ता विहरिस्सामो निरामिसा ॥४६॥ गिद्धो वमेउ नच्चाणं कामे ससारवद्धणे । उरगो सुवन्न पासेव स्कमाणो तणुच्चरे ॥४७॥

" अरण्यमा दावानळ लागवाथी अन्य जीवोने तेमा बळतां जोइने, रागद्वेषने वश थयेलां बीजा पशुओ जेम परम आनंद पामे छे, तेवीज रीते काम भोगमा लुब्ध थयेलां आपणे मूढ लोको जोइ शक्ता नथी के जगत रागद्वेपना दावानळथी सळगतुं जाय छे.१ [४२–४३]. " जेणे प्रथम भोग भोगव्या छे अने पछीथी तेने छाडी दीधा छे, तेओ वायुनी पेठे कशापण प्रतिबंध विना विहार करे ८ अने जेम पक्षीओ स्वेच्छाचारथी उडता फरे छे तेम तेओ पण पोतानी मरजी पडे त्यां फरता फरे छे. [४४]. " हे आर्य! ए २ काम भोगने मारा हाथमा सुरक्षित राख्या छतां ते स्थिर रहेता नथी. ते काम भोगने विषे आशक्त रहेवाथी पुरोहितादि कहे छे तेवी स्थिति आपणी थशे. (४०). " (मासना टुकडाथी ललचाइने) जाळमां फसायेला पक्षीने, तेवी लालचथी न ललचायेल पक्षीओ जेम जोइ रहे छे, तेम आपणे पण प्रत्येक लालचथी दूर रहीने विचरवुं जोइए अने कोइपण लालचथी ललचावुं न जोइए. [४६]. " मनुष्योने जाळमा फसायेलां पक्षीओ जेवा जाणीने, तथा कामभोग ससार (भव फेरा) ने वधारनारा छे एम समजीने, जेम सर्प गरुडने (सुपर्ण) ने देखीने सावचेती अने संकोचथी चाले छे तेम प्रत्येक मनुष्ये वर्तवुं जोइए. [४७].

---

१. The world is consumed by the fire of love and hatred २ प्रो. जेकोबीए आ आखी गाथा 'पक्षीओने' लागु पाडेली छे. 'टीका' अने 'भाषा'मां ते काम भोगने लागु पाडेली छे; काम भोगनी अस्थिरता बताववानो उद्देश छे. मूळ पाठमां 'फदति=स्थिरा न भवन्ति' छे.

नागोव बधण छित्ता अप्पणो वसहिंवए । एय पथ्थ महाराय उसुयारेत्तिमेसुयं ॥ ४८ ॥ चइत्ता विउल रज्ज कामभोगेय दुज्जए । निव्विसया निरामिसा निन्नेहानिपरिग्गहा ॥४९॥ सम्म धम्म वियाणित्ता चिच्चाकामगुणे वरे । तवपगिझ हक्खाय घोरं-घोर परक्कमा ॥ ५० ॥ एवंते कम्मसो बुद्धा सव्वेधम्म परायणा । जम्ममच्चुभओ व्विग्गा दुक्खस्सत गवेसिणो ॥५१॥

"जेम हाथी बधन तोडीने पोताना स्थानके जाय छे, तेम आपे पण आपना पथे (मोक्ष तरफ) पडवुं जोइए हे इषुकार महाराजा! आ परम हितकारक सत्य में साधु मुखेथी सांभळ्यु छे." [४८]. आ उपरथी राजाराणीए पोतानु विस्तीर्ण राज्य छोड्यु, तथा जे तजवा मोहिला छे एवा कामभोग तज्या, तेओ तृष्णा अने विषय रहित थयां, तेमणे स्नेह तथा परिग्रह छाड्या, अने कामभोग तजीने सम्यक धर्म ग्रहण कर्यो अने पराक्रम वडे द्वादश विधिए घोर तप आदर्यु. [४९–५०].* आ प्रमाणे जन्म मरणना भयथी उद्वेग पामेला अने दुःखनो अत आणवाने उत्सुक बनेलां एवां छए धर्म परायण जीव (ब्राह्मण, ब्राह्मणी, तेमना बे पुत्रो, राजा अने राणी) प्रति बोध पाम्या. [५१]

---

* आ बन्ने गाथाओनु भाषान्तर राणी, राजाने बोध रूपे कहेती होय एवी रीते प्रो. जेकोबीए आज्ञार्थमा लीधेलु छे. अत्रे टीकाकारो अने मूळपाठनी पद्धति प्रमाणे भाषान्तर करेलु छे.

सासणे विगयमोहाणं पुव्वंभवेण भाविया । अचिरेणेवकालेण दुख्खस्सत मुवागय॥५२॥गया सहदेवीए माहाणोय पुरोहिओ । माहणी दारगाचेव सव्वेते परिनिव्वुडे त्तिबेमि ॥ ५३ ॥

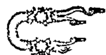
❁ ॥ इति उसुयारिज्ज नाम झयण चउदमं समत्त ॥ १४ ॥ ❁

जिनशासन संबंधी तेमना सर्व संशय दूर थया, तेमनामा उत्तम भावनाओ[1] उत्पन्न थइ अने अल्प काळमां दुःखनो अत आणीने तेओ मुक्ते पहोंच्या.[५२]. राजा, राणी, पुरोहित ब्राह्मण, तेनी स्त्री, अने तेमना वे पुत्रो ए छए जीन मोक्ष पाम्यां. [५३].

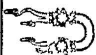
* चौदमुं अध्ययन संपूर्ण. *

---

१. आत्मानी पवित्रता वधारनारा विचारोने भावना कहेवामां आवे छे—Meditations which are conducive to the purity of soul आत्महितैपी विषयोनी सुदृढता माटे बार भावनाओ कहेली छे. अनित्य भावना, अशरण भावना, संसार भावना, एकत्व भावना, अन्यत्व भावना, अशुचि भावना, आश्रव भावना, सम्वर भावना, निर्जरा भावना, लोकस्वरुप भावना, बोधदुर्लभ भावना, धर्म दुर्लभ भावना आ बार भावनाओ वैराग्यने उत्पन्न करी दृढ करे छे. अनाथि मुनीश्वर, नमी राज रुषी, भरतेश्वर महाराजा, सनंतकुमार, मृगा पुत्र वीगेरे आमानी भावनाओ भावता भावता ससार सागर तरी गया छे. अत्रे विस्तारना भयथी लंबाण विवेचन कर्युं नथी पण श्रीमद् हेमचद्रार्यकृत 'भव भावना' नामनुं पुस्तक जे श्वेतांबरीओमा खास करी विशेष लोकप्रिय छे तेमा वहु लंबाणथी विवेचन छे. श्रीमद् सुभचद्रार्यकृत 'कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा' नामनु दीगंबरी पुस्तक पण आ संबंधे सारु विवेचन धरावे छे. योग शास्त्र, प्रवचन सारोद्धार, शात सुधारस वीगेरे ग्रन्थोमां पण विस्तार छे. पौद्गलिक अने आत्मिक तत्वोनो तफावत शुद्ध भावनाओथी स्पष्ट समजी शकाय छे.



अध्ययन १५. साचो साधु+ (सभिक्षुक).



मोण चरिरसामि समेचधम्म सहिएउज्जु कडेनियाण छिन्ने । संथव जहेज्जा अकामकामे अगायएसी परिव्वए जे स भिक्खू ॥१॥ राओवरयचरज्जालाढे विरए वेय वियाय रक्खिए । पन्ने अभिभूय सव्वदसी जेकिम्हिविनमुच्छिए स भिक्खू ॥२॥

मनथी मौन (मुनि धर्म) धारण करीने साधु धर्म पाळवाना इच्छावाळो बीजा साधुओना संगमा सरळ स्वभाव अने इच्छा रहित थइने विचरे, (संसारी) स्वजनोनो परिचय सेवे नहि, अने कामाभिलाष रहित थइने अज्ञातपणे अनित्य विहार करे[1] ते साचो साधु कहेवाय. [१]. राग रहित थइने विचरे, संयम मार्गने[2] विषे दृढ रही विचरे, पापथी दूर रहे, सर्व दर्शी (सर्व प्राणीने आत्मवत् जोनार) थाय, दुर्गतिथी पोताना आत्मानु रक्षण करे, बुद्धिमान, शक्तिमान (परिसह जीतवाने), अने सर्व वस्तुनो जाण थाय अने कोइ पण सचेत अचेत वस्तु उपर प्रीति करे नहि, ते साचो साधु कहेवाय. [२].

+ दरेक गाथामा साचा साधुना धर्मो बतावेला होवाथी, आखा अध्ययनने तेज नाम आपवामा आव्यु छे. दरेक गाथानी अंते पण सभिक्खु शब्द छे [1] अजाण्या—संबंध विनाना गृहस्थीओने त्याथी आहारनी गवेषणा करी विहार कर्या करे एवो भावार्थ छे. मो. जेकोबी ' Wander about as an unknown beggar ' ए शब्दो वापरे छे, जेनो अर्थ 'अजाण्या भिक्षुक तरीके विहार कर्या करवो' एवो थाय छे [2] मूळपाठमा लाढे शब्द छे. संस्कृत लाट शब्द छे तेना बे अर्थ छे, देश अने डाह्यो पुरुष. बंगालामा जंगली जातोथी वसायेलो लाट नामनो देश हतो ज्या श्रीमहावीर प्रभुए विहार करवानी हकीकत सूत्रोमाथी मळी शके छे. आवा परिसहवाळा देशोमा विचरवाथी कसोटी थाय छे जो लाट शब्दनो अर्थ देश लइए तो ते तरफ विचरवानो भावार्थ नीकळी शके छे. मो. जेकोबीए ' A model of rightousness ' एवो अर्थ करेलो छे. मुळ भाषानो भावार्थ तथा टीकाकारनी टीका उपर आधार राखी शब्दार्थ नहि पण भावार्थ अने आशय उपरथी अने उपर मुजब शब्दो वापर्या छे.

अक्कोसवहंविदितुधीरे मुणीचरे लाढे नियमाय गुत्ते । अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥३॥
पंतं सयणासण भइत्ता सीउण्हं विविहंच दंसमसगं । अव्वग्गमणे असंपहिट्ठेजे कसिण अहियासए स भिक्खू ॥४॥
११० नोसक्किय मिच्छइन पूयं नोविय वंदणगकओपसस । सेसंजए सुव्वए तवस्सी सहिए आय गवेसए स भिक्खू ॥५॥
जेण पुणो जहाइ जीवियं मोहंवाकसिणं नियच्छई । नरनारिपजहे सया तवस्सीनय कोऊहल उवेइ स भिक्खू ॥६॥
छिन्न सरभोम मतलिक्खं सुविण लक्खणं दण्डवत्थु विज्जा । अंगवियारं सरस्स विजयजो विज्जाहि न जिवइ स भिक्खू ॥७॥

दुर्वचन, ताडनादि सर्व सहन करे, स्थिर मनथी संयमने विषे दृढ रही विचरे, संसारनी चिन्तामां पडे नहि, (पण आत्माने गोपवे), क्रोधने कर्म बंधनना हेतुरुप मानीने धैर्यथी ते त्यागे अने (आकुळ व्याकुळ थया विना) सघळुं सहे ते साचो साधु कहेवाय. [३]. खराब शय्या अने आसनथी संतोष माने, शीतोष्ण सहन करे, डांस मच्छरादिनो उपद्रव सहे, हर्ष शोच करे नहि अने (आकुळ व्याकुळ थया विना) सघळुं सहन करे ते साचो साधु कहेवाय. [४]. आदर सत्कार, पुजा, वंदन अने प्रशंसानी इच्छा करे नहि; संयम, व्रत अने तप करे, तथा आत्मानो गवेषक होय ते खरो साधु कहेवाय.[५]. पोतानुं संयम जीवित तूटी जाय एवी वात पण न करे, मोहनी कर्मनी कदि इच्छा पण न करे, नर नारीनो संग छोडे, तप आदरे अने कदि कुतूहल करे[१] नहि ते खरो साधु कहेवाय. [६]. नख,[२] वस्त्र, दांत आदि छेदवाना लक्षण, भूमिकंप अने आकाशनी वातो, स्वप्न, दंड अने वास्तुविद्याना लक्षण, अंग स्फुरणना विचार, मृगालादिना शब्द। स्वास आदि विद्यानुं जाणपणुं बतावे नहि अने ते उपर पोतानी आजीविका चलावे नहि ते खरो साधु कहेवाय [७].

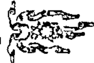
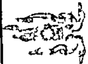
१. Betray any curiosity. २. सामुद्रिक अने ज्योतिषना वर्तारा तथा बीजा भविष्य भाखवानी साधुओने सख्त मनाइ छे.

मतं मूल विविहं विज्जचिंत्त वमण वि रेयण धूमनेत्त सिणाण। आउरे सरणंतिगिछियच्च त परिणायपरिव्वए स भिक्खू ॥८॥ खत्तिय गणउग्गरायपुत्ता माहण भोइय विविहाय सिप्पिणो । नोतेसिं वयइसिलोग पूय त परिणाय परिव्वए स भिक्खू ॥ ९॥ गिहिणोजे पव्वइएण दिट्ठा अपव्वइ एणवसथुया हवेज्जा । तेसिइहलोइय फलट्ठयाए जे सथव न करे इ स भिक्खू ॥ १० ॥ सयणा सणपाण भोयण विविह खाइमसाइम परेसि । अदए पडिसेहिए नियट्ठे जेतथ्थनपओ सई स भिक्खू ॥ ११ ॥

मत्र, जडी बुटी, विविध वैद्यक, वमन, विरेचन अने धूम्र प्रयोग, आंखनां अंजन, विलाप अने शांत्वन, एटला वानां पोताने रोग थवाथी करे नहि अने अन्यने माटे करावे नहि ते खरो साधु कहेवाय १ [८]. क्षत्रिओ, २ उग्रलोको अने राज पुत्रोनी, तेमज राजा, २ भोगलोको अने प्रधानादि के कारीगरो कोइनी प्रशसा अथवा परवा करे नहि ते साचो साधु कहेवाय. [९] जे कोइ पुरुष दिक्षा लीधा पछी बीजा ग्रहस्थोना ससर्गमां आववा छता, अने तेमनी साथे साधु थया पहेलां सारो संबंध होवा छतां, आ लोकना लाभ अर्थे तेमनो परिचय सेवे नहि ते खरो साधु कहेवाय. (१०). कोइ ग्रहस्थ पोतानी इच्छा पूर्वक शयनाशन [पाट, बाजोठादि], आहार पाणी अथवा विविध प्रकारनां स्वादिष्ट भोजन आपे नहि तो ते लेवानो निग्रथने प्रतिबध छे, एवे प्रसंगे जे निग्रंथ कोप न करे ते खरो साधु कहेवाय. (११)

१. तेमां हिंसानो सभव होवाथी साधुने मना करी छे २. 'उग्र' अने 'भोग' बन्ने क्षत्रि कुळ हता. उग्र जातिना वडवाओ श्री ऋषभदेव भगवानना समयमां कोटवाळ हता अने भोग जातिना तेमना बाप दादाना राज्यमां मानवता होइ भोगवता हता.

उ.अ. १६.

 अध्ययन १६. ब्रह्मचर्यनां दश समाधि स्थान[1]. 

११४ सुयमेआउसतेण भगवया एवमक्खाय इहखलुथेरेहि भगवतेहिदसबभचेर समाहिठाणापन्नत्ता ॥ जेभिक्खू सोच्चा निसम्म सजम बहुले सवरबहुले समाहिबहुले गुत्तेगुत्तिदिए गुत्तबंभयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ॥ कयरे खलुतेथेरेहिभगवतेहि दसबभचेरसमाहिठाणापन्नत्ता, जेभिक्खूसोच्चानिसम्मसजमबहुलेसवरबहुलेसमाहिबहुले गुत्तेगुत्तिदिए गुत्तबंभयारिसयाअप्पमत्तोविहरेज्जा, इमेखलुतेथेरेहिभगवतेहिदसबंभचेरसमाहिठाणापन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा-निसम्म संजमबहुले सवरबहुले समाहिबहुले गुत्तेगुत्तिदिए गुत्तबंभयारी सया अप्पम्मत्ते विहरेज्जा ॥

हे आयुष्मन (जम्बु)[1] नीचेनु व्याख्यान में (सुधर्माए) श्री महावीर भगवान पासेथी साभळ्युं छे :– जिनशासनने विषे श्री स्थविर भगवाने ब्रह्मचर्यना दश समाधिस्थान प्ररुप्या छे, जेनुं श्रवण करवाथी अने समजवाथी साधु संयम अने संवरने विषे सुदृढ रही शके छे. पोतानुं चित्त स्थिर राखी शके छे, त्रण गुप्तिए सुरक्षित रही शके छे, पांचे इन्द्रिओने काबुमा राखी शके छे, ब्रह्मचर्य पाळी शके छे अने सदासर्वदा अप्रमत्त[2] विचरी शके छे. ए साभळीने शिष्य पूछे छे "हे पुज्य! श्री स्थविर भगवाने कहेलां ए दश समाधिस्थान कया कया छे के जे सांभळवाथी अने समजवाथी साधु सयम अने संवरने विषे सुदृढ रही शके छे वगेरे उपर प्रमाणे–

---

१. The ten conditions of perfect chastity २. प्रमाद रहित Never be remiss (in the attendance in their religious duties) पोतानां नित्य कर्तव्यामा प्रमाद न करता साधु जीवन गाळवानो बोध छे.

उ.अ १६. तजहा विवित्ताइ सयणासणाइ सेविज्जा सेनिग्गथेनोइत्थिपसुपडग ससत्ताइ सयणासणाइंसेवित्ता हवइ सेनि-
ग्गथे त कहमितिचेआयरियाह ॥ निग्गथस्सखलु इत्थि पसुपडग ससत्ताइ सयणासणाइसेवमाणस्सबभयारिस्स
बंभचेरेसकावा कखावा वितिगिच्छावा समुप्पज्जेज्जा, भेयवालभेज्जा उम्मायवा पाउणिज्जा दीहकालियवारोगायक
हविज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओभसिज्जा तम्हाखलुनो [1]इत्थिपसुपडग ससत्ताइसयणासणाइ [1]सेविज्जा हवइ
११८ सेनिग्गथे ॥१॥ नोनिग्गथेइत्थीण कहकहित्ता हवइसेनिग्गथेतकहमितिचे आयरियाह निग्गथस्स खलुइत्थीण कह-
कहेमाणस्स बभयारिस्स बभचेरे सकावा कखावा वितिगिच्छावा समुप्पज्जेज्जा, भेयवालभेज्जा उम्मायवापाउणेज्जा

१. केटलीक प्रतोमा आ पेहेलां 'निग्गथे' शब्दछे अने छेल्ले 'सेविज्जा' शब्दथी वाक्य पुरुं करेल्छे.

उपर प्रमाणे थवाने माटे ब्रह्मचर्यनां दश समाधिस्थान श्री स्थविर भगवाने नीचे प्रमाणे प्ररूप्या छे:— १. निग्रंथे पोताना शयनआसनादिने माटे एवा तेवां स्थाननो उपयोग करवो, पण स्त्री, पशु अने नपुसकथी व्याप्त होय एवां स्थाननो उपयोग करवो नहि. श्री आचार्ये तेम न करवानु कारण समजाव्यु छे के जो कोइ निग्रंथ पोताना शयनासनादिने माटे स्त्री, पशु अने नपुसकथी व्याप्त होय एवा स्थाननो उपयोग करे तो ते पोते ब्रह्मचारी होय छता तेना ब्रह्मचर्यने माटे शका उपजे छे, अथवा तो तेने स्त्रीयादि साथे भोग भोगववानी इच्छा थाय छे, तेने सदेह उपजे छे, चारित्रनो भग थाय छे, उन्माद उपजे छे, लांबा काळ सुधी दाह ज्वरादिक रोग थाय छे, अथवा तो श्री केवलीना भाखेला धर्मथी ते भ्रष्ट थाय छे, तेटला माटे निग्रंथ स्त्री, पशु अने नपुसक जे स्थाने रमतां होय तेवां स्थान पोतानां शयनासनादिने माटे सेववा नहि. २ निग्रंथे स्त्री कथा–शृंगारी वात चित करवी नहि, श्री आचार्ये तेम न

१. Become slave to passion २. प्रो. जेकोबी "स्त्रीनी साथे वात करवी नहि" एवु भाषान्तर करे छे पण ते असंभवीत छे, कारण गोचरी वीगेरे घणे प्रसगे स्त्रीनी साथे वात चीत करवानो तेमने प्रसग पड्या विना रहेतो नथी

दीहकालियंवारोगायंकहवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओभसेज्जा तम्हाखलुनोनिग्गंथे इत्थीणं कहं कहेज्जा ॥ २ ॥ नोनिग्गथे इत्थीहिसद्धिसनिसिज्जागए विहरेत्ता, हवइसेनिग्गंथे त कहमितिचे आयरियाहनिग्गथस्स खलुइत्थिहि-सद्धिसनि सेज्जागयस्स विहरमाणस्सबंभयारिस्सबंभचेरेसकावाकखावा वितिगिछ्छावा समुपजेज्जाभेयवालभेज्जा उम्मायं वापाउणिज्जा दीहकालियवा रोगायकहवेज्जाकेवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा तम्हाखलुनोनिग्गथे इत्थीहिंसाद्धिसांने सेज्जागएविहरिज्जा॥३॥नोनिग्गथेइत्थीणइदियाइमणोहराइमणोरमाइआलोइत्ता,निझाइत्ताभवइसेनिग्गथे॥तकहमितिचे आयरियाहनिग्गथस्सखलुइत्थीणंइदियाइमणोहराइमणोरमाइं,आलोए माणस्स निझाएमाणस्सबंभयारिस्सबंभचेरेसकावा कखावावितिगिछ्छावा समुप्पजेज्जाभेयवालभेज्जा उम्मायवापाओणिज्जा॥दीहकालियंवारोगायक हवेज्जाकेवलिपन्नत्ताओ धम्माओभसेज्जा तम्हा खलुनोनिग्गथेइत्थीणं इदियाइ मणोहराइ मणोरमाइ आलोइत्तानिझाइत्ता ॥४॥

---

१ केटलीक प्रतोमां ' आलोइत्ता निझाइ माणस्स ' छे, अने केटलीकमां ' आलोए निझाए माणस्स ' एम भेगुं लीधेलुछे.

करवानुं कारण समजाव्यु छे के जो निग्रथ स्त्री कथा करे तो ते पोते ब्रह्मचारी होय छता (उपर प्रमाणे).

३. निग्रथे स्त्रीनी संगाथे एकज आसने वेसवुं नहि.[1] श्री आचार्ये तेम न करवानु कारण समजाव्यु छे के जो निग्रथ स्त्रीनी संगाथे एकज आसने वेसे तो (उपर प्रमाणे) ४. निग्रंथे स्त्रीना सौंदर्य तथा मनोहरता तरफ नजर करवी नहि, तेमज तेनुं चिंतन करवु नहि. श्री आचार्ये (उपर प्रमाणे).

---

१. शियळनी नव वाड.

नोनिग्गथे इत्थीण कुटतरसिवा,दूसंतरसिवा, भित्तिअतरंसिवा,कुइयसद्दवा,रुइयसद्दवा,गीयसद्दवा,हसियसद्दंवा,थणियस
उ.अ १६. द्दवा, कदियसद्दवा,विलवियसद्दवा,सुणित्ता हवइसेन्निग्गथे॥त कहमितिचे आयरियाह निग्गथरसखलुइत्थीणकुडतरासिवा
*दूसतरसिवा॥ भित्तित्तरसिवा कुइयसद्दवा रुइयसद्दवा गियसद्दवा हसियसद्दवाथणियसद्दवा कदियसद्दवा*विलवियसद्दवा
११७ सुणमाणस्स बभयारिस्सबभचेरे,सकावा कखावा वितिगिछावा समुप्पज्जेज्जा भेयवालभेज्जा ॥ उमायवा पाउणिज्जा-दीहकालियवा रोगायकहवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा, तम्हा खलु नोनिग्गथे इत्थिण कुडतरासिवा, [1]दूसतरसिवा भित्तितरसिवा कुइयसद्दवा रुइयसद्दवा गीयरसदवा हसियसदवा थणियसदवा कदियसदवा विलवियसदवा [1]सुणेमाणे विहरेज्जा ॥५॥ नोनिग्गथे इत्थीण पुव्वरय पुव्वकीलिय अणुसरित्ता भवइसोनिग्गथेतकहमितिचेआयरियाह निग्गथस्स खलुइत्थिण पुव्वरय पुव्वकीलेय अणुसरमाणस्सबंभयारिस्स बभचेरेसकावा कंखावा वितिगिछावा समुप्पज्जेज्जा,भेयंवालभेज्जा॥उमायंवा पाउणिज्जा दिहकालियवा रोगायकहवेज्जा॥केवलीपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा, तम्हा खलुनोनिग्गथे इत्थीणंपुव्वरयपुव्वकीलियअणुसरेज्जा ॥ ६ ॥

* केटलीक मतोमा आ शब्दो फरीथी न मुकता 'जाव विलवियसद्दवा' एम चलावी लीधु छे १. केटलीक मतोमा आ शब्दो न मुकता 'जाव सुणेमाणे विहरेज्जा' एम चलावी लीधु छे.

५. निग्रंथे पडदाने अथवा दिवालने आतरे रहीने स्त्रीना कलह, (कोप), रुदन, गीत, हास्य, विलाप (आक्रन्द) आदि शब्द साभळवा नहि. (उपर प्रमाणे). ६. निर्ग्रंथे पोताना ग्रहस्थाश्रममा पूर्वे स्त्री सगाथे जे भोग भोगव्या होय ते संभाळवा नहि. .. .. (उपर प्रमाणे).

नोनिग्गंथे[1]पणीयंआहारं आहारित्ता हवइ सेनिग्गंथेतं कहमितिचे आयरियाह निग्गंथस्सखलु[2]पणीयंआहारं आहारेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संकावाकंखावा वितिगिछावा समुप्पज्जेज्जा ॥ भेयंवालभेज्जा उम्मायंवापाउणिज्जा दीह कालियंवा रोगायंकहवेज्जा, केवलि पन्नताओ धम्माओ भंसेज्जातम्हा खलु नोनिग्गंथे पणीयं आहारं आहारिज्जा ॥७॥ नोनिग्गंथे अइमायाए पाण भोयणं आहारित्ता हवइ से निग्गंथे तं कहमिति चे ॥ आयरियाह निग्गंथस्स खलु अइमायाए पाण भोयण आहारेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संकावा कंखावा वितिगिछावा समुप्पज्जेज्जा॥भेयवालभेज्जा उम्मायंवा पाउणेज्जा दिहकालियं वा रोगायकहवेज्जा केवलीपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा तम्हा खलुनोनिग्गंथे अइमायाए पाणभोयण भुंज्जिज्जा॥८॥नो निग्गंथे विभू साणूवाई हवई सेनिग्गंथे॥ त कहमित्तिचे आयरियाहानिग्गंथस्स खलु विभू सावत्तिए विभूसिय सरीरे इथ्थीजणस्स अहिलसणिज्जेभवईतओणं तस्स इथ्थिजणेणं॥अहिलसणज्जमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संकावा कंखावा वितिगिछावा समुप्पजेज्जा भेयंवालभेज्जा उम्मायं वा पाउणेज्जा दिह कालियं वा रोगायंकं हवेज्जा केवलिपन्नताओ धम्माओ भसेज्जा, तम्हा खलुनोनिग्गंथे विभूसाणुवाइसिया ॥ ९ ॥

१. केटलीक प्रतोमा 'निगथे' शब्द नथी २. केटलीक प्रतोमा अहि 'अतिमायाए' शब्द वधारे छे.

७. निग्रंथे घीथी लचपचतो आहार (विगयवालो माल मलीदो) खावो नहि .. (उपर प्रमाणे). ८. निग्रंथे अति खानपान सेववुं नहि (उपर प्रमाणे) ९. निग्रंथे पोताना शरीरने (सुशोभित वस्त्रालंकारथी) विभुपित करवु नहि. श्री आचार्ये तेम न करवानु समजाव्युं छे के जो साधु पोताना शरीरने अलंकारोथी विभुपित करे तो स्त्री जातिने तेनामां (तेने भोगववानी) अभिलाषा उत्पन्न थाय अने तेम थवाथी . (उपर प्रमाणे).

नोनिग्गंथे सदरूवरसगंधफासाणु वाइहवइ सेनिग्गंथे त कहमितिचेआयरियाह निग्गंथरस खलुसदरूव रसगंधफासाणु वाइयस्सबंभयारिस बभचेरे सक.वा कखावा वितिगिछा वा समुप्पज्जेज्जा॥भेयंवालभेज्जा उम्मायंवा पाउणिज्जा दीहकालिय वा रोगायक वाकहवेज्जा ॥ केवालि पन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा ॥ तम्हा खलु नोनिग्गंथे सदरूवरसगंधफासाणु वाइ, सेनिग्गंथेहवेज्जा दसमे बभचेर समाहिठाणे भवइ ॥ १० ॥

भवइ इथ्यसिलोगो तजहा जविवित्तमणाइन्नं रहिय इथ्थीजणेणय बभचेररसरख्खट्ठा आलयतुनिसेवए ॥ १ ॥ मण पल्हायजणणी कामराग विवड्ढणी । बभचेर रओ भिख्खूथी कहतु विवज्जए ॥ २ ॥ संमच संथवंथीहिं सकहंच अभिख्खण । बभचेर रओभिख्खू निच्चसो परिवज्जए॥३॥ अगपच्चंग संठाण चारुल्लवियपेहीयं। बंभचेर रओथीणं चख्खूगिझं विवज्जए ॥ ४ ॥

---

*१०. निग्रथे शब्द, रुप, रस, गध अने स्पर्शनी दरकार करवी नहि (उपर प्रमाणे).

आ प्रमाणे ब्रह्मचर्यनां दश समाधिस्थान वर्णव्या छे, हवे ए वर्णन श्लोक [पद्य]मा करवामां आवे छे:—

साधुए पोताना ब्रह्मचर्यना रक्षणार्थे स्त्री रहित एकातवासमा [उपाश्रयमा] रहेवु. [१]. शीलव्रत पाळनार साधुए स्त्री कथा— स्त्री संबधी वात करवी नहि, कारण के ते मनने उश्केरनारी अने काम तथा रागने वधारनारी छे. [२]. शीलव्रत पाळनार साधुए स्त्रीनो परिचय सेववो नहि अने तेनी साथे वारवार वातचित करवी नहि [३]. ब्रह्मचर्यने विषे दृढ साधुए स्त्रीनां अग प्रत्यग (कुच कटाक्षादि अवयवो) निहाळीने जोवां नहि, अने स्त्रीना मनोहर मीठा वचन अने आंखोना अणसारा तरफ नजर करवी नहि. [४].

* आ अध्ययननो आटलो भाग गद्यमां छे; त्यार पछीनो भाग पद्यमा छे. बन्नेनुं तात्पर्य एक सरखुं छे.

कुइयंरुइयंगीयं हसियंथणियंकंदियं । बंभचेर रओथीणं सोयगिझं विवज्जए ॥ ५ ॥ हासं किड्डरइंदप्पं सहसावुत्ता-
उ.अ. १६. सिणाणिय । बंभचेर रओथीण नाणुचिंते कयाइवि ॥६॥ पणीयंभत्तपाणंतु खिप्पमय विवढ्ढणं । बंभचेर रओभिक्खू
निच्चसो परिवज्जए ॥ ७ ॥ धम्मंलध्धुं मियकाले जत्तथ पणिहाणव । नाइमत्तंतुभुज्जेज्जा बंभचेर रओ सया ॥ ८ ॥
'१२० विभूसं परिवज्जेज्जा सरीर परिमंडणं । बंभचेर रओ भिक्खू सिंगारथ्थं न धारए ॥ ९ ॥ सद्दे रूवेय गंधेय रसेफासे
तहेवय । पंचविहेकामगुणे निच्चसो परिवज्जए ॥ १० ॥

ब्रह्मचर्यमां सुदृढ साधुए स्त्रीनां कलह, [कोप], रुदन, गीत, हास्य, विलाप [आक्रन्द], आदि शब्द सांभळवा नहि. [५]. वि-
शुद्ध ब्रह्मचर्यना पाळनार साधुए स्त्री सगाथे पूर्वे [गृहवासमां] करेला हास्य, क्रीडा, मैथुन वगेरे संभारवां नहि; अने स्त्रीनुं मान
मूकाववाने तथा तेने त्रास उपजाववाने पोते केवी केवी युक्तिओ रची हती तेनुं चिंतवन करवुं नहि. [६]. शीलव्रत पाळनार साधुए
मदने तत्काळ उत्पन्न करे एवा स्वादिष्ट खानपाननो त्याग करवो. [७]. ब्रह्मचर्यने विषे सदा रक्त साधुए गोचरी वेळाए धर्मना
नियम अनुसार मेळवेलो आहार, संयमना निर्वाह अर्थेज [बळ, वीर्यनी वृद्धि अर्थे नहि) जोइए तेटला प्रमाणमां योग्य काळे खावो.
चित्तनी स्थिरता साचववाने तेणे अति आहार करवो नहि. [८]. ब्रह्मचारी साधुए शरीरनी शोभानो (नख, केश, मूछ वगेरे) त्याग
करवो. * शृंगार अर्थे तेणे पोताना शरीर उपर आभुषण धारण करवा नहि. [९]. शीलव्रत पाळनार साधुए पांच प्रकारना काम
गुण एटले शब्द, रुप, गंध, रस अने स्पर्शनो सदा परित्याग करवो. (१०)

* ... कहेवानी मतलब छे के 'शृंगारी लोकोनी माफक'

आलउथी जणाइन्नोथी कहाय मणोरमा । संथवो चेवनारीणं तासिइंदिय दरिसणं ॥११॥ कुइयं रुइयगीयं हासियं भुत्ता सियाणिय । पणीयभत्त पाणच अइमाय पाणभोयणं ॥१२॥ गत्तभूसणमिठ्ठ च कामभोगाय दुज्जया । नरस्सत्त गवेसिरस विसं तालउडजहा ॥१३॥ दुज्जए कामभोगेय निचसो परिवज्जए । संकठाणाणि सव्वाणि वज्जेज्जा पणिहाणव ॥१४॥ धम्मारामे चरेभिख्खू धिइमधम्मसारही । धम्मारामे रएदंते बभचेर समाहिए ॥ १५ ॥ देवदाणव गधव्वा जख्खरख्खस किन्नरा । बभयारि नम स्मति दुक्करजे करतित ॥१६॥ एसधम्मे धुवेनियए सासए जिणदेसिए सिद्धासिझतिचाणेण सिझिस्सतितहावरे त्तिबेमि ॥१७॥ ॥ इति बभचेर समाहि झयण सोलसम सम्मत्त ॥१६॥

स्त्रीओनी ज्या बहु आवजा होय तेनु स्थान, स्त्रीओनी मनोहर वाणी, स्त्रीनो परिचय अने तेना इन्द्रिय दर्शन (कुच–कटाक्षादि) स्त्रीनां कोप, रुदन, गीत, हास्य वगेरे, अने तेनी साथे काम भोग, वळी स्वादिष्ट खानपान अने मानाथी अधिक आहार पाणी, अने अलंकार तथा आभुषण, काम भोगनी आ सर्व वस्तुओ जे त्यागवी दुर्लभ छे, ते आत्माना गवेषीने *तालपुट विष समान छे. [११–१२–१३]. काम भोगनी ए सर्व वस्तुओ ज दुर्जय (जीतवी मुश्केल) छे तेनो तेणे हमेशने माटे त्याग करवो जोइए, अने एकाग्र चित्तथी, पोताना ब्रह्मचर्य उपर जेथी शंका उपजे ते सर्व तेणे वर्जवा जोइए. (१४) खरो साधु धर्म रुपी उपवनने विषे धर्म सारथी रुपे दृढताथी विचरेछे, अने धर्माराम, सन्तोष अने संयममा रहीने शुद्ध ब्रह्मचारी साधुना धर्म पाळेछे. [१५] देव, दानव, गधर्व, यक्ष, राक्षस अने किन्नर ए सर्वे ब्रह्मचारी साधु जे पोताना दुष्कर धर्म पाळेछे तेने नमस्कार करेछे. (१६). आ नित्य, शाश्वतो अने त्रिकाळे फळ दायक धर्म श्री तीर्थंकर देवे भाख्योछे, पूर्वे अनेक जीव ए धर्म [ब्रह्मचर्य] पाळवाथी सिद्धिने पाम्या छे अने हवे पछी पण पामशे. [१७] ॥ सोळमु अध्ययन संपूर्ण. ॥

---

* तालुपट विष=ताळवु फाडी नांखे एवु झेर.



अध्ययन १७. पाप श्रमण. (पापिष्ठ साधु).

जेकेइउपव्वइए नियठे धम्म सूणित्ता विणओववणे । सुदुल्लह लहिओ बोहिलाभं विहरेज्ज पच्छाय जहासुहंतु ॥१॥ सेज्जादढा पाउरणमिअथ्थि उप्पज्जाई भोतु तहेवपाउ । जाणामिजवट्टइ आउसोत्ति किनामकाहामिसुएणभंते ॥ २ ॥ जेकेई पव्वइए निद्दासीलेपगामसो भोच्चा । पिच्चासुहसुवइ पावसमणेत्ति वुच्चई ॥ ३ ॥ आयरिय उवझाएहि सुय विणयंच गाहिय । तेच्चेवखिसई बाले पाव समणेत्ति वुच्चई ॥ ४ ॥

कोइ निग्रथे दिक्षा लीधी होय, धर्मनुं श्रवण कर्युं होय, विनय-धर्म अंगीकार करीने ते पाळतो होय, अने बोधि-लाभ [सम्यक-लाभ] जे प्राप्त थवो दुर्लभ छे ते पाम्यो होय अने पछीथी ते यथेच्छ वर्ते; (१). पछीथी ते एम करे के 'हे गुरु! मारे सारी शय्या छे, [अथवा-टाढ, ताप अने वर्षादथी मारु रक्षण करवाने मजबूत उपाश्रय छे], शरीर ढाकवाने सारां वस्त्रो छे, मने सारा खानपान मळे छे, जीवादि वस्तुओ केम वर्त्ते छे ते सर्व हु जाणुं छु; तो पछी हे आयुष्मन्! सिद्धात भणीने मारे शु काम छे? [२]. जे साधु दिक्षा लइने सदा निंद्रामा ग्रस्त रहे अने मरजी मुजब खुब खाइ पीइने सुखे सूइ रहे ते पाप श्रमण [दुष्ट साधु] कहेवाय.[१] [३] पोताना आचार्य अने उपाध्याय पासे सिद्धात भणीने तथा विनय शीखीने पछीथी जे मूर्ख तेमने निंदे ते पाप श्रमण कहेवाय.[४].

---

१. दरेक संप्रदायना पुज्य श्री अने आचार्य श्रीओए आवा कुटेवोवाळा साधुओपर पुरतो अंकुश राखी, तेमने अभ्यासमा जोडवा जोइए जेथी पोताने अने पारकाने लाभ करी शके.

आयरिय उवज्झायाण सम्मनो पडितप्पई। अप्पडिपूयएथद्धे पावसमणेत्ति वुच्चई ॥ ५ ॥ समद्द माणेपाणाणि बीयाणि हरियाणिय। असजएसजयमन्नमाणे पावसमणेत्ति वुच्चई ॥ ६ ॥ सथारं फलगपीढ निसिज्ज पायकबल। अप्पमज्जियमारुहई पावसमणेत्ति वुच्चई ॥ ७ ॥ दवदवस्स चरई पमत्तेय अभिक्खण। उल्लंघणेयचंडेय पावसमणेत्ति वुच्चई ॥८॥ पडिलेहेइ पमत्ते अवउज्झइ पायकबल। पडिलेहणा अणाउत्ते पावसमणेत्ति वुच्चई॥९॥ पडिलेहेइ पमत्ते सेकिंचिहु निसामिया। गुरु परिभवेइ[1] निच्च पावसमणेत्ति वुच्चई ॥१०॥

१. केटलीक प्रतोमां 'परिभावइ' परिभासए' एम जुदा जुदा शब्दो छे.

पोताना आचार्य, उपाध्यायनी करवी जोइए तेम सम्यक प्रकारे सुश्रुषा न करे (प्रीति न मेळवे), अने अहंकारने लीधे गुरुथी विमुख रहे, (अथवा पोताना उपर उपकार करनार तरफ प्रत्युपकार न करे), ते पाप श्रमण कहेवाय. [५]. जे साधु प्राणीओने, बीजने (सचेत धान्यादिने) अने फळ, पुष्पादिने पीडा उपजावे, अने पोते आत्म संयममां दृढ न होय छता पोताने दृढ माने ते पाप श्रमण कहेवाय. [६]. जे साधु पाट, पथारी, बाजोठ, आसन अथवा रजोहरणादि[1] वस्तुओ सारी पेठे पुज्या (जीवनी जतना कर्या) सिवाय वापरे ते पाप श्रमण कहेवाय [७] जे साधु भिक्षादि अर्थे उतावळो उतावळो अने प्रमाद सहित चाले, अने विनय रहित तथा क्रोध, उन्माद सहित विचरे ते पाप श्रमण कहेवाय. [८] जे साधु वस्त्र, पात्रादिक वस्तुओनु पडिलेहण करवामां आळस करे, रजोहरण, कांबळ[1] इत्यादि गमे त्यां फेंकी दे, अने सावधान मनथी पडिलेहण करे नहि ते पाप श्रमण कहेवाय.[९].जे साधु, कोइ कथा वार्ता थती होय तेमां ध्यान खेंचावाथी पडिलेहणमां प्रमाद करे, अने पोताना गुरुने सदा संताप उपजावे ते पाप श्रमण कहेवाय. [१०].

१ मुळ पाठमां 'पाय कबल' शब्द छे टीकाकार तेनो अर्थ 'पाद पुच्छन' एटले पग पुजवानु वस्त्र एम करे छे,एक टीकाकार 'पात्र कबल' शब्दने बदले ते वपरायो बतावी'पातराने ढांकवानु वस्त्र'एवो अर्थ करे छे.

बहुमाई पमुहरी थद्धेलुद्धे अनिग्गहे । असंविभागी अवियत्ते पावसमणेत्ति वुच्चई ॥११॥ विवायंचउदीरेई[1] अहम्मे अत्तपन्नहा । वुग्गहे कलहेरत्ते पावसमणेत्ति वुच्चई ॥१२॥ अथिरासणे कुकुईए जथ्यतथ्थनिसीयई । आसणमिअ-एाउत्ते पावसमणेत्ति वुच्चई ॥१३॥ ससरख्खपाओ सुवई सेज्जं नपडिलेहई । संथारए अणाउत्तो पावसमणेत्ति वुच्चई ॥१४॥ दुद्धदही विगइओ आहारेई अभिख्खण । अरए य तवोकम्मे पावसमणेत्ति वुच्चई ॥१५॥ अथ्थंतमियसूरमि आहारेई अभिख्खण । चोईओ पडिचोएइ पावसमणेत्ति वुच्चई ॥ १६ ॥

१. केटलीक प्रतोमां 'उदेरेई' छे.

जे साधु मायाथी युक्त, वाचाळ, अहंकारी अने लोभी, [लालचु] होय, जे इन्द्रिय-निग्रह करी शकतो न होय, जे संविभाग रहित होय (एटले-आहार वगेरे अन्य साधुओनी साथे सरखे भागे वहेंचीने खातो न होय), अने जे गुर्वादि साथे अप्रीति करे ते पाप श्रमण कहेवाय. [११]. जे साधु विवाद[1] करे, कलह करे, बुद्धिने भ्रष्ठ करे अने विपवाद तथा विग्रहमां अनुरक्त रहे ते पाप श्रमण कहेवाय [१२], जे साधु अस्थिर-हालता आसनपर बेसे, फावे तेम चेष्टा कर्या करे, अने ज्यां त्यां असावधपणे (पडिलेहण कर्या विना) बेसे, ते पाप श्रमण कहेवाय.(१३). जे साधु [सचेत] रजथी भरेला पग सहित शय्यामां सूवे, उपाश्रयने पुंजे नहि अने संथारानो उपयोग राखे नहि (पडिलेहण करे नहि), ते पाप श्रमण कहेवाय. [१४]. जे साधु दूध, दहीं इत्यादि (विगय) वस्तुओनो वारवार आहार करे, अने तप उपर प्रीति राखे नहि ते पाप श्रमण कहेवाय.[2] (१५). जे साधु सूर्यास्त पछी आहार करे अने गुरु (तेम न करवानी) शीखामण दे त्यारे गुरुने सामो शीखामण देवाने तत्पर थाय ते पाप श्रमण कहेवाय. [१६].

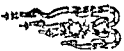
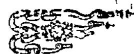
१. Who is a controversialist २. मिष्टान माल मलीदा खावाथी काम जाग्रत थाय छे काम-विषयने शान्त करवा तप एक उत्तम ओषधी रुप छे. तपथी शरीरने शोसवामां न आवे-विकारने शान्त करवामां न आवे तो शियळ साचवी शकातुं नथी.

आयरिय परिव्वाई परपासंड सेवए । गाणं गणिए दुब्भुए पावसमणोत्ति वुच्चाई ॥ १७ ॥ सयगेहं परिव्वज्ज परगेहं सिवावरे । निमित्तेणय ववहरइ पावसमणोत्ति वुच्चई ॥१८॥ सणाइ पिंडजेमेइ नेच्छइ सामुदाणिय । गिहिनिसेज्जाच-वाहेइ पावसमणोत्ति वुच्चाई ॥१९॥ एयारिसेपचकुसील सवुडे रूवधरे मुणीपव राणहिट्ठिमे । अयसिलोए विसमेवगरहिए नमेइहनेव परथ्थलोए ॥२०॥ जेवज्जए एएसयाओ दोसे सेसुव्वए होइ मुणीणमझे । अयंसिलोए अमयवपुइए आराहए दुहओ लोगमिण तहापर त्तिबेमि ॥ २१ ॥

⊛ ॥ इति पावसमणीय झयण सत्तरसम सम्मत्त ॥ १७ ॥ ⊛

जे साधु पोताना आचार्यनो परित्याग करीने परदर्शननी सेवा करे, अने छ, छ मासे (वारवार) नवा नवा गच्छमां दाखल थाय, एवो दुराचारी साधु पाप श्रमण कहेवाय. [१७] जे साधु पोतानु घर त्यागीने (दिक्षा लइने) पारके घेर काम करे, (अर्थात व्यवहारमा मच्यो रहे), अने द्रव्य उपार्जन करवाने निमित्त प्रकाशे (शुभाशुभ भविष्य भाखे) ते पाप श्रमण कहेवाय. [१८]. जे साधु पोताना सगावहाले त्याथी आहार लावीने जमे अने बरोबर भिक्षा मागवानुं पसद न करे, अने ग्रहस्थने त्या जइने तेनां (पलगादि) आसने वेसे ते पाप श्रमण कहेवाय [१९] आवा पच-कुशील (पच महाव्रतनो भग करनार) वेष धारी साधुओ अन्य मुनिवरोमा अधम गणायछे, आ लोकमा तेओ विषनी माफक निदाय छे, परलोके सिद्धिने पामता नथी अने उभय भ्रष्ट थायछे. (२०). पण जे साधु आ सर्व दोषने वर्जे छे अने अन्य मुनिवरोनी साथे रहीने सदाचारथी वर्तेछे, ते आ जगतमा अमृतनी माफक पूजायछे, अने आ लोक तथा परलोक साधी शकेछे. [२१].

॥ सत्तरमु अध्ययन सपूर्ण. ॥

 अध्ययन १८. संजय [राजर्षि संयत]. 

कपिल्लेनयरे राया उद्दिन्न बलवाहणे । नामेणं संजएनाम मिगव्वं उवनिग्गए ॥ १ ॥ हयाणीएगयाणीए रहाणीए तहेवय । पायत्ताणीए महया सव्वओ परिवारिए ॥ २ ॥ मिएछुभित्ता हयगओ कपिल्लुज्जाणकेसरि । भीएसंतेमिए तथ्थ वहेइरसमुच्छिए ॥३॥ अह्केसर मिउज्जाणे अणगारे तवोधणे । सज्झायझाणसजुत्ते धम्मझाणझियायई ॥ ४ ॥ अफोव मडवमिझायईझवियासवे । तस्सागएमिए पासं वहेइसे नराहिवे ॥५॥

❁ अध्ययन १८. ❁

काम्पिल्य नगरमां चतुरंग सेना अने [1]युद्धवाहननो धणी संजय नामे राजा राज्य करतो हतो. एक दिवस ते मृगिया रमवाने नीकळ्यो. [१]. हय[2], हाथी, रथ अने पायदळनो सघळो परिवार तेना संगमां हतो. (२). काम्पिल्य नगरनी पडोशना केशरीनामे उद्यानमां ते अश्वारुढ थइने मृगोने क्षोभ उपजावतो हतो, अने मृगियारसमां मूर्छित थइने त्रास पामेला मृगोने मारतो हतो. (३). ए केशरी उद्यानमां एक तपोधन अणगार (साधु) स्वाध्याय अने धर्म-ध्यानमां लीन थइने बेठो हतो. (४). जेणे सर्व आश्रव [3]रुंध्याछे एवा मुनि [4]लतामंडपमा धर्म-ध्यानमा बेठाछे, त्यां व्हीधेलो मृग न्हासी आव्यो, पण राजाए तेने मारी नांख्यो. [५].

---

१. War-Chariots' २. अश्व ३. Annihilating sinful inclinations ४. नागरवेल, द्राक्ष वीगेरेना वेलाँ वृक्षोथी वींटायेला माडवा नीचे.

अह आसगओ राया खिप्प मागम्मसो तहिं । हए मिएओपासित्ता अणगार तत्थपासई ॥६॥ अहराया तथ्थसंभतो अणगारो मणाहओ मएउमदपुन्नेण रसगिद्धेणघेतुणा ॥७॥ आस विसज्जइत्ताण अणगारस्स सोनिवो । विणएण वदए पाए भगव इत्थमेखमे ॥८॥ अहमोणेणसोभगव अणगारेझाणमसिए । रायाणं नपडिमतेइ तओराया भयदुओ ॥९॥ सजओ अहमस्सीति भयव वाहराहिमे । कुध्धेतेएण अणगारे डहेज्ज नरकोडीओ ॥१०॥ अभओ पथ्थिवा तुझ अभयदाया भवाहिय । अणिच्चेजीवलोगमि किंहिसाए पसज्जसी ॥ ११ ॥

अश्वारुढ थयेलो राजा मडप समीपे उतावळो उतावळो आवीने जूए छे तो त्यां हणेलो मृग तथा मुनिश्री तेनीं नजरे पड्या. (६). ए जोइने राजा गभराटमां पडी गयो अने विचारवा लाग्यो के ' आ मुनिराजनो में घात करी नाख्यो होत ! हु केवो मदभागी अने घातकी छुं के मृगीया [शिकारमां] मदान्ध[1] वनी गयो छु. !' [७]. घेडेथी उतरीने राजा ते अणगार पासे आव्यो अने विनय पूर्वक तेमना पगने वदन करीने कहेवा लाग्यो के " हे भगवान ! मारो अपराध क्षमा करो. " (८). ते साधु मुनिराज धर्म ध्यानमा मौन्य धारण करीने बेठा हता, तेथी तेमणे राजाने उत्तर आप्यो नहि; ते जोइने राजा भय-भ्रान्त थइ गयो [९] राजा बोल्यो " हे भगवान ! हु संजय छु. मारी साथे आप बोलो अणगार पोताना कोपाग्निथी करोडो मनुष्यने बाळीने भस्म करी शकेछे. " [१०]. ए सांभळीने मुनि बोल्या, " हे राजा ! अभय रहे तु पण अन्यने अभयदान देता शीख ! आ अनित्य जीव लोकमा तु हिंसामा आसक्त शामाटे रहेछे ? [११].

१. Mad for the sport रसगृद्धी.

जयासव्वं परिक्चज्ज गंतव्व मवसस्सते । अणिच्चेजविलोगंमि किंरज्जंमिं पसज्जसी ॥१२॥ जीवियंचेवरूवंच विज्जु-सपायचंचलं । जथ्थतं मुझसीरायं पेच्चथ्थ नाववुझसी ॥१३॥ दाराणिय सूयाचेव मित्ताय तह बंधवा । जीवंत मणु जीवंति मयंनाणुव्वयंतिय ॥१४॥ नीहरंति मयपुत्ता पियर परमदुख्खिया । पियरोवि तहा पुत्ते बंधुरायं तवंचरे॥१५॥ तओतेणज्जिएदव्वे दारेय परिरख्खिए । कीलंतन्ने नराराय हठतुठ मलकिया ॥ १६ ॥ तेणा विज कयकम्म सुहंवा जइवादुहं । कम्मुणातेण सजुत्तो गछ्छइओ परभव ॥१७॥

"हे राजन ! आ अनित्य जेवा लोकमांथी सर्व त्यागीने एक दिवस अवश्य चालया जवुं छे, तो पछी राज्य मदमां आसक्त शामाटे रहेछे ? [१२]. "हे राजा ! आयुष्य अने रुप जेमा तुं मोह पामी रह्योछे ते वीजळीना चमकारा जेवा चंचळछे; परलोकना लाभ अर्थे तारे शुं करवुं जोइये ते तुं समजतो नथी (१). "स्त्री, पुत्र, मित्र अने सगासंबंधी ए सर्वे माणस जीवतो होय त्यां सुधी तेनी सेवा करेछे, पण ते मरी जाय त्यारे तेनी साथे कोइ जतुं नथी. [१४]. "पिता मरण पामे त्यारे पुत्रो परम दुःख सहित तेना शबने दूर करेछे, अने तेवीज रीते मावाप पोताना पुत्रो अने भाइभाडुना शबने वेगळा करेछे; माटे हे राजन ! तप कर. (१५). "हे राजन ! मरी गयेला माणसे संग्रह करेलुं द्रव्य अने सुरक्षित राखली स्त्रीओने अन्य पुरुषो हर्ष अने आनंदथी भोगवेछे, अने तेना घरेणागाठां पहेरीने मोज माणेछे.(१६). "अने मरनार माणसे जे शुभाशुभ कर्म कर्या होय ते साथे लइने तेनो जीव परभवने विषे जायछे." [१७].

---

१. संसारनी अस्थिरता दृढ करवा आ दृष्टांत नातरीया वर्गनुं टांकेलुं छे. अथवा केटलीक विधवाओ अनीतिने रस्ते चडेछे ए समजाववानो पण भावार्थ छे.

सोऊण तस्ससोधम्म अणगारस्स अतिए । महया सवेग निव्वेयं समावन्नो नराहिवो ॥ १८ ॥ संजओ चईओरज्जं निक्खतो जिणसासणे । गद्दमालिस्स भगवओ अणगारस्स अतिए ॥१९॥ चिच्चारट्ठपव्वइए खत्तिए परिभासई । जहाते दीसईरूव पसन्नते तहामणो ॥२०॥ किंनामे किंगोत्ते कस्सट्ठाएवमाहणे । कहपडिय रसीबुद्धे कह विणीएत्ति वुच्चई ॥२१॥ संजओ नामनामेण तहा गोत्तेण गोयमो । गद्दभाली ममायरिया विज्जा चारण पारगा ॥ २२ ॥ किरियं अकिरिय विणय अन्नाणन्च महामुणी । एएहिं चउहिंठाणेहिं मेयन्ने किंपभासइ ॥ २३ ॥

त्यार पछी राजाए ते अणगार पासेथी धर्मनु श्रवण कर्यु अने तेथी तेने मोक्षनी तिव्र इच्छा उत्पन्न थइ अने ससार उपर वैराग्य उपज्यो. (१८). सजय राजाए पोतानु राज्य तजी दीधु अने गर्दभालि अणगारनी समक्ष जिनशासन अनुसार चारित्र धारण कर्यु. [१९]. कोइ एक क्षत्रि जेणे पोतानु राज्यपाट तजीने प्रव्रज्या ग्रहण करी हती तेणे तेने (सजय राजर्षिने) पूछ्यु, आपनी बाह्याकृति विकार रहित दीसे छे ते उपरथी धारी शकाय छे के आपनु मन पण विकार रहित होवु जोइये. [२०]. " आपनु नाम शु ? आपनु गोत्र कयु ? आपने साधु शा माटे थवु पड्यु ? आचार्यादिकनी सेवा शी रीते करोछो ? अने आप विनीत [साधु] शी रीते कहेवाया " ? (२१). ए सामळीने सजय राजर्षि बोल्या, " सजय मारु नामछे, गौतम मारु गोत्रछे, गर्दभालि मारा आचार्यछे अने तेओ विद्या-चारित्रमा पारगत छे. " (२२) " हे महामुनि ! तत्वथी अज्ञान मनुष्यो नीचेना चार स्थानक [बाबत]ना सबधमा मिथ्या भाषण करेछेः- १.[१]क्रियावाद, २.[२]अक्रियावाद, ३ [३]विनयवाद अने ४.[४]अज्ञानवाद "(२३).

---

(१) क्रियावादी-आत्मानु अस्तित्व माननारा (२) अक्रियावादी-आत्मानु नास्तित्व माननारा. (३) विनयवादी-भक्ति मार्ग अथवा मूर्त्ति पुजाने माननारा. (४) अज्ञानवादी-मात्र तपनेज प्राधान्य आपनारा, ज्ञान-मुक्तिने माटे उपयोगी नथी एम माननारा. श्री सूत्र कृताग सूत्रना प्रथम श्रुत स्कधना बारमा अध्ययननी प्रथम गाथामा पण आ चार वाबतनु विवेचन छे.

इइपाउकरे बुद्धेनायए परिनिव्वुए । विज्जाचरण संपन्ने सच्चेसच्च परक्कमे॥२४॥ पडंति मरएघोरे जेनरा पावकारिणो। दिव्वञ्च गइ गच्छंति चरित्ता धम्ममारियं ॥ २५ ॥ माया बुइय मेयतु मुसा भासा निरत्थिया। संजममाणोवि अहं वसामि इरियामिय ॥ २६ ॥ सव्वेते वेइया मज्झ मिच्छादिट्ठी अणारिया। विज्जमाणे परेलोए सम्म जाणामि अप्पयं ॥ २७ ॥ अह मासी महापाणे जुइम वरिस सओवमे। जा सा पाली महापाली दिव्वा वरिस सओवमे ॥ २८ ॥

"तत्वना जाण, महाबुद्धिमान, मोक्षने पामेला, विद्या चरण संपन्न, सत्यवचन वादी अने सत्य पराक्रमी श्री महावीर भगवाने आ प्रमाणे भाख्यु छेः-[२४]. "जे मनुष्यो पाप करेछे ते घोर नरकमा पडेछे; पण जेओ पवित्र धर्म-मार्गने विषे विचरेछे तेओ उत्तम दिव्य गतिने पामेछे. [२५]. "क्रिया, अक्रिया, विनय अने अज्ञान वादीओना ए कपट-वचन असत्य अने निरर्थकछे; तेटला माटे तेवाओनी असत्य प्ररुपणाथी निवर्त्तिने हु संयम मार्गे प्रवर्तु छुं.[२६]. "ए सर्ववाद मिथ्या छे ए हुं जाणुं छु, परलोक (पुनर्जन्म) विद्यमान छे ए पण हुं जाणुंछु अने मारा आत्माने हुं ओळखु छु. [२७]. "पांचमा ब्रह्मलोकने विषे महाप्राण विमाने हु महा द्युतिमान (तेजस्वी) देवता हतो; अने आ लोके शत् वर्षनो मनुष्य वृद्ध कहेवाय छे तेवी वृद्धावस्थाने हु प्राप्त थयो हतो. पण देवता संबंधीना शत् वर्ष पाली२ अने महापाली३ जेवा बहुज लाबा होय छे. [२८].

१. Conversant with the sacred lore and good conduct २. पल्योपम-चार गाउ लांबा प्होळा कुवामां वाळना बारीक टुकडाओ भरी, अमुक मुदते एक एक टुकडो काढवाना अति लांबा वखतने पल्योपम कहेवामां आवे छे. अर्थात असंख्याता वर्ष आपणे कहीशु तो चालशे. संस्कृतमा पाली शब्दनो अर्थ 'हद्द-सीमा' थइ शके छे. ३. सागरोपम-दश कोडा कोडी पल्योपमे एक सागरोपम थायछे. जैन सूत्रोमा कहेलु काळनुं कोष्टक जाणवा जेवुंछे. आ सूत्रना ७मा अध्ययनमा 'पूर्व' ने लगतुं कोष्टक आपेल छे. अहिं एक बीजुं कोष्टक आपीशु. अति सुक्ष्म काळने एक समय कहे छे. असंख्याता समये एक आवलिका थाय. एवी १६७७७२१६ आवलिकानुं एक मुहूर्त. त्रीश मुहूर्तनो एक दिवस-अहोरात्रि ७०५६०००००००००० वर्षे एक पूर्व थाय. एवा असंख्याता पूर्वे एक पल्योपम थाय. दश कोडा कोडी पल्योपमे एक सागरोपम. दश कोडा कोडी सागरोपमे एक अवसर्पिणी अने उत्सर्पिणी थाय. ए अवसर्पिणी उत्सर्पिणी मळी एक काळ चक्र थाय. अनंता काळ चक्रे एक पुद्गल परावर्त्त थाय. आ काळनुं=

सेचुए बम्भलोयाओ माणुस्स भव मागओ। अप्पणोय परेसिंच आउ जाणे जहा तहा॥ २९॥नाणारुइंच छंदंच परिवज्जेज्ज सजए । अणथ्था जेय सव्वथ्था इइविज्जा मणुसचरे ॥ ३० ॥ पडिक्कमामि पसिणाण परमंतेहिं वा पुणो । अहो उठ्ठिए अहोराय इइ विज्जा तव चरे ॥ ३१ ॥ जच मे पुच्छसी काले सम्म सुद्धेण चेयसा । ताइ पाओ करे बुद्धे त नाणं जिणसासणे ॥ ३२ ॥ किरियंच रोयए धीरे अकिरियं परिवज्जाए । दिठ्ठीए दिट्ठी सपन्ने धम्म चरेसुदुच्चर ॥३३॥ एय पुन्न पय सोच्चा अथ्थ धम्मो वसोहिय । भरहोवि भारह वास चिच्चा कामाइ पव्वइए ॥३४॥

" ब्रह्मलोकथी चवीने हु मनुष्य भवमा आव्यो मारु तमज अन्य मनुष्योनु आयुष्य केटलु छे ते हु बराबर जाणुछु. [२९]. "साधुए क्रियावाद्यादि (परतीर्थी) ना नाना प्रकारना मतनो परित्याग करवो जोइए अने स्वेच्छा तथा हिंसादि अनर्थना मूळ रूप कृत्योनो त्याग करवो जोइए. आ ज्ञान अगीकार करीने साधुए संयम मार्गे ते प्रमाणे विचरवु. [३०]. "ग्रहस्थोना शुभाशुभ (क्षेमी) प्रश्नना उत्तर आपवाथी अने मत्रादिथी हु निवर्त्यो छु (परागमुख रहुछु) अने रात्रि दिवस धर्ममा सावधान रहीने तपश्चर्या करु छु. [३१]. "अने ज (आयुष्यना ज्ञान) विषे तमे हमणा मने शुद्ध मनथी पूछ्यु छे तेनु ज्ञान श्री तीर्थंकरे (बुद्धे) प्रकट करेलु छे, अने ते ज्ञान जीन शासनने विषेज रहेलुछे [३२]."*डाह्यो पुरुष आत्माना अस्तित्वने मानछे अने आत्माना अविद्यमानपणाना मिथ्यात्वने मानतो नथी. सम्यकदर्शन सहित साधु दुष्कर चारित्र धर्म पाळे छे. [३३]. "परमपवित्र (दूषण रहित) जिनमार्गना सिद्धान्त जे सत्य अने विशुद्धताथी सुशोभितछे तेनु श्रवण करीने भरत [पहेला] चक्रवर्त्ती ए भारत वर्षनो अने सकळ काम भोगनो त्याग करीने दीक्षा ग्रहण करी हती (३४)

=अवजो वर्षथी पण माप थइ शकतु नथी आ विषय विशेष पारिभाषिक छे. माटे गुरु गमथी अथवा लोक प्रकाश, प्रथम सर्ग, चतुर्थ कर्म ग्रन्थ वीगेरे पुस्तकोथी वाकेफ थवु.

* अर्थात्–पंडित पुरुष ज्ञान सहित क्रियानो स्वीकार करेछे अने अज्ञान क्रियानो परित्याग करेछे; जिनमत आत्माना अस्तित्वनो अस्विकार करतो नथी पण आत्माना अविकार्य लक्षणनो अस्विकार करेछे. १. प्रथम तीर्थंकर श्रीरिषभदेव भगवानना ते पुत्र हता अने अयोध्यामां रहेता हता. चक्रवर्ती–Universal monarch

उ.अ
१८ सगरोवि सागरं त भरह वास नराहिवो । इस्सरिय केवलं हिच्चा दयाए परिनिव्वुओ॥३५॥च इत्ता भारहं वास चक्कवट्टी महिड्ढिओ । पव्वज्जमब्भुवगओ मघवंनाम महायसो ॥ ३६ ॥ सणकुमार मणुस्सिदो चक्कवट्टी महिड्ढिओ । पुत्तं रज्जे
१३० ठवेऊण सोविराया तव चरे ॥ ३७ ॥ चइत्ता भारह वास चक्कवट्टी महड्ढिओ । संतिसंति करेलोए पत्तो गइ मणुत्तरं

दख्खागरायवसहो कुंथूनाम नराहिवो । विखाय कित्तिभयव पत्तोगइ मणुत्तर ॥३९॥

मे बीजा चक्रवर्तीए पण पोतानुं समुद्र पर्यंत पथरायेलुं भरतक्षेत्रनुं विस्तीर्ण राज्य तजी दीधु हतुं अने पोतानी सर्व अने ऐश्वर्यनो त्याग करीने संयम (दया)थी मुक्तिने प्राप्त करी हती. (३५). भारत वर्षनो त्याग करीने महारिद्धिवान अने त्रीजा चक्रवर्ती राजाए दीक्षा ग्रहण करी हती. [३६]. महारिद्धिवंत मनुष्येंद्र सनत कुमार नामे चोथा राज्य सोंपीने तपश्चर्या आदरी हती. [३७]." महा ऐश्वर्यना धणी शान्ति चक्रवर्ती [सोळमा तीर्थंकर] जे हता ते भारत वर्षनो त्याग करीने अनुत्तर मुक्तिने प्राप्त थया हता [३८]." इक्ष्वाकु कुळने विषे उत्पन्न न थु नामे विख्यात कीर्त्तिवान राजा (सत्तरमा तीर्थंकर) उत्तम गतिने पाम्या हता. [३९].

श्री अजितनाथ भगवानना ते नाना भाई हता तेणे अयोध्यामा राज्य कर्यु हतुं. श्री अजितनाथ भगवाने तेने सावथी नगरीना राजा समुद्रविजयना ते पुत्र हता जेणे पोतानी पत्नि भद्रा साथे दिक्षा ग्रहण करी हती. अश्वसेनना ते पुत्र हता तेणे पोतानी पत्नि सहदेवी साथे दिक्षा ग्रहण करी हती, आ बधा जीवन चरित्रो आपेलां छे अहि विस्तारना भयथी लीधां नथी.

उ.अ १८. सागरतचइत्ताण भरह नरवरीसरो । अरोय अरयंपत्तो पत्तोगइ मणुत्तरं॥४०॥ चइत्ता भारहंवासं चक्कवट्टी महिड्ढिओ। चइत्ताउत्तमेभोए महापउमे तवंचरे ॥ ४१ ॥ एगछत्त पसाहित्ता महिमाणनिसूरिणो । हरिसेणो मणुरिंसदो पत्तोगइ मणुत्तर ॥४२॥ अन्निओरायसहस्सेहि सुपरिच्चाई दमचरे । जयनामोजिणख्खाय पत्तोगई मणुत्तर ॥४३॥ दसन्नरज्ज

१३३ मुइयचइत्ताण मुणीचरे। दसन्नभद्दो निख्खतो सक्कं सक्केण चोइओ ॥ ४४ ॥ नमिनमेइ अप्पाण सक्कं सक्केण चोइओ ।,चइऊण गेहवइदेही सामन्ने पज्जुवट्ठिओ ॥४५॥

" भारत नरेश्वर अर [अढारमा तीर्थंकर] सागरात पृथ्वी छाडीने अने अरजपशु [शुद्धि] प्राप्त करीने मुक्तिए पहोंच्या हता. [४०] " भरतक्षेत्र छोडीने अने पोतानी सेना, रथ अने उत्तम काम भोगनो त्याग करीने *नवमा चक्रवर्ती महापद्म राजाए तप आदर्यु हतु. (४१). " आखा जगतने एक छत्र तळे लाव्यापछी अने पोताना वेरीयोनु मान खंडन कर्या पछी *दशमा चक्रवर्ती हरिषेण राजा सिद्ध गतने प्राप्त थया हता. [४२]. " जय[1] नामे अग्यारमा चक्रवर्तीए बी जा सहस्र नृपना समुदाय साथे राज्य छांडीने सयम लीधो अने जिनोक्त धर्म आचारीने मोक्ष गतिने पाम्यो. [४३]."दशार्ण देशनु समृद्धिवान राज्य तजीने [2]दशार्णभद्र राजाए साधु धर्म अंगीकार कर्यो हतो, अने साक्षात शक्र (इन्द्र) नी प्रेरणाथी तेणे दीक्षा लीधी हती. [४४]. "विदेह देशना नमि राजा साक्षात शक्रनी प्रेरणाथी क्रोधादिक छाडीने अने गृहवास तजीने श्रमण थया हता [४५].[3]

* संस्कृत टीका मा महापद्म अने हरिषेण राजाने अनुक्रमे आठमा अने नवमा चक्रवर्ती गण्याछे महापद्म विष्णुकुमारना मोटा भाइ हता. हरिषेण, कापिल्य नगरीना राजा महाहरीना पुत्र हता. १. राजगृही नगरीना राजा समुद्रविजयना ते पुत्र हता. २. दशार्णभद्र राजा श्री महावीर भगवानना समकालीन हता. ३मूळमा अनुक्रम आ प्रमाणेछे. पण प्रो. जेकोबीए ४५ मी गाथाने ४६ मी अने ४६ मीने ४५ मी एम उलटा सुलटी मूकेली छे.

करकंडुकलिंगेसु पंचालेसु यदुम्मुहे । नमीराया विदेहेसु गंधारेसुयनग्गई ॥ ४६ ॥ एते नरिंद वसभा निख्खंत्ताजि णसासणे । पुत्ते रज्जे ठवेऊण सामन्ने पज्जुवठिया ॥ ४७ ॥ सोवीर राय वसभो चइत्ताण मुणीचरे । उद्दायणो पव्वईओ पत्तोगइ मणुत्तर ॥४८ ॥ तहेव कासी राया सेओ सच्च परक्कमे । कामभोगे परिच्चिज्जा पहणे कम्म महावण ॥ ४९ ॥ तहेव विजओ राया अणठ्ठा कित्ति पव्वए । रज्जतु गुण समिद्धं पयहित्तु महायसो ॥ ५० ॥ तहेवुग्गं तव किच्चा अवाख्खित्तेण चेयसा । महब्बलो रायरिसी आदाय सिरसा सिरि ॥५१॥

"[१]करकंडु राजाए कलिंग देश, [१]द्विमुख राजाए पांचाळ देश, [१]नमि राजाए विदेह देश अने [१]नग्गति (निर्गति) राजाए गंधार देश छोड्या हता. [४६]. "ए चारे [२]वृषभ समान राजाओए जिनशासनने विषे दिक्षा लीधी, अने पोताना पुत्रोने राज्य सोंपीने पोते श्रमण धर्मने विषे उपस्थित थया.[४७]. "सोवीर देशना वृषभ समान [३]उदायन राजाए राज्य छोडीने दीक्षा लीधी; अने प्रव्रज्या ग्रहण करीने उत्तम गतिने प्राप्त थयो.[४८]. "वळी जेनु सत्य पराक्रम प्रशंसनीय छे एवा [४]काशीना राजा (नंदनजी) ए काम भोग छोडीने कर्म रुपी महावनने कापी नाख्यु. (अर्थात–अष्ट कर्म दूर कर्या)[४९]. " वळी विजय नामे [बीजो बळदेव] राजा [५]जेनी कुकीर्त्ति सर्वथा नाश पामीछे. ते महायशस्वी राजाए पोतानु समृद्धिवान राज्य तजीने दीक्षा लीधी. (५०). " वळी [६]महाबल राजर्षिए सावधान (स्थिर) चित्तथी उग्र तप कर्यु अने पोताना शिरपर सयम रुपी लक्ष्मीने धारण करी. [५१].

१. ए चारे राजा प्रत्येक बुद्ध कहेवाय छे. २. सहन शीलता वीगेरे गुणोमा वृषभनी उपमा आपी छे ३. उदायन राजा पण श्री महावीर भगवानना समकालीन हता. ४ ते राजा अग्नि शिखाना पुत्र अने सातमा बळदेव हता. ५ प्रो. 'जेकोबी' आने बदले लखे छे के 'जेना सर्व पाप क्षय थया नथी.' पण टीका वीगेरे जोतां ते समज फेर थयेली जणायछे. ६. महाबल राजा तेरमा तीर्थंकर श्री विमलनाथना समकालीन हता. ते हस्तीनापुरना राजा बळराजाना पुत्र हता.

कहं धीरे अहेऊहिं उम्मत्तुव्व महिंचरे । एए विसेस मादाय सूरा दढ परक्कमा ॥५२॥ अच्चंत नियाण खमा सच्चामे भासिया वई । अतरिसु तरि तेगे तरिस्संति अणागया ॥५३॥ कह धीरे अहेऊहिं अत्ताण परियावसे । सव्वसंग विणिमुक्के सिद्धे हवइ निरए त्तिबेमि ॥ ५४ ॥

❁ ॥ इति श्री सजयनाम झयणं अठारस सम्मत्त ॥ १८ ॥ ❁

"ज्यारे उपर कहेला [¹भरतादी] पुरुषो दढ पराक्रमे करीने उत्तम गतिने पाम्याछे, तो पछी धीर, पडित पुरुषोए भूंडी क्रियाए [मिथ्यात्वे] करीने पृथ्वी उपर उन्मत्तनी पेठे शा माटे रखडवु जोइए ? (५२). "कर्म रुपी मळने शुद्ध करनार सत्य वचन में कह्याछे, ते वचनो नुं मनन करवाथी अनेक जीव [संसार समुद्रथी] तर्याछे, अनेक तरेछे, अने अनेक तरशे. (५३). " धीर पडित पुरुषोए कल्पित कारणोने लीधे (अर्थात–क्रियावाद आदि मिथ्यात्वनी असत्य प्ररुपणाने लीधे) शा माटे पोताना आत्माने दुःखमा नाखवो जोइए ? जे पुरुष सर्व ²सगथ अने पापोथी मुक्त थायछे ते सिद्धगतिने पामेछे." [५४].

* अढारमु अध्ययन संपूर्ण. *

१. ३४ मी गाथाथी ५१ मी गाथा सुधीमा जेटला राजाओना नाम आवे छे ते तमामनी कथा संस्कृत टीकामां आपेली छे. पण ते अहिं उतारी नथी. २. Fiee from all ties and sins.

अध्ययन १९. मृगा पुत्रनुं दृष्टान्त.

१३६ सुग्गीवे नयरे रम्मे काणणुजाण सोहिए । राया वलभद्देति मिया तस्सग्गमाहिसी ॥ १ ॥ तेसिं पुत्ते बलसिरी मिया पुत्तेत्ति विस्सूए । अम्मापिऊणदईए जुवरायादमीसरे ॥ २॥ नंदणे सोउपासाए कीलए सहइथ्थीहि देवोदोगुंदगोच्चेव निच्चमुइय माणसो ॥३॥ मणिरयण कुट्टिमतले पासाया लोयणेठिओ । आलोएइ नगरस्स चउक्क तियचच्चरे ॥ ४ ॥ अह्तथ्थ अइच्छंतं पासइ समण सजय । तवनियम सजम धर सीलड्ढं गुण आगारं ॥ ५ ॥

❀ अध्ययन १९. ❀

सुग्रीव नामे मनोहर नगर जे वन उपवन अने बाग बगीचाथी शोभी रह्युं छे, त्यां बलभद्र नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने मृगावति नामे पटराणी हती. [१]. तेमने बल श्री नामें पुत्र हतो; लोको तेने मृगापुत्रना नामथी ओळखता. ते युवराज तेना मातापिताने अति प्रिय हतो; अने ते (भविष्यमां) इन्द्रियोने दमनार यति पुरुषोनो स्वामी (शिरोमणी) थयो. [२]. ते मृगापुत्र पोताना नन्दन महेलमां पोतानी स्त्रीओ संगाथे [1]दोगुन्दक देवतानी माफक क्रीडा करतो हतो; अने सदा हर्षित मनथी भोग भोगवतो हतो. [३]. जेनुं [2]आगणु (फरस) मणि रत्नथी जडेलुं छे तेवा महेलना झरुखामां बेठो बेठो मृगापुत्र, शहेरना चोक, हाट अने रस्तानुं अवलोकन करतो हतो. [४]. एक दिवस चोकने विषे मृगापुत्रे एक संयम धारी श्रमणने जतो जोयो; ते साधु तपनो करणहार, संयमनो पालणहार अने इन्द्रिओनो निग्रह करनार हतो; वळी ते सद्गुणथी भरेलो अने शीलादि गुणोना भंडार रुप हतो.[५].

---

१. त्रायत्रिंशक. २. भोंयतळीउं Floor.

तदेहईमियापुत्ते दिट्ठीए अणमिसाइए । कहिमन्नेरिसंरूव दिट्ठ पुव्वं मएपुरा ॥६॥ साहुस्सदरिसणेतस्स अज्झवसाण
मिसोहणे । मोहगयस्स सतस्स जाई सरण समुप्पन्न ॥ ७ ॥ देवलोग चुओसतो माणुसभव मागओ । सन्निनाण
समुप्पन्ने जाइसरण पुराणय ॥ ८ ॥ जाईसरणे समुप्पन्ने मियापुत्ते महिड्ढीए । सरईपोराणिय जाइ सामणच पुराकय
१३० ॥ ९ ॥ विसएहिंअरज्जंतो रज्जंतोसजममिय । अम्मापियरउवागम्म इमवयणमब्बवी ॥ १० ॥ सूयाणिमेपन्चमहव्व-
याणी नरएसुदुक्ख च तिरिक्खजोणिसु निव्विन्नकामोमि महन्नवाओ अणुजाणहपव्वइस्सामि अम्मो ॥ ११ ॥

मृगापुत्र ते मुनिनी सामे स्थिर द्रष्टिथी जोइ रह्यो अने एवु स्वरुप (ए पुरुषने) पोते पूर्वे भवे क्यां दीठु हतु ते याद करवा लाग्यो(६), साधुना दर्शने करीने तेनु मन पवित्र थयु; शुभ ध्यानथी तेनो मोह उपशम्यो[१] अने तेमां तेने पोताना पूर्व भवनु जाति स्मरण थयु. [७]. तेने [२]जातिस्मरण थवाथी *पोते देवलोकथी चवीने मनुष्यभवमां आव्यो हतो अने तेमां सम्यक ज्ञान उपजवाथी *पोते पूर्वभवे जे चारित्र पाळ्युं हतु ते तेने सांभरी आव्यु. [८–९] विषय उपरथी तेनु मन उतरी गयु अने तेने सयमने विषे रुचि उत्पन्न थइ, तेथी ते पोताना मातापिता पासे आवीने नीचे प्रमाणे कहेवा लाग्यो '– [१०]. "पच महाव्रत मने सांभरी आव्या छे, वळी नरक अने तिर्यच योनिना दुःखनु पण मने भान थयु छे, मने आ संसारसागरमां काम भोगनी लेश मात्र अपेक्षा नथी; माटे हे मातापिता! मने दिक्षा लेवानी आज्ञा आपो. [११].

१. मोह उपशमवाथी ते मूर्च्छा पाम्यो एवो भावार्थ छे. मो जेकोबी ते माटे He was plunged in doubt ए शब्दो वापरे छे २ पूर्व भवोनी वातो याद आवे ते–संज्ञी पचेंद्रियांथी जे जीव आव्या होय तेनेज आ ज्ञान उत्पन्न थाय छे. * आटलो भाग मो. जेकोबीए पोताना भाषान्तरमां छोडी दीधो छे. आ अध्ययनी ९९ गाथा छे तेणे ९८ लीधी छे. सुगमता खातर अहि बने साथे मेळवी लीधी छे.

उ.अ. अम्मतायमएभोगा भुत्ता विसफलोवमा । पच्छाकडुयविवागा अणुबंध दुहावहा ॥ १२ ॥ इमं सरिर अणिच्चं असुइं
१९ असुईसभवं । असासया वासमिण दुक्खकेसाणभायणं ॥ १३ ॥ असासएसरीरंमि रइनोवलभामिहं । पच्छापुरावच-
१३८ इयव्वे फेणबुब्बुय सनिभे ॥ १४ ॥ माणुसत्ते असारंमि वाहि रोगाण आलए । जरामरणघथ्थमि खणंपि नरमामिहं ॥ १५ ॥ जम्मदुक्ख जरादुक्ख रोगाय मरणाणिय । अहो दुक्खोहु संसारो जथ्थकिसंति जतुणो ॥ १६ ॥ खित्तं वथ्थु हिरणच पुत्तदारंच बंधवा । चइत्ताण इमं देह गतव्व मव्वसस्समें ॥ १७ ॥

"हे माता! हे तात! विष-फळ सरखा भोग में भोगव्या छे; तेना परिणाम अति कडवा छे, कारण के ते निरतर दुःखनां देनार छे.[1] [१२]. "आ देह अनित्य छे, ते अपवित्र छे कारण के ते [2]शुक्रशोणिततुं बनेलुंछे, वळी तेमा आत्मानो अशाश्वत [3]वास छे, अने ते दुःख अने क्लेशनुं भाजन छे. [१३]. "आ अशाश्वत शरीरमा मारुं मन संतोष पामतुं नथी; कारण के वहेलुं या मोडुं ए शरीर नक्की छोडवु छे अने वळी ते पाणीना फीण अने परपोटा सरखुं छे.[4] [१४]. "वळी आं असार मनुष्यपणुं, व्याधि अने रोगनुं घर, जे जरा अने मरणे करीने ग्रस्त छे; तेने लीधे मारुं मन एक क्षण मात्र पण सुख पामतु नथी.[5] [१५]. "जन्म दुःख रुप छे, जरा दुःख रुप छे, रोग अने मरण पण दुःख रुप छे; आहा! आ ससार सर्व दुःखनु मूळ छे अने तेमां सर्व जीव क्लेश पामेछे.[१६] "क्षेत्र, गृह,सुवर्ण,पुत्र,स्त्री,भाइभांडु, सर्वेने तजीने, आ देह छोडीने मारे एक दिवस अवश्य चाली नीकळवुंपडशे.[१७]

१. They entail continuous suffering २. मास रुधीर वीगेरे अशुचीमय पदार्थो. ३. Transitory residence [of the soul] ४. "जेवो पाणीनो परपोटो, तेवो देह भरुसो खोटो." "आयुष्य ते तो जळना तरंग." ५.प्रो.जेकोबी आ माटे नीचे मुजब शब्दो वापरे छे." And this vain human life, an abode of illness and disease which is swallowed up by old age and death, does not please me even for a moment."

जहा किंपागफलाणं परिणामो न सुदरो । एवंभुत्ताण भोगाणं परिणामो न सुदरो ॥ १८ ॥ अद्वाणजो महंतंतु
उ.अ. अप्पाहिज़ो पवज्जइ । गच्छंतोसेदुहीहोइ छुहातण्हाहि पीडिओ ॥ १९ ॥ एव धम्म अकाऊण जो गछइ परभव ।
१९. गछतोसे दुहीहोइ वाहीरोगेहि पीडिओ ॥ २० ॥ अद्धाणजो महततु सपाहेज्जो पवज्जाइ । गछतोसे सुही होइ
१३९ छुहातण्हावि वज्जिओ ॥२१॥ एव धम्मपिकाऊण जोगछई परभव । गछतोसे सुहीहोइ अप्पकम्मे अवेयणे ॥२२॥
जहागेहे पलित्तमि तस्सगेहस्स जोपहु । सारभंडाइ नीणेइ असार अवउझइ ॥ २३ ॥ एवलोए पलित्तमि जराए
मरणेणय । अप्पाण तारइस्सामि तुझेहि अणुमन्निओ ॥ २४ ॥

"जेम किम्पाक फळनुं परिणाम सारु नथी, तेवीज रीते भोगवेला भोगनु परिणाम पण सारु आवतु नथी. (१८). "जे मनुष्य साथे भाथु लीधा सिवाय (सबल रहित) लांबी मुसाफरीए नीकळे छे, ते मार्गमा क्षुधा अने तृषाथी पिडाय छे अने दुःखी थाय छे (१९). "तेवीज रीते जे मनुष्य धर्म कर्या सिवाय परभवने विषे जाय छे ते मार्गमा व्याधि अने रोगथी पिडाय छे अने दुःखी थाय छे.(२०)."पण जे मनुष्य भाथु साथे लइने (सबल सहित) लांबी मुसाफरीए नीकळे छे, ते मार्गमा क्षुधा अने तृषाथी पिडातो नथी अने सुखी थाय छे. [२१]. "तेवीज रीते जे मनुष्य धर्म करीने परलोकने विषे जाय छे, ते जीव मार्गमा पापकर्म अने वेदनाथी पिडातो नथी अने सुखी थाय छे. (२२). "कोइ घरमा आग लागी होय त्यारे जेम घरधणी सार (कीमती) वस्तुओ बहार काढी ले छे, अने असार वस्तुओने ज्यांनी त्यां पडी रेहवा दे छे, तेम आ संसारने जरा अने मरणरुपी अग्नि लागेलो छे तो आपनो आदेश (आज्ञा) लइने हु मारा आत्माने तेमाथी तारवा इच्छुछुं. [२३–२४].

१. देखावमा सुदर अने आकर्षक खातां मीठु लागे पण परिणामे झेर रुप थतु एक जातनु झेरी फळ, Cucumis Colocynthus

त वितम्मापियरो सामन्नं पुत्तदुच्चर । गुणाणंतु सहस्साइं धारेयव्वाइं भिख्खूणो ॥ २५ ॥ समया सव्वभूएसु सतुमित्ते सुवाजगे । पाणाइवाय विरइ जावजिव्वाए दुक्कर ॥ २६ ॥ निच्चकालप्पमत्तेण मुसावायविवज्जण । भासियव्वं हियं सच्च निंच्चाओतेण दुक्कर ॥ २७ ॥ दतसोहणमाइस्स अदत्तस्स विवज्जणं । अणवज्जे सणिज्जस्स गिन्हणा अविदुक्कर ॥२८॥ विरई अबभचेरस्स कामभोग रसन्नुणा । उग्गं महव्वयं बभ धारेयव्वं सुदुक्कर ॥२९॥ धणंधन्नपेसवग्गेसु परिग्गह विवज्जणा । सव्वारंभ परिच्चाओ निम्ममत्त सुदुक्कर ॥ ३० ॥

ए साभळीने तेनां मातापिता कहे छे, "हे पुत्र! चारित्र (साधु–धर्म) पाळवु दोहिलु छे; साधुमां हजारो सद्गुणो होवा जोइए[1] [२५]. "सर्व जीव, पछी ते शत्रु होय के मित्र तेना उपर समता भाव राखवो, अने जिंदगी पर्यंत प्राणी मात्रने अशाता उपजाववाथी दूर रहेवु, ए दुष्कर धर्म छे. [२६]. "कदि प्रमाद पणे मृषावाद बोलवुं नहि, अने सदा सावधान रहीने सर्व जीवने हितकर सत्य बोलवुं ए दुष्कर धर्म छे. [२७]. "दांत साफ करवानी सळी सुद्धांनु पण अदत्ता दान कदि लेवुं नहि, अने मात्र सूझता [2]आहार पाणीज व्होरवा ए दुष्कर धर्म छे. [२८]. "काम भोगनो रस जाण्या पछी भोग विलासथी दूर रहेवु, अने ब्रह्मचर्यनुं उग्र महाव्रत पाळवुं ए दुष्कर धर्म छे. (२९). "धन, धान्य अने दास दासिनो परिग्रह वर्जवो, सर्व आरम्भ छोडी देवो, अने ममत्वनो त्याग करवो, ए दुष्कर धर्म छे. (३०).

---

१. A monk must possess thousands of virtues २. Free from faults.

चउव्विहेवि आहारे राइ भोयण वज्जणा । सनिहीसंचओचेव वज्जोयव्वो सुदुक्करं॥३१॥ छुहातण्हायसीउण्ह दसमसग घेयणा । अक्कोसा दुक्खसेज्जाय तणफासा जल्लमेवय ॥ ३२ ॥ तालणा तज्जणा चेव वहवध परिसहा । दुक्खं भिक्खायरिया जायणाय अलाभया ॥ ३३ ॥ कावोया जाइमाविर्त्ति केसलोओयदारुणो । दुक्ख वभव्वयघोर धारेओ अमहप्पणो ॥३४॥ सुहोइओ तुमपुत्ता सुकुमालो सुमुज्जिओ । नहुसी पभूतुमपुत्ता सामन्न मणुपालिया ॥ ३५ ॥ जॉवज्जीव मविरसामो गुणाणतु महझरो । गुरुओ लोहभारुव्व जोपुत्तोहोइ दुव्वहो ॥ ३६ ॥

" चारमांथी एके प्रकारनो आहार रात्रिए करवो नहि, अने आगळ उपर जरूर पडशे' एम धारीने (घृतादि) वस्तुओनो संग्रह करी राखवो नहि, ए दुष्कर धर्म छे'.[३१]. "'क्षुधा, तृषा, टाढ, तडको, डांस मच्छरादिनी वेदना, दुर्वचन, दुःखमय रहेठाण तृण-स्पर्श, शरीर-मल, चपेटादिकनो प्रहार, भय, मार वधबंधन भिक्षाचर्या, अलाभ-याचना आदि परिसह वेठवां ए अति दुष्कर छे. [३२-३३]. " हे पुत्र ! साधु धर्म कपोत[3] पक्षीनी पेठे सूझतो आहार व्होरवानो छे; केशनो लोच करवो ए पण अति दुःख दायक छे; अने घोर ब्रह्मचर्य व्रत पाळवुं ए महात्मा पुरुषोने पण दोहिलुं लागेछे. [३४]. " हे पुत्र ! तु सुखमां उछर्योछे, सुकुमार छे, तने [न्हाइ धोइने] स्वच्छ रहेवानी टेवछे; बेटा ! ताराथी साधु-धर्म पाळी शकाशे नहि, [३५]. " हे पुत्र ! जिंदगी पर्यंत विश्राम विना लोहनी पेठे चारित्रनो महाभार वहेवो ए अति कठिन छे,[4] [३६].

[1] अन्न, पाणी, मेवो अने मुखवास. २. गाथाओ २६, २७, २८, २९, ३०, ३१ मां पच महाव्रत अने छठामां रात्रि भोजन त्यागनु विवेचन छे. ३. कबूतर Pigeons, आ पक्षीओ भयथी हमेशा सावचेत रहेछे अने खाधा पछी पासे काइ राखता नथी. अर्थ आहार वहोरतां दोषोथी डरवानो भावार्थ छे. ४. चारित्र कठिन छे अने चारित्र लीधा बाद जिंदगी सुधीज ते निभाववु पडेछे माटे विशेष कठिन छे.

उ.अ आगासे गंगसोउव्व पडिसो ओव्वदुत्तरो । वाहाहिं सागरोचेव तरियव्वो गुणोदही ॥ ३७ ॥ वालुया कवलेचेव
१९, निरस्साए उसंजमे । असिधारागमण चेव दुक्करं चरिओतवो ॥ ३८ ॥ अहीवेगं तदिठीए चरित्ते पुत्तदुच्चरे ।
१४२ जवालोहमयाचेव चावेयव्वा सुदुक्कर ॥ ३९ ॥ जहा अग्गिसिहादित्ता पाउहोइ सुदुक्करं । तहा दुक्कर करेउजे
तारुणे समणत्तणं ॥४०॥ जहादुख्खभरेउजे होइवायरस कोथ्थलो । तहादुख्खंकरेउजे कीवेण समणत्तणं ॥४१॥
जहा तुलाएतोलेउ दुक्कर मदरोगिरी । तहानिहुयं निस्सक दुक्कर समणत्तण ॥ ४२ ॥

"आकाश–गंगा[1] पार उतरवी, सामा प्रवाहे तरवुं अथवा तो भुजाना बळथी समुद्र तरी जवो ए जेटलुं दोहिलुं छे, तेटलुंज गुणोना समुहरुप चारित्र समुद्र तरी जवानुं काम दोहिलुं छे. [३७]. "संयम वेळुना कोळिया जेवो निस्वाद छे, अने तप करवु ए खांडानी धार उपर चालवा जेवु दुष्कर[2] छे. [३८]. "हे पुत्र! [3]सर्पनी माफक एकाग्र दृष्टिथी, सदा साधुमार्गे (मोक्ष-मार्गे) विचरवुं अति दुष्कर छे, अने ते काम लोढाना चणा चाववा जेवुं कठिन छे.(३९). "हे पुत्र! जेम अग्निनी वळती शिखानुं पान करवुं दुष्कर छे, तेम तरुणावस्थामां साधु-धर्म पाळवो दुष्कर छे. [४०]. "जेम वायरावति (हवाथी) कोथळो भरवो दोहिलो छे, तेम कायर पुरुषने साधु-धर्म पाळवो दोहिलो छे. (४१). "जेम मेरु पर्वतने त्राजवामां तोळवो मुश्केल छे, तेम निश्चळ अने निशंक मनथी साधु-धर्म पाळवो मुश्केल छे. [४२].

१. श्री चुल हेमवंत पर्वत उपरथी पडती गंगा नदीने आकाश गंगा कहे छे. २. आ माटे प्रो. जेकोबी नीचेना शब्दो वापरे छे. Self control is untasteful like a mouthful of sand, and to practise penance is as difficult as to walk on the edge of a sword. ३. बीजा जानवरोनी पेठे सर्प पोतानी आखो बंध करता नथी. तेनी एकाग्र दृष्टिनी अहिं उपमा आपी छे.

जहाभुयाहि तरिउजे दुक्कर रयणायरो । तहा अणुवसतेणं दुक्कर दमसायरो ॥ ४३ ॥ भुञ्जमाणुस्सएभोए पंचलक्ख-णएतुम । भुतभोगी तओ जाया पच्छाधम्मचरिस्ससि॥४४॥ सोवितम्मापियरो एवमेयजहाफुड । इहलोए निप्पिवासस्स नथ्थि किंचिविदुक्कर ॥ ४५ ॥ मारीर माणसाच्चेव वेयणाओ अणतसो । मएसोढाओ भीमाओ असइ दुक्ख भयाणिय ॥४६॥ जरामरणकतारे चाउरते भयागरे । मएसोढाणि भीमाणि जम्माणि मरणाणिय ॥४७॥ जहाइह अगणीउणहो इत्तोणत गुणोतहिं । नरएसुवेयणाउणहा असाया वेइयामए ॥ ४८ ॥

"जेम भुजाए करीने रत्नाकर तरवो दोहिलो छे, तेम जेनु चित्त विषयथी शान्त थयुं नथी, तेने (इन्द्रीय दमवा रुप) चारित्र[1] सागर तरवो दोहिला छे. [४३]. "हे पुत्र! मनुष्यनां पचलक्षणा (शब्द, रुप, रस, गध, स्पर्श) भोग भोगव; अने ए भोग भोगव्या पछी धर्म आचरजे." [४४]. ए साभळीने कुमार कहे छे, "हे मातापिता! आप कहोछो ते बधुं खरु छे, पण जे मनुष्यने आ लोकनी स्पृहा नथी तेने काइ पण दोहिलुं नथी. [४५]. "शरीर अने मन संबंधीनी महावेदनाओ में अनत प्रकारे भोगवी छे, अने महारौद्र दुःख अने भय वारंवार सह्या छे. (४६). "जरा-मरणना भयना [2]आगर रुपी अटवीने विषे *चतुर्गति (देव, मनुष्य, तिर्यच अने नारकी) रुप * ससारमां जन्म-मरणना महा भयानक दुःख में सह्या छे. [४७]. "आ मनुष्य लोकने विषे अग्नि जेटलो उष्ण छे, तेनां करतां नरकनो अग्नि अनतगणो वधारे उष्ण छे; अने ए उष्णतानी वेदना पण में सहन करेली (अनुभवेली) छे. [४८].

१. The ocean of restraint २, मूळपाठमां भयागरे शब्द छे. A mine of dangers. * प्रो. जेकोबीए पोताना भाषान्तरमां आटलु मूकी दीधुं छे, पण मूळपाठमां चाउरते शब्द छे.

जहाइहं इमंसीयं इत्तोणंतगुणोतहिं । नरएसुवेयणासीया अस्साया वेइयामए ॥ ४९ ॥ कंदंतोकंदुकुंभीसु उद्धपाओ अहोसिरो । हुयासणे जलतंमि पक्क पुव्वोअणंतसो ॥ ५० ॥ महादवग्गिसंकासे मरुंमिवइ रवालुए । कलंब वालुयाएय दड्ढपुव्वो अणतसो ॥ ५१ ॥ रसतोकदुकुंभीसु उद्धंबंधो अबंधवो । करवत्तकरकयाईहि छिन्नपुव्वो अणंतसो ॥ ५२ ॥ अइतिक्ख कटकाइन्ने तुंगेसिबलिपायवे । खेवियं पासबद्धेणं कट्टेकट्टाहिं दुक्कर ॥ ५३ ॥ महाजंतेसु उच्छुवा आरसंतो सुभेरवं । पीलिओमि सकम्मेहिं पावकम्मो अणंतसो ॥ ५४ ॥

" आ मनुष्य लोकने विषे जेटली टाढ छे, तेना करता नरकने विषे अनंतगणी वधारे टाढ छे; अने ए टाढनी अशाता में भोगवेली छे. (४९). " उर्ध्वपाद अने अधोशिरे (उंचा पग अने नीचा मस्तके) प्रज्वलित अग्नि उपर आक्रंद करतो अनंतवार हु कडामां शुंजायो छु.[1] [५०]. " वज्रवालुका[2] अने कदम्बवालुका[3] नदीओनी महा दवाग्नि सरखी गरम रेतीमा हु अनंतवार दग्ध थयो छुं. [५१]. " उकळता चरु उपर उंधे मस्तके लटकीने हाय पोकार करतो अने भाइ भाडुनी सहायता रहित, नाना मोटा करवतो वती हुं अनतीवार छिन्न भिन्न थयो छु. (५२). " अति तिक्ष्ण कांटावाळा शालमली नामे उंचा वृक्षनी डाळे पाश-बद्ध थइने अने आम तेम झोलां खाइने में महा वेदनाओ भोगवेली छे. (५३). " हुं घोर पापी, पोताना पाप कर्मने लीधे. शेरडीनी पेठे महा यन्त्रमा भयानक आक्रन्द करतो अनतीवार पीलायो छु [५४].

---

१. Roasted. २-३. नरकनी ने नदीओनां नाम छे.

कुवंतोकोलसुणएहिं सामेहिं सबलेहिय । पाडिओ फालिओछिन्नो विफुरंतो अणेगसो ॥५५॥ असीहिं अयसिवन्नाहिं भल्लेहिं पट्टिसेहिय । छिन्नोभिन्नो विभिन्नोय उइन्नो पावकम्मुणा ॥ ५६ ॥ अवसो लोहरहेजुत्तो जलते समिलाजुए चोइओतोत्तजोत्तेहिं रोझोवा जहपाडिओ ॥ ५७ ॥ हुयासणे जलतमि चियासु महिसोविव । दड्ढोपक्कोयअवसो पावकम्मेहि पाविओ ॥ ५८ ॥

"श्याम अने सबल नामे परमाधार्मिक (अति अधम) देवताओए सुअर अने कुतरा जेवा (विकाळ) म्होढाथी मने अनेकवार पुकार करतो धरती उपर पछाड्यो छे, फाड्यो छे, छेद्यो छे, (श्वान अने सूकरने खवडाव्यो छे) अने छिन्न भिन्न करी नाख्यो छे. [५५]. * "मारा पाप कर्मने लीधे ज्यारे हु नरकमां उत्पन्न थयो हतो त्यारे खड्ग, खजर, बरछी अने भालाथी हु छेदायो हतो, भेदायो हतो अने छिन्न भिन्न थयो हतो [५६]. "लालचोळ तपावेला अने खीलाथी भरेला लोहरथे मने बळात्कारथी अनेकवार जोडवामां आव्योछे, अने चर्म नध(जोतर)थी बांधीने परोणावती हाकवामां आव्योछे अने रोझ पशुनी माफक मने मार मारी नीचो पाडवामां आव्यो छे. [५७]. देवता (परमाधामी)ए उत्पन्न करेली अग्निनी जाजवल्यमान (सळगती) चितामां (होमना) पाडानी पेठे मने पराणे नाखवामां अने बाळवामां-सेकवामां आव्यो छे, मारां पाप कर्मोने लइने आवी वेदना में सहन करी छे १ [५८].

* आ गाथानु भाषान्तर मो जेकोबी नीचे प्रमाणे करे छे:- "काळा अने काबरा जगली कुतराओए मने अनेकवार पछाड्यो छे, छिन्न भिन्न कर्यो छे अने हाय पुकार करतो फाडी तोडी नाख्यो छे." १ मो जेकोबी आ भागनो In atonement for my sins 'मारा पाप कर्मना निवारण अर्थे' एवो अर्थ करे छे. पण मूळपाठमां "पावकम्मेहिं पाविओ" शब्दो छे, जेनो अर्थ "ए वेदना पाप कर्मे करी पाम्यो" एम थाय छे.

बलासंडासं तुडेहिं लोहतुडेहिं पक्खिहिं। विलुत्तो विलवंतोहं ढंकगिद्धेहिणंतसो ॥ ५९ ॥ तण्हा किलंतो धावंतो पत्तोवेयरणीनइं। जलपाहिति चिंततो खुरधाराहिं विवाइओ ॥ ६० ॥ उण्हाभितत्तो सपत्तो असिपत्त महावणं। असिपत्तेहिं पडतेहिं छिन्नपुव्वो अणंतसो ॥ ६१ ॥ मुग्गरेहिं मुसंढीहिं सूलेहिं मूसलेहिय। गया संभग्गगत्तेहिं पत्तदुक्ख अणंतसो ॥ ६२ ॥ खुरेहिं तिक्खधारेहिं छुरियाहिं कप्पणीहिय। कप्पिओ फालिओछिन्नो उक्कत्तोय अणेगसो ॥६३॥ पासेहिं कूडजालेहिं मिओवा अवसो अहं। वाहिउ बद्धरुद्धोय बहुसोचेव विवाइओ ॥ ६४ ॥

"साडसी (चीमटा) जेवी जेनी वज्रनी चाच छे एवा पक्षीओए अने ढंक-गृद्ध (पिशाच जेवां गीध) पक्षीए मने बलात्कारथी अनंतीवार फाड्यो छे.[१] [५९]. "तृषाथी व्याकुळ थइने, पाणी पीवाना इरादाथी हु वैतरणी नदी तरफ दोडी जतो, पण त्यां छरी सरखी पाणीनी धाराथी हु अनेकवार भेदाइ पड्यो छुं. [६०]. "तापनी पिडाथी (विश्रांति लेवाने) हु वनमां जतो, पण त्यां वृक्षना पादडा खड्ग सरखा हतां; ए खड्ग जेवा पातराना पडवाथी हुं अनतीवार छेदायो भेदायो छुं. [६१]. "मुग्दल, छरा, त्रिशुल अने गदाना महारथी मारां अंग-उपांग भाग्या छे अने अनतीवार में तेनी अनहद वेदना भोगवी छे. [६२]. "तिक्षण धारवाळां अस्त्रा, छरी अने कातर वति हुं अनेकवार चीरायो छुं, कपायो छुं, कोतरायो छु अने मारा शरीर उपरनी चामडी कापवामां आवी छे. [६३]. "मृगनी तरीके (पशु-योनिमां) हु बळात्कारथी पाश अने जाळमा वारंवार पकडायो छुं, बंधायो छु, पिडायो छुं अने मरायो छुं. [६४].

१. नरकमां कोइ जातनां पक्षीओ के जानवरो होता नथी परन्तु परमाधामीओ विक्रय शरीरथी जुदां जुदां रुप लइ, नारकीना जीवोने तेनां पापनी शिक्षा करे छे. २. ए नदीनां पाणीमां Caustic Acid मिश्र होय छे जे मांसने बाळी नाखे छे.

गलेहिं मगरजालेहिं मच्छोवा अवसोअहं । उल्लिओ फालिओ गहिओ मारिओय अणंतसो ॥६५॥ विदंसएहिं जालेहिं लिप्पाहिंसउणोविव । गहिओलग्गोयबद्धोय मारिओयअणंतसो ॥ ६६ ॥ [1]कुहाड फरसुमाइहिं वड्ढईहिं दुमोइव ।
उ.अ १९. कुट्टिओ फालिओ छिन्नो तच्छिओय अणंतसो ॥ ६७ ॥ चवेड मुट्ठिमाईहिं कुमारेहिं अयपिव । ताडिओ कुट्टिओ भिन्नो चुन्निओय अणंतसो ॥६८॥ तत्ताइतंबलोहाइ तउयाइ सीसगाणिय । पाइउ कलकलंताइ आरसंतोसुभेरवं
१४७ ॥६९॥ तुहंपियाइ मंसाइं खंडाइं सोल्लगाणिय । खाविउमि समंसाइं अग्गिवन्नाइंणेगसो ॥ ७० ॥

"मच्छ तरीके हु अनेकवार गलथी पकडायो छु, जाळमा सपडायो छु, मारी चामडी उतारवामा आवी छे, अने मारा टुकडे टुकडा करवामा आव्या छे. [६५] "पक्षी तरीके हु अनतीवार सींचाणा (बाज) पक्षीथी पकडाया छु, जाळमा फसायो छु अने वज्रलेपमा सपडायो छु अने मरायो छु. [६६] "वृक्ष तरीके (वनस्पति कायपणे) कुहाडा अने फरसी आदि हथियारथी सूतारने हाथे हु अनेकवार छेदायो छु, करवत वति वेरायो छु अने मारी त्वचा (छाल) उतारवामा आवी छे. [६७] "लोढ तरीके हु अनतीवार [2]लुहारने हाथे कुटायो छु, कपायो छु, चीरायो छु अने चूर्ण थयो छु [६८] "त्रांबु, लोढु, [3]कथीर अने सीसाना धगधगता अने उकळता रस अति आक्रन्द साथे मने अनतीवार पराणे पावामा आव्या छे [६९] "तने खीमो करेलु अने भूजेलु मांस (पूर्व भवे) प्रिय हतु केम ? एम कही कहीने *मने मारु पोतानु ज मांस* तोडा तोडीने अने लालचोळ करीने अनेकवार खवडाववामा आव्यु छे. [७०]

१ "Bird lime" पक्षीओ पकडवानो चीकणो पदार्थ. २ लुहारने प्राचिन समयमा 'कुमार' कहेता, मूळपाठमा 'कुमारेहिं अयंपिव' छे, जेना शब्दार्थथी संस्कृत टीकाकार एवो अर्थ करे छे के, जेम क्षत्री पुत्र-कुमार, अज-घेटा बकराने मारे तेम ३. कलद-तरुआ Tin. *आने बदले मो जकोबी 'क्षेरी मांस' लखे छे. पण मूळपाठमा 'समंसाई' शब्द छे, तेमा 'क्षेरी' भावार्थ नीकळतो नथी.

तुहंपिया सुरासीहू मेरओय महूणिय । पाइओमिजलंतीओ वसाओ रुहिराणिय ॥७१॥ निच्चंभीएण तथ्थेण दुहिएण वहिएणय । परमादुहसंबद्धा वेयणावेइयामए ॥ ७२ ॥ तिव्वचंडप्पगाढाओ घोराओ अइ दुस्सहा । महब्भयाओ भीमाओ नरएसुवेइयामए ॥७३॥ जारिसा माणुसेलोए तायादीसंति वेयणा । इतोअणत गुणिया नरएसु दुख्खवेयणा ॥ ७४ ॥ सव्वभवेसु असाया वेयणा वेइयामए । निमिसंतरमित्तंपि जंसाया नथ्थिवेयणा ॥७५॥ तंबिंतम्मापियरो छंदेणं पुत्त पव्वया । नवर पुणसामन्ने दुख्खं निप्पडिकम्मया ॥ ७६ ॥

"तने सूरा, मद्य, मदिरा अने मधु प्रिय हतां केम? एम कही कहीने मने उकळती चरबी अने रुधिर पावामां आव्यां छे. [७१]. "सदा व्हीतां, त्रास पामतां, ध्रुजतां, दुःखी थतां अने पिडातां में परमोत्कृष्ट रोग अने व्याधि सह्यां छे. [७२]. "नरक लोकने विषे में तीव्र, उत्कट, सखत, घोर, असह्य, भयानक अने रौद्र वेदनाओ भोगवीछे. (७३). "हे तात! मनुष्य लोकने विषे जे वेदनाओ जणायछे तेना करतां नरक लोकमां अनंत गणां वधारे दुःख अने वेदनाओछे. (७४)* "हे पिता! सर्व भवने विषे में जे जे वेदनाओ भोगवीछे, तेमां निमेष मात्रपण सुख अथवा सातानुं तो नामज नहोतुं." [७५]. ए सांभळीने माता पिता कहे छे, "हे पुत्र! तारी इच्छा होय तो सुखेथी दीक्षा ले; पण साधुने कांइ रोग थाय त्यारे तेनाथी तेनी चिकित्सा अथवा उपचार थइ शकतां नथी. ए अति दोहिलुं छे." [७६].

* गाथा ४७थी ७३ सुधीमां नरकनी विविध वेदनाओनुं वर्णन करेलुं छे; ते पैकी गाथा ६३थी ६७ सुधीमां मृगापुत्रे धारण करेला त्रस अने स्थावर भवनां दुःख वर्णव्यां छे, जोके टीकाकारे तो ए गाथाओने पण नरकनां दुःख रूपे वर्णवेलीं छे.

सोबिंतम्मापियरो एवमेयं जहा फुडं । परिकम्मंकोकुणई अरणेमियपक्खिणं ॥ ७७ ॥ एगभूओ अरणेवा जहाओ चरइमिग्गो । एवधम्म चरिस्सामि सजमेण तवेणय ॥ ७८ ॥ जयामियस्स आयको महारन्न मिजायई । अछत रुक्खमूलमि कोणताहे तिगिछुई॥७९॥ कोवासे उसहदेइ कोवासे पुछुइ सुह । कोवासेभत्तंचपाणंवा आहारित्तुपणामए ॥८०॥ जयायसेसुहीहोइ तयागछुइ गोयर । भत्तपाणस्स अट्ठाए वल्लराणि स[illegible] ॥ ८१ ॥ खाइत्तापाणियंपाउं वल्लरेहिं सरेहिंवा । मिगचारिय चरित्ताण गछुइ मिग्गचारियं ॥ ८२ ॥ एवं समुट्ठिओ एभिक्खू एवमेव अणेगगो । मिगचारिय चरित्ताण उड्ढपक्कमइदिस ॥ ८३ ॥

ए साभळीने मृगापुत्र कहे छे, "हे मात! हे तात! आप कहोछो ते तद्दन साचुं छे. पण अरण्यमां पशु पक्षीओनी संभाळ कोण लेछे? (७७). "जेम मृग एकलो अरण्यमां भटके छे तेम हु पण संयम अने तपथी धर्मना मार्गमा विचरीश. [७८]. "ज्यारे महा अरण्यने विषे मृगने रोग उपजे छे अने ते वृक्षना थड पासे पडी रहे छे, ते वखते तेनी चिकित्सा कोण करे छे? [७९]. "ते मृगने औषध कोण आपे छे? तेने शाता कोण पूछे छे? तेने तृण पाणी कोण आणी आपे छे? अने कोण तेने खवडावेछे? (८०). "जे वखते ते मृग व्याधि-मुक्त थाय छे त्यारे ते वनमां फरीने लीलुं घास चरे छे अने सरोवर तीरे जइने पाणी पीए छे. [८१]. "वनमां चरीने अने सरोवर तीरे पाणी पीइने ते पोतानी मरजी मुजब फरतु फरेछे अने अन्य पशुओनी माफक विश्राम लेछे. (८२). "ए मृगनी पेठे साधु पुरुष पण (सुख दुःख सहेतो) कोइ स्थळे स्थिरवास करतो नथी अने मृगनी पेठे पोतानी इच्छानुसार भटक्यां करे छे अने आखरे ते उर्ध्व दिशा (मुक्ति-मार्ग) तरफ प्रयाण करे छे. [८३].

उ.अ. जहामिए एगअणेगचारि अणेगवासे धुवगोयरेय । एवं मुणीगोयरियं पविट्ठो नोहीलए नोविय खिंसएज्जा ॥८४॥ मिगचारियं
१९. चरिस्सामि एवंपुत्ता जहासुहं । अम्मापिओहि अणुन्नाओ जहाइ उवहिंतओ ॥८५॥ मिगचारियं चरिस्सामि सव्व
दुक्खविमोक्खणं । तुझेहिं समणुन्नाओ गच्छपुत्त जहासुहं ॥८६॥ एवसो अम्मापियरो अणुमाणित्ताण बहुविहं ।
१५० ममत्तं छिंदइताहे महानागोव्वकंचुयं ॥ ८७ ॥ इड्ढीवित्तंचमित्तेय पुत्तदारंचनायओ । रेणुयंपडेलग्गं निध्धुणीत्ताण
निग्गओ ॥ ८८ ॥ पंचमहव्वयजुत्तो पंचसमिओ तिगुत्तिगुत्तोय । सब्भिंतर बाहिरए तवोकम्मंमि उज्जुओ ॥ ८९ ॥

"जम मृग पोतानी मेळे घण ठेकाणे फरतुं फरे छे अने अनेक स्थाने वास करे छे अने नित्य पोतानो खोराक मेळवे छे; तेम साधुने भिक्षाचर्याने विषे गमे तेवो आहार मळे तो पण तेणे तेनो दोष काढवो नहिं अने तेनी निंदा करवी नहिं. (८४). "हुं ए मृगनी माफक विचरीश" ए सांभळीने मातापिता कहे छे, "हे पुत्र! तमने जेम ठीक लागे तेम करो." आ प्रमाणे पोताना मातापितानी आज्ञाथी तेणे सघळो परिग्रह छोडी दीधो.(८५). पुत्र कहेछे, "जो आपनी आज्ञा होय तो हुं ए मृगनी पेठे विचरीश; जेम करवाथी सव दुःखथी मुक्त थवाय छे." ए सांभळीने मातापिता कहेछे, "हे पुत्र! तमारी एवी इच्छा छे, तो सुखेथी जाओ."(८६).आ प्रमाणे पोतानां मातापितानी फरीथी आज्ञा लइने, सर्प जेम कांचळी मूकीने न्हासे तेम, मृगापुत्रे सर्व ममत्वनो त्याग कर्यो. [८७]. जेम *वस्त्रने लागेली रज खंखेरी नाखवामा आवे छे तेम रिद्धि, धन, मित्र, स्त्री, पुत्र अने ज्ञाति–गोत्रादिनो त्याग करीने मृगापुत्र चाली नीकळ्यो. (दीक्षा लीधी) [८८] तेणे पंच महाव्रत धारण कर्या अने पंच समितिए समित अने त्रण गुप्तिए गुप्त रहीने बाह्य[1] अने अभ्यंतर[2] तप करवामा ते सावधान थयो. [८९].

*मो जेकोबी 'वस्त्र' ने बदले 'पग' लखे छे. मूळपाठमा पडेलग्ग छे=पटलग्न=वस्त्रने लागेलुं–अर्थ थइ शके छे. १. Bodily
२. Mental

निमम्मो निरंहकारो निरसंगो चत्तगारवो । समोय सव्वभूएसु तसेसु थावरेसुय ॥ ९० ॥ लाभालाभे सुहेदुक्खे जीविए मरणेतहा । समोनिंदा पसंसासु तहामाणावमाणओ ॥ ९१ ॥ गारवेसु कसाएसु दंडसल्लभएसुय । नियत्तो हाससोगाओ अनियाणो अबंधणो ॥९२॥ अणिस्सिओ इहलोए परलोए अणिस्सिओ । वासीचंदण कप्पोय असणे अणसणेतहा ॥९३॥ अप्पसत्थेहिं दारेहिं सव्वओ पिहियासवो । अज्झप्पज्झाणजोगेहिं पसत्थ दमसासणे ॥ ९४ ॥

मृगापुत्र, ममत्वभाव, अहंकार[1], अनुराग[2] अने गर्व[3] रहित थयो अने त्रस या स्थावर, सर्व जीव तरफ समता भावथी वर्तवा लाग्यो [९०]. (भिक्षामा) लाभ अने अलाभ, सुख अने दुःख, जीवित अने मरण, निंदा अने प्रशंसा तथा मान अने अपमान तरफ तेनी समान वृत्ति हती (९१) ते [4]त्रण गर्वथी, [5]चार कषायथी, [6]त्रण दंडथी, [7]त्रण शल्यथी, [8]सप्त भयथी, हर्ष शोकथी, नियाणाथी अने राग द्वेषथी बंधन रहित थयो [९२]. तेने आ लोक या परलोकनी वांछना हतीज नहि; तेना मनथी तो * वांसलावति शरीर छेदाय याती तेनापर चंदननो लेप थाय ते सरखुज हतुं * अने आहार करवो या उपवास करवो ते पण तेना मनथी तो एक सरखुंज हतुं [९३] हिंसादिना अप्रशस्त द्वार तेणे बंध कर्या, सर्व आश्रवने रुंध्या, अने अध्यात्म ध्यानना योगे करीने तेणे प्रशंसनीय विशुद्धता अने जिनशासनना पवित्र सिद्धान्त प्राप्त कर्या—शुभ उपशमवाळा थया. [९४].

1 Egoism 2. Attachment 3. Concert 4. त्रण गर्व :—रिद्धि, रस अने साता गर्व. 5 चार कषाय :—क्रोध, मान, माया, लोभ. 6 त्रण दंड :—मन, वचन अने कायाना असद्व्यापार. 7 त्रण शल्य :—माया निदान अने मिथ्या दर्शन. 8. सप्त भय :—आलोक, परलोक, आदान, अकस्मात, मरण, अपयश अने आजिविका भय. * प्रो. जेकोबी आने बदले लखे छे के "जेना मनथी सारी नरसी वस्तुओ समान छे." पण मूळ पाठमा 'वासी चंदन' शब्द छे.

उ.अ १९. एवं नाणेणचरणेण दंसणेण तवेणय । भावणाहिय विसुद्धाहिं सम्मंभावित्तु अप्पयं ॥ ९५ ॥ बहुयाणियवासाणि
सामन्नमणुपालिया- मासिएणउभत्तेण सिद्धिपत्तो अणुत्तरं ॥९६॥ एव करंतिसंबुध्धा पंडियापवियक्खणा । विणियट्ट-
१६२ तिभोगेसु मियापुत्तोजहामिसी ॥ ९७ ॥ महापभावस्स महाजसस्स मियापुत्तस्सनिमम्मभासियं । तवप्पहाण चरियंच
उत्तम गइप्पहाणचतिलोयविस्सुय ॥९८॥ वियाणिया दुक्ख विवड्ढणंधणंममत्त बधच महाभयावह । सुहावह धम्म
धुर अणुत्तर धारेह निव्वाणगुणावहं मह त्तिबेमि ॥ ९९ ॥

⊛ ॥ इति श्री मियापुत्तियंनाम ज्झयणं ओगणीस संम्मत्त ॥ १९ ॥ ⊛

आ प्रमाणे ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप अने निर्मळ भावनाए करीने ते पोते विशुद्ध थया अने घणां वर्ष सुधी चारित्र पाळीने अने एक मासनुं अणसण करीने अनुक्रमे सर्वोत्तम सिद्धिने प्राप्त थया (९५-९६). तत्त्वना जाण पंडित अने विचक्षण पुरुषो आ प्रमाणे वर्ते छे अने मृगापुत्रनी पेठे तेओ संसारना भोगथी निवर्ते छे [९७]. हे भव्य जीव! महा प्रतापी अने यशस्वी मृगापुत्रनो उपदेश सांभळीने, अने तेणे उत्तम तपना प्रभावे त्रिलोक विख्यात मुक्ति प्राप्त करी ते चारित्र श्रवण करीने आदरे ते मोक्षना सुख पामे. [९८] दुःखने वधारनार, ममत्वने *वधावनार, अने महा भयने उपजावनार, जे माया तेने मि धिकारो अने धर्मनी सर्वोत्तम अने सुखावह धूरा जे मुक्तिना सुखने देनारी छे ते धारण करो. [९९].

* ओगणीसमुं अध्ययन संपूर्ण. *

---

* Fetter of egoism

अध्ययन २०. * निग्रंथोनो महान् धर्म अथवा श्रेणिक राजा अने अनाथि मुनि.

सिद्धाणं नमोकिच्चासजयाणंच भावओ । अथ्थधम्मगइतच्च अणुसट्ठिसुणेहमे ॥ १ ॥ पभूय रयणोराया सेणिओ मगहाहिवो । विहारजत्त निज्जाओ मडिकुच्छिसिचेइए ॥२॥ नाणादुमलया इन्नं नाणापक्खि निसेविय । नाणाकुसुम सछन्न उज्जाण नदणोवण ॥ ३ ॥

हे शिष्य! सिद्ध अने संयत पुरुषोने (आचार्य, उपाध्याय अने सर्व साधुओने) भावथी नमस्कार करीने मारी सत्यशील शिक्षा श्रवण करो. जेम करवाथी अर्थ, धर्म अने ज्ञान[१] प्राप्त थाय छे [१] अनेक रत्नो (गज, अश्व, मणि आदि) ने धारण करनार मगध देशनो अधिपति श्रेणिक राजा एक वखत मंडिकुक्षि उद्यानने (चैत्य)[२] विषे क्रीडा अर्थे गयो हतो. [२]. नाना प्रकारनां वृक्ष वेलाओथी सुशोभीत, विविध प्रकारनां पक्षीओना आश्रमरुप, अने भातभातना फुलोथी छवायेलु ते उद्यान नदनवन[३] सरखु शोभी रह्यु हतुं. [३].

१ मूळपाठमा 'गइ' शब्द छे. प्रो. जेकोबी ते माटे Liberation शब्द वापरे छे धर्म, अर्थ अने मोक्षनो भावार्थ छे मोक्ष प्राप्त करवानु परम साधन 'ज्ञान' होवाथी, टीकाकारोए ते माटे ज्ञान शब्दनो उपयोग कर्यो छे. २. आगळनी गाथाओनो भावार्थ जोता चैत्य अहिं उद्यानना अर्थमा वपरायेल छे, नवमा अध्ययननी नवमी गाथमा पण ते आवाज भावार्थमा वपरायेल छे. ३. इन्द्रना वगीचाने नदनवन कहे छे.

तथ्थसो पासईसाहुं संजयं सुसमाहियं । निसन्नं रुख्खमूलंमिसुकुमालं सुहोइयं ॥ ४ ॥ तस्सरूवंतुपासित्ता राइणोतं मिसजए । अच्चत परमोआसी अतुलो रूव विम्हओ ॥ ५ ॥ अहोवन्नो अहोरूव अहोअज्जस्ससोमया । अहोखती अहोमुत्ती अहोभोगे असंगया ॥ ६ ॥ तस्सपाए उवदित्ता काऊणय पयाहिण नाइदूरमणासन्ने पजली पारिपुछई ॥ ७ ॥ तरुणोसि अज्जोपव्वइओ लोगकालमिसंजया । उवठ्ठिओसि सामन्ने एयमठ्ठ सुणामिता ॥ ८ ॥ अणाहोमि-महारायनाहोमझ नविज्जई । अणुकपगंसुहि वाविकिंची नाभिसमेमह ॥ ९ ॥

ते उपवनने विषे श्रेणिक राजाए एक संयमधारी अने समाधिग्रस्त[1] साधुने एक वृक्षनी नीचे बेठेला जोया, जे शरीर सुकुमार अने सुख भोगववाने[2] योग्य जणाता हता. [४]. श्रेणिक राजा ते साधुनु परमोत्कृष्ट अने अनुपम रुप जोइने अत्यत आश्चर्य पाम्यो. [५]. ते राजा मनथी विचारवा लाग्यो के, 'अहा! शुं तेना शरीरनो वर्ण! शुं तेनुं रुप! शुं लावण्य! अहा! शीए आर्य पुरुषनी सौम्यता! अहा! शी एनी शान्ति अने क्षमा! शी एनी निर्लोभता! अने शी एनी विषयने विषे निस्पृहता.[3] [६] ते साधुना पगने वांदीने अने * तेनी प्रदक्षिणा करीने* श्रेणिक राजा नहि तेनाथी अति दूर के नहि छेक नजिक एवी रीते बेठो अने हाथ जोडीने प्रश्न करवा लाग्यो. (७). " हे आर्य ! आपे तरुणावस्थामा दीक्षा ग्रहण करीछे; हे संयत ! युवा वस्थाए भोग भोगववा योग्य काळछे, तेमा आप श्रवण-धर्म उपस्थित थयाछो, तेम करवानु कारण आपना मुखेथी साभळवाने हु उत्सुक छुं. " [८]. मुनि कहेछे, " हे महाराज ! हु अनाथ छुं. मारे माथे कोइ नाथ नथी. मारा उपर अनुकम्पा लाव एवो मित्र पण मारे नथी. तेम लगार मात्र अनुकम्पा लावी सुख देनार कोइ नथी. (९).

१. Restrained and concentrated. २. Accustomed to comfort ३. Disregard for pleasures

*आने बदले मो. जेकोबी लखेछेके' तेने पोतानी जमणी बाजुए राखीने' मुळ पाठमां 'पयाहिणं' शब्दछ, जेनो अर्थ प्रदक्षिणा थायछे.

तओसेप हसिओराया सेणिओ मगहाहिवो । एवंतेइड्ढिमंतस्स कहंनाहो नविज्जई॥१०॥होमि नाहो भयंताण भोगेभुंजाहिसंजया । मित्तनाई परिवुड्डो माणुस्सखलुदुलह ॥ ११ ॥ अप्पणा विअणाहोसि सेणिया मगहाहिवा अप्पणाअणाहोसंतोकस्सनाहो भविस्ससि ॥१२॥ एलवुत्तो नरिंदोसो सुसभंतो सुविम्हओ वयण असुयपुव्व साहुणा विम्हयंनिओ ॥१३॥ अस्साहत्थी मणुस्सामे पुरअंतेउरच्चमे । भुजामि माणुसेभोए आणाइस्सारियचमे ॥ १४ ॥ एरिसेसपयग्गामि सव्वकाम समाप्पिए । कह अणाहो भवईमाहुभंते मुसंवए ॥ १५ ॥

ए सांभळीने मगधाधिप श्रेणिक राजा हसी पडयो अने बोल्यो के "आप जेवा ऋद्धिना धणीने (सकळ गुण सपन्न पुरुषने) कोइ नाथ न होय ए केम सभवे? (१०)."हे पुज्य! आप जेवा साधु पुरुषोनो हुं नाथ [रक्षक] थइश, माटे आप मित्र ज्ञाति सहित भोग भोगवो; कारणके मनुष्यभव (वारवार) प्राप्त थवो दुर्लभछे "[माटे भोग भागवी ल्यो]. (११). साधु कहे छे, "हे मगधाधिप श्रेणिक! तु पोतेज अनाथ छे, अने तुं पोते अनाथ होवा छता बीजानो नाथ शी रीते थइ शकीश?" (१२). पूर्वे कदि नहि सांभळेला एवां मुनिना वचन साभळीने राजा अति व्याकुळ थयो अने विस्मय पाम्यो. [१३]. राजा कहे छे, "मारे अश्व, हस्ति, मनुष्य, नगर, अंतःपुर वगेरे छे. * हु मनुष्यने लगता (सर्व) भोग भोगवु छुं * अने आज्ञा तथा ऐश्वर्यनो धणी छु (१४). "सर्व काम अने सर्व अभिलाषाने तृप्त करे एवी महान सपात्तिनो धणी अनाथ केम कहेवाय? हे भगवत! एवो मृषावाद (असत्य) बोलोमां." [१५].

---

* आ वाक्य मो जेकोबीए गाथाने छेडे मूक्यु छे अने तेने आज्ञार्थमा लइने एवो अर्थ कर्यो छे के, 'तु मनुष्यने लगता भोग भोगव' जे शब्दार्थ उचित जणातो नथी, कारण मूळपाठमां 'भुजामि माणुसे भोए' शब्दो छे.

नतुम जाणे अणाहस्सअथ्थं पोथ्थंच पथ्थिवा जहा अणाहो हवई सणाहोवानराहिवा ॥ १६ ॥ सुणेहमे महाराय अव्वक्खित्तेण चेयमा । जहा अणाहो भवई जहामेय पवत्तिय ॥ १७ ॥ कोसबीनामनगरी पुराण पुरभेयणी तथ्थ आसीपियामझ पभूयधणसचओ ॥१८॥ पढमेवए महाराय अतुलमे अथ्थिवेयणा । अहोथ्था विउलोदाहो सव्वगत्तेसु पथ्थिवा ॥ १९ ॥ सथ्थंजहा परम तिखं सरीर विवरंतरे आवीलिज्ज अरीकुद्धो एवमे अथ्थियेयणा ॥ २० ॥ तियमे अतरिछंचउत्तमगंचपीडई । इदासणिसमा घोरा वेयणा परमदारुणा ॥ २१ ॥

मुनि कहे छे, "हे रा ा! तुं 'अनाथ' शब्दनो अर्थ या उत्पत्ति (मूळ) जाणतो नथी, तेमज हे राजन! सनाथ अने अनाथ केम थवाय छे (अथवा कोने कहेवाय छे) ते पण तु जाणतो नथी. [१६]. "हे महाराजा! कोइ मनुष्य 'अनाथ' केवी रीते कहेवाय छे अने में शा हेतुथी कहेलुंछे, ते हु तने कही संभळावुं छु ते तुं एकाग्र चित्तथी श्रवण कर. [१७]. "आ भरतक्षेत्रने विषे कौशाम्बी नामे *(पुराण पुर भेदनी) पुराणी इन्द्रपुरी सरखी शोभायमान नगरी हती. त्या मारो पिता जेणे धननो घणोज संचय कर्यो हतो ते रहेतो हतो. [१८]. "हे महाराजा! हे पार्थिव! प्रथमावस्था ने विषे मने आखनी अतुल पिडा उपजी; अने मारां सर्व गात्र सखत ज्वरथी बळवा लाग्यां. [१९]. "कोपायमान थयेलो शत्रु घणा जोरथी अति तिक्ष्ण शस्त्र शरीरना विवर (आख, कान, नाक)मां घोंचतो होय, एवी असह्य वेदना मने थवा लागी.[२०]. "मारी पीठमा, हृदयमा अने मस्तकमा ¹इन्द्रना वज्र समान अति दारुण अने तिक्ष्ण वेदना थती हती. [२१].

* 'पुराण पुर भेदनी' नो शब्दार्थ स्पष्ट समजातो नथी छता, आसपासनो संबंध विचारीने 'इन्द्रपुरी सरखी शोभायमान' एवो अर्थ कर्यो छे. पुराणी=घणा काळनी जुनी–पुर भेदनो अर्थ कील्लानो नाश एवो थइ शके छे पण ते घणु खरु इन्द्रने लागु पडाय छे.

१. आने बदले प्रो. जेकोबी लखे छे के 'विज॰ नि आघात समान' मूळपाठमां 'इदासणी समा घोरा' शब्द छे.

उवट्ठियामे आयरिया विज्जामंत तिगिछगा । अधीया स¹थकुमला मतमूल विसारमा ॥ २२ ॥ तेमेतिगिछ कुव्वति चाउप्पाय जहाहिय । नयदुक्खा विमोयति एसामझ अणाहया ॥ २३ ॥ पियामे सव्वसारपि डेज्जाहि ममकारणा । नयदुक्खा विमोयंति एसामझ अणाहया ॥२४॥ मायामे महाराय पुत्त सोग दुहट्ठिया । नयदुक्खा विमोयति एसामझ अणाहया ॥ २५ ॥ भायरामे महाराय सग्गाजिट्ठ कणिट्ठगा । नय दुक्खा विमोयति एसामझ अणाहया ॥ २६ ॥ भइणीओमे महाराय सग्गाजिट्ठ कणिट्ठगा । नयदुक्खाविमोयति एसमझ अणाहया ॥ २७ ॥

"हे राजन ! त्यार पछी मारा निमित्ते विद्वान वैद्योने बोलाववामां आव्या, जेओ चिकित्सा अने मत्र विद्याना जाण हता, वैद्यक शास्त्रमां कुशळ हता अने मत्र तथा जडीबुटीना गुणने जाणनारा हता. [२२] "ते वैद्योए मारा रोगनी चिकित्सा करीने, मने आराम थाय एवा उपचार चारे प्रकारे¹ करवा मांडया, पण तेओ मने व्याधि मुक्त करी शक्या नहि, अने तेथी हु कहुछु के हुं अनाथ छुं. (२३). "हे राजा ! मारा पिताए मारा निमित्ते पोतानी सर्वसार वस्तुओ [सघळु धन] आपी दीधी होत, छता ते मने दुःखथी मुकावी शक्यो नहि, तेथी हु कहुं छुं के हु अनाथ छु. [२४] "हे महाराजा! मारी माता पोताना पुत्रनी पीडा जोइने अति दुःखी थती हती, छतां ते मने दुःखथी छोडावी शकी नहि, तेथी हु कहुछु के हु अनाथ छुं. [२५]. "हे महाराजा ! मारा ज्येष्ठ अने कनिष्ठ बन्धुओ मने दुःखथी छोडावी शक्या नहि, तेथी हु कहुछुं के हु अनाथ छु. [२६]. "हे महाराजा ! मारी ज्येष्ठ अने कनिष्ठ भगिनिओ मने दुःखथी मूकावी शकी नहि, तेथी हु कहछु के हु अनाथ छु. [२७].

१ वमन, विरेचन, मर्दन अने स्वेदन, बीजा चार प्रकार, अञ्जन, बधन, लेपन अने मर्दन, आ सिवाय चार अनुकूळता संबधे पण टीकाकार विवेचन करेछे, १. वैद्यनी अनुकुळता. २. औपधिनी अनुकूळता. ३. दरदी दवा कराववा उत्सुक अने ४. प्रतिघारक प्रेमथी सारवार करवा वाळा पण तैयार.

भारियामे महारायं अणुरत्त मणुव्वया । अंसुपुन्नेहिं नयणेहिं उरंमे परिसिंचई ॥२८॥ अन्नंपाणंचण्हाणंच गंधमल्ल विलेवणं । मएनायमनायंवा सावालानोवभुजई ॥२९॥ खणंपिमे महारायं पासाओ विन फिट्टई । नयदुक्खाविमोयंति एसामज्झ अणाहया ॥ ३० ॥ तओह एवमाहसु दुक्ख माहुपुणो ; वेयणा अणुभविउजे संसारंमि अणतए ॥ ३१ ॥ सइंच जइमुच्चेज्जा वेयणा विउलाइओ । खतोदंतो निरारंभो पव्वइए अणगारियं ॥ ३२ ॥ एवंच चिंतइत्ताण पसुत्तोमि नराहिवा । परियत्तंतीइ राइए वेयणा मेखयंगया ॥ ३३ ॥ तओकल्ले पभायम्मि आपुछित्ताण वंधवे । खंतोदंतो निरारभो पव्वइओ अणगारियं ॥ ३४ ॥

" हे महाराजा ! मारी स्नेहाळ अने पतिव्रता स्त्री पोताना नेत्रना अश्रुए करीने मारा हृदयने सींचती हती. (२८). " ते सुज्ञ बालाए खान, पान, स्नान, सुगंध, पुष्पमाल अने अर्चनादिनो उपयोग मारा जाणतां या अजाणतां कदि कर्यो नहि. [२९]. " हे महाराजा ! ते बाळा मारी पासेथी एक क्षण मात्र पण उठीने जती नहि, छता ते मने मारा दुःखथी मूकावी शकी नहि, तेथी हुं कहुंछुं के हुं अनाथ छुं. [३०]. " ते वारे हुं एम कहेवा लाग्यो के आ अंतर हित ससारमा [भव-चक्रमा] फरी फरीने वेदना भोगववी ए अति दोहिलुं छे. [३१]. " जो एकवार हु आ असह्य वेदनाथी मुक्त थाउ, तो हुं क्षमावत, जितेन्द्रिय अने निरारम्भा[1] [आरंभरहित] अणगार थाउं. (३२). " हे नराधिप ! आ प्रमाणे चिंतवन करतो करतो हु निद्रामां पडयो. तेज रात्रिने विषे मारी सर्व वेदना समी गइ. [३३]. " बीजे दिवसे प्रभातमा, सगासंबंधीनी आज्ञा लइने, क्षमावत, जितेन्द्रिय अने निरारम्भ[1] साधु पणुं मे आदर्युं. (३४).

---

1. Ceasing to act.

तओह नाहोजाओ अप्पणोय परस्सय । सव्वेसिंचेव भूयाणं तसाणं थावराणय ॥ ३५ ॥ अप्पानई वेयरणी अप्पामे कुडसामली । अप्पाकाम दुघाधेणू अप्पामेनंदणवण ॥३६॥ अप्पाकत्ता विकत्ताय दुहाणय सुहाणय । अप्पामित्त ममितच दुपट्ठिय सुपट्ठिओ ॥३७॥ इमाहु अन्नोविअणाहया निवा तमेक चित्तोनिहुओ सुणेहि नियट्ठधम्म लभियाण वीजहा सीदतिएगे बहुकायरानरा ॥ ३८ ॥ जोपव्वइत्ताण महव्वयाइ सम्मनोफासईपमाया । अणिग्गहप्पाय रसेसुगिद्धे नमूलओ छिंदइ बधणंसे ॥ ३९ ॥

"आ प्रमाणे दीक्षा ग्रहण कर्या पछी हुं मारो पोतानो तेमज अन्यनो (शुद्ध प्ररूपणाने लीधे) नाथ [रक्षक] थयो, अने त्रस तथा स्थावरादि सर्व जीवनो नाथ थयो. [३५]. "मारो आत्मा एज वैतरणी नदी समान छे, एज शाल्मली वृक्ष छे; एज आत्मा कामदुघा धेनु समान छे अने एज नंदनवन छे (३६). "एज आत्मा सुख अने दुःखनो कर्त्ता अने अकर्त्ता छे; एज आत्मा सदाचारथी वर्ते तो मित्र समान छे अने दुराचारथी वर्ते तो शत्रु समान छे. (३७). "हे राजन! एटलु छता पण अनाथता रही जाय छे; ते अनाथता हुं तने कही संभळावुंछु ते तुं सावधान थइने एकाग्र चित्तथी श्रवण कर :–निग्रंथ (साधु) धर्म प्राप्त थया छता केटलाक कायर मनुष्यो साध्वाचार पाळवामां शिथिलता दर्शावे छे. (३८).* "दीक्षा ग्रहण कर्या छता जे [1]साधु प्रमादने लीधे पंच महाव्रत बराबर पाळतो नथी, जे आत्म–निग्रहकरतो नथी, अने भोगनी इच्छा करे छे, ते (राग द्वेषरूपी) संसारना बंधनने जड मूळथी छेदी शकतो नथी. (३९)

* प्रो. जेकोबी टीका करे छे के गाथा ३८ थी ५३ पाछळथी उमेराइ होय एम जणाय छे; अने तेना कारणमा ते जणावे छे के प्रथमनी ३७ गाथाओमा वर्णवेल विषय साथे आ गाथाओनो संबंध बराबर संचवातो नथी अने वळी आ गाथाओनु माप आगला श्लोको करतां जुदा प्रकारनुं छे. १. An ordained Monk.

आउत्तयाजरसयनथ्थि काई इरियाए भासाए तहेसणाए । आयाण निख्खेव दुगंछणाए नवीरजायं अणुजाईसग्गं ॥४०॥ चिरंपिसेमुंडरुई भवित्ता अथिरव्वए तव नियमेहिं भट्ठे । चिरपि अप्पाणकिले सइत्ता नपारए होइ हुसपराए ॥ ४१ ॥ पोलेव्वमुट्ठी जहासे असारे अयतिए कुडकहाव्वणेवाराढामणी वेरुलियप्पगासे । अमहग्गए होइ हुजाणएसु ॥ ४२ ॥ कुसीललिंगं इह धारइत्ता इसिझय जीवियवूहइत्ता असंजए मंजयजप्पमाणे विणिहायमागछइसे च्चिरपि ॥ ४३ ॥

"जे साधु इर्या (गमनागमनमां), भाषा (बोलवा चालवामां), एषणा (आहार व्होरवामा), आदान–निक्षेप (वस्त्र पात्रादि वस्तुओ लेवा राखवामां), अने पारिष्ठापन (मळ–मूत्रादि क्रियामा), ए पाच समितिने विषे सदा सावधान रहेतो नथी, ते वीर पुरुषोना (तीर्थंकरोना) [1]मार्गने (मोक्षने) प्राप्त करी शकतो नथी. [४०]. "कोइ साधु चिरकाळ सुधी [2]मुडन करे अने आत्माने क्लेश उपजावे, पण जो ते व्रत पाळवामा अस्थिर रहे, अने तप नियमथी भ्रष्ट थाय तो ते कदि संसारनो पार पामी शके नहि [४१]. "पोली [3]मूठी, [4]अयंत्रित कूट–कार्षापण (छाप वगरनुं कूडु नाणुं), अने वैडूर्य–मणि (नीलम)ना जेवा देखावनो काचनो कटको जेम असार गणाय छे, तेम धर्महीन मुनिने गुणज्ञ पुरुषो वदनीय गणता नथी. [४२]. "जे सच्चाचार रहित कुशील साधु, आजीविकाने अर्थे, रजोहरणादिक चिह्न धारण करीने भेख धारी बने छे, अने पोते असंयत होवा छता संयत होवानो डोळ घाले छे, ते दीर्घ काळ सुधी नरकमां पडे छे. [४३].

---

१. The road trod by the Lord. २. दिक्षा पाळे. ३. Clenched fist ४. Uncoined

विसंतुपीयं जहकालकूट हणाइ सथ्थं जहकुग्गहीय। एसोवधम्मो विसओवसणो हणाइ वेयालइवा विवणो ॥४४॥
जे लख्खण सुविण पउजमाणे निमित्तको ऊहल संगगाढे। कुहेडविज्जा सवदारजीवी नगछई सरण तमिकाले॥४५॥
तमतमेणेवउसे असीले सयादुही विप्परिया समुवेइ। सधावई नरयतिरिख्खजोणी मोणविराहित्त असाहुरूवे॥४६॥
उद्देसिय कीयगड नियागं नमुचई किचिअणे सणिज्जा। अग्गीविवासव्व भख्खीभवित्ताईओ चुओ गछइ कट्टुपाव॥४७॥

"जेम कालकूट विष तेना पीनारने मारे छे, जेम विपरीत रीते पकडायलु शस्त्र तेना पकडनारने हणे छे, अने जेम वेताल तेनुं निवारण न करनारने मारी नाखे छे, तेम जे कोई धर्मने विषय [1] सुखनी वासना साथे मिश्र करे छे, तेने ते धर्म हणे छे. [४४]. "जे साधु शरीरना शुभाशुभ चिह्न प्रकट करे, स्वप्नना फलाफल कहे, भूकंपादि कुतूहल लोकोने देखाडे, पुत्र प्राप्तिने माटे स्नानादि क्रिया करावे, अने कुहेटक विद्या (एटले नजरबंदी,मंत्र,तंत्र) आदि आश्रवद्वारो सेवीने आजीविका करे, तेने जे काळे तेनां पाप कर्मनो उदय काळ आवे त्यारे कोइनु शरणु मळतु नथी. [2] [४५]. "आचार भ्रष्ट साधु सदा दुःखी थइने अज्ञानरूपी अंधकारमा भ्रमण करे छे अने विपरीत गतिने प्राप्त थाय छे ; संयमनी विराधना करनार कुसाधु नरकने विषे धसे छे अने तिर्यंच योनिने पामे छे [४६] "जे साधु असूझतो आहार व्होरे–एटले के पोताने मन गमतु भोजन मागीने ले (अथवा साधुने उद्देशीने तैयार करेलु भोजन ले), मूल्य आपीने साधुने निमित्ते लीधेलो खोराक व्होरे, अथवा नित्य–पिंड [एटले अमुक घेरथी हमेशा आहार व्होरे] ग्रहण करे, अने अग्निनी पेठे सर्व-भक्षी होय ते आ मनुष्य भवमा भ्रष्ट थइने छूट्या बाद दुर्गतिने विषे जाय छे. [3] [४७].

1. Sensuality. 2. प्रो. जेकोबी आ माटे नीचे मुजब शब्दो वापरे छे. He who practises divination from bodily marks and dreams, who is well versed in augury and superstitious rites, who gains a sinful living by practising magic tricks, will have no refuge at the time of (retribution) 3. दरेक समुदायना आचार्यश्रीए आवी शिथिलता प्रवेशवा न पामे ते माटे खास सावधानी राखवी घटे छे.

नत अरीकंठछेत्ता करेइ जसेकरे अप्पणिया दुरप्पया सेनाहई मच्चुमुहंतु पत्ते पच्छाणतावेण दयाविहूणो ॥ ४८ ॥
निरठ्ठिया निग्गरुईउ तस्सजेउत्तमठ्ठे विवज्जासमेई । इमेविसेनथ्थि परेविलोए दुहओ विसेखिज्जइतथ्थ लोगे ॥४९॥
एमेवहा छंदकुसीलरूवे मग्गंविराहित्तु जिणुत्तमाण कुररी विवाभोग रसाणुगिद्धा निरठ्ठसोयापरि यावमेइ ॥ ५० ॥
सोच्चाण मेहाविसुभासिय इम अणुसासणं नाणगुणो ववेय । मग्गं कुसीलाण जहायसव्व महानिय ठाण वएपहेण ॥५१॥
चरित्तमायार गुणण्णिएतओ अणुत्तर संजमपालियाण । निरासवेसखवियाणकम्म उवेइठाण विउलुत्तमं ध्धुव ॥५२॥

" दुरात्मता [दुष्टाचार] जे दुःख उपजावे छे तेनुं दुःख गळुं वाढनार वेरी पण उपजावी शकतो नथी;१ दयारहित मनुष्यने मरण समये पश्चाताप थाय छे. [४८]. " जे साधु संयमरुपी उत्तम मार्गने विषे विपरीत गतिथी वर्ते छे, तेनुं चारित्र [नग्न-रुचि] निष्फळ थाय छे, ते आ लोक के परलोक साधी शकतो नथी, अने उभय लोकना सुखथी भ्रष्ट थाय छे. [४९]. " आ प्रमाणे जे स्वछंदी, कुशील साधु उत्तम जिन-मार्ग विराधीने टींटोडीनी पेठे रस-भोगमा ग्रस्त रहे छे, तेने [पछीथी थतो] शोक, पश्चात्ताप निरर्थक छे. (५०). " हे पंडित ! हे राजन् ! आ शुभाषित अने ज्ञान दर्शन चारित्रना गुणवाळो उपदेश साभळे छे, ते कुशील मार्ग तजे छे अने महा निग्रंथनो मार्ग सेवे छे. [५१]. " जे कोइ चारित्राचारना गुणे करीने सहित छे, जे सर्वोत्तम संयम पाळे छे, जेणे सर्व आश्रव रुंध्या छे,२ अने जेणे हिसारहित आठ कर्मने खपाव्या छे, ते विपुल, उत्तम अने निश्चळ ३ मुक्तिने पामे छे. " [५२].

१ A cut throat enemy will not do him such harm as his own perversity will do him. २. Who keeps from sinful influences. ३. The permanent place.

एवुग्गदतेविमहातवोधणेमहामुणी महापइण्णे महायसे १ महानियंठिज्जमिणं महासुयसेकहि एमहयाविथ्थरेणं ॥ ५३ ॥ तुट्ठोयसेणिओ रायाइणमुदाहु कयजली । अणाहत्त जहाभूय सुट्ठुमेउवदसिय ॥ ५४ ॥ तुज्झसुलद्धखुमणुस्सजम्म लाभासुलद्धाय तुमेमहेसी । तुम्हेसणाहाय सबधवाय जमेट्ठिया मग्गजिणुत्तमाण ॥ ५५ ॥ तासिणाहो अणाहाणं सव्व भूयाण सजया खामेमिते महाभागा इच्छामि अणुसासिउ ॥ ५६ ॥ पुच्छिऊणमएतुज्झझाणविग्घो उजोकओ । निम तियाय भोएहि तसन्व मरिसेहिमे ॥ ५७ ॥ एव थुणित्ताण सरायसीहो अणगारसीह परमाइभत्तिए । सउरोहो सपरियणो सबधवो धम्माणुरत्तो विमलेण चेयसा ॥ ५८ ॥

उग्र तपस्वी अने इन्द्रियोने दमनार महामुनि अने महा पडित जेणे पच महाव्रत सेव्या छे अने जे महा यशना धणी छे, तेणे उपर प्रमाणे श्रेणिक राजाने महा निग्रथना महान धर्मनो विस्तारथी उपदेश कर्यो. [५३]. श्रेणिक राजा सतुष्ट थइने, हाथ जोडीने आ प्रमाणे बोल्यो, " अनाथत्व शु ? तेनु आपे मने बराबर दर्शन [भान] कराव्यु छे. [५४]. " हे महर्षि ! आपे मनुष्य जन्मनुं सार्थक कर्यु छे, आपे धर्म लाभ बराबर लीधोछे, आप पोते सनाथ छो, अने बाधव, ज्ञाति, कुटुबादिकना पण नाथ छो, कारण के आप श्री तीर्थकरोना भाखेला उत्तम मार्गने विषे रह्या छो. [५५]. " हे सयत ! आप अनाथ प्राणीओना नाथ छो , हे महाभाग ! हु आपने खमावु छु, अने हने आप खरे रस्ते चडावो एम इच्छु छु (५६). " आपने प्रश्नो पूछीने में आपना ध्यानमा विघ्न कर्यु छे, अने आपने में भोग भोगववानु निमत्रण कीधु छे, ते सर्वे मारा अपराध क्षमा करो. " (५७). आ प्रमाणे राजाओमां सिंह समान श्रेणिक साधुओमा सिंह समान मुनिवरनी परम भक्ति पूर्वक स्तुति करीने, पोतानी स्त्रीओ, परिवार अने बांधवो सहित श्री जिन धर्मने विषे शुद्ध मनथी अनुरक्त थयो. * (५८).

* Became a staunch believer in the Law

उरससिय रोमकुवो काऊणय पयाहिणं । अभिवंदि ऊणसिरसा अइयाओ नराहिओ ॥ १ ॥ ईयरोवि गुणसमिद्धोतिगुत्तिगुत्तोतिदंड विरओय विहंगइव विप्पमुक्को विहरइव सुह विगयमोहो त्तिबेमि ॥ ६० ॥

● ॥ इति श्री महानियंठिज्जं झयण वीसम सम्मत्त ॥ ●



हर्षथी जेना शरीरनां रोमाच उभां थयां छे एवो श्रेणिक नराधिप मुनिश्वरने *प्रदक्षिणा दइ*, मस्तक नमावी वंदणा करीने पोताने घेर गयो. [५९]. अने गुणे करीने समृद्ध, त्रण गुप्तिए गुप्त, मन, वचन, कायाये करीने पाप कर्मथी निवृत, एवा ममत्वभाव अने मोह रहित मुनि पक्षिनी १ पेठे जगतने विषे विचरवा लाग्या. (६०).

*** वीसमुं अध्ययन संपूर्ण. ***

* अने बदले आगळ माफक प्रोफेसर जेकोबी लखे छे के " पोतानी जमणी बाजुए राखीने ".

१ Free like a bird

अध्ययन २१मुं. * समुद्रपाल.

चपाए पालिए नामसावए आसिवाणिए । महावीरस्स भगवओ सीस्सोमोओ महप्पणो ॥१॥ निग्गथे पावयणेसावए सेविकोविदे । पोएण ववहरते पिहुडनगरमागए ॥२॥ पिहुडे ववहरंतस्स वाणिओ देइधूयर । त ससत्त पइगिझसदेस अहपथ्यिए ॥ ३ ॥ अहपालियस्स घरणी समुद्दम्मिपसवई । अहदारए तर्हिजाए समुद्दपालोत्तिनामए ॥ ४ ॥ खेमेण आगए चपसावए वाणिए घर । संवड्ढई घरेतस्स दारएसे सुहोइए ॥५॥ बावत्तरी कलाओय सिक्खिए नीइकोविए । जोव्वणेणयसपण्णे सुरूवे पियदसणे ॥ ६ ॥

○ अध्ययन २१. ○

चंपा नगरीने विषे पालित नामे श्रावक वाणियो (व्यापारी) रहेतो हतो ते महापुरुष श्री महावीर भगवानना शिष्य हतो (१). ते श्रावक तरीके श्री वितरागना सिद्धांतमां (जिन शास्त्रमां) प्रवीण हतो. ते एक वखत व्यापार अर्थे वहाण लइने पिहुड नगरमां गयो. [२] ते पिहुडमां व्यापार करतो हतो एवामां त्यांना कोइ वेपारीए तेने पोतानी पुत्री परणावी ते स्त्री ज्यारे सगर्भा थइ त्यारे ते वाणिओ तेने साथे लइने स्वदेश जवा नीकळ्यो (३). पालितनी स्त्रीने समुद्रने विषे प्रसव थयो, ते बाळक समुद्रमां जन्मेलुं होवाथी तेनुं नाम समुद्रपाल पाडवामां आव्युं. [४], ते वणिक-श्रावक चंपा नगरीमां कुशळ क्षेम पोताने घेर आवी पहोंच्यो. त्यां ते बाळक सुख चैनमां वृद्धि पामवा लाग्यो. [५]. ते बाळक बहोंतेर कळा शीख्यो, अने नीति शास्त्रमां* निपुण थयो, ते अनुक्रमे युवावस्थाने पाम्यो, तेनु स्वरूप अति सुंदर अने मुखाकृति मनोहर हती. [६].

---

* Knowledge of the world.

तरसरुवबई भज्जंविया आणेइ रूविणीं । पासाए कीलए रम्मोदेवो दोगुंदगो जहा ॥ ७ ॥ अह अन्नया कयाई पासाया लोयणेठिओ । वझ मंडणसोभागं बझपासइ बझगं ॥ ८ ॥ त पासिऊण संवेगं समुद्दपालोइण मव्ववी.। अहो अमुहाणकम्माणनिज्जाण पावगंइमं ॥ ९॥ सबुद्धोसो तहिं भगवं परमंसवेगमागओ आपुछ्छम्मापियरो पव्वइए अणगारियं ॥ १० ॥ जहित्तु सगथ महाकिलेसं महंतमोहं कसिणं भयावहं । परियाय धम्मंच भिरोयएज्जा वयाइंसीलाइं परीसहेय ॥ ११ ॥

तेना पिताए तेने रुपिणी नामे अति रुपवती भार्या परणावी; ते पोताना रमणीक महेलमां पोतानी स्त्री संगाथे दोगुंदक देवनी पेठे क्रीडा करवा लाग्यो. (७). एक समये ते पोताना महेलना झरुखामा बेठो बेठो नगरनी शोभा जोतो हतो एवामां तेणे देहात दंडनी सजा पामेला एक चोरने वध-शणगारयुक्त * वध-भूमिने विषे लइ जतो जोयो. [८]. ते जोइने समुद्रपाल वैराग्यवंत थयो अने बोली उठ्यो के " पाप कर्मनु आ अशुभ फळ छे. " [९]. ते समुद्रपाल महात्मा त्यांथीज प्रतिबुद्ध १ थयो अने तेने परम संवेग (वैराग्य) उपज्यो; पोताना माता पितानी आज्ञा लइने तेणे साधु-धर्म अंगीकार कर्यो. (१०). स्वजनादिनो सम्बन्ध जे महा क्लेश अने महा मोहना कारण रुप छे, अने कृष्णलेश्या तथा भयना हेतुरुप छे, तेनो त्याय करीने, परियाय २ [प्रव्रज्या] धर्म उपर रुचि राखवी जोइए, पंच महाव्रत अने शीलाचार सेववा जोइए अने बावीश परिसह सहेवा जोइए. [११].

---

* मोतनी सजा माटे लइ जती वखते आगळना वखतमा केदीने चंदन वीगेरे चोपडता, करेणनां फूलनी माळा तथा वस्त्रो पेहरावतां. १. Enlightened २. Law of the monks.

अहिंस सच्चंच अतेणगंच तत्तो यवभं अपरिग्गहच्च। पडिवज्जिया पचमहव्वयाइचरिज्जा धम्मंजिणदेसियंविऊ ॥१२॥ सव्वेहि भूएहिदयाणुकंपी खतिखमे सजयबभयारी सावज्जाजोग परिवज्जयतो। चरिज्ज भिक्खूसु समाहिइदिए ॥ १३ ॥ कालेण काल विहरिज्जरट्ठे वलावल जाणिय अप्पणोय। सीहोव्व सद्देण नसतसेज्जा वयजोग सोच्चाण असब्भ माहु ॥ १४ ॥ उवेहमाणोउपरिव्वएज्जा पियमप्पिय सव्व तितिक्खएज्जा। न सव्व सव्वथ्थभिरोयएज्जा नयाविपूयंगरहच्च सजए ॥ १५ ॥

जीव-दया पाळवी, सत्य बोलवु, अदत्ता दान न लेवु, ब्रह्मचर्य सेववु अने परिग्रह न राखवो, ए पच महाव्रत अगीकार करीने जिन-भाषित धर्म पडित साधुए सेववो. (१२). साधुए सर्व जीव प्रति दया राखवी, क्षमावान थवु, सयम पाळवो, ब्रह्मचर्य सेववुं अने जेथी पाप लागे ते सर्व त्यागवु अने इन्द्रिय दमन करीने देशने विषे विचरवु. [१३]. + प्रत्येक पहोरे ते काळने योग्य [ध्यानानुष्ठान तपादि] कार्य पोताना आत्मानु बलाबल विचारीने करवु,+ भयानक शब्द साभळीने सिंहनी माफक चमकवु नहि; अने कोइनां गमे तेवा कठोर वचन साभळवा छता असभ्य वचन उच्चारवु नहि. (१४). प्रिय अने अप्रिय सघळु एक सरखी रीते सहन करीने, मनमा कांइ पण आण्या सिवाय, गामो गाम विचरवु, सर्वत्र सर्व वस्तु तरफ अभिरुचि राखवी नहि, अने कोइ पोतानी स्तुति करे या निंदा करे ते उपर समान भाव राखवो. (१५).

+ आने बदले प्रो. जेकोबी एवो अर्थ करे छे के "प्रत्येक देशनां साधन अने पोतानी शक्तिनो विचार करीने साधुए वखतो वखत ते देशमां विचरवुं."

अणेगछंदा इहमाणवेहिं जेभावओसंपकरेइ भिक्खू । भयभेरवा तथ्थउ‌इंति भीमा दिव्वा मणुस्सायतहातिरिच्छा ॥ १६ ॥
परीसहा दुव्विसहा अणेगेसीयंतिजथ्था बहुकायरानरा । सेतथ्थपत्तेन वहिज्ज भिक्खू संगाम सीसेइव नागराया ॥ १७ ॥
सीओसिणा दंसमसाय फासा आयंका विविहा फुसंति देह अकुक्कुओ तथ्थहिया सएज्जारयाइं खेविज्जपुरे कडाइं॥१८॥
पहाय रागंचतहेव दोस मोहंच भिक्खू सययंवियक्खणो । मेरुव्ववाएण अकंप माणो परीसहे आय गुत्तेसहेज्जा ॥ १९ ॥

आ संसारमां जुदाजुदा मनुष्यना जुदाजुदा अभिप्राय होय छे; ते सघळाने साधुए तेना खरा स्वरूपमा समजवा [मूकवा] जोइए ; देव, मनुष्य अने तिर्यंच संबंधीना महा घोर अने भयानक दुःखो उपजे छे, ते परिसहो सहन करवा अति कठिन छे अने कायर माणसो तेनाथी हारी जाय छे ,. पण जेम संग्रामने मोखरे रहेलो राज-हस्ति [मार पडवा छता पण] न्हासतो नथी, तेम जे भिक्षुक एवा परिसह आवी लाग्या छता पण तेनाथी चलित थतो नथी ते खरो साधु केहेवाय.(१६-१७). शीत, उष्ण, डास, मच्छरादि अने नाना प्रकारना रोग आवीने शरीरने स्पर्श करे छे ; काइपण दुःखोद्गार काढ्या सिवाय ए सघळा परिसह तेणे सहन करवा अने *पूर्वे करेलां पापरुपी मळनो क्षय करवो.* (१८). राग, द्वेष अने मोह छोडीने, पंडित साधुए निरंतर सावधान अने दृढ रहेवुं अने जेम मेरु पर्वत वायराथी चलित थतो नथी तेम तेणे पण कोइ उपसर्गथी चळवुं नहि, अने आत्म-गुप्त थइने (सावध रहीने) सघळा परिसह सहन करवा. [१९].

* आने बदले प्रो. जेकोबी एवो अर्थ करे छे के—" पूर्वे भोगवेला भोगनुं स्मरण करवुं नहि. " मूळ पाठमां ' रयाइंखेविज्ज ' छे जेनो अर्थ कर्मरुपी रज खपावे एम थइ शके छे,

अणुनए नावणए महेसीनयाविपूयंगरहंच संजए । सेउज्जुभावं पडिवज्ज संजए निव्वाणमग्गं विरएउवेइ ॥ २० ॥
अरइरइ सहेपहीणसंथवे विरए आयहिए पहाणव परमट्ठप एहि चिठ्ठई छिन्नसोए अममे अकिंचणे ॥ २१ ॥
विवित्त लयणाइ भएज्जताई निरोवलेवाइं अस थडाइ इसीहिं चिन्नाइ महायसेहिंकाएण फासेज्ज परिसहाइ ॥ २२ ॥
सन्नाण नाणोवगओ महेसी अणुत्तरचरिओ धम्मसंचय अणुत्तरेनाणधरेजससी । उभासईसूरिएवतरिक्खे ॥ २३ ॥

महर्षि अभिमानथी अति उच्च, अथवा अतिदीन थता नथी, पोतानी स्तुतिथी हर्ष पामता नथी, अने निंदाथी दुःख आणता नथी. उन्नत्त अने अवनत भाव रहित [अथवा विरक्त थयेल] साधु [समुद्रपाल] पोतानी सरळताए करीने निर्वाण मार्गने प्राप्त करी शकशे. [२०]. विद्वान साधु रति अरति सहन करे छे, कोइनो परिचय सेवतो नथी, सर्व वस्तुथी विरक्त रहे छे, पोताना आत्मानु हित विचारे छे अने संयम सहित परमार्थ पदे [मोक्ष मार्गे] विचरे छे, अने शोक, ममत्व तथा परिग्रहथी मुक्त रहे छे. [२१]. *जीवदया प्रतिपाल साधु एकान्त, १ निर्जेर अने जीव जंतु रहित उपाश्रयने सेवे छे* अने महर्षिओए सहन करेला सर्व परिसह कायाये करीने सहे छे. (२२). महर्षि समुद्रपाल ज्ञान गोष्ठ श्रवण करीने अने सर्वोत्तम चारित्र संपूर्ण रीते पाळीने, जेम आकाशमा सूर्य बीराजे छे, तेम ते केवळ ज्ञान अने तपना प्रभावे करीने बीराजवा लाग्या. [२३].

---

* आने बदले प्रो. जेकोबी एवो वाक्यार्थ करे छे के ' दयाळु साधुए बीजा साधुओथी दूर पोतानी शय्या करवी जोइए, अने जे शय्या तेने माटे खास तैयार करेली अने जीवजंतु वाळा पदार्थोनी बनेली न होवी जोइए !'. १. साधुओने माटे खास साफ करेल न होय एवो भावार्थ कोइ टीकामांथी मळे छे.

दुविहंखवेउणयपुन्नपावं निरंगणे सव्वओ विप्पमुक्के । तरित्तासमुदंच महाभवोइंसमुद्दपालो अपुणागमगइंगए त्तिबेमि ॥ २४ ॥

→। इति श्री समुद्दपालियनामं झयणं एकवीसम सम्मत्तं ॥←

अध्ययन २२. रथनेमि (रहनेमि).

सोरियपुरंमि नयरे आसिराया महड्ढिए । वसुदेवेत्तिनामेणं रायलक्खण संजुए ॥ १ ॥ तस्सभज्जा दुवेआसा रोहिणी देवइतहा । तासिंदुएहविदोपुत्ता इठाराम केसवा ॥ २ ॥

शुभ अने अशुभ बन्ने मकारना कर्मने खपावीने, संयमने विषे निश्चळ रहीने, अने सर्व वंधनथी मुक्त थइने, समुद्रपाल साधु संसार-समुद्र तरीने अपुनरागम गतिने [मुक्तिने] प्राप्त थया. [२४].

※ एकवीसमुं अध्ययन संपूर्ण. ※

अध्ययन २२.

*सौर्यपुर नगरने विषे वसुदेव नामे महा रिद्धिवान राजा राज्य करतो हतो; ते राज-लक्षणे करीने (छत्र, ध्वजा, चामरादि) सहित हतो. [१]. ते राजाने रोहिणी अने देवकी नामे वे राणीओ हती. ते मत्येकने राम अने केशव नामे अकेक मिय पुत्र हतो. [रोहिणीने राम अथवा वलभद्र अने देवकीने केशव अथवा कृष्ण] (२).

---

*. ब्राह्मण ग्रंथो ममाणे वसुदेव मथुरामा रहेता हता. सौर्यपुर ए मथुरानुं मशंपक नाम होवु जोइए. जरासंघे मथुरापर वारंवार हुमला कर्या तेथी श्रीकृष्णे द्वारका नगरी वसावी अने आ अध्ययनमां मकाशेली हकीकत श्री द्वारकामा वनेलीछे.

सोरियपुरंमिनयरे आसिराया महिड्ढिए। समुद्दविजएनामं रायलक्खणसंजुए ॥ ३ ॥ तस्सभज्जा सिवानाम तीसे पुत्ते महायसे । भयव अरिट्ठनेमित्ति लोगनाहे दमीसरे ॥४॥ सोरिट्ठनेमिनामाउ लक्खणस्सरसंजुओ । अट्ठसहस्सलक्खणधरो गोयमो कालगच्छवी ॥ ५ ॥ वज्जरिसहसंघयणो समचउरसो झसोयरो । तस्सरायमइकन्न भज्जंजायइ केसवो
उ अ २२ ॥ ६ ॥ अहसाराय वरकन्ना सुसीला चारुपेहिणी । सव्वलक्खणसंपन्ना विज्जुसोया मणीप्पभा ॥७॥ अहाहजणउ तिसे वासुदेव महड्ढिय । इहा गच्छओ कुमारो जासेकन्न दलामहं ॥८॥

१७१ सौर्यपुर नगरने विषे समुद्रविजय नामे त्रीजो एक महा ऋद्धिवान राजा हतो; ते पण राज लक्षणे करीने युक्त हतो. [३]. तेनी राणीनु नाम शिवादेवी हतु. तेने महायशस्वी भगवत अरिष्टनेमि (नेमीनाथ) नामे पुत्र हता जे *लोकनाथ अने १दमीश्वर (एटले आ लोकने तारनार अने जितेन्द्रिय पुरुषोना इश्वर समान) हता. [४]. आ अरिष्टनेमि उत्तम स्वर-लक्षणे करीने सहित अने एक हजारने आठ शुभ लक्षणना धरणहार हता, ते गौतम गोत्रना अने श्याम कान्तिवाळा हता. [५]. तेमनु शरीर वृषभना जेवु मजबूत अने वज्रना जेवु सखत हतु, तेमना अवयवो प्रमाणशुद्ध हता अने तेमनु उदर मत्स्यना उदर सरखुं हतु. केशवे नेमिनाथ नी भार्या तरीके राजिमती कन्यानु मागु कर्युं (६). आ उत्तम राज-कन्या (२उग्रसेन राजानी पुत्रि) सुशील अने सुंदर हती; ते सर्व शुभ लक्षणे संपूर्ण हती अने सौदामिनी विद्युत प्रभाना सरखी तेनी कान्ति देदीप्यमान हती. (७). राजिमतीना पिता उग्रसेने महा ऋद्धिवान कृष्ण वसुदेवने कह्यु के " नेमि-कुमार मारी पासे आवे एटले हु तेमने मारी कन्या आपीश. " [८].

* Savior of the world १. Lord of the ascetics २. श्री कृष्णे कंसने मारीने उग्रसेनने गादी आपी हती एम विष्णुपुराण कहे छे.

न,अ सव्वोसहिहिंन्हविओ कयकोऊय मंगलो । दिव्वजुयलं परिहिउ आभरणेहिं विभूसिउ ॥ ९ ॥ मत्तं च गंधहत्थिंच
२२ वासुदेवस्स जिट्ठग । आरूढो सोहए अहियं सिरे चुडामणीजहा ॥१०॥ अह ऊसिएण छत्तेण चामराहि यसोहिओ ।
१७० दसारचक्केण यसो सव्वउ परिवारिओ ॥ ११ ॥ चउरंगिणीए सेणाए रइयाए जहक्कमं । तुरियाण सन्निनाएण दिव्वेणं
गगणफुसे ॥ १२ ॥ एयारिसीए इड्ढीए जुइए उत्तमायऽ । नियगाओ भवणाओ निज्जाओ वण्हिपुंगवो ॥ १३ ॥
अहसोतत्थ निज्जंतो दिस्सपाणे भयदुए । वाडेहिं पंजरेहिंच सन्निरुद्धे सुदुक्खिए ॥ १४ ॥ जीवियं ततुसपत्ते मसट्ठा
भक्खियव्वए । पासित्तासे महापन्ने सारहिं इणमब्बवी ॥ १५ ॥

ते उपरथी नेमि-कुमारने सर्व सुगंधी औपधिथी स्नान करावतामा आव्युं, लौकिक मंगळ क्रियायो करवामा आवी, दिव्य वस्त्र धारण करावतामां आव्या अने अलंकारोथी शणगारवामां आव्या.[९]. वसुदेवना उत्तम गंध-हस्ति उपर ते आरुढ थया, अने मस्तक उपर जेम चूडामणि [मुकुट] शोभे तेम शोभवा लाग्या. [१०]. माथे छत्र धारण कर्यु छे, बे पासे चामर ढोळाय छे, दशार्ह (यादवो)नो समुदाय चोतरफ विंटळायेलो छे, चतुरंगिणी सेना यथाक्रम गोठवायेली छे, अने विविध प्रकारना वाजिंत्रोना दिव्य नाद आकाशे पहोंची रह्या छे. [११-१२]. आवी उत्तम ऋद्धि अने कान्ति सहित वृष्णिपुगव (यादव-कुळ भूपण) पोताना मन्दिरेथी बहार नीकळ्या.(१३).आगळ चालतां तेमणे अनेक प्राणीओने पांजरामा अने वाडामा पूरेलां जोयां;तेओ अति भय-भ्रान्त थयेलां अने दुःखी देखातां हतां [१४]. तेमने मारीने पछीथी ते मांस भक्षण करवानी खातर आटला बधा प्राणीओनो अंतकाळ नजीक जोइने ते महा बुद्धिशाळी पुरुप पोताना *सारथीने आ प्रमाणे कहेवा लाग्या. [१५].

---

* १०मी गाथामां हाथीपर बेठेला जणावे छे आमां रथपर जणावे छे. शहेरमाथी नीकळ्या त्यारे हाथीपर होय अने पछी रथमा बेठेला होय एम अनुमान थाय छे. प्रो. जेकोबी तो दशमी गाथा पाछळथी उमेरायेली माने छे.

करसट्ठाइमेपाणा एएसव्वे सुहेसिणो । वाडेहिं पंजरेहिंय संनिरुद्धेय अथ्थइ ॥१६॥ अहसारहीतओ भणई एएभद्दाउ पाणिणो । तुझ्झ विवाहकज्जमि भोयावेउ बहुजण ॥ १७ ॥ सोऊण तस्स सोवयणं बहुपाणिविणासण । चिंतेइसे महापन्ने साणुक्कोसे जिएहिउ ॥ १८ ॥ जइमझ कारणाएए हम्मतिसु बहुजिया । नमे ए यतु निस्सेस परलोए भविस्सई ॥ १९ ॥ सोकुडलाण जुयल मुत्तगच्च महायसो । आभरणाणिय सव्वाणि सारहिस्सपणामए ॥ २० ॥ मण परिणामोयकए देवाय जहोइय समोइन्ना । सव्वढ्ढीए सपरिसा निक्खमण तस्सकाउजे ॥ २१ ॥

"आटलां बधां प्राणीओ, जे सर्वे सुखनी अभिलाषा राखतां हशे, तेमने पांजरामां अने वाडामां शामाटे पूरी राखवामां आव्यां हशे ?" (१६). सारथीए उत्तर आप्यो के, "हे स्वामिन् ! आ प्राणीओ पूरां भाग्यशाळी के आपना विवाह प्रसंगे अनेक जनोनां भोजनना उपयोगमां तेओ आवी शकशे !" (१७). सारथीना आवां वचन सांभळीने, अने घणां प्राणीओनो विनाश थतो जाणीने सर्व जीव तरफ दया राखनार अने प्राणी मात्रनु हित विचारनार ते महाप्राज्ञ पुरुष आ प्रमाणे विचारवा लाग्या :–(१८). "जो मारा [विवाह] निमित्ते आटला बधां प्राणीओ हणाशे तो परलोके मारुं कल्याण थशे नहि." (१९). ते उपरथी महायशस्वी नेमिनाथे पोताना कानना बन्ने कुंडलो, *कटि सूत्र (कडनो कदोरो) अने सर्व आभरणो उतारीने सारथीने आपी दीधां. (२०). नेमिकुमारनुं मन परिणाम जोइने, देवताओ यथोचित समये पोतानी सकल ऋद्धि अने परिवार साथे, तेमनो दीक्षा महोत्सव उजववाने आव्या. [२१].

* प्रो. जेकोबी Neck-Chain अर्थ करे छे.

सोऊण रायवरकन्ना पव्वज्जांसा जिणरसओ । निंहासाय निराणदा सोगेणउ समुथ्थया ॥ २८ ॥ रायमइ विचितेइ धिरथ्थु ममजीविय । जाहतेण परिच्चत्ता सेयपव्वइओमम ॥२९॥ अहसा भमरसनिभे कुच्च फणगपसाहिए । सयमेव लुच्चइकेसे धिइमता ववसिय। ॥३०॥ वासुदेवोइण भणई लुत्तकेसांजि इदियं । ससार सागर घोर तरकन्नेलहुलहु ॥३१॥ सापव्वइयासती पव्वावेसी तहिबहु । सयण परियणचेव सीलवता वहुस्सुया ॥३२॥

राज कन्या राजिमतीए ज्यारे नेमिनाथे दीक्षा ग्रहण कर्यानु सांभळ्यु, त्यारथी तेनो हर्ष अने आनद उडी गयो अने ते शोकमा *गिरफतार थइ गइ. [२८]. राजिमती पोताना मनथी विचारवा लागी के 'नेमिनाथे मारो परित्याग कर्यो तेथी मारा जीवितने धिक्कार छे. हवे मारुं श्रेय (पण) दीक्षा लेवामाज समायेलुं छे.' [२९]. पोताना काळा भ्रमर जेवा केश जे कूर्च-फणकथी [दातियाथी] समारेला हता तेनो राजिमतीए धैर्य अने दढताथी पोताने हाथे १लोच कर्यो. (३०). राजिमती जेणे केशनो लोच करेलो छे अने जेणे पोतानी इन्द्रिओने वश करेली छे तेने कृष्ण वासुदेव कहे छे–"हे कन्या! घोर ससार समुद्रथी शीघ्र पार उतरी जाओ." (३१). दीक्षा ग्रहण कर्या पछी ते शीलवती अने बहुश्रुत कन्याए पोताना स्वजन, परिजनादि द्वारिकांना बहु जनोने दीक्षा लेवडावी. (३२).

*आ प्रसंग, विक्रम नामना कविए 'श्री नेमीदूत काव्य' नामना अद्भूत सस्कृत काव्यमा गुथेलो छे, पादपूर्ति जेवी पध्धतिए योजना थयेली छे. दरेक काव्यनी छेली लीटी कवि कालीदासना मेघदूतमाथी लइने, आ प्रसगनी त्रण त्रण लींटीओ बनाववामां आवी छे १. 'लोच कर्यो' ने बदले मो. जेकोबी लखे छे के 'कापी नांख्या' अने एवो अर्थ करवाना आधारमां पोतानी मान्यता जणावे छे के स्त्रीओ लोच करती नथी, पण वाळ कपावी नाखे छे; पण ए एनी मान्यता भूल भरेली छे.

देव मणुस्स परिवुडो सिवियारयणंतओ समारूढो । निख्खमिय बारगाउ रेवयं मिठिउ भयवं ॥ २२ ॥ उज्जाणंमि संपत्तो उइन्नो उत्तमाओसीयाओ । साहस्सीए परिवुडो अहनिख्खमइउ चित्ताहिं ॥ २३ ॥ अहसो सुगंधिगंधिए तुरियं मिउय कुंचिए । सयमेव लुंचिइ केसे पंचमुट्ठीहिं समाहिए ॥२४॥ वासुदेवोइणं भणइ लुत्तकेसंजिइंदिय । इच्छियमणो रहेतुरियं पावेसुत्तं दमीसए ॥ २५ ॥ नाणेणं दसणेणंच्च चरित्तेणं तवेणय खंतीए मुत्तीए वद्धमाणो भवाहिय ॥ २६ ॥ एवंते रामकेसवा दसाराय बहुजणा । अरिट्ठनेमिं वंदित्ता अइं गयाबारगापुरिं ॥ २७ ॥

देव अने मनुष्याथी विंटळायेला भगवान नेमि-कुमार उत्तम शिबिका [पालखी]मा बेसीने, द्वारिकाथी नीकळीने रेवतक [गिरनार] पर्वते चढ्या. [२२]. रेवताचलना उद्यानमा (सहस्त्रावनमा) आवीने* श्री नेमिकुमार पोतानी उत्तम शिबिकामांथी नीचे उतर्या अने चित्रा नक्षत्रने विषे तेणे एक हजार राजविओ संगाथे दीक्षा ग्रहण करी. (२३). त्यारपछी नेमिनाथे स्वहस्थे पोताना मृदु सुगंध वाळा, सुकुमार, वाकडिया वाळनो पंच मुष्टिए लोच कर्यो. [२४]. त्यारपछी कृष्ण-वासुदेव, समुद्रविजय आदि नृपतिओ ते जितेन्द्रिय पुरुष जेणे केश लोचन कर्युं छे तेने कहेवा लाग्या-हे दमीश्वर ! आपना इप्सित मनोरथ शीघ्र सफळ थाओ. [२५]. "आपना ज्ञान, दर्शन, चारित्र, क्षमा अने निर्लोभ सदा वृद्धि पामो." (२६). आ प्रमाणे राम, केशव, दशार्ह [यादवो] अने बीजा अनेक लोको श्री अरिष्टनेमिने वांदीने द्वारिकापुरीमां पाछा आव्या. [२७].

---

* प्रो. जेकोबी Surrounded by thousands अर्थ करेछे पण मूळ पाठ अने टीकामा जे शब्दो छे ते परथी एवो अर्थ नीकळे छे के एक हजार राजवी प्रधान पुरुष साथे दिक्षा ग्रहण करी.

सोऊण रायवरकन्ना पव्वज्जंसा जिणस्सओ । निहासाय निराणदा सोगेणउ समुथ्थया ॥ २८ ॥ रायमइ विचितेइ धिरथ्थु ममजीविय । जाहतेण परिच्चत्ता सेयपव्वइओमम ॥२९॥ अहसा भमरसनिभे कुच्च फणगपसाहिए । सयमेव लुचइकेसे धिइमता ववरिसय ॥३०॥ वासुदेवोइण भणई लुत्तकेसांजि इदियं । ससार सागर घोर तरकन्नेलहुलहु ॥३१॥ सापव्वइयासती पव्वावेसी तहिवहु । सयणं परियणचेव सीलवता वहुस्सुया ॥३२॥

राज कन्या राजिमतीए ज्यारे नेमिनाथे दीक्षा ग्रहण कर्यानु सांभळ्यु, त्यारथी तेनो हर्ष अने आनंद उडी गयो अने ते शोकमा *गिरफतार थइ गइ. [२८]. राजिमती पोताना मनथी विचारवा लागी के 'नेमिनाथे मारो परित्याग कर्यो तेथी मारा जीवितने धिक्कार छे. हवे मारुं श्रेय (पण) दीक्षा लेवामाज समायेलु छे.' [२९]. पोताना काळा भ्रमर जेवा केश जे कूर्च-फणकथी [दांतियाथी] समारेला हता तेनो राजिमतीए धैर्य अने दृढताथी पोताने हाथे १लोच कर्यो. (३०). राजिमती जेणे केशनो लोच करेलो छे अने जेणे पोतानी इन्द्रिओने वश करेली छे तेने कृष्ण वासुदेव कहे छे–" हे कन्या! घोर ससार समुद्रथी शीघ्र पार उतरी जाओ." (३१). दीक्षा ग्रहण कर्या पछी ते शीलवंती अने बहुश्रुत कन्याए पोताना स्वजन, परिजनादि द्वारिकांना बहु जनोने दीक्षा लेवडावी. (३२).

---

*आ प्रसंग, विक्रम नामना कविए 'श्री नेमीदूत काव्य' नामना अद्भूत संस्कृत काव्यमा गुथेलो छे, पादपूर्ती जेवी पध्धतिए योजना थयेली छे. दरेक काव्यनी छेल्ली लींटी कवि कालीदासना मेघदूतमाथी लइने, आ प्रसंगनी त्रण त्रण लींटीओ बनाववामा आवी छे. १. 'लोच कर्यो' ने बदले मो. जेकोबी लखे छे के 'कापी नांख्या' अने एवो अर्थ करवाना आधारमां पोतानी मान्यता जणावे छे के स्त्रीओ लोच करती नथी, पण वाळ कपावी नाखे छे; पण ए एनी मान्यता भूल भरेली छे.

गिरिंरेवयंजंती वासेणोल्लाउ अंतरा । वासंते अंधयारंमि अंतो लयणस्स साठिया ॥ ३३ ॥ चीवराइं विसारंती जहा जाइत्ति पासिया । रहनेमी भग्गचित्तो पच्छादिठ्ठोयती एवि ॥३४॥ भीयाय सातहिंदठुं एगंतेसं जयंतयं । बाह हिं काओ सगोफ वेवमाणी निसीयई ॥ ३५ ॥ अहसोविरायपुत्तो समुदविजयंगओ । भीयंपवेइयं दठु इमंवक्क मुदाहरे ॥३६॥ रहनेमी अहभद्दे सुरूवे चारुभासिणि । मम भयाहि सुतणुनतेपीला भविस्सई ॥३७॥ एहिता भुंजिमोभोए माणुस्सं खु सुदुल्लह । भुत्तभोगी तओपच्छा जिणमग्ग चरिस्सामो ॥ ३८ ॥

एक वखत ते रेवतक पर्वत उपर (स्वामि वंदनार्थे) जती हती एवामां मार्गमा वरसाद वरसवा लाग्यो. पोताना वस्त्र भींजाइ गयां हतां अने मेघ-वृष्टिने लीधे अंधकार छवाइ रह्युं हतुं तेथी राजिमती एक गुफामां पेठी. [३३]. त्यां तेणे पोताना वस्त्रो (सूकववा माटे) उतारी नाख्यां अने जन्म-समये होय तेवी निर्वस्त्र (नग्न) थइ रही. एवी स्थितिमां *रथनेमिए तेने जोइ; तेथी तेनुं चित्त चलित थइ गयुं. एवामां राजिमतीनी नजर पण तेना उपर पडी. [३४]. ते गुफामां (रथनेमि) साधुनी साथे पोते एकलीज छे ते जोइने राजिमती भय पामी; पोताना बाहुवति छाती ढांकीने ध्रुजती ध्रुजती नीचे बेसी गइ. (३५). राजिमतीने भयथी ध्रुजती जोइने समुद्रविजय राजानो पुत्र [रथनेमि] तेने नीचे प्रमाणे कहेवा लाग्यो. (३६). “ हे भद्रे ! हुं रथनेमि छुं. हे सुरुपे ! हे चारुभाषिणी ! हे [1]सुतनु ! तारा भर्त्तार तरीके मारो अंगीकार कर; तेम करवाथी तने काइ हानी थशे नहि. (३७). “ मनुष्य भव मळवो दुर्लभ छे, माटे आव आपणे भोग भोगवीए; अने भोग भोगव्या पछी आपणे जिनमार्गने विषे विचरीशुं. ” [३८].

* ते राजेमतिनो ‘ जेठ ’ थतो हतो. श्री दश वैकालीक सूत्रनी श्री हरीभद्रजीनी टीकामां विशेष विस्तार छे के राजेमतीए सरवत पीधुं अने तेनी उलटी करी ते रहनेमिने पीवा आप्यो अने बुझव्यो, जुओ आ अध्ययननी गाथा ४२. १. विष्णुपुराण कहेछे के राजिमतीनुं बीजुं नाम सुतनु हतुं.

उ.अ. दठूर्ण रहनेमित भग्गुजोय पराइयं । रायमइ असंभता अप्पाण सवरे तहिं ॥ ३९॥ अहसागय वरकन्ना, सुट्ठिया
२२ नियमव्वए । जाइकुलच सीलच रख्खमाणी तयंवए ॥ ४० ॥ जइसिरूवेण वेसमणो ललिएण नलकूवरो । तहावि
तेनइछामि जइसिसख्ख पुरदरो ॥ ४१ ॥ पख्खदे जलियजोइं धूमकेउ दुरामय । नेछतिवतयभोत्तु कुलेजाया अगंधणे
१७७ ॥४२॥ धिरथुते जसोकामी जोतजीविय कारणा । वतइछसि आवेउ सेयते मरणभवे ॥ ४३ ॥

रथनेमिने सपम भग थयेलो अने स्त्री परिसहथी लल्चायेलो जोइने राजिमती सती निर्भयपणे पोताना आत्मानु सरंक्षण करवाने तत्पर थइ [३९] ते उत्तम राज कन्या पोताना व्रत नियममा अडग रही*, तेणे पोतानी जात अने कुळनी लाज राखी, तेणे पोतानु शील साचव्यु अने ते रथनेमिने कहेवा लागी :– (४०). " हे रथनेमि ! तुं रुपमा वैश्रमण [धनद अथवा कुवेर] सरखो होय, विलासमा नल-कूबेर सरखो होय, अने तुं साक्षात पुरंदर (इन्द्र) होय, तोपण हुं तारी इच्छा करती नथी. " (४१). " हे रथनेमि ! बळता धूमकेतुना अग्निनी ज्वाळाओ जे सहन करवी दुःसह छे, ते कदाच सहन करे, परंतु अगधन कुळने विषे उत्पन्न थयेला सर्प, वमन करेलु विष पाछु पीवानी इच्छा करता नथी.[1] " हे अयश (अपयशने इच्छनार)! धिकार छे तारा पुरुषत्वने के तु आ जिवितने अर्थे, वमन करेलो आहार फरी खावानी इच्छा करे छे ! तारे माटे तो मोतज सारु छे. [४३].

---

* True to self control and her vows १. आ आखी गाथा मो. जेकोबीए पोताना भाषान्तरमा मूकी दीधी छे तेथी तेने अहि अनुक्रम नंबर चडाव्यो नथी.

अहंच भोगरायस्स तंचसि अंधगवन्हिणो । माकुलेगंधणाहोमो संजमं निहुउचर॥४४॥ जइतंकाहिसिभावं जाजादिच्छसिनारीओ । वायाविद्धोव्वहडो अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥ ४५ ॥ गोवालो भंड वालोवा जहा तद्दव्वनिस्सरा । एव्व अणिस्सरोतपि सामन्नस्स भविस्ससि ॥ ४६ ॥ कोहमाण निगिण्हित्ता माया लोभच सव्वसो । इन्दियाइ वसेकाउ अप्पाणं उवसहरे ॥४७॥

"हे रथनेमि! हुं भोग-राजानी [उग्रसेननी] पुत्रि छुं अने तु अन्धक-वृष्णिनो (समुद्रविजयनो) पुत्र छे. आपणे बन्ने गन्धन कुल [उमदा]मां उत्पन्न थयेला होइने अगन्धन* कुलोत्पन्न सर्प जेवा न थवु जोइए. माटे संयमने विषे स्थिर चित्त राख. (४४). "जो तुं हरकोइ रूपाळी स्त्रीने जोइने भोगनी इच्छा करीश तो जेम हठ वनस्पति[1] [शेवाळ] वायराथी आम तेम चलायमान थाय छे तेम तुं पण अस्थिर आत्मा [वृत्ति] वाळो थइश.(४५). "जेम कोइ गोवाळ अथवा भाडपालक करियाणु साचवनार ते मालनो धणी गणातो नथी [पणं मात्र रखवाळज गणाय छे] तेम तुं पण श्रमण धर्मनो खरो मालेक गणाइश नहि. [अर्थात्–तारुं चारित्र मात्र उदर पोषण अर्थेज तने काम लागशे, मोक्ष प्राप्ति अर्थे काम नहि लागे]. " (४६). क्रोध, मान, माया अने लोभथी पोतानी इन्द्रिओने वश करीने रथनेमिए पोताना आत्माने धर्मने विषे दृढ कर्यो [2]

*.सर्प बे प्रकारना छे. गन्धन सर्प दश दइने पछी पोतानुं झेर चूसी लेछे. अगन्धन मरे पण पाछु झेर चूसता नथी. [1]पाणीमा उगती वनस्पति Pistia Stratiotes [2].आ गाथा पण प्रो. जेकोबीए पोताना भाषान्तरमा मूकी दीधी छे. मूळमा ५१ गाथा छे. प्रो. जेकोबी कृत भाषान्तरमा ४९ छे.

तीसेसो वयण सोच्चा संजयाए सुभासियं । अकुसेण जहा नागो धम्मे संपडिवाइओ ॥ ४८ ॥ मणगुत्तो वयगुत्तो कायगुत्तो जिइदिओ । सामणं निच्चल फासे जावजीवं दढ्व्वओ॥४९॥ उग्ग तव चरित्ताण जाया दुन्निवि केवली। सव्व कम्म ग्ववित्ताण सिद्धि पत्ता अणुत्तर ॥ ५० ॥ एव करतिसबुद्धा पडियापवियरखणा । विणियट्टति भोगेसु जहासेपुरिसोत्तमो त्तिबेमि ॥५१॥

॥ इति रहनमियनाम झयण वाविस सम्मत्त ॥ २२ ॥



राजिमती साध्वीना आवां सुभाषित वचन सामळीने हस्ति जेम अकुशथी पाछो फरेछे तेम रथनेमि धर्म मार्गमा पाछो फर्यां.* [४८] मन, वचन, कायाये गुप्त रहीने, इन्द्रिओने वश राखीने, अने पच महाव्रतमां दृढ रहीने, रथनेमिए निश्चळ मनथी जींदगी पर्यंत श्रमण धर्म पाळ्यो [४९]. उग्र तप१ आदरीने तेओ बन्ने (राजिमती अने रथनेमि) केवली पदने पाम्या अने सर्व कर्मनो क्षय करीने सर्वोत्तम सिद्ध गातिने प्राप्त थया. [५०]. तत्वना जाण पडित, विचक्षण अने विवेकी पुरुषो आ प्रमाणे वर्त्ते छे. तेओ पुरुष वर्गमां उत्तम एवा रथनेमिनी पेठे निवर्त्ते छे.२ [५१]

* वावीसमु अध्ययन सपूर्ण. *

* टीकाकार देवेन्द्र अहिं नूपुर पडितनु दृष्टांत टांके छे जे विस्तारथी श्रीमद् हेमचद्राचार्य कृत परिशिष्टपर्वमां छे. १. Severe austerities २. नवमां अध्ययननी छेल्ली गाथा साथे सरखावो.

अध्ययन २३. * केशि अने गौतम (नो संवाद).

जिणे पासित्ति नामेणं अरहालोग पूइए । संबुद्धप्पाय सव्वन्नू धम्मतित्थयरेजिणे ॥१॥ तस्स लोगपइवस्स आसी-सीसे महायसे । केसीकुमार समणे विज्जाचरणपारगे ॥ २ ॥ उहिनाणा सुएबुद्धे सीससंघ समाउले । गामाणुगाम रीयते सावत्थि नगरमागए ॥३॥ तिंदुय नामउज्जाण तमिनगर मडले । फासुएसेज्जसथारे तत्थवास मुवागए ॥४॥ अह तेणेवकालेणं धम्मतित्थयरेजिणे । भगवं वध्धमाणोत्ति सव्वलोगमि विस्सुए ॥ ५ ॥

॥ अध्ययन २३. ॥

जिन मार्गने विषे श्री पार्श्वनाथ नामे तीर्थंकर थइ गया छे ते पोते अरिहंत (कर्मरुपी शत्रुओने हणनार), भव्य लोकोने पूजवा योग्य, संबुद्ध [तत्वना जाण], सर्वज्ञ, धर्म-तीर्थंकर (धर्मरुपी तीर्थना * करण हार), अने केवलि हता. (१). ते लोक-प्रदीप [जगत् ज्योति] पार्श्वनाथने केशि कुमार श्रमण नामे महायशस्वी शिष्य हता, जे ज्ञान, दर्शन, चारित्रना पारगामी (निपुण) हता. [२]. ते केशि-कुमार श्रुत अने अवधि ज्ञाने करीने सहित हता अने तेमने शिष्य वर्गनो म्होटो समुदाय हतो; तेओ गामो गाम विहार करतां एक समये श्रावस्ती नगरीने विषे आवी चढ्या.(३) ते श्रावस्ती नगरीना प्रदेशमा तिन्दुक नामे एक उद्यान छे; ते उद्यानना एक जीव रहित विभागमा तेमणे वास कर्यो. [४]. ते अवसरे श्री जिन धर्मना तीर्थंकर भगवान वीराजमान हता, तेओ सर्व लोकने विषे श्री वर्धमानना नामथी सुविख्यात हता.[५].

* तीर्थ चार छे. श्रावक, श्राविका, साधु अने साध्वी.

तस्स लोगप्पईवस्स आसिसिस्से महायसे । भगवगोयमोनाम विज्जाचरण पारगे ॥६॥ वारसगाविओवुध्धे सीससवस माउले । गामाणुगाम रीयते सेविसावथ्थीमागए ॥ ७ ॥ कोठ्ठग नामउज्जाण तमिनयर मंडले । फासुएमेज्जसथारे तथ्थवास मुवागए ॥८॥ केसीकुमार समणे गोयमेय महायसे । उभओवितथ्थविहरिंसु अल्लीणासुसमाहिया ॥ ९ ॥ उभओ सीससघाण संजयाण तवस्सिण । तथ्थचिंता समुप्पन्ना गुणवंताणताइण॥१०॥ केरिसोवाइमो धम्मो इमोधम्मो वकेरिसो । आयार धम प्पणिही इमावासावकेरिसी ॥ ११ ॥

ते लोक-प्रदीप १ महावीर भगवानने गौतम नामे महायशस्वी शिष्य हता; जे ज्ञान, दर्शन, चारित्रना पारगामी हता. (६). ते गौतम द्वादश अंगना जाण अने सवुद्ध हता; अने तेमने शिष्य वर्गनो म्होटो समुदाय हतो. तेओ पण गामो गाम विहार करतां श्रावस्ती नगरीने विषे आवी चढ्या.[७]. ते श्रावस्ती नगरीना प्रदेशमां कोष्ठक नामे एक उद्यान छे; ते उद्यानना जीव रहित एक भागमां तेमणे वास कर्यो. (८). केशि कुमार श्रमण अने यशस्वी गौतम बन्ने मन, वचन, कायानी गुप्तिथी रक्षातां, सावचेतीथी (समाधि युक्त रहीने) त्यां विचरवा लाग्या. [९]. बन्नेनो शिष्य-वर्ग जे संयत, तपस्वी, साधुना सर्वे गुणे करी सहित अने *सर्व जीव रक्षक* छे तेमने नीचे प्रमाणे विचार उपज्यो. (१०). 'आपणो धर्म साचो हशे के तेमनो धर्म साचो हशे ? (पार्श्वनो के महावीरनो), आपणो आचार विचार खरा हशे के तेमना ? [११].

१. Light of the world.   * आना बदले मो. जेकोबी 'आत्म-रक्षक' लखे छे.

चाउज्जामोयजो धम्मो जोइमो पंचसिक्खिउ। देसिउ वध्धमाणेणं पासेणय महामुणी ॥१२॥ अचेलओय जो धम्मो जो इमो संतरुत्तरो एक कज्ज पवन्नाणं विसेसे किंतु कारणं ॥ १३ ॥ अहसे तथ्थ सीसाणं विन्नाय पविय क्किय। समागमे कय मइ उभउ केसि गोयमा ॥ १४ ॥ गोयमो पडिरूवन्नू सीस संघ समाउलो । जिट्ठं कुलमवेक्खंतो तिंदुयं वण मागउ ॥ १५ ॥ केसीकुमार समणे गोयमं दिस्स मागयं । पडिरूवं पडिवत्तिं सम्मं पडिवज्जइ ॥ १६ ॥

महा मुनि श्री पार्श्वनाथ भगवाने मरुपेला धर्ममां *१चार महाव्रतनो स्वीकार करेलो छे, ज्यारे श्री वर्द्धमान भगवाने प्ररुपेला धर्ममां *१पंच महाव्रत स्वीकारेला छे. श्री महावीर भगवाने [साधुने] *२अचेल (वस्त्र रहित) रहेवानुं फरमान करेलुं छे; ज्यारे श्री पार्श्वनाथे *२अन्तरोत्तरं [उपरनुं अने अंदरनुं] वस्त्र राखवा फरमावेलुं छे. बन्ने एकज कार्यने विषे उद्यत होवा छतां आवो मत भेद शाथी उत्पन्न थयो हशे? [१२-१३]. पोताना शिष्योनो आवो अभिप्राय जाणी लइने केशि अने गौतम बन्नेए एक बीजाने मळवानो निश्चय कर्यो. (१४). विनयनुं स्वरुप विचारीने अने ज्येष्ट (वडा) कुळनुं मान साचवीने, गौतम पोताना शिष्य-वृंद सहित तिन्दुक वनने विषे आव्या. (१५) गौतम स्वामिने आवता जोइने केशि-कुमार श्रमणे तेमनुं योग्य सन्मान कर्युं. (१६).

*(१) श्री महावीर भगवाने प्ररुपेला पंच महाव्रत पैकी मैथुन-परिहार व्रत श्री पार्श्वनाथना चार महाव्रतमा नथी. परंतु 'परिग्रह-त्याग' व्रतमा तेनो समावेश थतो होवो जोइए. *(२) आने बदले संस्कृत टीकाकार एम लखे छे के—श्री महावीर भगवाने जीर्ण, श्वेत वस्त्र धारण करवानुं फरमावेलु छे, अने श्री पार्श्वनाथे विविध वस्त्र पहेरवा कहेलुं छे.

उ अ. पलालं फासुय तथ्थ पचमं कुस तणाणिय । गोयमस्स निसिज्जाए खिप्पं स पणामए॥१७॥ केसीकुमार समणे गोयमेय
२३ महायसे । उभओ निसन्ना सोहंति चद सूर समप्पभा ॥१८॥ समागया बहु तथ्थ पासडा कोउगा मिया । गिहथ्थाणं अणेगाउ साहस्सीउ समागया ॥ १९ ॥ देव दाणव गधव्वा जख्ख रख्खस्स किंनरा । अदिस्साणय भूयाण आसी
१८१ तथ्थ समागमो ॥२०॥ पुछ्छामि ते महाभाग केसी गोयम मब्बवी । तओ केसी बुवततु गोयमो इण मब्बवी॥२१॥ पुछ्छ भते जहिछ्छंते केसी गोयम मब्बवी । तओ केसी अणुन्नाए गोयम इण मब्बवी ॥२२॥ चाउ ज्जामोय जो धम्मो जो इमो पचसिख्खिओ । देसिओ वध्धमाणेण पासेणय महामुणी ॥ २३ ॥

केशि-कुमारे तरतज गौतमने बेसवा माटे *पाच प्रकारनु बीज रहित पलाल [घास] अने दर्भनु आसन हाजर कर्यु. [१७]. केशि-कुमार श्रमण अने यशस्वी गौतम बन्ने साथे साथे बेसवाथी चंद्र अने सूर्यना सरखी कान्तिथी शोभवा लाग्या. [१८]. आ कौतुक जोवाने त्यां घणा पाखंडी लोको अने हजारो ग्रहस्थो एकठा मळ्या. [१९]. देव, दानव, गधर्व, यक्ष, राक्षस, किन्नर अने अदृश्य रुपवाळां भूत व्यंतर पण त्यां आवी लाग्यां. [२०]. केशि-कुमार गौतमने कहे छे, "हे पवित्र पुरुष ! हु आपने काइक पूछवा इच्छुं छु." केशिना आवां वचन साभळीने गौतम कहे छे, "हे महाभाग! यथा रुचे प्रश्न करो." पछी गौतमनी आज्ञाथी केशि कुमार नीचे प्रमाणे पुछवा लाग्या. [२१-२२]. "महा मुनि श्री पार्श्वनाथे उपदेशेला धर्ममा चार महाव्रतनो स्वीकार करेलो छे, ज्यारे श्री वर्द्धमान भगवाने पंच महाव्रतनो उपदेश करेलो छे. (२३).

* साली, वीही, कोदव, रालग अने पांचमुं रन्नेतणा ए घासनी जातो छे.

चाउज्जामोयजो धम्मो जोइमो पंचसिक्खिउ। देसिउ वध्धमाणेणं पासेणय महामुणी ॥१२॥ अचेलओय जो धम्मो जो इमो संतरुत्तरो एक कज्जा पवन्नाणं विसेमे किंतु कारणं ॥ १३ ॥ अहसे तथ्थ सीसाणं विन्नाय पविय क्किय। समागमे कय मइ उभउ केसि गोयमा ॥ १४ ॥ गोयमो पडिरूवन्नू सीस सघ समाउलो। जिट्ठं कुलमवेक्खंतो तिंदुयं वण मागउ ॥ १५ ॥ केसीकुमार समणे गोयमं दिस्स मागयं। पडिरूवं पडिवत्तिं सम संपडिवज्जइ ॥ १६ ॥

महा मुनि श्री पार्श्वनाथ भगवाने प्ररुपेला धर्ममां *१चार महाव्रतनो स्वीकार करेलो छे, ज्यारे श्री वर्द्धमान भगवाने प्ररुपेला धर्ममां *१पंच महाव्रत स्वीकारेलां छे. श्री महावीर भगवाने [साधुने] *२अचेल (वस्त्र रहित) रहेवानुं फरमान करेलुं छे; ज्यारे श्री पार्श्वनाथे *२अन्तरोत्तरं [उपरनुं अने अंदरनुं] वस्त्र राखवा फरमावेलु छे. बन्ने एकज कार्यने विषे उद्यत होवा छता आवो मत भेद शाथी उत्पन्न थयो हशे? [१२-१३]. पोताना शिष्योनो आवो अभिप्राय जाणी लइने केशि अने गौतम बन्नेए एक बीजाने मळवानो निश्चय कर्यो. (१४). विनयनुं स्वरुप विचारीने अने ज्येष्ट (वडा) कुळनुं मान साचवीने, गौतम पोताना शिष्य-वृंद सहित तिन्दुक वनने विषे आव्या. (१५) गौतम स्वामिने आवता जोइने केशि-कुमार श्रमणे तेमनुं योग्य सन्मान कर्युं. (१६).

---

*(१) श्री महावीर भगवाने प्ररुपेलां पंच महाव्रत पैकी मैथुन-परिहार व्रत श्री पार्श्वनाथना चार महाव्रतमां नथी. परंतु 'परिग्रह-त्याग' व्रतमां तेनो समावेश थतो होवो जोइए. *(२) आने बदले संस्कृत टीकाकार एम लखे छे के—श्री महावीर भगवाने जीर्ण, श्वेत वस्त्र धारण करवानुं फरमावेलुं छे, अने श्री पार्श्वनाथे विविध वस्त्र पहेरवा कहेलु छे.

पलाल फासुय तथ्थ पचमं कुस तणाणिय । गोयमस्स निसिज्जाए खिप्पं स पणामए॥१७॥ केसीकुमार समंणे गोयमेय महायसे । उभओ निसन्ना सोहति चद सूर समप्पभा ॥१८॥ समागया ब्रहु न॰य पासडा कोउगा मिया । गिहथ्थाणं अणेगाउ साहस्सीउ समागया ॥ १९ ॥ देव दाणव गधव्वा जख्ख रख्खस्स किंनरा । अदिस्साणय भूयाण आसी तथ्थ समागमो ॥२०॥ पुछ्छामि ते महाभाग केसी गोयम मब्बवी । तओ केसीं बुवतंतु गोयमो इण मब्बवी॥२१॥ पुछ्छ भते जहिछ्छुते केसी गोयम मब्बवी । तओ केसी अणुन्नाए गोयमं इण मब्बवी ॥२२॥ चाउ ज्जामोय जो धम्मो जो इमो पचसिख्खिओ । देसिओ वध्धमाणेण पासेणय महामुणी ॥ २३ ॥

केशि-कुमारे तरतज गौतमने बेसवा माटे *पाच प्रकारनु बीज रहित पलाल [घास] अने दर्भनु आसन हाजर कर्यु. [१७]. केशि-कुमार श्रमण अने यशस्वी गौतम बन्ने साथे साथे बेसवाथी चंद्र अने सूर्यना सरखी कान्तिथी शोभवा लाग्या. [१८]. आ कौतुक जोवाने त्यां घणा पाखंडी लोको अने हजारो ग्रहस्थो एकठा मळ्या. [१९]. देव, दानव, गधर्व, यक्ष, राक्षस, किन्नर अने अदृश्य रुपवाळां भूत-व्यंतर पण त्यां आवी लाग्यां. [२०]. केशि-कुमार गौतमने कहे छे, "हे पवित्र पुरुष ! हु आपने काइक पूछवा इच्छु छु." केशिना आवां वचन साभळीने गौतम कहे छे, "हे महाभाग! यथा रुचे प्रश्न करो." पछी गौतमनी आज्ञाथी केशि कुमार नीचे प्रमाणे पूछवा लाग्या. [२१-२२]. "महा मुनि श्री पार्श्वनाथे उपदेशेला धर्ममा चार महाव्रतनो स्वीकार करेलो छे, ज्यारे श्री वर्द्धमान भगवाने पंच महाव्रतनो उपदेश करेलो छे. (२३).

---

* साली, वीही, कोद्रव, रालग अने पाचमुं रन्नेतणा ए पासनी जातो छे.

उ.अ. २३ एककज्ज पवन्नाणं विसेसे किंतुकारणं । धम्मे दुविहेमेहावी कहंविप्पच्चउनते ॥ २४ ॥ तउकेसिं बुवंतंतु गोयमोइण मब्बवी । पन्नासमिक्खए धम्मं तत्ततत्त विणिछ्छयं ॥ २५ ॥ पुरिमा उज्जुजडाउ वंकजड्डाय पछ्छिमा । मज्झिमा उज्जु पन्नाओ तेण धम्मे दुहा कउ ॥ २६ ॥ पुरिमाणं दुव्विसोझोओ चरिमाणं दुरणु पालए । कप्पो मज्झिमगाणंतु सुवि सुझो सुपालए ॥ २७ ॥ साहुगोयमपन्नाते छिन्नो मे संसओ इमे । अन्नोविसंसओ मझ तं मे कहसु गोयमा ॥ २८ ॥

१८४

"बन्ने एकज कार्यने विषे उद्यत होवा छतां आवो मत भेद शाथी उत्पन्न थयो हशे ? हे मेधाविन ! आवो द्वी गुण [वे मकारनो] धर्म जोइने आपना मनमा काइ संदेह नथी उपजतो ? " (२४). केशि-कुमारना आवां वचन सांभळीने गौतम कहेछे, " बुद्धि वडे धर्मनुं रहस्य पारखी शकाय छे अने बुद्धि वडेज जीवादि तत्वनो निश्चय करी शकाय छे. [२५]. " मथम तीर्थकरना समयनां मनुष्यो सरळ मकृतिना अने जड बुद्धिनां हतां; छेल्ला तीर्थकरना समयना जीव वक्र अने जड बुद्धिना हता; अने ते वेनी वच्चेना समयना जीव सरळ अने पंडित हता. तेथी धर्म द्वी गुणो [बे मकारनो] भाखेलो छे. [२६]. " मथम तीर्थकरना समयना साधुओने धर्म समजवो दोहिलो जणातो हतो; छेल्ला तीर्थकरना समयना साधुओने ते पाळवो दोहिलो लागतो हतो ; पण ते वेनी वचेना समयना साधुओने धर्म समजवो अने पाळवो ए बन्ने सरळ लागता हतां." [२७]. ए साभळीने केशि कुमार कहे छे, " हे गौतम ! आप मज्ञावंत (बुद्धिशाळी) छो ; आपे मारो संशय दूर कर्यो छे. पण हे गौतम ! मने बीजो एक संशय उपजे छे तेनो आप उत्तर आपो. (२८).

अचेलउय जो धम्मो जो इमो सतरूत्तरो। देसिउ वध्धमाणेण पासेणय महामुणी ॥ २९ ॥ एककज्ज पवन्नाण विसेसे किंतु कारण। लिगे दुविहे मेहावी कह विप्पच्चओ न ते ॥३०॥ केसिं एव बुवाणतु गोयमो इण मव्ववी। विन्नाणेण समागम्म धम्म साहण मिछ्छिय ॥ ३१ ॥ पच्चयथ्थच लोगस्स नाणाविह विगप्पण। जत्तथ्थ गहणथ्थच लोगे लिंगप्पउयण ॥३२॥ अह भवे पइन्नाओ मोख्खस झूय साहणे। नाणच दसण चेव चारित्त चेव निछ्छिय ॥३३॥ साहु गोयम पन्नाते छिन्नो मे ससओ इमो। अन्नोवि ससउ मझ त मे कहसु गोयमा ॥ ३४ ॥

" श्री वर्द्धमान भगवाने *अचेल [वस्त्र-रहित] धर्मनो उपदेश करेलो छे, ज्यारे महा मुनि श्री पार्श्वनाथे* अन्तरोत्तर (उपरनु अने अदरनु) वस्त्र पहेरवा फरमान करेलुं छे बन्ने एकज कार्यने विषे उद्यत होवा छता आवो मत भेद शाथी उत्पन्न थयो हशे? हे मेधाविन! आवो द्वी गुण धर्म जोइने आपना मनमा काइ सदेह नथी उपजतो?" [२९ ३०]. केशि-कुमारना आवा वचन साभळीने गौतम कहे छे, " तीर्थकरोए पोताना केवल ज्ञान वडे शु करवु उचित छे ते विचारीने धर्मना साधनो नक्की करेला छे." (३१). " साधुओना नाना प्रकारना बाह्य लक्षणो [चिन्हो] लोको तेमने ओळखी शके तेटला माटे दाखल करवामा आवेला छे, [1]सयमना निर्वाह अर्थे अने ज्ञान ग्रहणने अर्थे भिन्न भिन्न वेष योजायेला छे. [३२]. " परतु हे केशि-कुमार! श्री पार्श्वनाथ अने श्री वर्द्धमान भगवाननी एवी आज्ञा छे के ज्ञान, दर्शन अने चारित्र एज मोक्षना साधन रुप छे, बाह्य लक्षणो मुक्तिना साधन नथी." (३३). ए साभळीने केशि-कुमार कहेछे, " हे गौतम! वगेरे गाथा २८ प्रमाणे. [३४].

* जुओ गाथा १२-१३नी फुट नोट. १. Religious life.

एककज्जं पवन्नाणं विसेसे किंतुकारणं । धम्मे दुविहेमेहावी कहंविप्पच्चउनते ॥ २४ ॥ तउकेसिं बुवंतंतु गोयमोइण मब्बवी । पन्नासमिख्खए धम्मं तत्ततत्त विणिछ्छयं ॥ २५ ॥ पुरिमा उज्जुजडाउ वंकजड्डाय पछ्छिमा । मज्झिमा उज्जु पन्नाओ तेण धम्मे दुहा कउ ॥ २६ ॥ पुरिमाणं दुव्विसोझोओ चरिमाणं दुरणु पालए । कप्पो मझिमगाणंतु सुवि सुझो सुपालए ॥ २७ ॥ साहुगोयमपन्नाते छिन्नो मे संसओ इमे । अन्नोविसंसओ मझं तं मे कहसु गोयमा ॥ २८ ॥

" वन्ने एकज कार्यने विषे उद्यत होवा छता आवो मत भेद शाथी उत्पन्न थयो हशे ? हे मेधाविन ! आवो द्वी गुण [बे मकारनो] धर्म जोइने आपना मनमा काइ सदेह नथी उपजतो ? " (२४). केशि-कुमारनां आवा वचन सांभळीने गौतम कहेछे, " बुद्धि वडे धर्मनुं रहस्य पारखी शकाय छे अने बुद्धि-वडेज जीवादि तत्वनो निश्चय करी शकाय छे. [२५]. " प्रथम तीर्थकरना समयनां मनुष्यो सरळ मकृतिना अने जड बुद्धिना हता; छेल्ला तीर्थकरना समयना जीव वक्र अने जड बुद्धिना हता; अने ते बेनी वच्चेना समयना जीव सरळ अने पंडित हता. तेथी धर्म द्वी गुणो [बे प्रकारनो] भाखेलो छे. [२६]. " प्रथम तीर्थकरना समयना साधुओने धर्म समजवो दोहिलो जणातो हतो; छेल्ला तीर्थकरना समयना साधुओने ते पाळवो दोहिलो लागतो हतो ; पण ते बेनी वच्चेना समयना साधुओने धर्म समजवो अने पाळवो ए बन्ने सरळ लागतां हता." [२७]. ए सांभळीने केशि कुमार कहे छे, " हे गौतम ! आप प्रज्ञावत (बुद्धिशाळी) छो ; आपे मारो संशय दूर कर्यो छे. पण हे गौतम ! मने बीजो एक संशय उपजे छे तेनो आप उत्तर आपो. (२८).

तेपासे सव्वसो छित्ता निहतूण मुवायउ । मुक्कपासो लहुभूओ विहरामि अहंमुणी ॥ ४१ ॥ पासाय इइकेवुत्ता केसी गोयम मव्ववी । तओकेसिं वुवंततु गोयमो इणमव्ववी ॥ ४२ ॥ रागदोसादयो तिव्वा नेहपासा भयकरा । तेछिंदित्तु जहानाय विहरामि जहक्कम ॥४३॥ साहु गोयमपन्नाते छिन्नोमे ससओइमो । अन्नोवि ससउ मज्झ तमेकहसु गोयमा ॥ ४४ ॥ अतोहियय संभूया लया चिठई गोयमा । फलेइ विसभक्खीण साउ उद्धरिया कह ॥ ४५ ॥ तलय सव्वसोछित्ता उद्धरित्ता समूलिय । विहरामि जहानाय मुक्कोमि विसभक्खण ॥४६॥ लयाय इइकावुत्ता केसी गोयम मव्ववी । केसिमेव वुवततु गोयमोइण मव्ववी ॥ ४७ ॥

गौतम कहे छे, " हे मुनिश्वर ! सर्व पाश छेदीने अने शुद्धि पूर्वक उपायो* वडे ते थकी मुक्त थइने हु सुखेथी विचरु छु. " (४१) केशि कुमार कहे छे, " हे गौतम ! आप पाश [बन्धन] कोने कहो छो ? " केशिनु आवु वचन सांभळीने गौतम कहे छे:– (४२). " राग, द्वेषादि अति तिव्र पाश छे; अने [पुत्र कलत्रादिना] स्नेह पाश अति भयकर बधन छे; तेने यथा न्याय१ छेदीने हु साध्वाचारे२ विचरु छु " [४३] ए सांभळीने केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम ! वगेरे गाथा २८ प्रमाणे [४४] " हे गौतम ! अतर-हृदयने विषे एक लता उत्पन्न थाय छे जेने विषमय फळ लागे छे. ए लता आपे शीरीते उखाडी नाखी छे ? " [४५]. गौतम कहे छे, " ए लताने में मूळथी छेदी नाखीछे अने तेने समूळि उखाडी नाखी छे अने ए रीते तेना विषरूप फळथी मुक्त थइने हु विचरु छु. " (४६). केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम ! ए लताने आप शु नाम आपो छो ? " केशिनु आवु वचन सांभळीने गौतम कहे छे :– [४७].

---

* By the right means १-Regularly २ The Rules of conduct

अणेगाण सहस्साण मझे चिट्ठसि गोयमा तेय ते अभि गच्छंति कहते निज्जिया तुमे ॥ ३५ ॥ एगे जिए जिया पन्च पन्च जिए जिया दस्स । दसहाओ जिणित्ताण सव्व सत्तू जिणामिहं ॥ ३६ ॥ सत्तूय इइ के वुत्ते केसी गोयम मब्बवी । तउ केसिं बुवतत्तु गोयमोइणमब्बवी ॥३७॥ एगप्पा अज्जिए सत्तू कसाया इंदियाणिय । तेजिणी त्ताजहानाय विहरामि अहमुणी ॥३८॥ माहुगोयमपन्नाते छिन्नोमे ससओ इमो । अन्नोवि ससउ मझ तंमे कहसु गोयमे ॥३९॥ दीसंति बहवेलोए पास बध्धा सरिरीणो । मुक्कपासो लहुभूओ कहंतं विहरसी मुणी ॥४०॥

" हे गौतम ! आप हजारो शत्रुओनी वच्चे उभा छो, अने ते शत्रुओ आपनी सन्मुख धसी आवे छे, तेने आप शी रीते जीती शकता छो ? [३५].* गौतम कहेछे, " एकने जीतवाथी पांचने जीती शकाय छे, अने पाचने जीतवाथी दशने जीती शकाय छे; अने आ दश गणी जीतथी सर्व शत्रुओने जीती शकाय छे. " [३६]. ए सांभळीने केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम ! आप शत्रु कोने कहो छो ? " केशि-कुमारनुं आवुं वचन सांभळीने गौतम कहे छे :– [३७]. " एक आत्मा जे अजित शत्रु गणाय छे तेने जीतवाथी चार कषायने (क्रोध, मान, माया अने लोभने) जीती शकाय छे; अने तेने जीतवाथी पांच इन्द्रिओने वश करी शकाय छे ए रीते दश शत्रुओ [१ आत्मा+४ कषाय+५ इन्द्रिओ]ने जीतवाथी सर्व शत्रुओ जीताय छे, अने तेमने यथा न्याय जीतीने हु सुखे विचरु छुं. (३८). ए सांभळीने केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम ! वगेरे गाथा २८ प्रमाणे. (३९). " हे मुनिश्वर ! आ लोकने विषे अनेक जीव पाशथी बंधायेला नजरे आवे छे. आप ते बंधन तोडीने शीरीते मुक्त थया छो ते मने कहो. " [४०].

*श्री पार्श्वनाथ अने महावीर भगवानना अनुयायीओ वच्चे चार अने पांच महाव्रत तथा साधुओना बाह्याचार संबंधी मत भेदनुं आगली गाथाओमां समाधान कर्या पछी, आ गाथाथी जिन धर्मना सामान्य सिद्धांतोनु शिष्य श्रोता वर्गनी जाण अने उपदेशने माटे निरुपण करेलु छे.

तेपासे सव्वसो छित्ता निहतूण मुवायउ । मुक्कपासो लहुभूओ विहरामि अहंमुणी ॥ ४१ ॥ पागाय इइकेवुत्ता केसी गोयम मब्बवी । तओकेसिं बुवततु गोयमो इणमब्बवी ॥ ४२ ॥ रागदोसादयो तिव्वा नेहपासा भयकरा । तेछिंदित्तु जहानाय विहरामि जहक्कम ॥४३॥ साहु गोयमपन्नाते छिन्नोमे संसओइमो । अन्नोवि ससउ मज्झ तमेकहसु गोयमा ॥ ४४ ॥ अतोहियय संभूया लया चिठई गोयमा । फलेइ विसभक्खीण साउ उद्धरिया कह ॥ ४५ ॥ तलय सव्वसोछित्ता-उद्धरित्ता समूलिय । विहरामि जहानाय मुक्कोमि विसभक्खण ॥४६॥ लयाय इइकावुत्ता केसी गोयम मब्बवी । केसिमेव बुवततु गोयमोइण मब्बवी ॥ ४७ ॥

गौतम कहे छे, " हे मुनिश्वर ! सर्व पाश छेदीने अने बुद्धि पूर्वक उपायो* वडे ते थकी मुक्त थइने हु सुखेथी विचरु छु. " (४१) केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम ! आप पाश [बन्धन] कोने कहो छो ? " केशिनु आवु वचन साभळीने गौतम कहे छेः– (४२). " राग, द्वेषादि अति तिव्र पाश छे; अने [पुत्र कलत्रादिना] स्नेह पाश अति भयकर बधन छे, तेने यथा न्याय १ छेदीने हु साध्वाचारे २ विचरु छु " [४३] ए साभळीने केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम ! वगेरे गाथा २८ प्रमाणे [४४]. " हे गौतम ! अतर-हृदयने विषे एक लता उत्पन्न थाय छे जेने विषमय फळ लागे छे. ए लता आपे शीरीते उखाडी नाखी छे ? " [४५]. गौतम कहे छे, " ए लताने में मूळथी छेदी नाखीछे अने तेने समूळि उखाडी नाखी छे अने ए रीते तेना विषरूप फळथी मुक्त थइने हु विचरु छु. " (४६). केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम ! ए लताने आप शु नाम आपो छो ? " केशिनु आवु वचन साभळीने गौतम कहे छे :– [४७].

---

*' By the right means १ Regularly २ The Rules of conduct

भवतह्लालया वुत्ता भीमाभीम फलोदया । तमुद्धित्तु जहानायं विहरामि जहक्कम ॥४८॥ साहुगोयमपन्नाते छिन्नोमे ससउ इमो । अन्नोवि ससउ मझ्झ तमेकहसुगोयमा ॥ ४९ ॥ सपज्जलियाघोरा अग्गीचिठ्ठइगोयमा । जेडहंति सरीरथा कहंविझ्झा वियातुभे ॥५०॥ महामेहपसुत्ताओ गिझ वारिजलुत्तम । सिंचामि सययंतेउ सित्तानोवडहंतिमे॥५१॥ अग्गीय इइकेयुत्ते केसीगोयम मब्बवी । तउकेसिं बुवंततु गोयमो इणमब्बवी ॥ ५२ ॥ करसाया अग्गिणोवुत्ता सुयसील तवोजल । सुयधाराभिहयासता भिन्नानय डहंतिमे ॥ ५३ ॥ साहुगोयमपन्नाते छिन्नोमे ससउ इमो । अन्नोवि ससओ मझ्झ तंमेकहसुगोयमा ॥ ५४ ॥

" भव तृष्णा*रुपी ए भयंकर लता छे अने दुष्ट कर्मना विपाकरुपी भयंकर फळ तेने लागेला छे. ए लताने मूळमाथी छेदीने हुं सुख समाधिमा विचरु छु." (४८). ए साभळीने केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम! वगेरे गाथा २८ प्रमाणे.[४९]. "हे गौतम! जाज्वल्यमान [१]घोर [२]अग्नि संसारमा सळगी रह्यो छे, जे शरीरने दहेछे; ते अग्निने आप शीरीते बुझावी शक्या छो?"(५०). गौतम कहे छे, " महामेघथी उत्पन्न थयेली नदीना उत्तम जळवडे हुं ए अग्निने निरंतर सींचुं छुं, तेथी ते अग्नि मने बाळी शकतो नथी. [५१]. केशि-कुमार कहे छे, " ए अग्नि आप कोने कहो छो ? " केशिनुं आवु वचन साभळीने गौतम कहे छे :–(५२), " चार कषाय अग्नि रुप छे, अने ज्ञान, शील तथा तप जळ रुप छे. ज्ञान रुपी जळ धाराए सींचायेलो अग्नि ओलाइ जाय छे तेथी मने बाळी शकतो नथी. " (५३). ए सांभळीने केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम वगेरे गाथा २८ प्रमाणे. [५४].

* Love of existence. १ Frightful. २. मूळ पाठमा अग्नि बहु वचनमा छे. चार कषायो तरीके ते होवाथी बहु वचन वापरेल जणाय छे.

अय साहासिउभीमो दुट्ठस्सो परिधावइ । जंसिगोयम आरूढो कह तेण नहिरसी ॥ ५५ ॥ पहावत निगिण्हामि सुयरस्सी समाहिया । नमे गच्छइ उम्मगा मग्गच पडिवज्जई ॥५६॥ अस्सेय इइकेवुत्ते केसीगोयम मब्बवी । तउ केसिं बुवततु गोयमोइण मब्बवी ॥५७॥ मणोसाहसिउ भीमो दुट्ठसो परिधावई । त मम्म तुनिगिण्हामि धम्मसिक्खाय कथग ॥५८॥ साहुगोयमपन्नाते छिन्नोमे ससउ इमो । अन्नोवि ससउ मज्ज तमे कहसुगोयमा ॥५९॥ कुप्पहा बहवेलोए जेहिनासति जतुणो । अद्धाणे कहवट्ठतो त न नाससिगोयमा ॥ ६० ॥ जेयमग्गेण गच्छंति जेय उम्मग्ग पट्ठिया । तेमव्वे वेइयामज्ज तो न नास्सा मिहंमुणी ॥६१॥

" हे गौतम ! * अति साहसिक, भयकर अने दुष्ट अश्व उन्मार्गने विषे दोडे छे; एवा अश्व उपर आरुढ थयेल होवा छता आपने ते उन्मार्गने विषे केम घसडी जतो नथी ? " (५५). गौतम कहे छे, " ज्ञानरुपी लगामथी हुं ते अश्वने उन्मार्गने विषे जतो अटकावुं छु तेथी ते मने आडे मार्गे लइ जइ शक्तो नथी, पण ते सन्मार्गे चाले छे. " [५६]. केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम ! ए अश्व आप कोने कहो छो ? " केशिनुं आवुं वचन साभळीने गौतम कहेछे :- (५७). " मन ए अति साहसिक, भयकर अने दुष्ट अश्व छे. ए मनरुपी अश्वने हु धर्म-शिक्षा [रुपी लगाम] वडे वश १ करुं छुं, तेथी ते [कथकना जेवो] जातवत अश्व बनी रहे छे. " (५८). ए सांभळीने केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम ! वगेरे गाथा २८ प्रमाणे. (५९). " हे गौतम ! आ लोकने विषे कुमार्गो घणा छे, जे मनुष्योने आडे मार्गे दोरवी जाय छे, एम छता आप उन्मार्गे न दोरवाइ जता सन्मार्गने विषे शीरीते रही शको छो ? " [६०]. गौतम कहे छे, " हे महामुनि ! जेओ सन्मार्गे (जिन-मार्गे) चाले छे अने जेओ उन्मार्गे (जिन मार्गथी विपरीत रीते] प्रवर्तेछे त सर्वेने हुं सारी पेठे जाणु छुं; तेथी हु उन्मार्गे दोरवाइ जतो नथी. " (६१).

---

* Unruly-वश न-थइ शके एवो. १. I govern it by the discipline of the Law.

मग्गेय इइकेवुत्तं केसीगोयम मब्बवी । तउकेसिं वुवंतंतु गोयमो इणमब्बवी ॥ ६२ ॥ कुप्पवयण पासंडी सब्वे उम्मग्ग पट्ठिया । सम्मगंतु जिणक्खायं एसमग्गेहि उत्तमे ॥ ६३ ॥ साहु गोयम पन्नाते छिन्नोमे संसउइमो । अन्नोवि संसउ मझं तमेकहसु गोयमा ॥६४॥ महाउदगवेगेणं वुझमाणाण पाणिणं । सरणंगइं पइठ्ठच दीवंकमणरो मुणी ॥६५॥ अत्थि एगो महादीवो वारिमझे महालउ । महाउदग वेगस्स गइतत्थ नविझइ ॥ ६६ ॥ दीवेय इइ केवुत्ते केसीगोयम मब्बवी । तओकेसिं वुवंतंतु गोयमोइण मब्बवी ॥६७॥ जरामरण वेगेण वुझमाणाण पाणिण । धम्मोदीवो पइठ्ठाय गइसरण मुत्तमं ॥ ६८ ॥

केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम ! आप मार्ग [सन्मार्ग अने उन्मार्ग] कोने कहो छो ? " केशिनुं आवुं वचन सांभळीने गौतम कहे छे :-[६२]. " कुमार्गीओ अने *पाखंडीओ (कपिलादि मतानुवर्त्तिओ) उन्मार्गने विषे स्थापित थयेला छे, अने जिनोक्त मार्ग ए सन्मार्ग छे अने ते मुक्तिनो दाता छे. " [६३]. ए साभळीने केशि कुमार कहे छे, " हे गौतम ! वगेरे गाथा २८ प्रमाणे. (६४). " हे गौतम ! महा जळ प्रवाहे घसडाता प्राणीओना निवारण अर्थे कोइ आधार, शरणुं अथवा दृढ स्थानक छे? एवो कोइ द्वीप आपना जाणवामां छे ? " [६५]. गौतम कहे छे, " समुद्रनी वच्चे एक मौढ अने विस्तीर्ण द्वीप छे; महा जळ प्रवाहनी रेल ते द्वीप उपर फरी वळी शक्ती नथी. "१ (६६) केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम ! आप ए द्वीप कोने कहो छो ? " केशिनुं आवुं वचन साभळीने गौतम कहे छेः-(६७). " जरा अने मरण ए जळ प्रवाह छे अने तेमा प्राणीओ घसडाय छे. ए जळनी वच्चे धर्मरुपी महाद्वीप छे; अने ते दृढ स्थानक, आधार अने उत्तम शरणु छे. " [६८].

---

* Heterodox 1. Is not inundated by the great flood of water.

साहुगोयमपन्नाते छिन्नोमे ससउ इमो । अन्नोवि ससउ मज्झ तमेकहमु गोयमा ॥ ६९ ॥ अन्नवसि महोहसि नावावि परिधावइ । जसिगोयममारूढो कहपार गमिस्ससि ॥ ७० ॥ ज्जाउ आसीविणीणावा नसा पारस्सगामिणी । जानिरास्सा विणीनावा साउपारस्सगामिणी ॥ ७१ ॥ नावाय इइकावुत्ता केसीगोयम मब्बवी । तओ केसिं बुवततु गोयमो इणमब्बवी ॥७२॥ सरीरमाहुनाविति जीवो वुच्चइ नाविउ । ससारो अन्नवोवुत्तो जतरति महेसिणो ॥ ७३ ॥ साहुगोयमपन्नाते छिन्नोमे ससउ इमो । अन्नोवि ससउ मज्झ तमेकहसुगोयमा ॥ ७४ ॥ अधयारे तमे घोरे चिठ्ठति पाणिणो बहु । को कारिस्सइ उज्जोय सव्वलोगमि पाणिण ॥ ७५ ॥

ए साभळीने केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम! . वगेरे गाथा २८ प्रमाणे. [६९]. " हे गौतम! महासागरना महा प्रवाहोमां एक नाव परिभ्रमण* करे छे, ते नाव उपर आरुढ थइने आप समुद्रनो पार शीरीते पामी शकशो ? " अथवा-सामे तीरे शीरीते पहोंची शकशो?) (७०). गौतम कहे छे, " जे नाव श्राविणी [गाबडावाळी छिद्रवाळी] छे ते पार पहोंचशे नहि; पण जे नाव निश्राविणी (छिद्र रहित) छे ते समुद्रने सामे तीर पहोंची शकशे. [७१]. केशि कुमार कहे छे, " हे गौतम ! आप ए नाव कोने कहो छो ? " केशिनुं आवु वचन साभळीने गौतम कहे छे :– [७२]. " शरीर नाव रुप छे, जीव नाविक रुप छे; अने १ ससार [भव भ्रमण] समुद्ररूप छे, ते ससार समुद्रने महर्षिओज तरी शके छे. " (७३). ए साभळीने केशि कुमार कहे छे, " हे गौतम !

वगेरे-गाथा २८ प्रमाणे (७४). " हे गौतम! आ घोर अने भयोत्पादक अधकारने विषे अनेक प्राणीओ वसेछे, ए सकळ लोकनां सर्व प्राणीओ माटे प्रकाश कोण करशे ? " (७५).

---

* Drifts. १. Circle of Births.

मग्गेय इइकेवुत्ते केसीगोयम मब्बवी । तउकेसिं बुवंततु गोयमो इणमब्बवी ॥ ६२ ॥ कुप्पवयण पासंडी सव्वे उम्मग्ग पट्ठिया । सम्मगंतु जिणख्खायं एसमग्गेहि उत्तमे ॥ ६३ ॥ साहु गोयम पन्नाते छिन्नोमे संसउइमो । अन्नोवि संसउ मज्झ तमेकहसु गोयमा ॥६४॥ महाउदगवेगेणं वुज्झमाणाण पाणिणं । सरणगइं पइट्ठच दीवकमणरो मुणी ॥६५॥ अथ्थि एगो महादीवो वारिमज्झे महालउ । महाउदग वेगस्स गइतथ्थ नविज्जइ ॥ ६६ ॥ दीवेय इइ केवुत्ते केसीगोयम मब्बवी । तओकेसिं बुवंततु गोयमोइण मब्बवी ॥६७॥ जरामरण वेगेण वुज्झमाणाण पाणिण । धम्मोदीवो पइट्ठाय गइसरण मुत्तम ॥ ६८ ॥

केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम! आप मार्ग [सन्मार्ग अने उन्मार्ग] कोने कहो छो ? " केशिनु आवु वचन सांभळीने गौतम कहे छे :-[६२]. " कुमार्गीओ अने *पाखंडीओ (कपिलादि मतानुवर्त्तिओ) उन्मार्गने विषे स्थापित थयेला छे, अने जिनोक्त मार्ग ए सन्मार्ग छे अने ते मुक्तिनो दाता छे. " [६३]. ए साभळीने केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम! वगेरे गाथा २८ प्रमाणे. (६४). " हे गौतम! महा जळ प्रवाहे घसडाता प्राणीओना निवारण अर्थे कोइ आधार, शरणुं अथवा दृढ स्थानक छे? एवो कोइ द्वीप आपना जाणवामां छे? " [६५]. गौतम कहे छे, " समुद्रनी वच्चे एक प्रौढ अने विस्तीर्ण द्वीप छे; महा जळ प्रवाहनी रेल ते द्वीप उपर फरी वळी शक्ती नथी. "[1] (६६) केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम! आप ए द्वीप कोने कहो छो? " केशिनु आवुं वचन साभळीने गौतम कहे छे:-(६७). " जरा अने मरण ए जळ प्रवाह छे अने तेमा प्राणीओ घसडाय छे. ए जळनी वचे धर्मरुपी महाद्वीप छे; अने ते दृढ स्थानक, आधार अने उत्तम शरणुं छे. " [६८].

---

* Heterodox १ Is not inundated by the great flood of water.

साहुगोयमपन्नाते छिन्नोमे ससउ इमो । अन्नोवि ससउ मज्झ तमेकहमु गोयमा ॥ ६९ ॥ अन्नवसि महोहसि नावावि परिधावइ । जसिगोयममारूढो कहपार गमिस्ससि ॥ ७० ॥ ज्जाउ आसीविणीणावा नसा पारस्सगामिणी । जानिरास्सा विणीनावा साउपारस्सगामिणी ॥ ७१ ॥ नावाय इइकावुत्ता केसीगोयम मव्ववी । तओ केसिं वुवततु गोयमो इणमव्ववी ॥७२॥ सरीरमाहुनाविरि जीवो वुच्चइ नाविउ । ससारो अन्नवोवुत्तो जतरति महेसिणो ॥ ७३ ॥ साहुगोयमपन्नाते छिन्नोमे संसउ इमो । अन्नोवि ससउ मज्झ तमेकहसुगोयमा ॥ ७४ ॥ अधयारे तमे घोरे चिट्ठति पाणिणो वहु । को कारिसइ उज्जोय सव्वलोगमि पाणिण ॥ ७५ ॥

ए साभळीने केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम ! .वगेरे गाथा २८ प्रमाणे. [६९]. " हे गौतम ! महासागरना महा प्रवाहोमां एक नाव परिभ्रमण* करे छे, ते नाव उपर आरुढ थइने आप समुद्रनो पार शीरीते पामी शकशो ? " अथवा-सामे तीरे शीरीते पहोंची शकशो?) (७०). गौतम कहे छे, " जे नाव श्राविणी [गाबडावाळी छिद्रवाळी] छे ते पार पहोंचशे नहि, पण जे नाव निश्राविणी (छिद्र रहित) छे ते समुद्रने सामे तीर पहोंची शकशे. [७१]. केशि कुमार कहे छे, " हे गौतम ! आप ए नाव कोने कहो छो ? " केशिनु आवुं वचन साभळीने गौतम कहे छे :– [७२]. " शरीर नाव रुप छे, जीव नाविक रुप छे, अने [1] ससार [भव भ्रमण] समुद्ररूप छे, ते ससार समुद्रने महर्षिओज तरी शके छे. " (७३). ए साभळीने केशि कुमार कहे छे, " हे गौतम ! वगेरे-गाथा २८ प्रमाणे. (७४). " हे गौतम ! आ घोर अने भयोत्पादक अधकारने विषे अनेक प्राणीओ रसेछे; ए सकळ लोकनां सर्व प्राणीओ माटे प्रकाश कोण करशे ? " (७५).

---

* Drifts, १. Circle of Births.

मग्गेय इइकेवुत्ते केसीगोयम मब्ब्वी । तउकेसिं बुवंतंतु गोयमो इणमब्बवी ॥ ६२ ॥ कुप्पवयण पासंडी सव्वे उम्मग्ग पट्ठिया । सम्मगंतु जिणख्खायं एसमग्गेहि उत्तमे ॥ ६३ ॥ साहु गोयम पन्नाते छिन्नोमे संसउइमो । अन्नोवि संसउ मझं तमेकहसु गोयमा ॥६४॥ महाउदगवेगेण बुझमाणाण पाणिणं । सरणंगइं पइट्ठंच दीवंकमणसे मुणी ॥६५॥ अथ्यि एगो महादीवो वारिमझे महालउ । महाउदग वेगस्स गइतथ्थ नविझइ ॥ ६६ ॥ दीवेय इइ केवुत्ते केसीगोयम मब्बवी । तओकेसिं बुवंतंतु गोयमोइण मब्बवी ॥६७॥ जरामरण वेगेणं बुझमाणाण पाणिण । धम्मोदीवो पइट्ठाय गइसरण मुत्तम ॥ ६८ ॥

केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम! आप मार्ग [सन्मार्ग अने उन्मार्ग] कोने कहो छो ? " केशिनुं आवुं वचन सांभळीने गौतम कहे छे :-[६२]. " कुमार्गीओ अने *पाखंडीओ (कपिलादि मतानुवर्त्तिओ) उन्मार्गने विषे स्थापित थयेला छे, अने जिनोक्त मार्ग ए सन्मार्ग छे अने ते मुक्तिनो दाता छे. " [६३]. ए सांभळीने केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम! वगेरे गाथा २८ प्रमाणे. (६४). " हे गौतम! महा जळ प्रवाहे घसडाता प्राणीओना निवारण अर्थे कोइ आधार, शरणुं अथवा दृढ स्थानक छे? एवो कोइ द्वीप आपना जाणवामां छे? " [६५]. गौतम कहे छे, " समुद्रनी वच्चे एक मोटो अने विस्तीर्ण द्वीप छे; महा जळ प्रवाहनी रेल ते द्वीप उपर फरी वळी शकती नथी. "१ (६६) केशि-कुमार कहे छे, " हे गौतम! आप ए द्वीप कोने कहो छो ? " केशिनुं आवुं वचन सांभळीने गौतम कहे छेः-(६७). " जरा अने मरण ए जळ प्रवाह छे अने तेमां प्राणीओ घसडाय छे. ए जळनी वच्चे धर्मरूपी महाद्वीप छे; अने ते दृढ स्थानक, आधार अने उत्तम शरणुं छे. " [६८].

* Heterodox १, Is not inundated by the great flood of water

निव्वाणंति अबाहंति सिद्धीलोगग्गमेवय । खेमं सिवं अणाबाहं जंचरंति महेसिणो ॥ ८३ ॥ तठाणं सासयंवास लोगग्गमि दुरारुह । जसंपत्ता नसोयंति भवोहंत करामुणी ॥८४॥ साहुगोयमपन्नाते छिन्नोमे संसउ इमो । नमो ते ससया.तीत सव्वसुत्तम महोदही ॥ ८५ ॥ एवतु संसए छिन्ने केसी घोर परक्कमे । अभिवादित्ता सिरसा गोयमतु महायस ॥ ८६ ॥ पंच महव्वय धम्मं पडिवज्जइ भावउ । पुरिमस्स पच्छिमंमि मग्गे तत्थ सुहावहे ॥ ८७ ॥

"ए स्थानकनुं नाम निर्वाण अथवा व्याधि रहित स्थळ, अथवा सिद्धि स्थानक छे; अने ते लोकना अग्र भागे [नजर आगळ] छे; ते स्थानक क्षेम, शिव अने अनाबाध (निर्भय, कल्याणकारी अने उपद्रव रहित) छे, अने त्यां महर्षिओज पहोंची शके छे. (८३) "हे केशि मुनि! ते स्थानक शाश्वतुं* छे; ते सौनी नजर आगळ छे, पण प्राप्त थवु दुर्लभ छे; जे मुनिश्वरो त्यां पहोंच्या छे ते शोचथी मुक्त थया छे अने संसार-प्रवाहनो १ [भव-भ्रमणनो] अत आणी शक्या छे." (८४). ए सांभळीने केशि-कुमार कहे छे, "हे गौतम! आप प्रज्ञावत छो; आपे मारो संदेह दूर कर्यो छे. आप सदेह रहित अने सर्व सूत्रना महोदधिरूप [पारगामी] होवाथी हु आपने नमस्कार करु छु." (८५). गौतमे पोताना सदेह टाळ्या तेथी [कर्म टाळवामां] घोर पराक्रमी केशि-कुमार श्रमणे महायशस्वी गौतमने मस्तक नमावीने अभिवदन कर्युं. (८६). ते तिन्दुक उद्यानने विषे श्री केशि कुमार श्रमणे, पहेला अने छेल्ला तीर्थंकर (श्री आदीश्वर अने श्री महावीर) भगवाने प्ररुपेला पच महाव्रतरूप धर्मनो, पूर्ण श्रद्धाथी अंगीकार कर्यो. [८७].

* Eternal १ Stream of existence.

केसी गोयमउ निच्च तंमि आसि समागमे । सुय सील समुक्कारिसो महृ थ्थथ्थ विणिच्छुउ॥८८॥तोसिया परिसासव्वा समग्गंतु समुवट्ठिया । संथुया ते पसीयंतु भगव केसि गोयमो त्तिबेमि ॥ ८९ ॥

॥ इति केसि गोयम नाम झयणं तेविसमं सम्मत्तं ॥ २३ ॥

अध्ययन २४. समिति (पांच समिति अने त्रण गुप्ति).

अठ्ठ प्पवयण मायाओ समिई गुत्ती तहेवय । पंचेवय समिइओ तओ गुत्तीओ आहिया ॥१॥ इरिया भासे सणादाणे उच्चारे समिईइय । मण गुत्ती वय गुत्ती कायगुत्तीय अठ्ठमा ॥ २ ॥

ते-नगराने विषे केशि अने गौतमनो समागम थवाथी ज्ञान अने चारित्र [शील]नो उत्कर्ष थयो * अने तत्वादि अगत्यना विषयोनो निर्णय थयो [८८]. सकळ सभा अति प्रसन्न थइ अने सम्यक मार्गने विषे उपस्थित(सावधान)थइ. अने सौ कोइ केशि अने गौतमनी प्रशंसा करवा लाग्या के 'ते ज्ञानवंत भगवंतो आपणा उपर प्रसन्न रहो.'(८९).

* त्रेवीसमुं अध्ययन संपूर्ण. *

❀ अध्ययन २४. ❀

श्री जिन शासनने विषे समिति अने गुप्ति मळीने अष्ट प्रवचन कह्यां छे. तेमा पांच समिति अने त्रण गुप्ति छे. (१). ए पांच समिति नीचे प्रमाणे छे :–(१) इर्या-समिति, (२) भाषा-समिति, (३) एषणा-समिति, (४) आदान-समिति, अने (५) उच्चार-समिति. त्रण गुप्ति नीचे प्रमाणे छे :–[१] मनो-गुप्ति, [२] वचन-गुप्ति अने [३] काय गुप्ति. (२).

* Brought-to-eminence

एयाउ अट्ठ समिईओ समासेण वियाहिया । दुवालसंगं जिणखायं मायं जथ्थउपवयणं ॥३॥ आलवणेण कालेण मग्गेण जयणायय । चउ कारण परिसुद्ध सजए ईरिय रिए ॥४॥ तथ्था लवण नाण दसण चरण तहा । कालेय दिवसे वुत्ते मग्गे उप्पह वज्जिए ॥५॥ दव्वओ खित्तओ चेव कालओ भावओ तहा । जयणा चउव्विहा वुत्ता त मे कित्तयउ सुणे ॥६॥ दव्वओ चख्खुसापेहे जुगमित्त चखितओ । कालओ जाव रीएज्जा उवउत्तेय भावओ ॥७॥ इदियथ्थे विवजित्ता सझाय चेव पचहा । तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे । उवउत्ते रिय रिएं ॥ ८ ॥

ए रीते आठ समिति सक्षेपे वर्णवी छे, जेमा श्री तीर्थकर भगवानोना भाखेला द्वादश अग अने जिन धर्मना सर्व सिद्धातोनो समावेश थइ जायछे. [३]. १ इर्या -समिति :-संयमधारी साधुए (१) आलवन, (२) काळ, [३] मार्ग अने (४) यत्ना (जतना, जीव दया) ए चार प्रकारे शुद्ध रहीने विचरवु जोइए [४]. आलवन एटले ज्ञान, दर्शन अने चारित्रने अनुसरवुं ते, काळ एटले दिवसना भागमा [रात्रिए नहि] विहार करवो, अने मार्ग एटले उन्मार्गनो त्याग [५]. यत्ना चार प्रकारनी छे :-[१] द्रव्य -यत्ना, (२) क्षेत्र-यत्ना, [३] काळ यत्ना, अने [४] भाव यत्ना ते चारे हु समजावु छुं ते साभळो. [६] द्रव्य-यत्ना एटले चक्षुवडे जीवादि द्रव्यनु ध्यान राखीने, क्षेत्र यत्ना एटले युग मार्ग [चार हाथ जमीन] तपासीने, काळ-यत्ना एटल जेटलो काळ विचरवु पडे ते दरमियान, अने भाव यत्ना एटले सावधान रहीने, साधुए विचरवु (७). इन्द्रिओना विषयो त्यागीने अने पाच प्रकारे स्वाध्याय अगीकार करीने ज साधु काय चापल्य रहित सावधानपणे विचरे छे, ते इर्या समिति बराबर पाळी शके छे. [८].

कोहे माणेय मायाय लोभेय उवउत्तया । हासे भय मोहरिए विगहासु तहेवय ॥९॥ एयाइ अठ ठाणाइ परिवज्जितु सजए । असावज्ज मिय काले भासं भासेज्ज पन्नव ॥ १० ॥ गवेसणाय गहणेय परिभोगे सणायजा । आहारो वहि सिज्जाए एए तिन्नि विसोहिए ॥ ११ ॥ उग्गमु प्पायणं पढमे बीए सोहिज्ज एसण । परिभोगमि चउक्कंच

२. भाषा-समिति–क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, भय वाचालपणु * अने विकथा (निंदा, वडाइ) ए आठ [पाप] स्थानको प्रज्ञावंत साधुए त्यागवा जोइए अने योग्य काळे (जरुरना प्रसगे) निर्दोष संक्षिप्त भाषा बोलवी जोइए. (९-१०). ३. एषणा-समिति–आहार, वस्त्र-पात्रादि अने शय्या-उपाश्रय ए त्रण प्रकारनी वस्तुओनी गवेषणा [विशुद्धतानी तपास], ग्रहण-एषणा(स्वीकार) अने परिभोग-एषणा (उपभोग)ना दोष साधुए त्यागवा जोइए.[११]. यत्नवान साधुए प्रथममां एटले गवेषणामा उद्गम[आपनार] अने उत्पादन [लेनार]ना (सोळ×सोळ)दोष टाळवा जोइए; बीजी ग्रहण-एषणामा एटले आहारादिनो स्वीकार करवामा रहेला[दश×]

* मोहरिए ए आठमा व्रतनो त्रीजो अतिचार छे, जेम तेम बोल्या करवु. × आपनार अने लेनारना सोळ सोळ दोष नीचे मुजब छे. १–साधु निमित्ते, छकायनो आरंभ करी निपजावेलो आहार वोहोरावे तो 'आधाकर्मी' दोष. २–साधु निमित्ते वधारे तैयार करावेल आहार वहोरावे तो 'उद्देशिक' दोष. ३–वहोरावना खातर वेळासर तैयार करेलो आहार आपे ते 'पुइकर्म' दोष [पूतिक]. ४–शुद्ध अने अशुद्ध भळी गयेल आहार आपे ते 'मिश्र' दोष. ५–साधु माटे केटलोक वखत सुधी खास राखी मूकेल आहार आपे ते 'ठवणा' [स्थापना] दोष. ६–साधुने आव्या जाणी वस्तु आगळ पाछळ मूके अथवा गाममा साधुनी हाजरीनो लाभ लेवा विलंब छता विवाहादिक आरंभे ते 'पाहुडीआ' [प्राभृतिका] दोष. ७–घरमा साधुने आववानी सगवड खातर के अज-वाळा खातर, छकायनी हिंसा करे ते, 'पाउर' (पादुःकरण) दोष. ८–साधुने माटेज पैसा खरचीने लीधेली चीज वहोराववी ते 'क्रत गड' [क्रीत] दोष. ९–साधुने माटेज उधार उछिनी लीधेल चीज आपवी ते 'पामिच्च' (प्रामित्य) दोष. १०–साधुने माटेज अदल

विसोहिज्जा जयं जई ॥ १२ ॥ उहो वहो वग्गहियं भंडगं दुविहं मुणी । गिह्लंतो निख्खवंतोय पउंजिज्जा इमंविहि ॥ १३ ॥ चख्खुसापडिलेहित्ता पमज्जिज्ज जयंजई । आइएनिख्खिविज्जात्रा दुहओविसमिओसया ॥ १४ ॥ उच्चारं पासवण खेल सिंघाण जल्लिय । आहार उवहिदेह अन्नवानि तहाविह ॥१५॥

दोष टाळवा जोइए; अने त्रीजी परिभोग-एषणा एटले मळेली वस्तुओनो उपभोग करवामा रहेला(चार[1])दोष टाळवा जोइए [१२].

४ आदान समिति–साधुए सामुदायिक [रजोहरणादि] अने उपग्रहिक (दंडादि) बन्ने प्रकारनी वस्तुओ लेता-मूकता नीचेनी विधिए वर्त्तवुं जोइए. (१३). यत्नवान साधुए प्रत्येक वस्तु प्रथम आंखवती तपासवी, पछीथी तेनुं पडिलेहन करवुं (पूजवु) अने त्यारपछी आदान निक्षेपणा समिति युक्त [द्रव्ये अने भावे समित रहीने] तेने लेवी अथवा मूकवी. [१४]. ५ उच्चार-समितिः- मळ, मूत्र, श्लेष्म [बळखा] नासिकानो मळ, देह-मळ, आहार उपधि [एठवाड] अने देह [संथारा समये] एवा प्रकारनी अन्य वस्तुओ नीचेनी विधिए परठवी. (१५.)

---

१ सोळ उद्गम दोष, सोळ उत्पादन दोष, दश ग्रहण-एषणा दोष अने चार परिभोग-एषणा दोष ए प्रमाणे कुल ४६ दोषछे. ते रहित आहार-पाणी आदि साधुए व्होरवा जोइए अने तेनो उपयोग करवो जोइए २ When he is about to die.

×=बदल करेली चीज आपवी ते 'परियट्ट' [परावृत] दोष. ११–साधुने माटेज सामा लावी आपे ते'अभिहड'[अभ्याहृत] दोष. १२- साधुने माटेज ताळा, दाटा उघाडी चीज आपे तो 'अभिन्न' दोष. १३–साधुने माटेज मेडी के भोयरामाथी लावी आपे तो 'मालोहड'मालाहृत दोष. १४ साधुने माटेज कोइना हाथमाथी झुंटावेलो आहार आपे ते'अछिज'(आछीद्य)दोष. १५-साधुने माटेज,मही यारी मशीयारी वस्तुमाथी भागीआनी रजा विना चीज वहोरावे ते 'अणिसिठ' दोष, १६–साधुने माटेज, आधण वीगेरे उमेरेल होय तो ते 'अझीयर' [अध्यवपुर] दोष.

उ.अ २५ जहाचंद गहाईया चिठ्ठंति पंजलिउडा । वंदमाणा नमंसंता उत्तमं मणहारिणो ॥ १७ ॥ अजाणग्ग जन्नवाइ वि-
ज्जामाहण सपया । मूटा सज्झाय तवसा भास छन्नाइवग्गिणो ॥ १८ ॥ जोलोए बंभणो वुत्तो अग्गीवा महिउ
२०४ जहा । सयाकुसल सदिठ्ठ तवयं बूममाहण ॥१९॥ जोन सज्जइ आगंतु पव्वयंतो न सोयई । रमइ अज्जवयणंमि
तवयं बूममाहणं ॥ २० ॥ जाय रूव जहामठ्ठं निध्धंत मलपावग । रागदोसभयातीतं तवय बूममाहणं ॥ २१ ॥

"जेम ग्रहो, नक्षत्रो अने तारा, चंद्रनी आगळ हाथ जोडीने उभा रहे छे अने नमस्कार करतां थका तेनी सेवा करेछे, तेम मनोहर देवताओ (इन्द्रादि) श्री ऋषभदेव भगवानने विनय पूर्वक वादीने तेमनी स्तुति करे छे. (१७). तत्वना ज्ञान रहित, यज्ञवादी ब्राह्मणो यज्ञना जाणपणानो डोळ करेछे, पण तेओ अग्नि विद्या अने ब्राह्मण सम्पदाथी अज्ञान होय छे; अने अग्नि जेम राखमां ढंकाइ रहे छे तेम तेओ स्वाध्याय अने तपमां ढंकायेला (बहारथी शान्त पण अंतस्मां क्रोध, मान, माया, लोभादिथी दग्ध) रहे छे. [१८]. "जेने लोको ब्राह्मण कहेछे अने अग्निनी पेठे पूजे छे ते खरो ब्राह्मण नथी. पण जेने कुशळ [विद्वान] पुरुषो ब्राह्मण कहे छे तेने अमे खरो ब्राह्मण कहीए छीए. (१९). "जे दीक्षा लीधा पछी संसारीनो संग करतो नथी, जे साधु थया बाद [1]स्थानान्तर थवाथी शोच करतो नथी अने जे [2]आर्य (तीर्थकरना) वचनथी संतोप पामे छे, तेने अमे खरो ब्राह्मण कहीए छीए. (२०). जे राग, द्वेप अने भय रहित होय अने जे अग्निमा शुद्ध करेला अने ओप चढावेला सुवर्णनी माफक पाप मळथी रहित होय तेने अमे खरो ब्राह्मण कहीए छीए. (२१).

---

१. संस्कृत टीकाकार आनो एवो अर्थ करे छे के "स्वजन मळवाथी जे तेने भेटी पडतो नथी अथवा तो तेमनाथी विखुटो पडती वखते शोच करतो नथी." २. Noble words

तवस्सिय किसदंतं अवचिय मससोणियं । सुव्वयं पत्तनिव्वाणं तंवयं बूममाहणं ॥ २२ ॥ तसेपाणे वियाणित्ता सगहेणयथावेरे । जोन हिसइतिविहेण तवय बूममाहणं ॥ २३ ॥ कोहावा जइवाहासा लोहावा जइवाभया । मुस नवयइजोउ तवय बूममाहण ॥ २४ ॥ चित्तमत मचित्तवा अप्पवा जइवा बहु । न गिण्हइ अदत्ताजो तवय बूममाहण ॥ २५ ॥ दिव्व माणुरसतिरिछ्छ जोनसेवइ मेहुणं । मणसा कायवक्केण तवय बूममाहण ॥ २६ ॥ जहा-पउम जलेजाय नोवलिप्पइ वारिणा । एव अलित्त कामेहिं तवय बूममाहण ॥ २७ ॥

" कृश (दुर्बळ) अने जितेन्द्रिय तपस्वी जेणे पोतानु मास अने लोही शोपी नाख्या होय, जेणे कषाय (क्रोध, मान, माया, लोभ) अग्निनुं शमन करेलुं होय, अने जेने निर्वाण प्राप्त थयु होय तेने अमे खरो ब्राह्मण कहीए छीए. [२२]. " जे त्रस अने स्थावर (हालता चालतां अने स्थिर) सर्व जीवने बराबर जाणे छे, अने तेनो त्रणे प्रकारे (मन, वचन, कायाये) विनाश करतो नथी तेने अमे खरो ब्राह्मण कहीए छीए. [२३]. " जे क्रोधथी, हास्यथी, (मश्करीमा पण) लोभथी अथवा भयथी मृषावाद बोलतो नथी तेने अमे खरो ब्राह्मण कहीए छीए. [२४]. " जे अदत्तादान लेतो नथी–पछी ते सचेत होय के अचेत होय, अथवा थोडु होय के घणु होय–तेने अमे खरो ब्राह्मण कहीए छीए. [२५]. "जे देव, मनुष्य अथवा तिर्यंचनी साथे मन, वचन, कायाये करीने मैथुन सेवतो[1] नथी, तेने अमे खरो ब्राह्मण कहीए छीए. [२६] " जेम कमल पाणीमा उगे छे त्ता तेनाथी अलिप्त (भींजाया व-गरनुं रहे छे, तेम जे काम–भोगथी अलिप्त रहे छे तेने अमे खरो ब्राह्मण कहीए छीए. [२७].

१. Does not carnally love.

उ.अ. २५

२०६

अलोलुयं मुहाजीविं अणगारं अकिंचणं । असंसत्तं गिहत्थेसु तंवयं बूममाहणं ॥ २८ ॥ जहित्ता पुव्वसंजोगं नाइ संगेय बंधवे । जोनसज्जइ एएसू तंवयं बूममाहणं ॥ २९ ॥ पसूबंधा सव्ववेया जट्ठंच पावकम्मुणा । न तं तायंति दुस्सीलं कम्माणि बलवंतिहं ॥ ३० ॥ नवि मुंडिएण समणो नओं कारेण बंभणो । न मुणी रन्नवासेण न कुस चीरेण तावसो ॥३१॥ समयाए समणो होइ बंभचेरेण बंभणो । नाणेणए मुणी होइ तवेण होइ तावसो ॥ ३२ ॥

"जे (आहारादिने विषे) लोलुप रहेतो नथी, जे *अजाण्याने त्यांथी आहारादि लेइने लावीने संयमनो निर्वाह करे छे, "जे परिग्रह रहित होय छे, अने जे ग्रहस्थनो परिचय सेवतो नथी तेने अमे खरो ब्राह्मण कहीए छीए. [२८]. "जेणे पोतानो (माता पितादि साथेनो) पूर्व संयोग छांडी दीधो छे, जेणे ज्ञाति अने बान्धवोनो संग छोडी दीधो छे अने जे काम भोगने विषे तत्पर रहेतो नथी, तेने अमे खरो ब्राह्मण कहीए छीए.[२९]. "हे विजयघोष! वेद पशु वध करी यज्ञ करवानुं कहे छे पण ते पापना कारण रुप छे; तेओ दुःशीलनुं(पाप कर्म करनारनुं)रक्षण करी शकता नथी(हीणाचारी पुरुषने नर्के पडता रोकी शकता नथी) कारणके करेलां कर्म अति बळवान छे. (अर्थात-कर्मथी बचावनार कोइ नथी).[३०] "माथे मुंडन करावाथी कांइ श्रमण थवातुं नथी ओंकार (ॐ) भणवाथी ब्राह्मण थवातुं नथी, अरण्यमां वास करवाथी कांइ मुनि थवातुं नथी अने दर्भ (नुं आसन) अने वलकल धारण करवाथी कांइ तापस (तपस्वी) थवातुं नथी [३१] "(परंतु) समता भाव राखे ते श्रमण, ब्रह्मचर्य सेवे ते ब्राह्मण, ज्ञान प्राप्त करे ते मुनि अने तपश्चर्या करे ते तापस कहेवाय छे. (३२).

*प्रो. जेकोबी एवो अर्थ करेछे के Who lives unknown जे अज्ञात रहिने पोतानुं जीवन गाळे छे. मूळ शब्द 'मुहाजीवी' छे. संस्कृत 'मुधाजीविनं', दीपिका टीकामां लखेलुं छे के 'अज्ञात गृहेषु आहारादि गृहीत्वा आजीविका कुर्वाण संयम जीवितव्य

कम्मुणा बभणो होइ कम्मुणा होइ खत्तिओ । वइरसो कम्मुणा होइ सुद्दो हवइ कम्मुणा ॥ ३३ ॥ एए पाउ करे बुद्धे जहि होइ रि.णायओ । सव्व कम्म विणिमुक्क तवयं बूममाहणं ॥३४॥ एव गुण समाउत्ता जे भवंति दिउत्तमा । ते समथ्थासमुध्धतु पर अप्पाण मेवय ॥३५॥ एव तु ससए छिन्ने विजयघोसेय माहणो । समुदाय तउ तत्त जयघोस महामुणि ॥ ३६ ॥ तुठ्ठोय विजयघोसो इण मुदाहु कयजली । माहणत्त जहाभूय सुठ्ठु मे उव दासिय ॥३७॥ तुझे जइया जन्नाण तुझे वेय विउविऊ । जोइसग विऊतुझे तुझे धम्माण पारगा ॥ ३८ ॥ तुझे समथ्था समुध्धतुं पर अप्पाण मेवय । त मणुग्गह करेअम्ह भिख्खेण भिख्खु उत्तमा ॥३९॥

" कर्म प्रमाणेज ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य अने शुद्र कहेवाय छे. [अर्थात–ब्राह्मणादि कुळमा जन्म थवाथी नहि, पण जेना जेवा लक्षण अथवा कृत्य होय तेवो ते गणावो जोइए १]." [३३]. श्री तीर्थंकर भगवाने उपर जे गुणो वर्णव्या छे ते सेववा थकी स्नातक (केवळी) थवाय छे, जे सर्व कर्मथी मुक्त थयेलो होय तेने अमे खरो ब्राह्मण कहीए छीए." [३४]. " जे उपरना सर्व गुणे करीने युक्त होय ते द्विजोत्तम [उत्तम ब्राह्मण] कहेवाय छे. अने ते पोताना तेमज अन्यना आत्माने तारवाने समर्थ थाय छे. " [३५]. आ प्रमाणे पोताना संशयो दूर थवाथी विजयघोष ब्राह्मणे जयघोष मुनिनो सत्कार कर्यो अने तेमनो उपदेश स्वीकार्यो.२ [३६] विजयघोष ब्राह्मण संतुष्ट थयो तेथी ते हाथ जोडीने कहेवा लाग्यो के, " आपे ब्राह्मणत्वनु खरु स्वरुप मने समजाव्युं छे." [३७]. " हे महामुनि ! आप [कर्म] यज्ञना करणहार छो, वेदज्ञ पुरुषोमा आप सौथी श्रेष्ठ छो, आप ज्योतिष शास्त्रना जाण छो अने आप धर्मना पारगामी छो." [३८]. आप पोते संसार समुद्र तरवाने अने अन्यने तारवाने समर्थ छो; हे भिक्षूत्तम ! कृपा करीने अमारे त्याथी भिक्षा ग्रहण करो. " [३९].

१.कूळनु अभिमान राखी अनर्थ सेवनाराओए कृपाळु भगवनना आ शब्दो हृदयमां कोतरी राखवा जोइए. २. Assented.

न कज्जं मज्झ भिक्खेणं खिप्पं निक्खमसूदिया । माभमिहि भयावत्तो घोरे संसार सागरे ॥४०॥ उवलेवो होइ भोगेसु अभोगी नोव लिप्पइ । भोगी भमइ ससारे अभोगी विप्पमुच्चइ ॥४१॥ उल्लो सुक्कोय दो छूढा गोलया मट्टियामया । दोवि आवडिया कुडे जोउल्लो सोतथ्थ लगइ ॥४२॥ एवं लग्गंति दुम्मेहा जे नरा कामलालसा । विरत्ताउ नलग्गंति जहा सुक्केउ गोलए ॥ ४३ ॥ एवं सो विजयघोसे जयघोसस्स अंतिए । अणगारस्स निक्खंतो धम्मंसुच्चा अणुत्तर ॥ ४४ ॥ खवित्ता पुव्व कम्माइं सजमेणतवेणय । जयघोस विजयघोसा सिध्धिपत्ता अणुत्तरं त्तिबेमि ॥ ४५ ॥

॥ इति जन्नइज्जंनाम झयण पचविसमं समत्तं ॥ २५ ॥

ए साभळीने मुनि कहेछे, " भिक्षानी मने जरुर नथी. पण हे द्विज ! तु शीघ्र दीक्षा ग्रहण कर; अने घोर संसार सागरने विषे परिभ्रमण करतो अटक, कारण के तेनु [सप्तभयरूपी] वमळ अति भयानक छे. [४०]. " काम भोगने विषे लेप*रहेलो छे; जेओ भोग भोगवता नथी तेओ ए लेपथी खरडाता नथी; अने जेओ भोग भोगवे छे तेओने संसारमा भ्रमण करवुं पडे छे; जेओ अभोगी छे तेओ संसारथी मुक्त थाय छे. (४१). "एक लीलो (भीनो) अने बीजो सूको एम माटीना बे गोळा लइने भींत साथे अफाळीए तो लीलो गोळो भींतने चोंटी रहे छे (अने सूको खरी पडे छे).[४२]. " एवी रीते दुष्ट बुद्धिना अने काम लालसावाळा मनुष्यो संसारमां [कर्मने] चोंटी रहे छे, पण जेओ काम भोगथी विरक्त छे तेओ माटीना सूका गोळानी पेठे चोंटी रहेता नथी." (४३) आ प्रमाणे जयघोष मुनिनी पासेथी सर्वोत्तम धर्म श्रवण करीने विजयघोष ब्राह्मणे दीक्षा ग्रहण करी. (४४) जयघोष अने विजयघोष बन्ने सत्तरभेदे सयम अने बार भेदे तप आदरीने, पोतानां पूर्व कर्मनो क्षय करीने, सर्वोत्तम सिद्ध गतिने प्राप्त थया. (४५).

* पचीसमुं अध्ययन संपूर्ण. *

---

* Glue.

अध्ययन २६. सामाचारी (शुद्ध आचार).

सामायारिं पवक्खामि सव्व दुक्ख विमोक्खणिं । जचरित्ताण निग्गथा तिन्नामसारसागर ॥ १ ॥ पटमा आवसिया नाम विइया होइ निसीहिया । आपुच्छणाय तइया चओत्थी पडिपुच्छणा ॥ २ ॥ पंचमा छंदणानामं इच्छाकारोय छट्ठओ । सत्तमो मिछकारोय तहक्कारोय अट्ठमो ॥ ३ ॥ अब्भुट्ठाणचनवम दसमाउवसपया । एसादसं गामाहुणं सामायारी पवेइया ॥ ४ ॥ गमणे आवास्सिय कुज्जा ठाणेकुज्जा निसीहिय । आपुच्छणा सयकरणे परकरणे पडि

○ अध्ययन २६ ○

सामाचारी एटले शुद्ध करणी अथवा जे क्रिया सर्व दुःखथी मूकावे छे, तेनु हु (सुधर्मा स्वामी) वर्णन करुं छुं, जे अंगीकार करवाथी निग्रथो ससार-सागर तरी गया छे [१], श्री तीर्थकर भगवाने साधुने माटे दश प्रकारनी सामाचारी कही छे :—(१) आवश्यकी, (२) नैषेधिकी, [३] आपृच्छना, (४) प्रतिपृच्छना, [५] छन्दना, [६] इच्छाकार, [७] मिथ्याकार, (८)तथाकार, (९) अभ्युत्थान, अने [१०] उपसपद् [२-४]. काइ आवश्यक (जरुरना) कार्य निमित्ते उपाश्रय थकी बहार जता आवश्यकीनी, स्थान कमा प्रवेश करता वखते नैषेधिकीनी, पोताने करवाना कार्यमा गुरुनी आज्ञा मागवी तेमा आपृच्छनानी, अन्यना कार्य कारणे गुरुनी आज्ञा लेवामा प्रतिपृच्छनानी, पोतानी पासे [अन्न, पाणी, आदि] जे वस्तुओ होय ते लेवाने अन्य साधुओने निमत्रण करवामा छन्दनानी, पोतानु अथवा पोताने सोंपायेलु काम बीजानी इच्छानुसार सोंपवामा इच्छाकारनी, काइ अयोग्य कार्य थइ जाय तो 'मिच्छामी दुक्कड' देवामा मिथ्याकारनी, गुरु काइ कार्य बतावे ते 'तथास्तु' कही अंगीकार करवामा तथाकारनी, गुरु, आ-

न कज्जं मज्झ भिक्खेणं खिप्पं निक्खमसूदिया । मामभिहिं भयावत्ते घोरे संसार सागरे ॥४०॥ उवलेवो होइ भोगेसु अभोगी नोव लिप्पइ । भोगी भमइ संसारे अभोगी विप्पमुच्चइ ॥४१॥ उल्लो सुक्कोय दो छूढा गोलया मट्टियामया । दोवि आवडिया कुडे जोउल्लो सोतथ्थ लगइ ॥४२॥ एवं लग्गंति दुम्मेहा जे नरा कामलालसा । विरत्ताउ नलग्गंति जहा सुक्केउ गोलए ॥ ४३ ॥ एव सो विजयघोसे जयघोसस्स अतिए । अणगारस्स निक्खंतो धम्मंसुच्चा अणुत्तर ॥ ४४ ॥ खविता पुव्व कम्माइ सजमेणतवेणय । जयघोस विजयघोसा सिध्धिपत्ता अणुत्तरं त्तिबेमि ॥ ४५ ॥

॥ इति जन्नइज्जंनाम झयण पचविसमं समत्त ॥ २५ ॥

ए साभळीने मुनि कहेछे, " भिक्षानी मने जरुर नथी. पण हे द्विज ! तु शीघ्र दीक्षा ग्रहण कर; अने घोर संसार सागरने विषे परिभ्रमण करतो अटक, कारण के तेनुं [सप्तभयरुपी] वमळ अति भयानक छे. [४०]. " काम भोगने विषे लेप*रहेलो छे; जेओ भोग भोगवता नथी तेओ ए लेपथी खरडाता नथी; अने जेओ भोग भोगवे छे तेओने संसारमां भ्रमण करवुं पडे छे; जेओ अभोगी छे तेओ संसारथी मुक्त थाय छे. (४१). "एक लीलो (भीनो) अने बीजो सूको एम माटीना वे गोळा लइने भींत साथे अफाळीए तो लीलो गोळो भीतने चोंटी रहे छे (अने सूको खरी पडे छे).[४२]. " एवी रीते दुष्ट बुद्धिना अने काम लालसावाळा मनुष्यो संसारमां [कर्मने] चोंटी रहे छे, पण जेओ काम भोगथी विरक्त छे तेओ माटीना सूका गोळानी पेठे चोंटी रहेता नथी. " (४३) आ प्रमाणे जयघोष मुनिनी पासेथी सर्वोत्तम धर्म श्रवण करीने विजयघोष ब्राह्मणे दीक्षा ग्रहण करी. (४४). जयघोष अने विजयघोष बन्ने सत्तरभेदे संयम अने चार भेदे तप आदरीने, पोताना पूर्व कर्मनो क्षय करीने, सर्वोत्तम सिद्ध गतिने प्राप्त थया. (४५).

* पचीसमुं अध्ययन संपूर्ण. *

---

* Glue.

पढमं पोरिसि सज्झाय बिथियाझाण झियायइ । तइयाए भिक्खायरियं चउथी भुज्जोवि सज्झायं ॥ १२ ॥ आसाढेमासे दुपया पोसेमासे चओप्पया । चित्तासोएसु मासेसु तिपया हवइ पोरिसी ॥ १३ ॥

प्रथम पौरुपीने विषे स्वाध्याय करवु, बीजी पौरुपीने विषे ध्यान करवु, त्रीजी पौरुपीने विषे भिक्षाटनने विषे जवुं अने चोथी पौरुपीने विषे पाछा स्वाध्याय (स्थंडिल, पतिलेखनादि)मा मन लगाडवु. [१२]. आषाढ मासमां रात्रिनी पौरुपीने बे पाया [द्विपाद] होय छे, पौष मासमा चार अने चैत्र तथा आश्विन मासमा त्रण पाया होय छे. (१३).*

*पौरुपी एटले पहर अने पहर एटले रात्रि या दिवसनो चोथो भाग. अहोरात्रिना आठ भाग गोठव्याछे. चार दिवसना अने चार रात्रिना एटले सामान्य रीते एक पहर त्रण कलाकनो गणी शकाय. विपुवकाळमां एटले चैत्र अने आश्विन मासमा ज्यारे रात्रि अने दिवस सरखा होय छे त्यारे दरेक पौरुपीना त्रण पाया-पग गाथामा कह्या छे, ते उपरथी सिद्ध थाय छे के प्रत्येक पायो एक कलाकनो होवो जोइए. आषाढ मासमा रात्रिनी पौरुपीने बे पाया कह्या छे ते उपरथी जणाय छे के सूत्र रचाया ते वखते आषाढ मासमा दिवस १६ कलाकनो अने रात्रि ८ कलाकनी होवी जोइए. अने पोष मासमा चार पाया कह्या छे तेथी ते मासमा दिवस ८ कलाकनो अने रात्रि १६ कलाकनी होवी जोइए. वैदिक ज्योतिषमा पण आवीज गणत्री छे. हाल्ना समयमां विपुवकाळ [Equinox] ता. २१ मार्च अने ता. २२ सप्टेम्बरना अरसामा आवे छे जे वखते दिवस रात्रि सरखा होय छे. लांबामा लांबो दिवस (Summer solstice] ता. २१ जुन अने टुंकामा टुंको दिवस [Winter solstice] ता २१ डिसेम्बरना अरसामा आवे छे. हाल्ना अने गाथामा दर्शावेल समयनी गणतरीथी सूत्रो रचायाना काळनु निर्णय थाय होय तो तेम करवानु काम ज्योतिष अने गणित शास्त्री विद्वानोनु छे.

पुच्छणा ॥ ५ ॥ छंदणा दव्व जाएणं इच्छाकारोय सारणे । मिच्छाकारोय निंदाए तहक्कारो पडिस्सुए ॥६॥ अब्भुट्ठाण गुरुपूया अच्छण उवसंपया । एव दुपंचसंजुत्ता सामायारी पवेइया ॥ ७ ॥ पुव्विल्लंमि चउब्भाए आइच्चंमि समुट्ठिए । भंडय पडिलेहित्ता वंदित्ताय तओगुरु ॥ ८ ॥ पुच्छिज्जा पंजलिउडो किंकायव्वं मएइह । इच्छं निओइउंभंते वेयावच्चे वसज्झाए ॥ ९ ॥ वेयावच्चे निउत्तेण कायव्व मगिलायउ । सज्झाएवा निउत्तेण सव्वदुक्ख विमोक्खणे ॥ १० ॥ दिवसस्स चउरोभाए कुज्जाभिक्खू वियक्खणे । तउ उत्तरगुणे कुज्जा दिणभागेसु चउसूवि ॥ ११ ॥

थीदिनी विनय पूर्वक सेवा करवामां अभ्युत्थाननी अने ज्ञानादि मेळववाने माटे अन्य आचार्योनी पासे जवामां उपसंपद् सामाचारीनी जरुर पडे छे. आ रीते सामाचारीना द्विपंच [दश] बोल श्री तीर्थंकर भगवाने वर्णव्या छे. [५-७] सूर्योदय पछीना पहेला प्रहरना प्रथम भागमां[एटले प्रत्येक प्रहरना चार सरखा भाग पाडी, तेना पहेला चोथा भागमां]पात्रादि वस्तुओ तपासीने तेनुं पडिलेहन करवुं. (पूजवी); अने पछी गुरुने वंदन करवुं. [८]. त्यारपछी हाथ जोडीने गुरुने पूछवुं के, " हे पूज्य ! शी आज्ञा छे? हे भन्ते! काइ कार्य [वैयावच्च]ने विषे अथवा तो स्वाध्यायने विषे मने कामे लगाडो. " [९]. गुरु काइ कार्य करवानो आदेश दे, तो ते कार्य ग्लानि रहित करवुं, अथवा जो *पापने निर्मूळ करनार* [अथवा दुःखथी मूकावनार] स्वाध्यायमां रोकावानी आज्ञा आपे तो तेम करवुं. [१०]. क्रिया-कुशळ साधुए दिवसना चार सरखा भाग [प्रहर-पौरुषी] पाडीने प्रत्येक [1] पौरुषीमां तेने योग्य उत्तर गुण [कर्त्तव्य कर्म] आदरवा. [११].

---

* आने बदले प्रो. जेकोबी एम अर्थ करे छे के सुख दुःखनो विचार कर्या सिवाय स्वाध्यायमां रोकावुं. पण ते भुले छे 'सव्व दुक्ख विमोक्खणं ' ए शब्दो स्वाध्याय-सज्झायना विशेषण रुपे छे. १. The fourth part of a day or night

पढमं पोरिसि सज्झायं बियियाझाणं झियायइ । तइयाए भिक्खायरियं चउथी भुज्जोवि सज्झायं ॥ १२ ॥ आसाढेमासे दुपया पोसेमासे चओप्पया । चित्तासोएसु मासेसु तिपया हवइ पोरिसी ॥ १३ ॥

प्रथम पौरुषीने विषे स्वाध्याय करवु, बीजी पौरुषीने विषे ध्यान करवु, त्रीजी पौरुषीने विषे भिक्षाचर्याने विषे जवु अने चोथी पौरुषीने विषे पाछा स्वाध्याय (स्थंडिल,प्रतिलेखनादि)मा मन लगाडवु [१२]. आषाढ मासमा रात्रिनी पौरुषीने बे पाया [द्विपाद] होय छे, पौष मासमा चार अने चैत्र तथा आश्विन मासमा त्रण पाया होय छे. (१३).*

---

*पौरुषी एटले पहर अने प्रहर एटले रात्रि या दिवसनो चोथो भाग. अहोरात्रिना आठ भाग योजेलाछे. चार दिवसना अने चार रात्रिना एटले सामान्य रीते एक प्रहर त्रण कलाकनो गणी शकाय. विषुवकाळमां एटले चैत्र अने आश्विन मासमा ज्यारे रात्रि अने दिवस सरखा होय छे त्यारे दरेक पौरुषीना त्रण पाया-पग गाथामा कह्या छे, ते उपरथी सिद्ध थाय छे के प्रत्येक पायो एक कलाकनो होवो जोइए. आषाढ मासमा रात्रिनी पौरुषीने बे पाया कह्या छे ते उपरथी जणाय छे के सूत्र लखायां ते वखते आषाढ मासमा दिवस १६ कलाकनो अने रात्रि ८ कलाकनी होवी जोइए. अने पोष मासमा चार पाया कह्या छे तेथी ते मासमा दिवस ८ कलाकनो अने रात्रि १६ कलाकनी होवी जोइए. वैदिक ज्योतिषमा पण आवीज गणतरी छे. हालना समयमा विषुवकाळ [Equinox] ता. २१ मार्च अने ता. २२ सप्टेम्बरना अरसामा आवे छे जे वखते दिवस रात्रि सरखा होय छे. लांबामा लांबो दिवस (Summer solstice] ता. २१ जुन अने टुंकामा टुंको दिवस [Winter solstice] ता. २१ डिसेम्बरना अरसामा आवे छे. हालना अने गाथामा दर्शावेल समयनी गणतरीथी सूत्रो लखायाना काळनु निर्माण शक्य होय तो तेम करवानु काम ज्योतिष अने गणित शास्त्री विद्वानोनु छे.

न,अ २६ अगुलं सत्तरत्तेण पक्खेणय दुअगुल । वड्ढए हायए वावि मासेणं चउरंगुल ॥ १४ ॥ आसाढे बहुलपक्खे भद्दवए

कत्तिएय पोसेय । फग्गुण वइसाहेसुय नायंव्वाउमरत्ताओ ॥१५॥ जेट्ठामूले आसाढे सावणेछहिं अगुलेहिं पडिलेहा।

२१२ अट्ठहि बिइयतियमी तइए दसहिअट्ठहि चउत्थे ॥१६॥ रत्तिपि चउरो भाए भिक्खूकुज्जा वियक्खणो । तओ ओत्तर

गुणे कुज्जा राइ भागेसु चउसुवि ॥ १७ ॥

पौरुषीमा प्रत्येक सप्तरात्रिए (सात सात दिवसे) एक *अंगुलनी प्रत्येक, पक्खवाडीए बे अंगुलनी अने प्रत्येक मासे चार अंगुलनी वधघट थायछे.(१४). आषाढ, भाद्रपद, कार्त्तिक, पौष, फाल्गुन अने वैशाख मासना कृष्णपक्ष अवमरात्रि एटले एक रात्रि ओछीना होय छे. [अर्थात ए महिनाओमा कृष्ण-पक्ष १४ रात्रिनु, अने महिनो २९ दिवसनो होय छे. [१५].१ प्रथम त्रिमासिक एटले ज्येष्ठ, आषाढ अने श्रावण मासमा [सुर्योदय पछीनी प्रथम पौरुषीना पहेला चोथा भागनी] पडिलेहनादि क्रिया छ अंगुल [३० मिनिट] सुधी वधारे लंबाववी; बीजा त्रिमासिकमा आठ अंगुल [४० मिनिट], त्रीजा त्रिमासिकमां दश अंगुल [५० मिनिट] अने चोथा त्रिमासिकमां आठ अंगुल (४० मिनिट) सुधी लंबाववी.(१६). क्रिया-कुशळ साधुए रात्रिना पण चार सरखा भाग पाडवा, अने चारे भागमा (प्रत्येक पौरुषीने योग्य) कर्त्तव्य-कर्म करवु. (१७).

---

* A digit अगुल एटले एक आगळ-एक इंच-फूटनो बारमो भाग ए हिसावे एक कलाकनो बारमो भाग. पायो=१कलाक अंगुल=पाच मिनिट. १ गाथामा दर्शावेल छ महिनाना पखवाडियां चौद दिवसनां होय छे अने बाकीना छ महिनानां पखवाडियां पंदर दिवसना होय छे ए हिसावे चंद्र वर्ष ३५४ दिवसनु गणाय.

पढमे पोरिसि मज्झाय बिइयझाणंझियायइ । तइयाए निद्दमोक्खच चउथ्थी भुज्जोविसज्झाय ॥१८॥ जंनेइ जयारत्तिं नक्खत्ततमिनह चउझाए । सपत्ते विरमिज्जा सज्झाय पउसकालमि॥१९॥तम्मेवय नक्खत्ते गयण चउभाग सावसेसमि। वेरत्तियापि काल पडिलेहित्ता मुणीकुज्जा ॥२०॥पुव्विल्लमि चउब्भागे पडिलेहित्ताण भडगं। गुरु वदित्तु सज्झाय कुज्जा

२१३ दुक्ख विमोक्खण ॥२१॥ पोरसीए चउझाए वदित्ताण तओगुरु । अपडिक्कमित्ता कालस्स भायण पडिलेहए ॥२२॥

प्रथम पौरुषीमा स्वाध्याय करवो, बीजी पौरुषीमां ध्यान धरवु. त्रीजी पौरुषीमा (ने अते) निद्राथी मुक्त* थवु अने चोथी पौरुषीने विषे पाछु स्वाध्यायमा मन लगाडवुं. (१८). जे [1] नक्षत्रे रात्रि पूर्ण थती होय ते नक्षत्र ज्यारे आकाशना चतुर्भागे पहोंचे त्यारे स्वाध्यायथी विरमवु [१९]. आकाशना जे चतुर्भागमा ते नक्षत्र होय तेनो शेष भाग बाकी रहे ते वैरात्रिक अथवा प्रदोषकाळ (सुर्योदय पहेलानो काळ एटले परोढीउ) गणातो होवाथी तेमा मुनिए प्रतिलेखन (पडीलेहन) करवु. (२०). प्रथम पौरुषीना प्रथम पायामा (कलाकमा) वस्त्रादि तपासीने तेनु पडिलेहण करवुं, पछी गुरुने वदन करवु अने त्यारपछी पापने निर्मूळ करनार [दुःखथी मुकावनार] जे स्वाध्याय ते आदरवु.[2] (२१). प्रथम पौरुषीना चोथा भागमा गुरुने वदन करवु अने आलोयणा लेवा (काल प्रतिक्रमण करवा) न रोकातां [3] साधुए पोताना पात्रादिनु विधि पूर्वक पडिलेहन करवुं. [२२].

* मुनिओए केटले सुधी प्रमादने पडखे न चडवु ए आ उपरथी समजी शकाय छे. त्यारे निराते पोढी जनारने आ शब्दो सविनय समर्पण हो. [1] जे नक्षत्र सूर्यनी बराबर सन्मुख होय ते एटले स्वाभाविक रीते ते नक्षत्रनो सूर्यास्त समये उदय थाय अने सूर्योदय समये तेनो अस्त थाय. [2] प्रो. जेकोबी अहिं पण दशमी गाथा जेवो अर्थ करेछे. [3] प्रथम पौरुषीना प्रथम त्रण भागमा वस्त्रादिनु पडिलेहन तथा स्वाध्याय करेल तेमा लागेला दोषो आळोचवा प्रतिक्रमवा तें वखते न रोकाता काम आगळ चलाववु कारण दीवस दरम्यानना बधा कार्योनी आलोयणा साजरे भेगी लेवानी छे.

[illegible] गृह्णांलाइयंगुलिउ वथ्थाइं पडिलेहए ॥ २३ ॥ उड्ढंथिरं अतुरियं पुव्वं तावथ्थमेव [illegible] तइयंच पुणो पमज्जिज्जा ॥ २४ ॥ अणच्चावियं अवलियं अणाणुवढि [illegible] पाणिपाणि विसोहणं ॥ २५ ॥ आरभडा सम्मद्दा वज्जेयव्वाय मोसली तइया। [illegible] ॥२६॥

[illegible] अने पछी गुच्छानुं पडिलेहन करवु. त्यारपछी गुच्छाओ आगळीओ वति झालीने वस्त्रनां पड [illegible] एवी रीते प्रथम वस्त्रने स्थिर अने दृढ पकडवुं अने धीमे रहिने तपासवुं, पछीथी तेनां पड [illegible] (२४). वस्त्रने हलाव्या अथवा ममळ्या विना एवी रीते पहोळुं करवुं के जेथी तेनी घडी छूटी थइ पड एक [illegible] नहिं. नव ७ अखोड, नव ४पखोड अने छ ४पुरिमानी पद्धतिए द्रष्टिथी बराबर तपास्या उहन करवुं अने पछीथी हाथने विषे जीव जंतु होय ते शोधीने दूर करवां. [२५]. [१] कार्यनो आरंभ करवामां, वस्त्रना खुणा परस्पर मेळववामा, [३] वस्त्रनी घडी करवामा, (४) रज खंखेरवामां, [५] चारे बाजु नजर फेरवता वस्त्रने नीचे [illegible] पडिलेहेला वस्त्र के धरती उपर मूकवामा) अने [६]वेदिका५ (घुटणभर बेसी पडिलेहन करवामा)- [illegible] नो दोष टाळवो. (२६).

लखे छे के–सीधा उभा रहीने. २-३-४ 'आच्छोहन, पस्फोहन, पूरिमा' वस्त्रोने झाटकवां वे थओ छे. ए सम्प्रदाय गम्य होवाथी अत्र विस्तार कर्यो नथी शिथिलता छोडी सावधानता राखवा माटेज स्पष्टिकरण करेलुंछे. श्री ठाणांगजी सूत्रमां आ सवने विस्तार पूर्वक विवेचनछे जे श्रावको करता साधु मुनीराजने विशेष [illegible] त्रण गाथामा पण एज वातछे. ५ वेदिकानो मूळ अर्थ ओटलो. अहि घुंटणपर बेसवानो भावार्थ लेवानो [illegible] रे वेदिका वर्णवेली छे. "उर्ध्ववेदिका, अधोवेदिका, तिर्यगवेदिका, उभयवेदिका, एकवेदिका" [illegible] दी जुदी रीते राखीने पडिलेहन करे तो दोष लागे छे.

उ.अ २६ पसिटिल पलंब लोला एगा मोसा अणे गुरुव धुणा । कुणइ पमाणे पमायं संकिए गणणोवगं कुज्जा

॥ २७ ॥ अणुणाइ रित्त पडिलेहा अविवच्चासा तहेवय । पटमं पय पसथ्थं सेसाणिउ अप्प सथ्थाणि

२१५ ॥ २८ ॥

वस्त्रने शिथिलपणे पकडे, अथवा वस्त्रने मात्र एक खुणेथीज पकडे, अथवा तो जमीन साथे तेने फडफडवा दे-घसावादे, अथवा वे छेडा झालीने एकदम वस्त्रने पहोळु करे अथवा तेने त्रण पुरिमानी विधि उपरांत आम तेम हलावे अथवा तो पखोडाठी प्रमाणने विषे प्रमाद करे अने भुल पडवाथी आगळी वति गणे आ सघळा प्रतिलेखनना दोष गणीने ते त्यागवा जोइए. १(२७). पडिलेहन न्युनाधिक एटले वधतुं ओछु करवु नहि अने विपरित रीते पण करवुं नहि. पडिलेहन करवानो ए खरो मार्ग छे, बीजा बधा भागा खोटा छे. (२८).

१.२५,२६,२७ वीगेरे गाथानी वारीकीथी प्रो. जेकोबी पण मुझाइ जायछे अने जाहेर करेछे के Much in my translation is conjectural There are some technicalities in these verses which I fail to understand clearly.........I am not sure of having hit the true meaning.

२१४ मुहपोत्तिं पडिलेहित्ता पडिलेहिज्ज गुच्छगं ।गुच्छगंलाइयंगुलिओ वथ्थाइं पडिलेहए ॥ २३ ॥ उड्ढंथिरं अतुरियं पुव्वं तावथ्थमेव पडिलेहे । तोबिइयं पप्फोडेज्जा तइयंच पुणो पमज्जिज्जा ॥ २४ ॥ अणच्चावियं अवलियं अणाणुबंधि अमोसलिं चेव । छप्पुरिमानवखोडा पाणिपाणि विसोहणं ॥ २५ ॥ आरभडा सम्मद्दा वज्जेयव्वाय मोसली तइया। पप्फोडणा चउथ्थी विखीत्ता वेइयाछट्ठा ॥२६॥

प्रथम मुख वस्त्रिका [मुहपत्ती] अने पछी गुच्छानुं पडिलेहन करवुं. त्यारपछी गुच्छाओ आगळीओ वति झालीने वस्त्रनां पड पडिलेहवां. [२३]. जमीनने अडके नहि १ एवी रीते प्रथम वस्त्रने स्थिर अने दृढ पकडवुं अने धीरे रहिने तपासवुं, पछीथी तेनां पड पहोळां करवां अने छेवटे पुंजवुं. (२४). वस्त्रने हलाव्या अथवा मसळ्या विना एवी रीते पहोळुं करवुं के जेथी तेनी घडी छूटी थइ जाय अने वस्त्रना पड एक बीजा साथे घसाय नहि. नव २ अखोड, नव ३पखोड अने छ ४पुरिमानी पद्धतिए द्रष्टिथी बराबर तपास्या पछी तेनुं पडिलेहन करवुं अने पछीथी हाथने विषे जीव जंतु होय ते शोधीने दूर करवां. [२५]. [१] कार्यनो आरंभ करवामां, (२) वस्त्रना खुणा परस्पर मेळववामां, [३] वस्त्रनी घडी करवामां, (४) रज खखेरवामां, [५] चारे बाजु नजर फेरवतां वस्त्रने नीचे मुकवामां, (पडिलेहेला वस्त्रने अण पडिलेहेला वस्त्र के धरती उपर मूकवामां) अने [६]वेदिका५ (घुंटणभर बेसी पडिलेहन करवामां)— ए छ प्रकारे पडिलेहन करवामां प्रमादनो दोष टाळवो. (२६).

१. आने बदले प्रो. जेकोबी लखे छे के–सीधा उभा रहीने. २-३-४ 'आच्छोटन, पस्फोटन, पुरिमा ' वस्त्रोने झाटकवां फेरववां वीगेरेनी वारिक विधिओ छे. ए संप्रदाय गम्य होवाथी आ विस्तार कर्यो नथी शिथिलता छांडी सावधानता राखवा माटेज प्राये विशेष स्पष्टिकरण करेलुंछे. श्री ठाणागजी सूत्रमां आ संबंधे विस्तार पूर्वक विवेचनछे जे श्रावको करता साधु मुनीराजने विशेष उपयोगी छे. आ पछीनी त्रण गाथामां पण एज वात्तछे. ५ वेदिकानो मूळ अर्थ ओटलो. अहि घुंटणपर बेसवानो भावार्थ लेवानो छे. दीपिका टीकामां पांच प्रकारे वेदिका वर्णवेली छे. " उर्ध्ववेदिका, अधोवेदिका, तिर्यगवेदिका, उभयवेदिका, एकवेदिका " घूटण उपर बे के एक हाथे जुदी जुदी रीते राखीने पडिलेहन करे तो दोष लागे छे.

निग्गंथो धिइमंतो निग्गंथिपि नकरिज्ज छहिंचेव । ठाणेहिंतु इमेहिं अणइक्कमणाय से होइ ॥ ३४ ॥ ओयक उवसग्गे तितिक्खया वभचेरगुत्तिसु । पाणिदया तवहेऊ सरीर वुच्छेयणठाए ॥ ३५ ॥ अवसेसं भडग गिज्झ चक्खुसा पडिलेहए । परमद्ध जोयणाओ विहार विहरए मुणी ॥ ३६ ॥ चउत्थीए पोरिसीए निक्खिवित्ताण भायण । सज्झाय
२१७ तउ कुज्जा सव्वभावविभावण ॥ ३७ ॥ पोरिसीए चउझाए वदित्ताण तउ गुरु । पडिक्कमित्ता कालरस सिज्जतु पडिलेहए ॥ ३८ ॥

धैर्यवान निग्रथ अथवा निग्रंथी [साधु अथवा साध्वी] नीचेनां छ कारणोने लीधे आहार पाणीनी गवेषणा न करे तो तेणे सयम योगनु अतिक्रमण (उल्लघन) कर्यु गणाय नहि :-(३४). (१) ज्वरादि रोगने लीधे, (२) उपसर्ग [आफत]ने लीधे, [३] [1]ब्रह्मचर्य अने गुप्तिनी तितिक्षा [रक्षण]ने लीधे, [४][2]जीवदया अर्थे, (५) तपश्चर्या अर्थे अने (६)[3] शरीर-विच्छेद अर्थे.[३५][4] सर्व भांडक [पात्र उपगरणादि] साधुए प्रथम पोताना चक्षुवति पडिलेहवा अने त्यारपछी [भिक्षार्थे] विचरवु, पण अरधा योजनथी वधारे दूर जवु नहि. (३६). चोथी पौरुषीने विषे आहार पाणी करी लइने पातरा वगेरे पडिलेहीने मूकी देवां अने त्यारपछी सर्व पदार्थनु प्रकाशक जे स्वाध्याय ते आदरवुं. [३७]. चोथी पौरुषीना छेल्ला भागमा गुरुने वदणा करवी अने पछी काल-प्रतिक्रमण करीने पाट वगेरेनु पडिलेहन करवु. (३८).

---

१ जे वखते खानपानथी इन्द्रिओ काबुमा रही शक्ती न होय अने ब्रह्मचर्य अने गुप्तिनी रक्षा थइ शके तेम न होय तेवे प्रसंगे आहार पाणीनो निषेध ए दोष गण्यो नथी. २. वर्षा ऋतुमा व्होरवा जवु पडे तो वनस्पति, अपकायादि जीवनी विराधना थाय माटे. ३ उचित काले खानपान तजीने, अनशन करीने, संथारो करवो तेमा दोष गणेलो नथी. ४. आ अध्ययनमा १५, १६, १९,२०, २४, २६, २७, २९, ३३, ३४, ३५ ए गाथाओ आर्या छदमा छे. बाकीनी गाथाओ श्लोकोमां छे.

पडिलेहणं कुणंतो मिहो कहं कुणइ जणवय कहंवा । देइ वपच्चक्खाणं वाएइ सयं पडिच्छइवा ॥२९॥ पुढवी आउ क्काए तेउ वाउ वणस्सइ तसाणं । पडिलेहणा पमत्तो छण्हंपि विराहओ होइ ॥३०॥ पुढवी आउ क्काए तेऊ वाऊ वणस्सइ तसाण । पडिलेहण आउत्तो छण्हंपि आराहओ होइ ॥३१॥ तइयाए पोरसीए भत्तपाण गवेसए । छण्हं मन्नयरागमि कारणं मिसमुट्ठिए॥३२॥वेयण वेयावच्चे इरियट्ठाएय सजमट्ठाए । तह पाण वत्तियाए छट्ठंपुणधम्मचिंताए ॥३३॥

२१६ पडिलेहन करती वखते कोइनी साथे वातचित करे, * कोइने पच्चखाण करावे* अथवा ते वखते पोते काइक वांचे अथवा बीजा वांचे ते पोते सांभळे; प्रतिलेखन करवामां एवो प्रमादवत साधु [१] पृथ्वीकाय, (२) अपकाय, [३] तेउकाय, [४] वायुकाय, (५) वनस्पतिकाय अने (६) त्रसकाय ए षट्कायनो विराधक (हिंसक) थाय छे; पण जे साधु सावधानपणे पडिलेहन करे छे ते ए षट्कायनो रक्षक थाय छे. (२९-३१)[1]. त्रीजी पोरुषीने विषे [ध्यान मुक्त थइने]साधुए गोचरीना नीचे लखेला छ कारण पैकी एकाद कारणने लइने आहार पाणीनी गवेषणा करवी :–[३२]. (१) वेदनानु उपशमन [शान्ति]करवा माटे, [२] गुरुने,वास्ते आहारपाणी लाववा माटे, [३][2] इर्यासमिति बराबर पळाय तेटला माटे [४] [3] संयमना निर्वाह अर्थे (५) [4] पोतानो जीव बचाववा अर्थे अने [६] धर्म-ध्यान करी शकाय तेटला माटे. (३३).

* आने बदले प्रो. जेकोबी एवो अर्थ करेछे के ' पोते काइक वस्तुनो त्याग करे ' Renounces something ' देइ पच्चक्खाण ' ए शब्दोनो भावार्थ पोते नहि पण बीजाने पच्चखाण करावबानोछे. मतलब ए छे के ए वखते बीजे क्याइ पण ध्यान दोडवु न जोइए. १ प्रो. जेकोबीए गाथा ३०-३१ उलटी सुलटी लखी छे, पण आ भाषान्तरमा सूत्रनो अनुक्रम साचव्यो छे अने त्रणे गाथानो परस्पर संबंध होवाथी ते भेगी लखी छे. २ भूख तरसथी पीडातो साधु इर्यासमिति (हालवा चालवामा सावचेती) पाळी शके नहि. ३ Self control बहु भुखथी पीडायतो प्रसंगे असुझतो आहार लेवा आकर्षाय. ४ भूख तरस वेठीने जीव काढवाथी आत्महत्यानो दोष लागे तेनाथी बचवा माटे.

पोरसिए चउत्थिए कालंतु पडिलेहए। सज्झायंतु तउकुज्जा अबोहंतो असंजए ॥४५॥ पोरसिए चउझाए वदित्ताण तउगुरू। पडिक्कमित्ता कालस्स कालतु पटिलेहए ॥४६॥ आगए कायवोसग्गे सव्व दुख विमोख्खणे काउस्सग्ग तओ कुज्जा सव्वदुख्खविमोख्खण ॥ ४७ ॥ राइयंच अईयार चिंतिज्जा अणुपुव्वसो नाणंमि दसणंमि चरित्तंमि तवमिय ॥ ४८ ॥ पारिय काउसग्गो वदित्ताण तउगुरू। राइयंतु अइयारं आलोएज्जा जहक्कम ॥४९॥ पडिक्कमितु निसल्लो वदित्ताण तउगुरु। काउसग्ग तउकुज्जा सव्वदुख्ख विमोख्खण ॥ ५० ॥

चोथी पौरषीने विषे १*काल–पडिलेहन करीने*१ असयंती एटले २*ग्रहस्थोने जाग्रत कर्या सिवाय२* स्वाध्याय करवु.(४५). चोथी पौरषीना छेल्ला पायामा गुरुने वदणा करीने काल–प्रतिक्रमण करवुं अने *३ते समयने योग्य क्रिया करवी३* [४६]. कायोत्सर्गनो समय आवी पहोंचे त्यारे सर्व दुःखथी मुक्त करनार जे काउसग्ग ते करवो. [४७]. त्यारपछी रात्रि संबंधी अनुक्रमे ज्ञान, दर्शन अने चारित्रने विषे जे जे अतिचार लाग्या होय तेनु चिंतवन करवु. [४८]. काउसग्ग पारीने अने गुरुने वदणा करीने पछीथी रात्रि संबंधी ज्ञान, दर्शन अने चारित्रना जे अतिचार लाग्या होय ते यथा क्रमे आलोचवा. (४९). प्रतिक्रमण पूर्ण करीने गुरुने वदन कर्या बाद, दिवस संबंधी जे जे अतिचार लाग्या होय ते यथाक्रमे आलोचवा [क्षमा माटे मनमा कबुल करी जवा]. ५०.

१*४३मी गाथा मुजब असज्झाय दोष न लागे माटे दिशाओ तपासवी. २*उचे स्वरे वाचे तो ग्रहस्थो जागी जाय अने पोताना धंधानो आरम्भ करे तेनो दोष साधुने लागे माटे, ३*आने बदले प्रो. जेकोबी लखे छे के "योग्य काळनी राह जोइने बेसवु".

पासवण च्चार भूमिं पडिलेहिज्जा जयं जई । काउसग्गं तओ कुज्जा सव्व दुख्ख विमोख्खणं ॥ ३९ ॥ देसियंच्च अइयार चितिज्जा अणुपुव्वसो । नाणेय दंसणेचेव चरित्तंमि तहेवय ॥४०॥ पारिय काउस्सगो वदित्ताण तओ गुरुं देवसियंतु अइयार आलोएज्जजहक्कमं॥४१॥ पडिक्कमित्ता निसल्लो वदित्ताण तउ गुरु। काउस्सग्ग तउ कुज्जा सव्व दुख्ख विमोख्खण ॥४२॥ पारिय काउस्सग्गो वदित्ताण तउ गुरु । थुइ मगलच्च काओण काल संपडिलेहए॥४३॥ पढम पोरिसि सज्झाय बिइयझाणजियायइ । तइयाए निद्दमोख्खतु सज्झायतु चउथ्थीए ॥ ४४ ॥

त्यारपछी यत्नवान साधुए मळ मूत्रादि नाखवानी जगो तपासी लेवी अने त्यारपछी [सूर्यास्त थता सुधी] १सर्व दुःखथी मूकावनार काउसग्ग (कायोत्सर्ग) करवो. [३९] त्यारपछी आखा दिवस संबंधी अनुक्रमे ज्ञान, दर्शन अने चारित्रने विषे जे जे २अतिचार लाग्या होय तेनु चिंतवन करवुं. (४०). काउसग्ग पारीने अने गुरुने वंदणा करीने पछीथी दिवस सबंधी जे जे अतिचार लाग्या होय ते यथाक्रमे आलोचवा (क्षमा माटे मनमा कबुल करी जवा). [४१]. प्रतिक्रमण-सूत्र भणीने अने शल्य (पाप) रहित थइने गुरुने वंदणा करवी अने त्यारपछी १ सर्व दुःखथी मूकावनार काउसग्ग करवो. (४२). काउसग्ग पारीने अने गुरुने वंदणा करीने स्तुतिना त्रण पाठ भणवा अने पछी ३ काल-पडिलेहन करवुं.(४३).रात्रिनी प्रथम पौरुषीमा स्वाध्याय करवु, बीजी पौरुषीमां ध्यान धरवुं, त्रीजी पौरुषीमा [ने अंते] निद्राथी मुक्त थवुं अने चोथी पौरुषीमा पाछा स्वाध्यायमा मन लगाडवुं. [४४].

---

१. आने बदले प्रो. जेकोबी आगळ माफक अर्थ करे छे के ' सुख दुःखनो विचार कर्या विना ' जुओ गाथा १०मी.
२. Transgressions ३. असज्झाय दोष न लागे माटे दिशाओमां झाकळ, धुमस वीगेरे छे के नहि ते तपासी जवुं, कारण ते पछी 'सज्झाय' करवानुं फरमान छे. प्रो. जेकोबी ए माटे 'Wait for the proper time' ए शब्दो वापरे छे.

अध्ययन २७. गलिया वळद.

थेरे गणहरे गग्गे मुणी आसि विसारए । आइन्नेगणभावंमि समाहिं पडिसंधए ॥ १ ॥ वहणेवहमाणस्स कतार अइवत्तइ । जोए वहमाणस्स ससारो अइवत्तई ॥ २ ॥ खलुंके जोओ जोएइ विहमाणो किलिस्सई । असमाहिंच वेएई तोत्तएय सेभज्जइ ॥३॥ एग डसइ पुच्छंमि एगं विधइ अभिक्खण । एगोभजइ समिल एगो उप्पह पट्ठिउ ॥४॥

◎ अध्ययन २७. ◎

गर्ग नामे [1] स्थविर, [2] गणधर अने सर्व शास्त्र निपुण मुनि हता. ते गर्ग गणधर एक वखत निचे प्रमाणे चिंतन करवा लाग्या:-(१). ' [3] रथने सारा बळद जोडवाथी अटवी (अरण्य)नो पार पमाय छे, तेम संयम मार्गने विषे (सदाचारथी) गाडुं चलाववाथी संसारनो पार पमाय छे.' (२). ' पण जे कोइ [4] गलिया बळदने पोताने गाडे जोडे छे ते तेमने मारी मारीने थाकी जाय छे, तेने क्लेश उपजे छे अने आखरे तेनो परोणो पण भांगी जाय छे.' [३] ' [5] रुठेलो सारथी दांतवति गलिया बळदनुं पुछडुं करडे छे अने तेने आरवति वींधे छे, ते बळद धुसरीनी समिला (मेख) भांगी नाखे छे, अने आडे मार्गे (उन्मार्गे) दोडवा मांडे छे. ८

---

१ स्थविर=धर्मने विषे स्थिर अथवा दृढ. २ गणधर=गण अथवा गच्छनो धारक, तीर्थंकर भगवानना गणधरना अर्थमां ए शब्द अहि वपरायेल नथी. ३ अने वदले मो. जेकोबी एम लखे छे के 'गाडामा बेसवाथी अटवीनो पार पमाय छे. ४ Strong but lazy bull ५ आटला भागनुं भाषान्तर मो. जेकोबी एवी रीते करे छे के 'गलियो बळद पोताना जोडिया बळदनुं पूंछडुं करडे छे अने तेने घायल करेछे.

कितवं पडिवज्जामि एवंतथ्थ विचिंतए । काउस्सग्गंतु पारित्ता वंदइय तउगुरुं ॥५१॥ पारिय काउसग्गो वंदित्ताण तओगुरु । तव संपडिवज्जित्ता करिज्जासिद्धाण सथवं ॥ ५२ ॥ एसा सामायारी समासेण वियाहिया । जंचरित्ता बहुजीवा तिन्ना संसारसागरं त्तिबेमि ॥ ५३ ॥

॥ इति सामायारीनाम झयणं छविसमं सम्मत्त ॥ २६ ॥ ॥



मारे केवा प्रकारनुं तप करवुं ते बाबतनुं चिन्तन करवुं. काउसग्ग पार्या पछी गुरुने वंदणा करवी. [५१]. कायोत्सर्ग कर्या पछी अने गुरुने वंदणा कर्या पछी उपवासादि जे तप करवानु नकी कर्यु होय ते आदरवुं अने सिद्ध पुरुषोनी (तीर्थकरोनी) स्तुति करवी. (५२). आ प्रमाणे सामाचारीनुं संक्षिप्त वर्णन कर्यु छे, जे अंगीकार करवाथी घणा जीवो संसार-सागर तरी गयाछे. (५३).

* छव्वीसमुं अध्ययन संपूर्ण. *

भिरवालसिए एगे एगे उमाणभीरुएथद्दे । एगंच अणुसासंमि हेऊहिं कारणेहिय ॥१०॥सोविअतर भासिल्लो दोसमेव पकुव्वइ । आयरिआण तवयण पडिकूलेइ आभिरवण॥ ११ ॥ नसामम वियाणाइ नविसा मझदाहिइ । निग्गयाहो हिइमन्ने साहु अन्नोथ्थ वच्चउ ॥ १२ ॥ पेसियापलिउचति ते परियति समतओ । रायवेट्ठीच मन्नता करिंति भिउडिंमुहे ॥१३॥ वाइया सगहियाचेव भत्तपाणेय पोसिया । जाय पक्खा जहाहसा पक्कमति दिसोदिसिं ॥१४॥ अह सारहि विचिंतेइ खलुकेहि समागओ । किमझ दुट्ठसीसेहि अप्पामे अवसीयइ ॥ १५ ॥

'कोइ भिक्षा मागवा जवाना आळसु होय छे, तो कोइ अपमानथी डरीने स्तब्ध बेसी रहेछे; एवा कुशिष्योने हेतु अने कारणोथी हु केवी रीते समजावी शकु ?' [१०]. 'एवा कुशिष्यो गुरुना शिक्षणमा दोष काढे छे, तेमाथी खोटी खोटी कल्पीत मुश्केलीओ काढी बतावे छे अने आचार्यना वचनथी वारवार प्रतिकुल रीते वर्ते छे. [११] 'गुरु तेने कोइ ग्रहस्थने त्या आहारादि व्होरव ने मोकले तो एम कहेछे के 'ते श्राविका मने ओळखती नथी; ते मने काइ देशे नहि, हु धारु छु के ते घेरथी बहार गइ हशे, ए कार्यने माटे बीजा कोइ साधुने मोकलो.' (१२) 'गुरुए एवा कुशिष्योने काइ काम करवा मोकल्या होय तो ते बतावेलु काम करता नथी, पण पोताने फावे त्या भटक्या करे छे, अथवा तो राजाना वेठिया (नोकरो)नी माफक (स्वारथी) वर्त्तेछे अने भ्रकुटी चढावे छे [१३]. 'एवा कुशिष्योने शास्त्राभ्यास कराव्यो, सम्यक धारण कराव्यु, खानपानथी पोषण कर्यु, पछी हसना बच्चाने पाखो आववाथी जेम [पोतानां मावापने छोडीने] ते उडी जाय छे, तेम एवा कुशिष्यो (पोताना गुरुनो त्याग करीने) दशे दिशामा यथेच्छ विहार करे छे. [१४]. हवे ते सारथी (गर्गाचार्य) विचार करे छे के 'मने गळिया बळद जेवा कुशिष्यो मळेला छे. एवा दुष्ट शिष्योनुं मारे शुं करवुं? तेमनाथी मारो आत्मा क्लेश पामे छे. [१५].

एगोपडइ पासेणं निवेसइ निवज्जइ । उक्कुदइ उप्फिडइ सढे बालगविचए ॥ ५ ॥ माइ मुद्धेण पडइ कुद्धे गच्छइ पडिपहं । मयलक्खेण चिट्ठइ वेगेणय पहावइ ॥६॥ छिन्नाले छिंदइ सिल्लिं दुद्दंते भंजइजुगं । सेविय सुस्सुयाइत्ता उज्जहित्ता पलायइ ॥ ७ ॥ खलुंका जारिसाजोज्जा दुस्सिसानिहुतारिसा । जोइया धम्मजाणंमि भज्जंतिधिइ दुब्बला ॥८॥ इड्ढीगारविए एगे एगेथ्थ रसगारवे । साया गारविए एगे एगेसुचिर कोहणे ॥९॥

'गलियो बळद पडखा भेर पडी जाय छे, अथवा वेसी जाय छे, अथवा सूइ जाय छे, अथवा कूदवा अने ठेकवा माडे छे, अथवा तो ए बाल गायने देखीने तेनी पाछळ दोडे छे. (५). 'गलियो बळद कोइ उपर हुमलो करवा जतो होय तेवी रीते माथुं नीचुं नमावीने जुस्साथी आगळ धसे छे, अथवा तो क्रोधथी पाछो हठे छे; अथवा तो मृत्यु पाम्यो होय तेवो ढोंग करीने [1] पृथ्वी उपर पडे छे अथवा तो वेगथी दोडे छे. (६). ते दुष्ट बळद राश तोडी नाखे छे अथवा तो ते शिरजोर बळद धुंसरी भांगी नाखे छे; अने ते वराडा पाडतो छूटो थइने न्हासी जाय छे. [७]. जेवी रीते गलियो बळद रथमां जोडावाथी क्लेश उपजावे छे, तेम दुष्ट [विनय-रहित] शिष्यो पण धर्मरुपी रथमा जोडाइने पोतानी अस्थिर [2] वृत्तिने लीधे संयम मार्गनो भंग करे छे. (८). कोइ शिष्य मानरुपी रिद्धिनो गर्वित होय छे, कोइ रस-गर्वित [स्वाद लंपट] होय छे, कोइ शाता-गर्वित होय छे तो कोइ सुचिर-क्रोधी [दीर्घ-रोषी] होय छे. [९].

[1] आने बदले प्रोफेसर जेकोबी लखे छे के "स्थिर उभो रहे छे;" पण मूएलो बळद स्थिर उभो रहे ते संभवे नहि.
[2] Want of Zeal

भिख्खालसिए एगे एगे उमाणभीरुएथद्धे । एगंच अणुसासंमि हेऊहिं कारणेहिय ॥१०॥सोविअतर भासिल्लो दोसमेव पकुव्वइ । आयरिआण तवयण पडिकूलेइ अभिख्खण॥ ११ ॥ नसाममं वियाणाइ नाविसा मझदाहिइ । निग्गयाहो हिइमन्ने साहु अन्नोथ्थ वच्चउ ॥ १२ ॥ पेसियापलिउचति ते परियति समतओ । रायवेट्ठीच मन्नता करिति भिउडिंमुहे ॥१३॥ वाइया सगहियाचेव भत्तपाणेय पोसिया । जाय पख्खा जहाहसा पक्कमति दिसोदिसिं ॥१४॥ अह सारहि विचिंतेइ खलुकेहि समागओ । किमझ दुट्ठसीसेहि अप्पामे अवसीयइ ॥ १५ ॥

'कोइ भिक्षा मागवा जवाना आळसु होय छे, तो कोइ अपमानथी डरीने स्तब्ध वेसी रहेछे, एवा कुशिष्योने हेतु अने कारणोथी हु केवी रीते समजावी शकुं ?' [१०]. 'एवा कुशिष्यो गुरुना शिक्षणमा दोष काढे छे, तेमाथी खोटी खोटी कल्पीत मुश्केलीओ काढी वतावे छे अने आचार्यना वचनथी वारवार प्रतिकुल रीते वर्ते छे. [११]. 'गुरु तेने कोइ ग्रहस्थने त्या आहारादि व्होरवाने मोकले तो एम कहेछे के 'ते श्राविका मने ओळखती नथी ; ते मने कांइ देशे नहि, हु धारु छु के ते घेरथी वहार गइ हशे; ए कार्यने माटे बीजा कोइ साधुने मोकलो.' (१२) 'गुरुए एवा कुशिष्योने काइ काम करवा मोकल्या होय तो ते वतावेलु काम करता नथी, पण पोताने फावे त्या भटक्या करे छे, अथवा तो राजाना वेठिया (नोकरो)नी माफक (स्वारथी) वर्त्तेछे अने भ्रकुटी चढावे छे. [१३]. 'एवा कुशिष्योने शास्त्राभ्यास कराव्यो, सम्यक धारण कराव्यु, खानपानथी पोषण कर्यु, पछी हसना बच्चाने पाखो आववाथी जेम [पोतानां मावापने छोडीने] ते उडी जाय छे, तेम एवा कुशिष्यो (पोताना गुरुनो त्याग करीने) दशे दिशामां यथेच्छ विहार करे छे. [१४]. हवे ते सारथी (गर्गाचार्य) विचार करे छे के 'मने गलिया बळद जेवा कुशिष्यो मळेला छे. एवा दुष्ट शिष्योनुं मारे शुं करवुं ? तेमनाथी मारो आत्मा क्लेश पामे छे. [१५].

जारिसा ममसीसाओ तारिसा गलिगदहा । गलिगदहे चइत्ताणं दढ्ढंपगिन्हइतवं ॥१६॥मिउ मद्दवसंपन्ने गंभिरेसु समाहिए । विहरइ महिं महप्पा सीलभूएण अप्पणो त्तिबेमि ॥ १७ ॥

॥ इति खलुकियंनाम झयणं सत्ताविसं सम्मत्तं ॥ २७ ॥

अध्ययन २८. मोक्ष मार्गनी प्राप्ति.

मोक्खमग्गगइं तच्चं सुणेह जिणभासिय । चउकारण संजुत्त नाण दसण लक्खणं ॥१॥ नाणंच दसणंचेव चरित्तंच तवोतहा । एस मग्गोति पन्नतो जिणेहिं वरदसिंहिं ॥२॥

मारा शिष्यो गलिया बळद जेवा छे; माटे ए सुस्त गधेडाओनो त्याग करीने हु दढ तप आदरीश. (१६). मृदु मार्दव गुण संपन्न, [एटले विनयवान अने कोमळ अतःकरण वाळा] गंभीर अने समाधि संयुक्त महात्मा [गर्गाचार्य] शीलयुक्त वर्तनथी पृथ्वीने विषे विचरवा लाग्या. (१७).

॥ सत्तावीशमुं अध्ययन संपूर्ण ॥

❂ अध्ययन २८. ❂

हे भव्य जीवो ! श्री जिन-भाषित मोक्ष-मार्गनी सत्य गति तमे सांभळो; ते चार कारणे करीने संयुक्त छे अने ज्ञान, दर्शननां लक्षणे करीने सहित छे. (१). [१] ज्ञान१, [२] दर्शन२, [३] चारित्र३ अने [४] तप; ए मुक्ति-मार्ग, विशिष्ट, सम्यक ज्ञानना धरणहार श्री तीर्थंकर भगवाने कह्यो छे. (२).

१ Right knowledge २ Faith ३ Conduct,

नाणंच दंसणंचेव चरित्तच त्तवोतहा । एयमग्ग मणुप्पत्ता जीवा गच्छति सुग्गइं ॥ ३ ॥ तथ्थ पंचविहंनाणं सुयं आभिणिवोहियं । उहिनाणं चतइय मणनाणच केवल॥४॥एयं पंचविहनाणं दव्वाणय गुणाणय । पज्जवाणच सव्वेसिं नाण,नाणिहिं देसिय ॥५॥ गुणाण मासयो दव्व एगदव्वसिया गुणा । लख्खणं पज्जवाणतु उभउ अस्सियाभवे ॥६॥

ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप ; ए मुक्ति-मार्गने विषे चालनारा जीव १ सद्गतिने पामे छे. [३]. १ ज्ञान :–ज्ञानना पाच भेद छे :–(१)२ श्रुत ज्ञान, (२) अभिनि वोधिक अथवा मति ३ ज्ञान, (३) अवधि ४ ज्ञान, [४] मनः५ पर्यव-ज्ञान, अने [५] केवल-६ ज्ञान. [४]. ए प्रमाणे पाच प्रकारनु ज्ञान छे. द्रव्य, गुण अने पर्याय ए सघळा भेदनु ज्ञान श्री ज्ञानी पुरुषोए कह्यु छे. [५]. गुणनो आश्रय ते द्रव्य; रुपादिक गुण एक द्रव्यने आश्रये रहे छे; पण पर्यायनु लक्षण एवु छे के ते द्रव्य अने गुण बन्नेनु आश्रित छे.७ [६].

---

१ Will obtain beautitude २ श्री नंदी सूत्र वीगेरेमा प्रथम मति ज्ञान अने बीजु श्रुत ज्ञान लेवामा आवेल छे. सर्व ज्ञानना हेतु रुप सूत्र ज्ञान होवाथी ते विशेष उपकारी गणाय छे ए अपेक्षाए अहिं प्रथम लीधेल छे. सूत्रो साभळवाथी जे ज्ञान प्राप्त थाय ए श्रुत ज्ञान कहेवाय छे. ३ पाच इन्द्रि अने छठा मनथी जे ज्ञान थाय ते. ४ इंद्रियादिकनी अपेक्षा विना आत्माने विषे जे साक्षात् प्रत्यक्ष ज्ञान थाय ते. अवधिनो अर्थ मर्यादावाचक पण थाय छे. अमुक हद सुधीनु जाणे देखे वे ज्ञान. ५ ते ' मन पर्याय ' नामथी पण प्रसिद्ध छे. सज्ञी पचेंद्रि जीवना मनना भाव जाणी शकाय ते ज्ञान. ६ सर्वोत्तम ज्ञान. सर्व स्थळे सघळु जाणे देखे ते. ७ प्रो. जेकोबीना आ माटेना शब्दो असरकारक छे. Substance is the substrate of qualities, the qualities are inherent in one substance, But the characteristic of developments is that they inhere in either (viz substances or qualities)

उ.अ. २८ धम्मो अहम्मो आगासं कालो पुग्गल जंतवो । एसलोगोत्ति पन्नत्तो जिणेहिंवर दंसीहिं ॥ ७ ॥ धम्मो अहम्मो
आगास दव्व इक्किक्कमाहिय । अणंताणिय दव्याणि कालो पुग्गल जंतवो ॥ ८ ॥ गइ लख्खणोउ धम्मो अहम्मो
२२६ ठाण लख्खणो । भायण सव्व दव्वाण नह ओग्गह लख्खण ॥ ९ ॥ वत्तणा लख्खणो कालो जीवो उवओग
लख्खणो । नाणेण दसणेणच्च सुहेणय दुहेणय ॥ १० ॥ नाणच दसणचेव चरित्तच तवोतहा । वीरिय उवउगोय
एव जीवस्स लख्खण ॥ ११ ॥ सदधयार उज्जोओ पहा छाया तवोविय । वन्न रस गध फासा पुग्ग लाणंतु
लख्खणं ॥१२॥ एगत्तच पुहत्तच संखा संठाण मेवय । सजोगाय विभागाय पज्जवाणंतु लख्खणं ॥१३॥

(१) धर्मास्तिकाय, [२] अधर्मास्तिकाय, (३) आकाशास्ति-काय, [४] काल-समयादिरुप, (५) पुद्गल अने [६] जीव :—ए षट्-द्रव्योनु[१] आ जगत बनेलुं छे एम वस्तुओना यथास्थित ज्ञानवाळा श्री केवलि भगवाने कह्युछे. [७]. धर्म अधर्म अने आकाश ए त्रणे एक द्रव्यरुप छे; पण काल, पुद्गल अने जीव ए अनंत द्रव्यरुप (पुद्गालिक) कह्या छे.[८]. धर्मनुं लक्षण [२] गति, अधर्मनुं लक्षण [३] जडता, अने नभ अथवा आकाश जे षट् द्रव्यनुं भाजन-स्थान छे तेनु लक्षण अवगाह एटले सर्व द्रव्यने अवकाश आपवानुं छे. [९]. कालनु लक्षण वर्त्तना एटले [४] अविराम छे; ज्ञान, दर्शन, सुख अने दुःखना ज्ञाननो [५] उपयोग ए जीवनुं लक्षण छे. [१०]. ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य[६] अने उपयोग ए जीवनां लक्षण छे (११). शब्दनो ध्वनि, अंधकार, उद्योत, प्रभा,छाया, प्रकाश, वर्ण, रस, गध अने स्पर्श ए सर्व [७] पुद्गलना लक्षणो छे. (१२). एकत्व, (एकत्रपणुं) पृथकत्व, [छूटापणुं] संख्या, आकार, संयोग अने वियोग अथवा विभाग ए [८] पर्यायनां लक्षण छे. (१३).

१ Six substances realities २ चलन स्वभाव Motion ३ स्थिरता-Immobility. ४ Duration ५ Realisation ६ Energy ७ Matter ८ Development.

जीवा जीवाय बंधोय पुन्नंपावा सवोतहा । संवरो निज्जरामोख्खो संतिएए तहिया नव ॥ १४ ॥ तहियाणंतु भावाणं सझावे उवएसणं । भावेण सद्दहतस्स समत्त त वियाहिय ॥ १५ ॥ निसग्गुवएसरुइ आणारुइ सुत्तबीयरुइमेव । अभिगम विथ्थार रुइ किरिया सखेव धम्मरुइ ॥ १६ ॥ भूयथ्थेणाहिगया जीवा जीवाय पुन्नपावच । सहसमुइया सव सवरोय रोएइउ निरसग्गो ॥ १७ ॥

---

१ जीव, २ अजीव, ३ बन्ध*, ४ पुण्य, ५ पाप, ६ आश्रव, ७ सवर, ८ निर्जरा अने ९ मोक्ष ए नव तत्व१ जाणवा. २(१४). उपर कहेला जीव-अजीवादि नव तत्वनो सत्य उपदेश शुद्ध भावथी अगीकार करवो तेनु नाम सम्यक्त ज्ञान कहेवाय.(१५) २ दर्शन:-सम्यक्तना दश भेद छे [अथवा रुचि दश प्रकारनी छे]:-१ निसर्ग-रुचि, २ उपदेश-रुचि, ३ आज्ञा रुचि, ४ सूत्र-रुचि, ५ बीज रुचि, ६अभिगम-रुचि, ७विस्तार-रुचि, ८क्रिया-रुचि, ९संक्षेप-रुचि अने १० धर्म-रुचि.[१६]३. जे जीव, अजीव, पुण्य, पापादि तत्वनो सत्यार्थ पोतानी स्वबुद्धिए४ करीने समजे अने पापना अतःप्रवाहने५ रोके तेनी निसर्ग-रुचि कहेवाय. [१७].

---

*श्री ठाणागजी वगेरे सूत्रोमां नव तत्वोमा बधनो नंबर आठमो छता अहिं काव्य क्रम जाळववा तेने त्रीजो मुकवामा आवेल छे ए उपरात जीव अजीवनो बध समजाववा अमुक अपेक्षाए पण अहि अने बीजी जग्याए क्रम बदल्यो जणाय छे. १ Nine truths २ (१) Soul, (२) inanimate things, (३) binding of the soul by Karman, (४) Merit, (५) demerit, (६) that which causes the soul to be affected by sins (७) the prevention of Asrava by watchfulness, (८) the annihilation of Karman (९) final deliverence ३. (१)Nature(२)instruction (३) command (४) study of the sutras (५) suggestion (६) comprehension of the meaning of the sacred lore (७) complete course of study (८) religions exercise (९) brief exposition (१०) The Law ४ By a spontaneous effort of his mind. ५ Sinful influences.

जोजिणदिठ्ठे भावे चउव्विहेवि सद्दहाइ सयमेव । एमेव नन्नहत्तिय सानिसग्ग रुइत्ति नायव्वो ॥१८॥ एएचेवउ भावे उवइठ्ठे जोपरेण सद्दहइ । छओमथ्थेण जिणेणवा उवदेस रुइत्ति नायव्वो ॥१९॥ रागो दोसो मोहो अन्नाणं जस्स अवगय होइ । आणाए रोयतो सो खलु आणारुईनाम ॥ २० ॥ जो सुत्त महिज्जतो सूएण उग्गहइओ समत्त । अग्गेण बाहिरेणवा सो सुत्त रुइत्ति नायव्वो ॥२१॥ एगेण अणेगाइ पयाइ जो पसरइओ समत्त । ओदएव तिल्लबिंदु सोबीयरु इत्तिनायव्वो॥२२॥ सोहोइ अभिगमरुइ सुयनाणं जेण अथ्थउ दिठ्ठ । इक्कारस अगाइ पइन्नगं दिठ्ठिवाउय ॥२३॥

जे मनुष्य श्री तीर्थंकर भगवाने भाखेला तत्वोने चतुर्विधाने एटले द्रव्ये, क्षेत्रे, काळे अने भावे करीने स्वयमेव (पोतानी मेळे) माने अने श्री भगवाननां भाखेला तत्वो अन्यथा न होय एम जाणे, तेनी निसर्ग–रुचि कहेवाय. [१८]. पण जे मनुष्य उपर कहेला नव तत्वो अन्यना एटले [१]छद्मस्थ अथवा केवलिना उपदेशथी जाणे अने माने तेनी उपदेश–रुचि कहेवाय [१९]. जेणे राग, द्वेष, मोह अने अज्ञाननो त्याग कर्यो होय अने श्री भगवाननी आज्ञा छे माटे नव तत्वने माने तेनी आज्ञा–रुचि कहेवाय. [२०]. जे सूत्रो, तेनां [२]अग अने [३]उपाग भणीने सम्यक्त–ज्ञान माप्त करे तेनी सूत्र–रुचि कहेवाय. [२१]. जे एक पदार्थनुं सत्य ज्ञान थवाथी, पाणी उपर प्रसरता तेलना बिन्दुनी माफक अनेक पदार्थोनुं सत्य–ज्ञान माप्त करी शके तेनी बीज–रुचि कहेवाय. [२२]. जे अगियार अंग, [४]प्रकीर्णो अने [५]दृष्टिवाद आदि श्रुत–ज्ञानथी सत्यार्थ समजे छे तेनी अभिगम–रुचि कहेवाय. [२३].

---

१ जेने केवल ज्ञान नथी उपज्युं ते छद्मस्थ कहेवाय. २ अंग प्रविष्ट ३ अंग बाहिर. ४ पइन्ना सूत्रो. आ सूत्रो जीर्ण थइ जवाथी पाछळथी तेमां घणु नवुं उमेरायुं मनाय छे. एटले ते प्रमाण रुप मनातां नथी. ५ बारमुं अंग जेमां चौद पूर्व समाइ गयेल मनातां पण कम नशीबे आ अंग विच्छेद गयुं छे.

दव्वाण सव्वभावा सव्व प्पमाणेहिं जस्स उवलद्धा । सव्वाहि नयविहीहिय सो विथ्थार रुइत्ति नायव्वो ॥ २४ ॥
दसण नाण चारित्ते तव विणए सव्वसमिइ गुत्तिसु । जो किरिया भावरुइ सो खलु किरिया रुइ नाम ॥ २५ ॥
अणभिग्गहिय कुदिट्ठी सखेव रुइत्ति होइ नायव्वो । अविसारउ पवयणे अणभिग्गहिओय सेसेसु ॥ २६ ॥

जोअथ्थिकाय धम्म सुयधम्मखलु चारित्तधम्मच । सद्दहइ जिणाभिहिय सोधम्म रुइत्तिनायव्वो ॥ २७ ॥
परमथ्थ संथवोवा सुदठ्ठपरमथ्थसेवणावावि । वावन्न कुदसण वज्जणाय सम्मत्त सद्दहणा ॥ २८ ॥
नथ्थि चारित्त समत्त विहुण दसणेउभइयव्व । समत्त चारित्ताइ जुगव पुव्वच समत्त ॥ २९ ॥

सर्व पदार्थना भाव प्रत्यक्ष प्रमाणथी अने [1]नय-विधिथी जाणे तेनी विस्तार-रुचि कहेवाय. [२४]. ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप अने [2]विनयथी समिति अने गुप्तीने विषे रहीने सर्व क्रिया शुद्ध भावथी करे तेनी क्रिया-रुचि कहेवाय. [२५]. जे प्रवचन (सिद्धांत) ने विषे कुशळ होतो नथी, अने जेने बुद्धादिक मत मतांतरोनु ज्ञान होतु नथी, छतां जेने अन्य- दर्शनने माटे अनादर होय तेनी सक्षेप-रुचि कहेवाय. [२६]. जे धर्मास्ति कायादि छ द्रव्य श्रुत धर्म अने चारित्र धर्म जेम श्री तीर्थंकरे भाखेला छे तेम सत्य माने तेनी धर्म-रुचि कहेवाय. [२७]. जीवादि तत्वोना स्वरुपनु ज्ञान, नव तत्वोनु ज्ञान धरावनारनी सेवा अने कुदर्शनी तथा भ्रष्टाचारीनो [3]त्याग ए सम्यक्तनां लक्षण छे. (२८). सम्यक्त विना (शुद्ध) चारित्र सभवे नहि; सम्यक्तथी चारित्र प्राप्त थाय छे. सम्यक्त अने चारित्र समकालिन होइ शके, अथवा तो सम्यक्त चारित्रना पहेलु होय. [२९].

१ नैगमनय, सग्रहनय, व्यवहारनय, रुजुसूत्रनय, शब्दनय, समभीरुढनय, अवंभूतनय ए सात नय छे. डॉ. भांडारकर तेनी एवी व्याख्या करे छे के The seven Nayas are "points of view or principles with reference to which certain judgments are arrived at or arrangements made. २. By discipline ३. Avoiding of schismatical and heretical tenets.

उ.अ. नादंसणिस्स नाणं नाणेण विणा नहुंति चरणगुणा। अगुणस्स नथ्थि मोख्खो नथ्थि अमोख्खस्स निव्वाणं ॥३०॥
२८ निस्संकियं निक्कंखिय निवितिगिछ्छा अमुढदिठ्ठीय। उववूह थिरीकरणे वछ्छल प्पभावणे अठ्ठ ॥ ३१ ॥ सामाइयथ्थ
२३० पढमं छेउवठ्ठावण भवेबिइय। परिहारविसूद्धियं सुहुमंतह संपरायच ॥ ३२ ॥ अकसाय महख्खाय छउमथ्थस्स

सत्य-दर्शन विना सत्य ज्ञान संभवे नहि; सत्य-ज्ञान विना शुद्ध चारित्र संभवे नहि; शुद्ध-चारित्र विना कर्मनो क्षय संभवे नहि; अने कर्म-क्षय विना निर्वाण (मुक्ति) संभवे नहि [३०]. सम्यक्तना आठ लक्षण[1] :–१ धर्म-तत्वो तरफ शंकारहित भाव, २ अन्य धर्मनी वाच्छना न राखे, ३ निर्वितिकित्सा एटले फळ प्रति संदेह न आणे, ४ कुतीर्थीओनी रिद्धि देखीने ते तरफ मोह रहित (अमूढ) दृष्टि राखे, ५ धर्मवत पुरुषोनी प्रशंसा करे, ६ स्वधर्मी भाइओने सहाय करे, ७ साधर्मिकोनुं पोषण करे अने तेमना तरफ भक्तिभाव राखे अने ८ स्वधर्मनी उन्नति करे. [३१]. ३. चारित्रः–चारित्रना भेदः–१ सामायिक[2] (एटले राग द्वेष रहित मन परिणामे सर्व पापकारी कामोथी निवृति), २ छेदोपस्थापन[3] (एटले महाव्रत आरोपणा) ३ परिहार[4]–विशुद्धिक[5] [एटले

---

१ सम्यक्तना ते आठ कोट छे निशंका, निकंखा, निवितिगिच्छा, अमूढ दृष्टि, दोषा कथन, स्थिरता, वात्सल्य, प्रभावना. २ The avoidance of everything sinful ३ The initiation of a novice. ४ संस्कृत टीकामां 'परिहार विशुद्धि' आ प्रमाणे समजावेलछेः–नव साधुओ अढार मास सुधी साथे रहेवानो निश्चय करेछे. तेमानो एक कल्पस्थित (आचार्य)बनेछे, चार परिहारिक थायछे; अने बाकीना चार अनुपरिहारिक थइने पहेला छ मास सुधी परिहारिक तथा कल्पस्थितनी सेवा करे छे. पछीना छ मासमां परिहारिक होय ते अनुपरिहारिक बनेछे अने अनुपरिहारिक परिहारिक बनेछे. छेल्ला छ मासमां कल्पस्थित तप करेछे अने बाकीना आठे साधु परिहारिक बनीने तेमनी सेवा करे छे. ५ 'Purity produced by peculiar austerities

३.अ जिणस्सवा । एयंचयरित्तकरं चारित्तं होइ आहियं ॥३३॥ तवोय दुविहो वुत्तो बाहिरझिं तरो तहा । बाहिरो छव्वि
२८ होवुतो एवमझिंतरो तवो ॥ ३४ ॥ नाणेण जाणइ भावे दसणेणय सद्दहे । चरित्तेण नगिण्हाइ तवेण परिसूझइ
२३१ ॥ ३५ ॥ खवित्ता पुव्वकम्माइ सजमेण तवेणय । सव्वदुल्खप्पहिणठ्ठा पक्कमति महेसिणो त्तिबेमि ॥ ३६ ॥

❀॥ इति मोल्खग्ग झयण अठाविस सम्मत्त ॥ २८ ॥❀

अमुक तपथी माप्प थती विशुद्धता) ४ सूक्ष्म–[1] सम्पराय (एटले इच्छाओ स्वल्प करवी ते), ५ यथाख्यात–[2] अकषाय [एटले क्रोध,मान,माया अने लोभनु उपशमन],ए पाच मकारे चारित्र पाळवाथी कर्मनो क्षय थायछे एम श्री तीर्थकर भगवाने भाख्युंछे. ३२-३३.

४ तप :–तपना बे मकार छे :–[1] बाह्य तप अने २ अभ्यतर-तप. बाह्य अने अभ्यंतर मत्येक तपना छ छ [3] भेद छे. [३४]. ज्ञानथी जीवादि भाव जाणी शकाय छे, दर्शनथी तेमां श्रद्धा उत्पन्न थाय छे, चारित्रथी कर्मनो क्षय थाय छे अने तपथी आत्मा विशुद्ध थाय छे. [३५]. सयम अने तपथी पूर्व कर्म खपावीने अने सर्व दुःखनो क्षय करीने महर्षिओ सिद्धिने माप्त थायछे. (३६).

॥ अठ्ठावीशमुं अध्ययन सपूर्ण. ॥

---

१ Reduction of desire २ Annihilation of sinfulness

३ आ सूत्रनुं त्रीशमुं आखुं अध्ययन ' तप 'नुंज छे तेमा विस्तार पूर्वक विवेचन छे.

अध्ययन २९. सम्यक्त पराक्रम.

सूयमे आउसतेणं भगवया एवमख्खायं । इह खलुसमत्त परक्कमे नामअझयणे समणेणं भगवया महाविरेणं कासवेणं पवेइय जं सम्मं सद्दहित्ता पत्तिय इत्ता रोयइत्ता फासइत्ता पालइत्ता तीरइत्ता किट्टइत्ता सोहइत्ता आराहइत्ता आणाए अणुपालइत्ता बहवे जीवा सिझति बुझंति मुच्चंति परिनिव्वायंति सव्वदुख्खाण मंतंकरिंति तस्सण अयमट्ठे एवमाहिज्जाइ तजहा

⊛ अध्ययन २९. ⊛

हे आयुष्मन्! नीचेनुं व्याख्यान १में श्री महावीर भगवान पासेथी सांभळ्युं छे :—आ सम्यक्त पराक्रम नामनुं अध्ययन काश्यप गोत्रने विषे उत्पन्न थयेला श्रमण भगवत श्री महावीरे कह्युंछे ; जे अध्ययन श्रध्धा पूर्वक मानवाथी, तेना प्रति रुचि राखवाथी, तेनो स्वीकार करवाथी, ते रुडी रीते पाळवाथी, ते प्रमाणे वर्तवाथी, तेनो अभ्यास करवाथी, ते समजवाथी, तेनी आराधना करवाथी अने गुरुनी आज्ञानुसार तेनुं सेवन करवाथी अनेक जीव सिध्धिने पाम्या छे, तत्वज्ञान प्राप्त करी शकया छे, कर्म बन्धनथी मुक्त थया छे, निर्वाण पहोंच्या छे अने सर्व दुःखनो अंत आणी शकया छे. आ सम्यक्त पराक्रम अध्ययनमां नीचेनी बाबतोनुं वर्णन करेलुं छे :—

---

१ श्री सुधर्मास्वामी जंबुस्वामी प्रत्ये कहे छे.

३.अ. सवेगो १ निव्वेगो २ धम्मसद्धा ३ गुरुसाहम्मिय सुस्सूसणया४ आलोयणया ५ निंदणया ६ गरहणया ७ सामाइए
२० ८ चउवीसत्थए ९ वदणे १० पडिक्कमणे ११ काउसग्गे १२ पच्चक्खाणे १३ थयथुइ मंगले १४ कालपडिलेहणया
१५ पायछित्तकरणे १६ खमावणया १७ सज्झाए १८ वायणया १९ पडिपुच्छणया २० परियट्टणा २१ अणुप्पेहा २२
२३३ धम्मकहा २३ सुयस्स आराहणया २४ एगग्गमणस निवेसणया २५ सजमे २६ तवे २७ वोदाणे २८

---

१ समवेग एटले मोक्षनो अभिलाषा. २ निर्वेद एटले ससारथी विरक्तता. ३ धर्म-श्रद्धा. ४ गुरु-साधर्मिक शुश्रूषणा एटले गुरु अने स्वधर्मी भाइओनी सेवा. ५ आलोचना एटले गुरुनी समक्ष पाप आलोववा ते, अथवा पाप निवेदन करवु ते. ६ निन्दा एटले पापने माटे आत्म निन्दा करवी ते ७ गर्हा एटले गुरु पासे स्वदोष निवेदन करवा ते. ८ सामायिक एटले शत्रु मित्र तरफ समान वृत्ति राखवी ते, अथवा आत्मानी नैतिक अने मानसिक विशुद्धता करवी ते ९ चतुर्विंशतिस्तव एटले चोवीश जिनवरोनी [तीर्थकरोनी] स्तुति १० वदन ११ प्रतिक्रमण १, १२ कायोत्सर्ग एटले काउसग्ग. १३ प्रत्याख्यान एटले पचखाण. १४ स्तव स्तुति मगल एटले कल्याणकारी स्तवन अने स्तुति. १५ काल प्रतिलेखना एटले योग्य काळे पडिलेहनादि करवु ते. १६ प्रायश्चित करण एटले पापनी निवृत्ति अर्थे तप करवु ते. १७ क्षमापना एटले अपराधनी क्षमा मागवी ते. १८ स्वाध्याय. १९ वाचना एटले गुरु पासेथी सूत्रना बोल लेवा, देवा ते. २० प्रतिपृच्छना एटले सदेह उपजे ते वावत गुरुने पूछवुं ते. २१ परावर्त्तन एटले सूत्रना पाठ वारवार बोली जवा ते. २२ अनुप्रेक्षा एटले सूत्रनुं मनन करवु ते. २३ धर्म-कथा. २४ श्रुत-आराधना एटले सूत्रनी आराधना. २५ एकाग्र मनः संन्निवेशना २ एटले मनने एकाग्र वृत्तिमा राखवु ते. २६ सयम. २७ तप. २८ व्यवदान एटले कर्मनो अत आणवो ते कर्म कापवां ते.

---

१ Expiation of sins पाप माटे प्रायश्चित. २ Concentiation of thoughts

सुहसाए २९ अप्पडिबद्धया ३० विवित्तसयणासणसेवणया ३१ विणिवट्टणया ३२ संभोगपच्चक्खाणे ३३ उवहिपच्चक्खाणे ३४ आहारपच्चक्खाणे ३५ कसायपच्चक्खाणे ३६ जोगपच्चक्खाणे ३७ शरीर पच्चक्खाणे ३८ सहाय पच्चक्खाणे ३९ भत्त पच्चक्खाणे ४० सब्भावपच्चक्खाणे ४१ पडिरूवणया ४२ वेयावच्चे ४३ सव्वगुणसंपन्नया ४४ वियरागया ४५

---

२९ सुखशाता एटले विषय सुखनी इच्छा निवारण करवी ते. ३० अप्रतिबद्धता [1] एटले प्रतिबंधरहित थवुं ते. ३१ विविक्त शयनासन सेवना एटले स्त्री, पशु, पंडकादि रहित शयनासन सेववुं ते. ३२ विनिवर्त्तना एटले विषयथी परांगमुख रहेवुं ते. ३३ *सम्भोग-प्रत्याख्यान एटले मंडळीमा आहार करवाना पच्चखाण करवा ते * ३४ उपधि प्रत्याख्यान एटले [रजोहरण, मुखवस्त्रिका पात्रादि जरुरनी वस्तुओ सिवाय बाकीनी] वस्तुओ राखवाना पच्चखाण करवा ते. ३५ आहार प्रत्याख्यान एटले (सदोष)आहारना पच्चखाण करवां ते. ३६ कषाय प्रत्याख्यान एटले क्रोध, मान, माया अने लोभना पच्चखाण करवां ते. ३७ योग प्रत्याख्यान एटले मन, वचन, कायाना योग अथवा व्यापारना पच्चखाण. [अर्थात मन, वचन, कायानो निरोध करवो ते]. ३८ शरीर प्रत्याख्यान एटले योग्य काळे शरीरनो त्याग करवो ते. ३९ सहाय प्रत्याख्यान एटले सहायक साथे राखवाना पच्चखाण करवा ते. ४० भक्त प्रत्याख्यान एटले भात (आहारपाणी.)ना पच्चखाण करवा ते. ४१ सद्भाव प्रत्याख्यान एटले सर्व संवर रुप पच्चखाण. ४२ प्रतिरुपता एटले स्थविर कल्पि साधुने योग्य वेष धारण करवो ते. ४३ वैयावृत्त्य एटले साधुओने आहारादि आणी आपवामा सहाय करवी ते. ४४ सर्व गुण सम्पन्नता एटले ज्ञानादि सर्व गुणे करीने सहित होवुं ते. ४५ वीतरागता एटले राग द्वेषनुं निवारण करवुं ते.

---

१ Mental independence * आने बदले प्रोफेसर जेकोबी एवो अर्थ करे छे के–'एकज मंडळी अथवा विभागमांथी आहारपाणी व्होरवानां पच्चखाण करवां ते.'

खंती ४६ मुत्ति ४७ अज्जवे ४८ मद्दवे ४९ भावसच्चे ५० करणसच्चे ५१ जोगसच्चे ५२ मणगुत्तया ५३ वयगुत्तया ५४ कायगुत्तया ५५ मणसमाधारणया ५६ वयसमाधारणया ५७ कायसमाधारणया ५८ नाणसंपन्नया ५९ दसणसंपन्नया ६० चरित्तसंपन्नया ६१ सोइंदियनिग्गहे ६२ चक्खुंदीय निग्गहे ६३ घाणिंदियनिग्गहे ६४ जिब्भिंदियनिग्गहे ६५ फासिंदियनिग्गहे ६६ कोहविजए ६७ माणविजए ६८ मायाविजए ६९ लोभविजए ७० पेज्जदोसमिच्छा दसणविजए ७१ सेलेसी ७२ अकम्मया ७३

---

४६ क्षान्ति एटले क्षमा. ४७ मुक्ति एटले निर्लोभता. ४८ आर्जव एटले सरलता. ४९ मार्दव अने निराभिमान. ५० भाव सत्य एटले अतरात्मानी विशुद्धि. ५१ करण सत्य एटले प्रतिलेखनादि क्रिया यथा विधि अने आळस विना करवी ते. ५२ योग-सत्य एटले मन, वचन, कायाना व्यापारमां साचापणुं राखवुं ते. ५३ मनो गुप्ति एटले मनने अशुभ पदार्थोथी संभाळवुं ते. ५४ वाग गुप्ति एटले वचनने अशुभ पदार्थोथी संभाळवुं ते ५५ काय-गुप्ति एटले कायाने अशुभ व्यापारथी संभाळवी ते. ५६ मनः समाधारणा एटले मनने शुभ स्थानने विषे स्थिर करवुं ते. ५७ वाक समाधारणा एटले वचनने शुभ कार्यमां स्थापवुं ते. ५८ काय समाधारणा एटले कायाने शुभ कार्यमां स्थापवी ते. ५९ ज्ञान सपन्नता.* ६० दर्शन सपन्नता. ६१ चारित्र-सपन्नता. ६२ श्रोतेन्द्रिय निग्रह. ६३ चक्षुरिन्द्रिय निग्रह. ६४ घ्राणेन्द्रिय-निग्रह. ६५ जिह्वेन्द्रिय-निग्रह. ६६ स्पर्शेन्द्रिय-निग्रह. ६७ क्रोध-विजय. ६८ मान विजय. ६९ माया विजय. ७० लोभ-विजय. ७१ प्रेम-द्वेष, मिथ्या दर्शन विजय. ७२ शैलशी १ एटले चतुर्दश गुणस्थानने विषे स्थायिपणुं अने ७३ अकर्मता एटले कर्मनो अभाव अथवा कर्म-रहितपणुं.

---

* Possession of Knowledge १. Stability

संवेगेणं भंते जीवे किं जणयइ । संवेगेणं अणुत्तरं धम्म सद्धं जणयइ । अणुत्तराए धम्म सद्धाए । संवगे हव्व मागच्छइ । अणताणु वधी कोहमाण माया लोभे खवेइ नवंच कम्मं न बंधइ । तप्पच्चइय चणं मिच्छत्त विसोहि काऊणे । दंसणाराहए भवइ । दसण विसोहीएण विसुद्धाए । अथ्थेगइए तेणेव भवगहणेण सिज्झइ । सोहीएणं विसुद्धाए । तच्च पुणो भवग्गहणं नाइक्कमइ ॥ १ ॥ निव्वेएणं भंते ज्जीवे किं जणयइ । निच्चेएण दिव्व माणुस तिरिछ्छिएसू कामभोगेसु (निव्वेयं हव्वमागच्छइ । सव्व विसएसु विरज्जइ । सव्वविसएसु विरज्जमाणे । आरभ परिग्गह परिच्चायं करेइ । आरंभपरिग्गहंपरिच्चायंकरेमाणे । ससारमग्ग वोच्छिदइ । सिध्धिमग्ग पडिवन्नेय भवइ ॥ २ ॥

१*शिष्य पूछे छे, " हे भदन्त ! मोक्षनी अभिलाषा करवाथी जीव शु उपार्जन करी शके छे ? " गुरु कहेछे, " हे शिष्य ! मोक्षाभिलाषथी जीव अनुत्तर[१] धर्म-श्रद्धा उपार्जे छे. अनुत्तर धर्म-श्रद्धाए करीने विशिष्ट[२] वैराग्य शीघ्रपणे प्राप्त थाय छे ; त्यार पछी ते (जीव) क्रोध, मान, माया अने लोभ ए चारे अनंतानुबंधी[३] कषायनो क्षय करे छे, नवा अशुभ कर्म बाधतो नथी, अने कषायना परिणामरुप जे मिथ्यात्व ते त्यागवाथी विशुद्ध थइने ते शुद्ध सम्यक्तनो आराधक थाय छे ; आ प्रमाणे आत्मा [दर्शन] शुद्ध करवाथी केटलाक जीव एकज जन्ममां सिद्धि प्राप्त करी शके छे; एम नहि तो सद्दर्शनथी त्रीजे भवे तो जरुर मुक्ति प्राप्त करे छे. (१). २ निर्वेद एटले संसारनी विरक्तताथी देव, मनुष्य, अने तिर्यचने लगता कामभोगथी जीवने शीघ्र त्याग बुद्धि उपजे छे;[४] सर्व विषयथी ते विरक्त थाय छे; अने तेम थवाथी ते आरंभ परिग्रहनो त्याग करे छे, अने तेम करवाथी जीव संसार मार्गने छोडीने मुक्ति मार्गमां प्रवेश करे छे. (२).

*प्रत्येक गाथानी शरुआतमां आ प्रमाणे प्रश्न पूछेलुंछे अने गुरु तेनो उत्तर आपेछे. परंतु आ भाषान्तरमा मात्र उत्तरज लखेलंछे, प्रश्ननी पुनरुक्ति करी नथी. १. Intense. २. Increased. ३ एवो गाढ के जेथी अनंता ससार बधे. ४ Feels disgust

धम्म सध्धाएण भते जीवे किं जणयइ । धम्म सध्धाएणं साया सोख्खेसुरज्जमाणे विरज्जइ । आगारधम्म चण चयइ । अणगारेण जिवे सारीर माणसाण दुख्खाण छेदण भेदण संजोगादिण वोछ्रेय करेइ । अव्वाबाहच सुह निवत्तेइ ॥ ३ ॥ गुरु साहम्मिय सूसूसणयाएण भते जीवे कि जणयइ । गुरु साहम्मिय सूस्सूसणयाएण विणय पडिवत्ति जणयइ । विणय पडिवन्नेयण जीवे अणच्चासायणसीले नेरइय तिरिख्खजोणिय मणुस्सदेव दुग्गईउ निरुभइ । वण रसजलण भत्ति बहुमाणयाए जणयइ । वण रसजलण भत्ति बहुमाणयाए मणुस्सदेव सुग्गइउ निबंधइ । सिध्धि सुग्गइ च विसोहइ । पसथ्थाइ चण विणय मूलाइं सव्व कज्जाइ साहेइ । अन्नेय बहवे जीवे विणइता भवइ ॥ ४ ॥

३. धर्म श्रद्धाथी जीवने मोज शोख अने सुख शाता उपर प्रथम जे राग होय छे तेनाथी ते विरक्त थाय छे ; तेथी ते गृह स्थाश्रमनो त्याग करे छे अने अणगारपणु अंगीकार करीने छेदन, भेदन, सयोग, वियोगादि शरीर अने मनना दुःखनो अंत आणेछे अने अवरोध रहित* मोक्ष सुखने पामेछे. (३). ४. गुरु अने सार्धमिकोनी सेवा करवाथी जीव विनय प्राप्त करी शके छे ; विनय अंगीकार करवाथी अने देव-गुरुनी अशातना न करवाथी जीव नर्क तिर्यंच योनिमा अथवा तो मनुष्य अने देवतानी [चांडाल, किल्विषादि] कुगतिमा उत्पन्न थतो नथी. गुरुनी प्रशसा, भक्ति अने सत्कार करवाथी जीव देवता अने मनुष्यनी उत्तम गतिने पामेछे, मोक्ष अने निर्मळ सद्गतिने प्राप्त थाय छे अने प्रशस्त विनय मूल सर्व कार्य साधे छे अने अन्य जीवोने पण विनयने विषे स्थापे छे. [४].

* Unchecked happiness,

आलोयणयाएणं भंते जीवे किं जणयइ । आलोयणयाएणं माया नियाण मिच्छा दंसणं सूल्लाणं मोक्खमग्ग विग्घाणं । अणंत ससार वध्धमाणाणं । उध्धरणं करेइ उज्जुभावंचणं जणयइ । उज्जुभाव पडिवन्नएयण जीवे अमाइ इथ्थिवेयं नपुंसक वेयच नबंधइ पुव्वबंध्धचणं निज्जरइ ॥५॥ निंदणयाएणं भंते जीवे किं जणयइ । निंदणयाएणं पच्छाणुताव जणयइ । पच्छाणुत्तावेणं विरज्जमाणे करणगुण सेढि पडिवज्जइ । करणगुणसेढिं पडिवणेय अणगारे मोहणिज्ज कम्मं उग्घाएइ ॥ ६ ॥ गरहणयाएणं भंते जीवे किं जणयइ । गरहणयाएणं अपुरक्कार जणयइ । अपुरक्कार गएणं जीवे अप्पसथ्थेहिंतो जोगेहिंतो नियत्तेइ पसथ्थेहिय पवत्तेइ पसथ्थ जोग पडिवणेयणं अणगारे अणतघाइ पज्जवेखवेइ ॥७॥

५. गुरुनी पासे पाप निवेदन [आलोयणा] करवाथी माया निदान अथवा तप-विक्रय एटले इन्द्रादि पद लेवाने माटे करेलुं तप, अने मिथ्यात्व दर्शनरूपी शल्य, जे मोक्ष मार्गने विषे विघ्न करनारां छे अने अनंत भवनां *वधारनारां छे, ते दूर थइ शके छे ; अने जीव सरलपणुं उपाजे छे अने ते वडे माया-रहित थइने स्त्रीवेद अने नपुंसकवेद बाधतो नथी अने पूर्वे बाधेलां कर्मनो क्षय करे छे. (५). ६. पोते करेला पापनी पोतानी मेळे निंदा [आत्म निंदा] करवाथी जीवने पश्चात्ताप थाय छे ; पश्चात्ताप थवाथी ते वैराग्य पामे छे, अने वैराग्यथी अपूर्व-करण गुण श्रेणी १ अंगीकार करे छे, अने ते वडे मोहनी कर्म खपावीने मुक्ति मेळवे छे. [६]. ७. गर्हा एटले गुरु समक्ष स्वदोष निवेदन करवाथी जीव अपुरस्कार २ [गर्व-भग] पामे छे ; अने गर्वभग [निराभिमानी] थवाथी अप्रशस्त [भूंडा] कर्मना योगथी ते निवर्त्ते छे अने प्रशस्त योग अंगीकार करे छे. अने प्रशस्त योगने प्राप्त थयेलो अणगार ज्ञानावरणादि अनंत घाति कर्मनो क्षय करे छे. [७].

*Migration of soul १क्रमे क्रमे अशुद्धता अदृश्य थती जता सरवाळे सद्गुणोनु त्राजवु उन्चुं चडतुं जायछे ते. By successively destroying moral impurities one arrives at higher and higher virtues २ Humiliation.

सामाइए भंते जिवे किं जणयइ सामाइएण सावज्जं जोग विरइं जणयइ ॥ ८ ॥ चओविसथ्थएण भते जीवे किं जणयइ । चओविसंथ्थएण दसण विसोहि जणयइ ॥ ९ ॥ वंदणएण भते जीवे किं जणयइ । वंदएण निया गोय कम्म खवेइ उच्चागोयकम्मनिबधइ सोहग्गंचणं अप्पडिहय आणाफल निवत्तइ दाहिणभावचणं जणयइ ॥ १० ॥ पडिक्कमणेण भते जीवे किं जणयइ पडिक्कमणेण वयछिद्दाइं पिहेइ पिहिय वय छिद्दे पुण जीवे निरुध्धासवे असवल चरित्ते अट्ठसु पवयणमायासु उवउत्ते अपुहत्ते सुप्पणिहिए विहरइ ॥ ११ ॥

---

८. सामायिक एटले समता, समानवृत्ति अथवा नैतिक अने मानसिक शुद्धिथी जीव सावद्य* पाप योगथी निवर्ते छे. (८). ९. चतुर्विंश (चोवीश) जीनवरो (तीर्थंकरो)नी स्तुति करवाथी जीव दर्शन-विशुद्धि अथवा सम्यक्त्वनी निर्मळता मेळवी शके छे [९]. १०. गुरुने वंदन करवाथी नीच गोत्रमां जन्म अपावनार कर्मनो क्षय थाय छे, अने उच्च गोत्रनां (मां जन्म थाय एवां) कर्म बधाय छे. ते सर्व लोकनी प्रीति मेळववाने भाग्यशाळी बनेछे अने अप्रतिहत आज्ञा[१] फळ [प्रभुत्व] पामे छे तथा सर्व लोकनी शुभेच्छा मेळवी शके छे. (१०). ११. प्रतिक्रमण [पडिक्कमणु] करवाथी जीव व्रतमां थता अतीचारनु[२] निवारण करी शके छे ; वळी ते वडे जीव आश्रवोने[३] रुंधी शके छे, निर्मल चारित्र पाळी शके छे, अष्ट प्रवचनने[४] विषे सावधान रही शके छे, सयम पाळवामां आळस करतो नथी; परतु सन्मार्गेने विषे इन्द्रियोने स्थापित करीने सयम मार्गे विचरे छे (११)

---

*Sinful [१] Looked upon as an authority लोक प्रियता अने बहु मानपणानी परिसीमा वतावीछे. [२] Transgressions व्रतनी विराधना चार प्रकारे थइ शके छे. अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतीचार, अणाचार ते पिनल कोडना, Intention, preparation, attempt and completion ने मळता छे. [३] कर्मोनो चाल्यो आवतो प्रवाह Flowing of the Karmans [४] पाच सुमिति अने त्रण गुप्ति २४मा अध्ययनमा ते विषे विस्तार पूर्वक विवेचन छे.

काउस्सग्गेणं भंते जीवे किं जणयइ । काउस्सग्गेणं तीयपडुप्पन्नं पायच्छित्तं विसोहेइ । विसुद्ध पायच्छित्तेय जीवे निव्वुयहियए । उहरिय भरोव्व भारवहे । पसत्थझाणो वगए सुहं सुहेणं विहरइ ॥ १२ ॥ पच्चखाणेणं भंते जीवे किं जणयइ । पच्चक्खाणेण आसवदाराइं निरुंभइ पच्चक्खाणेणं इच्छानिरोहं जणयइ इच्छानिरोहगएणं जीवे सव्वदव्वेसु विणीयतण्हे सीलभूए विहरइ ॥१३॥ थयथुइ मंगलेणं भंते जीवे किं जणयइ । थयथुय मंगलेणं नाणदंसण चरित्त बोहिलाभं जणयइ नाणदंसण चरित्त बोहिलाभ संपण्णे जीवे अंतकिरियं कप्पविमाणो ववत्तियं आराहण आराहेइ ॥ १४ ॥ कालेपडिलेहणयाएण भंते जीवे किं जणयइ । कालपडिलेहणयाएणं नाणावरणिज्ज कम्मं खवेइ ॥१५॥

---

१२. कायोत्सर्ग [काउसग्ग]थी पूर्वनां अने वर्तमान कालनां अतीचार दूर थायछे, अने आ प्रमाणेना प्रायश्चित (आलोचना) थी आत्मा विशुद्ध थाय छे, अने ते वडे जेम भारवाहक (मजूर) पोताना शिर परनो बोजो उतरवाथी स्वस्थ थाय छे, तेम तेनु हृदय पण स्वस्थ थाय छे; मन स्वस्थ थवाथी प्रशस्त ध्यान धरी शकाय छे अने तेथी सुखमां विचरी शकाय छे. [१२]. १३.प्रत्याख्यान एटले पच्चखाणथी आश्रवद्वारो बंध करी शकाय छे. पच्चखाणथी इच्छानो निरोध करी शकाय छे; इच्छानो निरोध करवाथी जीव सर्व द्रव्य तरफ निस्पृही अने तृष्णारहित थइने विचरी शके छे. (१३). १४. स्तवन अने स्तुतिथी ज्ञान दर्शन अने चारित्रनो लाभ प्राप्त [धर्म-प्राप्ति] करी शकाय छे; बोधि-लाभ प्राप्त थवाथी जीव ज्ञान साधी शके छे, अने तेम थवाथी संसार कर्मनो अंत आणी शके छे, अथवा तो कल्प अने विमानादि देव लोकमां उत्पन्न थाय छे. [१४]. १५ काल-प्रतिलेखन (प्रत्युपेक्षणा) एटले योग्य काळे पडिलेहण करवाथी ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षय थाय छे. [१५].

उ.अ. पायच्छित्तकरणेणं भंते जीवे किंजणयइ । पायच्छित्तकरणेणं पावकम्मं विसोहिं जणयइ निरईयारेयावि भवइ । सम्मंचणं
२९ पायच्छित्तं पडिवज्जमाणे मग्गच मग्गफलंच विसोहइ आयारंच आयारफलच आराहेइ ॥ १६ ॥ खमावणयाएण भंते जीवे किंजणयइ खमावणयाएण पल्हायणभावं जणयइ । पल्हायणभाव मुवगएय सव्वपाण भूय जीवसत्तेसु
२४१ मेत्तीभावंच उप्पाएइ मेत्तीभाव मुवगएयावि जीवेभाव विसोहिं काउण निब्भए भवइ ॥ १७ ॥ सज्झाएणं भंते जीव किंजणयइ । सज्झाएण नाणावरणिज्ज कम्म खवेइ ॥ १८ ॥ वायणयाएण भंते जीवे किंजणयइ वायणयाएण निज्जर जणयइ । सुयस्स अणासायणाए वट्टइ सुयस्स अणासायणयाए वट्टमाणेतित्थ धम्म अवलंबइ । तित्थ धम्म अवलंब माणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ ॥ १९ ॥

१६, प्रायश्चित्त करवाथी पाप छेदाय छे अने अतीचार रहित थवाय छे जे सन्मार्गे रहीने प्रायश्चित्त करे छे ते ज्ञान मार्गनो हेतु अने फळ (अर्थात–सम्यक्त) प्राप्त करी शके छे, अने (शुद्ध) आचार अथवा चारित्रनुं फळ [अर्थात–मुक्ति] मेळवी शके छे. [१६]. १७. क्षमापना एटले खमाववाथी अथवा अपराधनी क्षमा मागवाथी मानसिक सुख [उल्लास–भाव] प्राप्त करी शकाय छे, अने ते मळवाथी सर्व प्राण, जीव, भूत अने सत्व [प्राणी मात्र] तरफ मित्र भाव उत्पन्न थाय छे, आवा मित्र भावथी जीव राग द्वेष त्यागीने सप्त भय रहित थाय छे. (१७). १८. स्वाध्यायथी जीव ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षय करी शके छे. [१८]. १९. वाचना एटले सूत्र–पठनथी कर्मनो क्षय करी शकाय छे अने सूत्र–सिद्धांतोनी अनाशातना (रक्षण) थइ शके छे, सिद्धांतोनी अनाशातनाने विषे वर्तवाथी जीव श्री तीर्थंकरोना धर्मने पामी शकेछे, जे धर्म वडे महान कर्मोनो अने भव सागरनो अंत आणी शकाय छे. (अर्थात–मुक्ति मेळवी शकाय छे). (१९)

पडिपुछणयाएणं भंते जीवे किंजणयइ पडिपुछणयाएणं सुत्तथ्थ तदुभयाइ विसोहेइ । कंखा मोहणिज्जा कम्मं वोछिंदइ ॥२०॥ परियट्टयाएण भंते जीवे किंजणयइ । परियट्टयाएण वजणाइ जणयइ । वजण लद्धि च उप्पाएइ ॥ २१ ॥ अणुप्पेहाएण भंते जीवे किं जणयइ । अणुप्पेहाएण आओयवज्जाउ सत्त कम्म पगडीओ धणिय बधण बधाओ सिढिल बद्दण बद्धाउ पकरेइ । दीहकालट्ठिइ याओ रहस्स कालठिइयाओ पकरेइ । तिव्वाणुभावाओ मदाणु भावाउ पकरेइ । बहु पएसगाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ । आओय चण कम्म सिय बधइ सियनो बधइ । असाया वेयणिज्ज चण कम्म नो भुज्जो भुज्जो उवाचि णाइ । अणाइय चण अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरंत ससार कतार खिप्पामेव वीइवयइ ॥ २२ ॥

२०. प्रतिपृच्छना एटले संदेह उपजे ते गुरुने पूछवाथी सूत्र अने सूत्रार्थ स्पष्ट समजी शकाय छे, अने शंका (संदेह) तथा मोहनी कर्मनो नाश थाय छे. [२०]. २१. परावर्त्तन एटले सूत्र वारंवार पाठ करवाथी व्यजनादि अक्षरोनुं ज्ञान थाय छे अने तेम थवाथी पदना पद याद रही शके छे. (२१). २२. अनुप्रेक्षा एटले सूत्रोनुं मनन करवाथी आयुःकर्म सिवाय बाकीना सात कर्म, जेना गाढ बंधन वडे जीव बंधायेलो छे, तेनी गाठ ढीली करी शकाय छे, ते कर्मोनी दीर्घ स्थितिने टूंकी करी शकाय छे, तेना तीव्र भावने मंद करी शकाय छे अने " जीवना घणा प्रदेशोने [भागोने] ए कर्म लागेला होय ते ओछां करी शकाय छे. "* ते वडे आयुःकर्म बधाय या न बंधाय परंतु वेदनी कर्म तो फरीथी बंधातां नथी, अने आदि तथा अतरहित, चतुर्गतिरुप ससार अटवीनो शीघ्र पार पामी शकाय छे. (२२).

* टीकाकार कहेछे के आ वाक्य केटलीक मतोमां पाछळथी दाखल करायु छे.

धम्म कहाएण भते जीवे किं जणयइ ? धम्म कहाएणं निज्जरं जणयइ पवयणं पभावेइ । पवयणं पभावएणं । जीवे आगमिसरस भद्दत्ताए कम्म निबंधइ ॥ २३ ॥ सुयरस आराहणयाएण भते जीवे किं जणयइ । सुयरस आराहणयाएण आणाण खवेइ नय सकिलिस्सइ ॥ २४ ॥ एगगामण सनिवेसणयाएणं भते जीवे कि जणयइ । एगगामण सनिवेसणयाएणं चित्त निरोह करेइ ॥ २५ ॥ सजमेणं भते जीवे कि जणयइ । सजमेणं अणएहयत्त जणयइ ॥ २६ ॥ तवेण भते जीवे किं जणयइ । तवेण वोदाण जणयइ ॥ २७ ॥ वोदाणेण भते जीवे कि जणयइ वोदाणेण अकिरिय जणयइ । अकिरियाए भवित्ता तओपच्छा सिझई बुझई मुच्चई परिनिव्वायइ सव्व दुखाण मतं करेई ॥ २८ ॥

---

२३. धर्म-कथा करवाथी जीव कर्मनो क्षय करी शके छे; धर्म-कथाथी सिद्धांतोनो प्रभाव वधारी शकाय छे; अने जिन शासननो प्रभाव वधारवाथी जीव आवता कालने माटे शुभ कर्म उपार्जे छे. [२३]. २४ श्रुत-आगमनाथी जीव अज्ञानतानो क्षय करी शके छे अने रागादिके करीने क्लेश पामतो नथी. (२४). २५. एकाग्र मनः सन्निवेशनाथी चित्त-निरोध थइ शके छे एटले के मनने उन्मार्गे जतुं अटकावी शकाय छे. [२५]. २६. सयम अथवा चारित्र वडे पांचे आश्रवोने रुधी शकाय छे, अर्थात्-पाप कर्मथी मुक्त रही शकाय छे. [२६]. २७. तप वडे पूर्वे बांधेला कर्मनो क्षय अने आत्मानी शुद्धि करी शकाय छे. (२७). २८. व्यवदान एटले कर्मने छेदवाथी जीव शुक्ल ध्याननो चोथो पायो जे अक्रिया छे ते उपार्जे छे; अक्रियापणु पामवाथी जीव सिद्धि, बुद्धि, मुक्ति अने निर्वाण प्राप्त करी शके छे अने सर्व दुःखनो अंत आणी शके छे. [२८].

सुहसाएणं भंते जीवे किं जणयइ सुहसायाएणं अणुस्सुयत्तं जणयइ। अणुस्सुएणं जीवे अणुकंपए अणुब्भडे विगयसोए चरित्त मोहणिज्जं कम्मं खवेई ॥ २९ ॥ अपडिबद्धयाएणं भंते जीवे किं जणयइ । अपडिबद्धयाएणं निस्संगत्त जणयइ । निस्स गत्तेणगएण जीवे एगे एगगाचित्ते दियाय राओय असज्जमाणे अपडिबध्धेयावि विहरइ ॥ ३० ॥ विवित्त सयणासण सेवणयाएण भंते जीवे कि जणयइ । विवित्त सयणासण सेवणयाएणं चारित्त गुत्तिं जणयइ चरित्त गुत्तेयण जीवे विवित्ताहारे दढचरित्ते एगतरए मोक्ख भावपडिवणे अट्ठ विहकम्म गठि निज्जरेइ ॥ ३१ ॥ विणियट्टणयाएणं भंते जीवे किं जणयइ । विणियट्टणयाएण पावाणं कम्माण अकरणयाए अब्भुठेइ पुव्वबध्धाणय निज्जरणयाए तानियत्तइ तओ पच्छा चाउरंत ससार कतार विइवयइ ॥ ३२ ॥

२९. सुख शाता एटले विषय सुखनी इच्छा निवारण करवाथी जीव विषय सुख प्रति निस्पृहा [इच्छा रहितपणुं] उपार्जे छे; अने एवुं अनुत्सुकपणुं प्राप्त थवाथी जीव दयावान, अभिमान रहित अने शोक रहित थाय छे अने चारित्र* मोहनी कर्मने खपावे छे. [२९]. ३०. अप्रतिबद्धता एटले प्रतिबंध रहित थवाथी जीव निस्संगत्व एटले संग रहितपणुं [निग्रंथपणु] उपार्जे छे, अने ते वडे धर्मने विषे एकाग्र वृत्ति राखी शके छे, अने रात्रि दिवस [निरतर] राग द्वेष रहित थइने अप्रतिबद्धपणे विहार करे छे. [३०]. ३१. विविक्त शयनासन सेवना एटले स्त्री, पशु, पडकादि रहित शयनासन सेववाथी जीव चारित्र गुप्ति [रक्षण] प्राप्त करी शके छे, सूझतो [शरीरने पुष्ट बनावे एवो नहि] आहार करे छे, चारित्रमां दृढ रहे छे, संयमने विषे सावधान रहे छे, मोक्षने विषे मति १ राखे छे, अने अष्ट प्रकारना कर्मनी गाठने तोडी नांखे छे (३१). ३२. विनिवर्त्तना एटले विषयथी पराङ्मुख रहेवाथी जीव पाप कर्म रहित थाय छे अने पूर्वे बांधेला कर्मनो क्षय करी शके छे. अने त्यार पछी चतुर्गति रुप संसार-कान्तार (अटविनो) पार पामी शके छे. [३२].

* जे मोहनी कर्मथी धर्म ध्यान आचरी न शकाय–तेना २५ भेद छे कषायनी चोकडीना सोळ भेद अने नवनो कषाय.

१ उत्कंठा Yearning.

संभोग पच्चख्खाणेणं भंते जीवे किं जणयइ । संभोग पच्चख्खाणेणं आलंबणाइं खवेइ निरालंबणस्सय आयतट्ठिया
जोगा भवंति सएण लाभेण संतुस्सइ । परस्सलाभंनो आसाएइ नोतक्केइ नोपिहेइ नोपत्थेइ नोअभिलस्सइ ।
परस्सलाभअणासाएमाणे अतक्केमाणे अपीहेमाणे अपत्थेमाणेअणभिलस्समाणे दोच्चं सुहसेज्जं उवसं पज्जित्ताणं
७४५ विहरइ ॥ ३३ ॥ उवहिपच्चख्खाणेण भंते जीवे किं जणयइ । उवहि पच्चख्खाणेण अपलिमथं जणयइ
निरुवहिएण जीवे निक्कख्खे उवहि मंतरेणय नयसंकिलिस्सइ ॥ ३४ ॥ आहार पच्चख्खाणेण भंते जीवे किं
जणयइ आहारपच्चख्खाणेण जीवियाससप्पउगं वोच्छिंदइ जीवियाससप्पउगं वोच्छिंदित्ता जीवे आहारमंतरेणनय
संकिलिस्सइ ॥ ३५ ॥

---

३३ सम्भोग–प्रत्याख्यान एटले *मंडळमां [सौनी साथे बेसीने] आहार करवाना पचखाण करवाथी जीव आलम्बना दूर करी शके छे, अनालम्ब थवाथी ते आत्मानो अर्थ (मोक्ष) साधी शके छे, पोताने मळेला लाभमांज संतोष माने छे, पारकाने थयेला लाभने ते वांछतो नथी, तेनी इच्छा करतो नथी, स्पृहा करतो नथी अथवा तो तेनी याचना करतो नथी; अने बीजा साधुओनी इर्षा कर्या सिवाय ते जुदा उपाश्रयमां रहे छे (३३). ३४. उपधि–प्रत्याख्यान एटले रजोहरण, मुख वस्त्रिका, पात्रादि जरुरनी वस्तुओ सिवाय बीजी वस्तुओ राखवाना पचखाण करवाथी निर्विघ्ने स्वाध्याय [अभ्यास] करी शकाय छे; उपधि रहित जीव वस्त्रादिनी इच्छा रहित थइ शके छे अने क्लेश पामतो नथी. [३४]. ३५. आहार–प्रत्याख्यान एटले (सदोष) आहारना पचखाण करवाथी जीव जीवितव्यनी आशा राखतो नथी, अने जीवितव्यनी आशा रहित जीव आहारना अभावे क्लेश पामतो नथी.(३५).

---

*आने बदले मो. जेकोबी एवो अर्थ करेछे के ' एकज मंडळ, अथवा विभागमांथी आहार व्होरवाना पचखाण करवाथी. '

वीयरागयाएणं भंते जीवे किं जणयइ वीयरागयाएणं नेहाणुबंधणाणिय तएहाणुं बंधणाणिय वोछिंदइ मणुना मणुणेसु सद्दफरिस रसरुव गंधेसु चेव विरज्जइ ॥ ४५ ॥ खंतीएणं भंते जीवे किं जणयइ । खतीएणं परीसहे जिणयइ ॥ ४६ ॥ मुत्तीएणं भंते जीवे किं जणयइ । मुत्तीएणं अकिंचणं जणयई । अकिंचणेय जिवे अथ्थ लोलाणपुरिसाण अप्पथ्थणिज्जे हवई ॥ ४७ ॥ अज्जवयाएण भंते जीवे किं जणयइ अज्जवयाएण काउजूयय भावजूययं भासुजूययं । अविसवायणजणयइ अविसंवायण संपन्नयाणं जीवे धम्मस्सु आराहए भवइ ॥ ४८ ॥ मद्दवयाएणं भंते जीवे किं जणयइ मद्दवयाएणं अणुस्सियत्त जणयइ अणुस्सियत्तेणं जीवे मिउमद्दव सपन्ने अठमयट्ठाणाई निठवेइ ॥ ४९ ॥

---

४५. वीतरागता एटले राग द्वेष रहित थवाथी जीव स्नेह अने तृष्णानां बंधन छेदी शके छे; अने शुभाशुभ शब्द, स्पर्श, रस, रुप अने गंधथी विरक्त थाय छे.[४५]. ४६.क्षान्ति एटले क्षमा राखवाथी जीव परिसहने जीती शके छे,(४६). ४७. मुक्ति एटले निर्लोभताथी जीव अकिंचनता(परिग्रहरहितपणु) उपार्जे छे; अने एवो अकिंचन एटले अर्थ रहित जीव *द्रव्यार्थी लोको [चोर वगेरे] ने अप्रार्थनीय थाय छे.* [४७]. ४८. आर्जव एटले सरलताथी जीव कायानी [अथवा कार्यनी], भावनी अने भाषानी सरलता प्राप्त करी शके छे, अने अविसम्वाद (सत्य-शीलता) पामे छे; अने अविसंवाद संपन्न जीव धर्मनो आराधक बने छे, [४८]. ४९. मार्दव एटले निराभिमानथी जीव अहंकारनो अभाव उपार्जे छे; अने एवो मान त्यागी जीव मृदु अने कोमल स्वभावनो थाय छे, अने अष्ट[1] मद स्थाननो क्षय करी शके छे. [४९].

---

* आने बदले मो. जेकोबी एवो अर्थ करे छे के 'द्रव्यनी इच्छाने वश थतो नथी.' १ आठ मद–जाती मद, कूळ मद, तप मद, रुप मद, बळ मद, लाभ मद, ज्ञान मद अने ऐश्वर्य मद.

उ.अ २९ भावसच्चेण भंते जीवे किं जणयइ भावसच्चेणं भावविसोहिजणयइ भावविसोहिंए वट्टमाणे जीवे अरहंत पणत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठेइ अरहंत पणत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुठित्ता परलोगस्स धम्मस्स आराहए भवइ ॥ ५० ॥ करणसच्चेणं भंते जीवे कि जणयइ करणसच्चेणं जीवे करणसत्ति जणयइ करणसच्चे वट्टमाणे जीवे

२४० जहावाइ तहाकारियावि भवइ ॥ ५१ ॥ जोगसच्चेण भंते जीवे कि जणयइ । जोगसच्चेण विसोहेइ ॥ ५२ ॥ मणगुत्तयाएण भंते जीवे कि जणयइ मणगुत्तयाएण जीवे एगग्ग चित्त जणयइ एगग्ग चित्तेणजीवे मणगुत्तेसंजम माराहए भवइ ॥ ५३ ॥ वयगुत्तयाएण भंते जीवे कि जणयइ । वयगुत्तयाएणं निव्विकारत्त जणयइ । निव्वि-कारेण जीवे वयगुत्ते अज्झप्प जोग साहणजुत्तेय वि भवइ ॥ ५४ ॥

---

५०. भाव-सत्य एटले साचा भावथी जीव मननी विशुद्धि प्राप्त करे छे, अने भाव विशुद्ध जीव श्री जिन-भाषित धर्म आराधे छे; अने धर्मने विषे सावधान रहेवाथी परलोके पण ते श्री अर्हत प्रणीत धर्मनो आराधक थाय छे. [५०]. ५१. करण अथवा क्रिया-सत्य एटले प्रतिलेखनादि क्रिया यथाविधि करवाथी जीव क्रिया-सामर्थ्य मेळवे छे, अने क्रिया-सत्य जीव जे प्रमाणे बोले ते प्रमाणे वर्ते छे. (५१). ५२ योग-सत्य एटले मन, वचन, कायाना सत्य व्यापारथी मन, वचन, काया निर्दोष थाय छे (५२). ५३ मनो-गुप्ति एटले मनने अशुभ पदार्थोथी संभाळवाथी एकाग्रवृत्ति प्राप्त थाय छे; अने एवो एकाग्रवृत्ति वाळो जीव संयमनो आराधक [पाळक] थाय छे. [५३]. ५४. वाग-गुप्ति एटले वचनने अशुभ पदार्थोथी संभाळवाथी जीव निर्विकारपणु प्राप्त करी शके छे, अने निर्विकारपणु पामवाथी जीव अध्यात्म-योग साधी शके छे. (५४).

कायगुत्तयाएण भंते जीवे किं जणयइ । कायगुत्तयाएण संवरं जणयइ । संवरेणं कायगुत्ते पुणोपावासवनिरोहं करेइ ॥ ५५ ॥ मणसमाहारणयाएण भंते जीवे कि जणयइ । मणसमाहारण्याएणं एगग्ग जणयइ एगग्ग जणइत्ता नाण पज्जवे जणयइ नाण पज्जवे जणइत्ता सम्मत्त विसोहइ मिच्छत्तंचनिज्जरेइ ॥ ५६ ॥ वइसमाहारणयाएणं भंते जीवे कि जणयइ । वइसमाहारणयाएण दंसणपज्जवेविसोहेइ दंसणपज्जवेविसोहित्ता सुलभबोहियत्तंनिव्वत्तेइ दुल्लभ बोहियत्त निज्जरेइ ॥५७॥ कायसमाहारणयाएण भंते जीवे कि जणयइ । कायसमाहारणयाएण जीवे चरित्तपज्जवे विसोहेइ । चरित्तपज्जवे विसोहित्ता अहक्खाय चरित्तपज्जवे विसोहेइ अहक्खाय चरित्तपज्जवेविसोहित्ता चत्तारिकेवलि कम्मसे खवेइ । तउ पच्छा सिझइ बुझइ मुच्चइ परिनिव्वायइ सव्वदुक्खाण मतकरेइ ॥ ५८ ॥

५५. काय-गुप्ति एटले कायाने अशुभ व्यापारथी सभाळवाथी जीव *संवर-योग उपार्जे छे, अने तेम थवाथी पापाश्रवनो निरोध करी शके छे. [५५]. ५६. मन-समाधारणा एटले मनने शुभ स्थानने विषे स्थापवाथी जीव धर्ममा स्थिर वृत्ति अथवा एकाग्रपणुं पामे छे, अने एवी एकाग्रवृत्ति प्राप्त थवाथी ज्ञानना पर्याय पामी शकाय छे जे सम्यक्तने निर्मल करे छे अने मिथ्यात्वनो क्षय करे छे. [५६]. ५७, वाक-समाधारणा एटले वचनने शुभ कार्यमा स्थापवाथी दर्शन विशुद्ध थाय छे; सम्यक्त निर्मल थवाथी सुलभ बोधित्व प्राप्त थाय छे अने दुर्लभ बोधित्वनो नाश थाय छे. (५७). ५८. काय-समाधारणा एटले कायाने शुभ कार्यमां स्थापवाथी चारित्र निर्मल थाय छे, अने तेम थवाथी जीव यथाविधि सयम पाळी शके छे अने ते वडे चार केवलि कर्मना अंश (वेदनी, आयु, नाम अने गोत्र)नो क्षय करी शके छे. त्यारपछी जीव सिद्धि, बुद्धि, मुक्ति अने निर्वाण प्राप्त करी शके छे अने सर्व दुःखनो अंत आणी शके छे. [५८].

*सुमिति अने गुप्तिथी आश्रवने रोकवुं ते.

नाणसपन्नयाएण भते जीवे किं जणयइ नाणसपन्नयाएण जीवे सव्वभावाभिगमं जणयइ नाणसपन्नेणं जीवे चाउरत ससार कतारे नविणस्सइ जहासुइ ससुत्ता पटियाविनविणस्सइ । तहा जीवो निससुत्तो ससारे नविणस्सइ नाण वि-

२५१ णय तवचरित्तजोगे म्पाउणइ ससमयपरसमय सघायणिज्जे भवइ ॥ ५९ ॥ दसण सपन्नयाएण भते जीवे किं जणयइ दसणसपन्नयाएणं भवमिछुत्त्छेयणकरेइ । पर नविझायइ पर अविझायमाणे अणुत्तरेणंनाणदसणेण अप्पाण सजोएमाणेसम्मभावेमाणे विहरइ ॥ ६० ॥ चरित्त सपणयाएण भते जीवे कि जणयइ । चरित्त सपणयाएण सेलेसीभावजणयइ । सेलेसीभाव पडिवणेय अणगारे चत्तारि केवलि कम्मसे खवेइ । तओ पछा सिझइ बुझइ मुचइ परिनिव्वायइ सव्वदुक्खाण मत करेइ ॥ ६१ ॥

५९. ज्ञान–सपन्नताथी *जीव–अजीवनु स्वरुप (तत्व ज्ञान) जाणी शकाय छे * अने एवो तत्व ज्ञान सपन्न जीव चतुर्गति ससाररुप अटविने विषे भटकी मरतो नथी. जेम सूत्र [दोरो] परोवेली सोय कचरामां खोवाइ जती नथी तेम सूत्र [सिद्धान्त] ज्ञाने करीने सहित जीव संसारमा गुम थतो नथी. ते ज्ञान, दर्शन, तप अने चारित्रना योग सम्यक प्रकार साधे छे, अने पोताना तेमज पर धर्मना शास्त्रोमा निपुणता मेळवे छे अने प्रधान [1] पुरुष [अजीत] गणाय छे. [५९]. ६०. दर्शन–सपन्नताथी भव (भ्रमण)नु कारण जे मिथ्यात्व तेने छेदी शकाय छे, अने आत्मामा [ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनो] जे प्रकाश होय छे तेनो नाश थतो नथी, परतु ते पोताना आत्माने ज्ञान दर्शन युक्त राखीने सम्यक्त भावथी विचरे छे [६०] ६१. चारित्र–सपन्नताथी जीव शैलेशीभाव एटले मेरु पर्वतना जेवी दृढता उपार्जे छे; अने ते वडे जीव चार केवलि कर्मना अंशनो क्षय करी शके छे, अने त्यार पछी सिद्धि, बुद्धि, मुक्ति अने निर्वाण पामे छे अने सर्व दुःखनो अत आणी शके छे. (६१).

*आने बदले मो. जेकोबी एवो अर्थ करे छे के ' शब्द अने शब्दार्थ जाणी शके छे. १ Invincible

याए तप्पढमयाएण जहाणुपुव्विं अठाविसइ विहं मोहणिज्जं कम्मं उग्घाणु । पंचविह नाणावरणिज्ज नवविहं दसणावरणिज्ज पचविह अतराय एए तिणिवि कम्मसे जुगवं खवेइ तओ पच्छा अणुत्तर अणत कसिण पडिपुणं निरावरण वितिमिर विसुद्धं लोगा लोग प्पभावग केवल वरनाण दसण समुप्पाडेइ जाव सजोगी भवइ ताव इरियावहियं कम्म निबधइ सुह फरिस दुसमयठिइयं तजहा तंपढम समए बद्ध बीइय समए वेदिय तइए समए निज्जिन्नं त बध्ध पुठ्ठ उदिरिय वेइय निज्जिन्न सेयकालेय अकम्मयावि भवइ ॥ ७१ ॥ अहाउयं पालइत्ता अतोमुहुत्तध्धावसेसाउए जोग निरोहं करेमाणे सुहुमकिरिय अप्पडिवाइय सुक्कझाण झायमाणे तप्पढमयाए मणजोगं निरुंभइ मणजोगं निरूभइत्ता वयजोगं निरुंभइ वइजोग निरुभइत्ता कायजोगं निरुभइ कायजोग निरुभइत्ता आणापाण निरोहकरेइ आणापाण निरोहंकरित्ता इसिं पंच रहस्स क्खरुच्चारणध्धाएयण अणगारे समुछिन्न किरिय अनियट्टि सुक्क

लोक प्रकाशक एवुं केवल ज्ञान-दर्शन प्राप्त करे छे, ज्यां सुधी जीव संयोगी [एटले मन, वचन, कायाना व्यापारमा] रहे छे त्या सुधी ते इर्या-पथिक [एटले हालवा चालवाथी लागता] कर्म बांधे छे; ते सुख स्पर्शनी स्थिति मात्र द्वि समय (बे पळ) नी छे; प्रथम पळे ते कर्म बंधाय छे, बीजी पळे ते अनुभवाय छे अने त्रीजी पळे तेनो लय थाय छे. आ प्रमाणे कर्म बधाय छे, जीवने ते स्पर्श करे छे, तेनो उदय थाय छे, ते अनुभवाय छे अने तेनो नाश थाय छे, अने भविष्यकालमां जीव कर्मरहित बने छे. (७१).
७२. आ प्रमाणे केवल ज्ञान प्राप्त थया पछी अने अवशेष मुहूर्त मात्र आयुष्य गाळ्या पछी जीव मन, वचन, कायाना व्यापारनो निरोध करे छे अने शुक्ल ध्याननी त्रीजी पंक्तिमां प्रवेश करे छे, जेमांथी पाछा पडवापणुं नथी अने जेमा मात्र सूक्ष्म क्रियानीज जरुर छे. प्रथम ते मनोयोग रुंधे छे, पछी वचन-योग रुंधे छे, त्यारपछी काया-योग रुंधे छे अने छेवटे श्वासने रुंधे छे. पाच ह्रस्व

झाण झायमाणे वेयणिज्जं आउयं नामं गोत्तं चएण चत्तारिविकम्मंसे जुगवं खवेइ ॥ ७२ ॥ तउ उरालिय तेय कम्माइंच सव्वाहि विप्पजहाणाहिं विप्पजहित्ता उजुसेढिपत्ते अफुसमाणगई उड्ढ एगममएण अविग्गहेण त॰थ गता सागारो वउत्ते सिझइ बुझइ मुच्चइ परिनिव्वायइ सव्वदुख्खाण मत करेइ ॥ ७३ ॥ एस खलु सम्मत्त परक्कमस्स अझयणस्स अट्ठेसमणेण भगवया महावीरेण आघविए पन्नविए परुविए दसिए निदसिए उवदसिए त्तिबेमि

@ ॥ इति समत्त परक्कमनाम झयण ओगनतिसमं सम्मत्त ॥ २९ ॥ @

अक्षरनो उच्चार करवामां जेटलो वखत लागे तेटला वखतमा ते शुक्ल-ध्याननी चोथी पक्तिमा पहोंचे छे अने शैलेशी अवस्था अनुभवे छे, अने वेदनी, आयु, नाम अने गोत्र ए चार कर्मना अश एकी साथे खपावे छे. (७२). ७३. वेदनीयादि चारे कर्म खपाव्या पछी *औदारिक, [1]कार्मण अने [2]तेजसादि शरीर तजीने जीव ऋजुश्रेणी [सीधी लीटी]नु स्वरुप धारण करीने एक क्षणमा कशाने स्पर्श कर्या सिवाय अने लेश मात्र जग्या रोक्या सिवाय उर्ध्व गतिने विषे चाल्यो जाय छे; अने मोक्ष स्थानने विषे पहोंच्या पछी साकार रुप [ज्ञानोपयोग युक्त] धारण करे छे, अने सिद्धि, बुद्धि, मुक्ति अने निर्वाण प्राप्त करेछे अने सर्व दुःखनो अत आणे छे. [७३]. सम्यक्त पराक्रमनो सत्यार्थ आ प्रमाणे श्रमण भगवत श्री महावीर देवे कह्यो छे, प्रकट कर्यो छे, प्ररुप्यो छे अने दर्शाव्यो छे

* ॥ ओगणत्रीसमु अध्ययन संपूर्ण ॥ *

---

* जे शरीरमा हाड मास होय ते. १—२ जीव साथे आ बे सुक्ष्म शरीर रहे छे. देवताओने औदारिक शरीर न होय पण तेने बदले वैक्रिय शरीर होय, जेथी ते नानु मोटु स्वरुप धारण करी शके. पांचमुं आहारक शरीर. चौद पूर्व धारी मुनीराज तीर्थंकरनी रिद्धि प्रमुख जोवा एक हाथ प्रमाण देह धारण करे ते.

अध्ययन ३०. तपनो मार्ग.

जहाउ पावगं कम्मं रागदोस समज्जियं । खवेइ तवसा भिख्खू तमेगग्गमणो सुण ॥१॥ पाणवह मुसावाया अदत्त मेहुण परिग्गहाओ विरओ । राइभोयण विरओ जीवो भवइ अणासवो ॥२॥ पंचसमिओ त्तिगुत्तो अकसाओ जिइंदिओ । अगारवोय निसल्लो जीवो भवइ अणासवो ॥ ३ ॥ एएसिंतु विवचासे रागदोस समज्जिय । खवेइउ जहा भिख्खू तमेगग्गमणो सुण ॥ ४ ॥ जहा महा तलागस्स संनिरुध्धे जलागमे । उस्सिंचणाए तवणाए कम्मेण सोसणा भवे ॥ ५ ॥ एवंतु संजयस्सावि पावकम्म निरासवे । भवकोडी संचिय कम्मं तवसा निज्जरिज्जइ ॥ ६ ॥ सो तवो दुविहो वुत्तो बाहिरब्भिंतरो तहा । बाहिरो छव्विहो वुत्तो एव मब्भि तरो तवो ॥ ७ ॥

❀ अध्ययन ३०. ❀

राग द्वेषे करीने उपार्जेलां पाप कर्मनो साधु तप वडे केवी रीते क्षय करे छे ते एकाग्र मने सांभळो. (१). प्राणी वध, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह अने रात्रि भोजनथी विरक्त रहेवाथी जीव निराश्रव [पाप हेतु रहित] बने छे. (२). पाच समिति अने त्रण गुप्तिए सहित, कषाय रहित, जितेन्द्रिय, गर्व रहित अने निशल्य [शल्य अथवा माया रहित] थवाथी जीव अनाश्रव [आश्रवरहित] बने छे. [३]. पुर्वोक्त (उपर कहेला) लक्षणोना अभावे साधु रागद्वेषवडे उपार्जेला कर्मनो केवी रीते क्षय करे छे ते एकाग्र मनथी सांभळो. [४]. जेम कोइ मोटा तळावनो पाणी आववानो मार्ग रुंधी राखवाथी जेम ते तळाव उपयोग अने सूर्यना किरणना आकर्षणवडे धीमे धीमे शोषाइ जाय छे, तेवी रीते जो साधु पाप कर्मने आववानो मार्ग रुंधे तो कोटी भवमा तेने लागेला कर्मनो तप वडे करीने ते क्षय करी शके छे. [५-६]. तप बे प्रकारना छे :–(१) बाह्य तप अने (२) अभ्यतर तप. बाह्य तपना छ भेद छे तेमज अभ्यंतर तपना पण छ प्रकार छे. (७).

अणसण मूणो यरिया भिक्खायरियाय रसपरिच्चाओ । कायकिलेसो संलीणयाय बज्झो तवोहोइ ॥ ८ ॥ इत्तरिय मरणकालाय अणसणा दुविहा भवे । इत्तरिया सावकखा निरवकखाओ बेइज्जिया ॥ ९॥ जो सो इत्तरिय तवो सो समासेण छविहो । सेढि तवो पयर तवो घणोय तहहोइ वग्गेय ॥ १० ॥ तत्तोय वग्गवग्गो पचमोछठ्ठओ पइन्नतवो । मण-इच्छिय चित्तथ्थो नायव्वो होइ इत्तरिओ॥११॥जा सा अणसणा मरणे दुविहा सावियाहिया । सविया रमवियारा कायचिठ्ठपइभवे ॥ १२ ॥

बाह्य तपना छ प्रकार :-(१) अनशन एटले उपवासादिक. [२] *उनोदरिक एटले ओछु खावु ते. ३ भिक्षाचर्या एटले घरोघर भटकीने आहार मेळववो ते. (४) रस त्याग एटले स्वादिष्ठ खोराकनो परित्याग करवो ते. [५] काय-क्लेश एटले टाढ तडको सहन करवो ते, [६] सल्लीनता एटले अग-उपाग सकोचवा ते ए प्रमाणे छ भेदे बाह्य तप कह्यो छे.(८). १. अनशनना बे भेद छे :-[अ] इत्वरिक तप अने [ब] मरण काल पर्यंत तप करवु ते इत्वरिक तपमा भोजन करवानी इच्छा रहे अथवा तो तेवी इच्छा न पण रहे. (९). (अ) इत्वरिक तपना सक्षेपे छ भेद कह्या छे. (१) श्रेणि-तप [२] प्रतर-तप [३] घन-तप [४] वर्ग-तप ५ वर्गवर्ग-तप अने [६] प्रकीर्ण तप. ए रीते इत्वरिक तप इप्सित पदार्थनी प्राप्ति अर्थे करी शकाय छे. (१०-११).१ [ब] मरण काल-तप बे प्रकारनु छे :-१ सविकार एटले काय-चेष्टा सहित [एटले हाथ पग हलाववा ते] अने २ अविकार एटले काय चेष्टा रहित. [१२].

---

* प्रतिदिन आहारमा उतरता जवु एटले प्रथम ३२कोळिया जमता होइए तेमाथी अनुक्रमे उतरता उतरतां एक कोळिया उपर निर्वाह चलाववो ते. १. आ रीते पहेलामां ४बीजामा १६ त्रीजामा ६४, चोथामा ६४×६४=४०९६, पांचमामा १६७७७२१६ उपवास आवे छे. अने छेल्ला प्रकारना उपवास करतां तो सात लाख वर्ष वीती जाय छे. माटे ए तप दीर्घ आयुष्यना धणी श्री तीर्थंकर भगवानथीज बनी शके तेम छे.

अहवा स पडिकम्मा अपरिकम्माय आहिया । नीहारि मनिहारी आहारछेओय दोसुवि ॥१३॥ उमोयरिय पंचहा समासेण वियाहियं । दव्वउ खेत्त कालेण भावेण पज्जवेहिय ॥ १४ ॥ जो जस्सउ आहारो ततो उणतु जो करे । जहन्नेणे गसिथ्थाइ एव दव्वेण उभवे ॥ १५ ॥ गामे नगरे तह रायहाणि निगमेय आगार पल्ली । खेड कव्वड दोणमुह पट्ठण मडब संबाहे ॥ १६ ॥ आसमपए विहारे सनिवेसे समाय घोसेय । थल सेणाखधारे

अथवा तो १ परिकर्मणा सहित अने २ परिकर्मणा रहित; एटले परिवर्त्तनादि चेष्टा सहित अथवा एवी चेष्टा रहित. बन्ने प्रकारे आहार त्याग करे. [१३]. २. उनोदरिक तप :–एना पाच भेद संक्षेपे कह्या छे :– [अ] द्रव्ये, [ब] क्षेत्रे, [क] काले, [ड] भावे अने [इ] पर्याये. (१४). [अ] द्रव्य-उनोदरिक तप :–जेने जेटलो आहार होय ते करता ओछो आहार करे; छेवट एकज कोळियो ओछो जमे ते द्रव्य-उनोदरिक तप कहेवाय. (१५)*. (ब) क्षेत्र-उनोदरिक तप :–क्षेत्र एटले गाम, नगर, राजधानीनु शहेर, निगम [वणिक निवास], आगम (सुवर्णादि उत्पन्न थता होय तेवु स्थळ), पल्ली (वृक्षादिथी छवायेलुं अने वसायेलुं स्थळ), खेत (धूळना कोटवाळुं स्थळ), कर्वट (सामान्य नगर), द्रोण मुख (जळ अने स्थळ बन्ने मार्गे जे गाममां प्रवेश करी शकाय ते, जेवुं के भरुच्छ), पट्टण (मोटुं शहेर), मतम्ब [जेनी आसपास साडा त्रण योजन सुधीमा बीजुं कोइ गाम न होय तेवुं स्थळ], सम्बाध [ज्यां चारे वर्णनो निवास होय एवु स्थळ], आश्रम [तापस लोक वसता होय एवु स्थळ], विहार [देव गृह अथवा भिक्षुकने रहेवानु स्थळ], सन्निवेश [यात्रादिक अर्थे लोको ज्यां भेगा थता होय तेवु स्थळ], समाज (पंथी लोक अथवा मुसाफरो ज्या

* पुरुषनो पूरो आहार ३२ कोळियानो अने स्त्रीनो २८ कोळियानो गणाय छे.

सध्ये संवट्टकोट्टेय ॥ १७ ॥ वाडेसुव रथ्यासुव घरेसुवा एव मितियं खेत्तं । कप्पइओ एवमाइ एवं खित्तेणउ भवे ॥ १८ ॥ पेडाय अद्धपेडा गोमुत्ति पयगवीहियाचेव । संबुक्कावट्टाय गतु पचागया छठा ॥ १९ ॥

भेगा थता होय तेनुं स्थळ], घोष [गोवाळिया भेगा थता होय तेनुं स्थळ], स्थल-सेनास्कन्धार (उच्च भूमिपर सेना पडाव नांखीने रहेती होय तेनुं स्थळ), करियाणादि लइने जता आवता लोकोने भेगा थवानुं स्थळ, कोट (एटले गढवाळु गाम), वाडी, शेरी, घर, ए सघळानो समावेश क्षेत्रमां थाय छे. ए अने एवां बीजां क्षेत्रमां विहार करवो साधुने कल्पे छे. अने एम करवुं ते क्षेत्र उनोदरिक तप कहेवाय. [१६–१८]. १ पेटीना आकारे, २ अर्ध पेटीना आकारे, ३ गोमुत्रना आकारे, ४ पतंग विथीका एटले पतग उडे ते रीते, ५ शम्बूकावर्त्त एटले शंखना वळनी पेठे अने ६ आयतम गत्वा-प्रत्यागत एटले छेडा सुधी सीधा चाल्या जवुं अने पछी पाछा फरवु ते. ए छ रीते गोचरी करे ते क्षेत्र-उनोदरिक तप कहेवाय. [१९]*

* भिक्षा चर्यानी जुदी जुदी रीतो आ गाथामां दर्शावेली छे. (१–२) पेटी अने अर्ध पेटीना आकारे एटले गाम अथवा शेरीने चोखुण कल्पीने तेने चारे खूणे आवेला चार घेर भिक्षार्थे जवुं ते. (३) गोमुत्रिका एटले हारबंध अथवा सीधी लींटीमां आवेलां घेर नहि, पण वांका चूंका अथवा सर्पाकारे एटले अमुक घरो पडतां मूकीने अमुक घेर भिक्षा मागवी ते. [४] पतंग विथीका एटले पतंग उडे छे तेवी रीते एक बीजाथी घणे दूर आवेला घेर भिक्षार्थे जवु ते. (५) शम्बूकावर्त्त एटले शंखना वळनी पेठे एटले मध्य भागमांथी बहारना भागमां अथवा तो स्कुना आकारे अमुक घर पडतां मूकी अमूक घेर भिक्षा मागवी ते. अने [६] आयतम-गत्वा-प्रत्यागत एटले अमुक अंतर सुधी सीधा गया पछी पाछा फरीने अमुक अमुक घेर भिक्षा मागवी ते.

दिवसरस पोरिसीण चउण्हंपिउ जत्तिओ भवे काले। एवं चरमाणो खलु कालेमाणं मुणेयव्वं ॥ २० ॥ अहवा तइया पोरिसीए उणाए घासमेसंतो। चउभागूणाएवा एव कालेणऊ भवे ॥ २१ ॥ इथ्थीवा पुरिसोवा अलकिओवा णलकिओवावि। अन्नयर वयथ्थोवा अन्नयरेणंच वथ्थेणं ॥ २२ ॥ अन्नेण विसेसेणं वन्नेण भावमणु· मुयंतेउ। एव चरमाणो खलु भावोमाणं मुणेयव्व ॥ २३ ॥ दव्वे खित्ते काले भावमिय आहियाओ जेभावा। एएहि ओम चरओ पज्जव चरओ भवे भिक्खू ॥२४॥अठ्ठविहं गोयरग्गंतु तहा सत्तेव एसणा। अभिग्गहाय जेअन्ने भिक्खायरियमाहिया ॥ २५ ॥

[क] काल उनोदरिक तप :–दिवसनी चार पौरुपि (पोरसि, प्रहर) पैकी कइ पौरुपिने विपे केटलो काल गोचरीमां गाळवो तेनु प्रमाण बांधीने ते प्रमाणे ते काले बराबर विचरे ते काल-उनोदरिक तप कहेवाय. अथवा तो त्रीजी पौरुपिना अमुक भागमां अथवा तेना छेल्ला पायामां [चोथा भागमा] आहारनी गवेपणा करे ते काल-उनोदरिक तप कहेवाय. [२०-२१]. [ड] भाव-उनोदरिक तपः–स्त्री या पुरुप, अलंकृत अथवा अनलंकृत (एटले आभरण सहित या रहित), गमे ते वयना (एटले बाल, वृद्ध या तरुण), गमे ते वस्त्र पहेरेला होय एवां, गमे तेवास्वभावना, अथवा तो गमे तेवा वर्णना [काळां, गोरा वगेरे], एवा ने हाथे वर्ण भावनी परवा कर्या सिवाय आहार ग्रहण करवो ते भाव-उनोदरिक तप कहेवाय. [२२–२३]. (इ) पर्याय-उनोदरिक तप :–द्रव्य. क्षेत्र, काल, भाव आदि जे भाव उपर वर्णव्या छे ए भाव सहित जे साधु विचरे ते पर्याय-चरक एटले पर्याय-उनोदरिक तप पाळनार साधु कहेवाय. (२४). ३ भिक्षा-चर्याः–गोचरीना आठ प्रकार तथा एपणाना सात प्रकार कह्या छे; अने ते सिवाय भिक्षा चर्याना अन्य अभिग्रह (भेद) श्री तीर्थंकर भगवाने कहेला छे. (२५).

खीर दहि सप्पिमाइ पणीयं पाणभोयणं । परिवज्जणं रसाणंतु भणियं रस विवज्जणं ॥ २६ ॥ ठाणा वीरासणाइया जीवस्सओ सुहावहा । उग्गा जहा धरिज्जाति कायकिलेसंत माहियं ॥ २७ ॥ एगत मणावाए इथ्थी पसु विवजिजए । सयणासण सेवणया विवित्त सयणासण ॥२८॥ एसो वाहिरंग तवो समासेण वियाहिओ । अब्भिंतरो तवो एत्तो वोछ्छामि अणुपुव्वसो ॥ २९ ॥ पायछ्छित्त विणओ वेयावच्च तहेव सझाओ । झाण उस्सग्गोविय अब्भितरओतवो होइ ॥ ३० ॥ आलोयणा रिहाइयं पायछित्तातु दसविह । जेभिख्खू वहइ सम्म पायछित्तं तमाहियं ॥ ३१ ॥ अब्भुठाणं अंजलि करण तहेवा सणदायण । गुरुभत्ति भाव सुस्सुसा विणओ एस वियाहिओ ॥ ३२ ॥

---

४. रस त्याग :-दूध, दहीं, घी वगेरे पुष्टिकारक खानपाननो परित्याग करवो ते रस परित्याग तप कहेवाय. [२६]. ५. काय क्लेश:-वीरासनादि आसनो जे आत्माने सुखावह छे, पण जे करवा अति मुश्केल छे ते करवां तेने काय-क्लेश तप कहे छे.(२७). ६ सलीनता:-स्त्री, पशु रहित अने ज्यां कोइनु जनु आववु थतु न होय एवां एकात शयनासन सेववां ते संलीनता तप कहेवाय.(२८). उपर प्रमाणे बाह्य तपना भेद सक्षेपे वर्णव्या छे. हवे अभ्यतर तपना छ भेद अनुक्रमे कहुछु :-[२९]. अभ्यतर तपना छ भेद :- १ प्रायश्चित्त, २ विनय, ३ वैयावृत्य एटले आचार्यादिनी सेवा करवी ते, ४ स्वाध्याय, ५ ध्यान, अने ६ उत्सर्ग एटले कायोत्सर्ग अथवा काउसग्ग. (३०). (१) प्रायश्चित्त :-गुरु समीपे पापने आलोववा, दश विधे प्रायश्चित्त करवुं अने कायाये करीने सम्यक्त रुडी रीते सेववुं ते प्रायश्चित्त अभ्यतर तप कहेवाय. [३१]. २. विनय :-गुरुने आवता जोइने उभा थवु, हाथ जोडवा, तेमने आसन आपवुं, तेमना तरफ भक्तिभाव राखवो अने गुरुना आदेश प्रमाणे वर्त्तवुं ते विनय-अभ्यंतर तप कहेवाय. (३२).

आयरिय माइए वेयावच्चंमि दसविहे । आसेवणं जहाथामं वेयावच्चं तमाहियं ॥ ३३ ॥ वायणा पुच्छणाचेव तहेवय परियट्टणा । अणुप्पेहा धम्म कहा सझायं पंचहा भवे ॥३४॥ अट्ट रूद्दाणि वज्जित्ता झाएज्जा सुसमाहिए । धम्म सुक्काइं झाणाइं झाणंतंतु बुहावए ॥ ३५ ॥ सयणासण ठाणेवा जेउभिख्खू नवाचरे । कायस्स विउस्सग्गो छट्ठोसोपरिकित्तिओ ॥ ३६ ॥ एवंतवंतु दुविहंजे सम्मं आयरेमुणी । सेखिप्पं सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ पंडिए त्तिबेमि ॥ ३७ ॥

॥ इति तवमग्ग नाम झयणं तयोदसं सम्मत्तं ॥ ३० ॥

३ वैयावृत्य :—*आचार्यादिने आहारादि आणी आपवामां दश विधे पोताथी बने तेटली सेवा करवी ते वैयावृत्य-अभ्यंतर तप कहेवाय. (३३). ४. स्वाध्याय—स्वाध्यायना पाच भेद छेः—१गुरु समीपे पाठ वोली जवो ते. २संदेह विषे पूछवुं ते, ३ परिवर्त्तन एटले वारंवार पाठ वोली जवो ते. ४ अनुप्रेक्षा एटले चिंतवन अथवा मनन करवुं ते. ५ धर्म-कथा एटले धर्मोपदेश देवो ते. [३४]. ५. ध्यान—आर्त्त-रौद्र ध्यान वर्जिने द्रढ चित्तथी धर्म-ध्यान (शुक्ल-ध्यान) धरवुं तेने श्री बुद्ध तीर्थंकर भगवाने ध्यान-अभ्यंतर तप कह्युं छे. (३५). ६. उत्सर्ग-शयने आसने अने अभ्युत्थाने [एटले सूता, वेसता, उठता] जे साधु कायानो व्यापार [हालवुं, चालवुं] न करे ते छठ्ठा प्रकारनो कायोत्सर्ग-अभ्यंतर तप कहेवाय. [३६]. जे मुनि बन्ने प्रकारना एटले बाह्य अने अभ्यंतर तप रुडी रीते आचरे ते चतुर्गति भव भ्रमणमांथी (संसारमाथी) शीघ्रपणे मुक्त थाय छे. [३७].

* त्रीसमुं अध्ययन संपूर्ण. *

* सेवाने योग्य दशना नाम—आचार्य, उपाध्याय, स्थविर, तपस्वी, ग्लान, साहृण, साधर्मिक, कुल, गण अने संघ.

अध्ययन ३१. चारित्र विधि.

चरणविहं पवल्खामि जीवस्सउ सुहा वहं ज चरित्ता बहुजीवा तिन्ना संसारसागरं ॥ १ ॥ एगओ विरइं कुज्जा एगओय पवत्तणं । असंजमे नियतच सजमेय पवत्तणं ॥ २ ॥ रागदोसेय दो पावे पावकम्म पवत्तणे । जे भिल्खू रुभई निच्चसेन अच्छइ मडले ॥३॥ दंडाण गारवाणच सल्लाणच तिय तियं।जे भिल्खू चयई निच्चसेन अच्छइमडले ॥ ४ ॥ दिव्वेयजे उवसग्गे तहातेरिच्छि माणुसे । जे भिल्खू सहई सम्मसेन अच्छइ मडले ॥ ५ ॥ विगहा कसाय सन्नाण झाणाणच दुयं तहा । जे भिल्खू वज्जई निच्चसेन अच्छइ मडले ॥ ६ ॥

⊛ अध्ययन ३१. ⊛

चारित्र विधि जे जीवने सुखावह छे ते हुं वर्णवुं छुं ; जे विधि आदरवाथी घणा जीवं संसार-सागर तरी गया छे. (१) , एकथी निवर्त्तवु अने बीजामा प्रवर्त्तवु :-अर्थात असयमथी (हिसादिथी) निवर्त्तवुं अने संयममां प्रवर्त्तवु. [२]. राग अने द्वेष बन्ने पाप कर्मना उत्पन्न करनारा छे, माटे जे साधु तेने अलगा करे छे ते चतुर्गति ससारथी मुक्त थाय छे. (३). जे साधु दड गारव अने शल्यना त्रीगुण कृत्यनो (अर्थात–मन, वचन अने कायाये करीने दंडनो, रिद्धि, रस अने शातारुपी गारवनो, अने माया, निदान अने मिथ्या दर्शनरुपी शल्यनो) परित्याग करे छे ते चतुर्गति संसारथी मुक्त थाय छे. [४]. जे साधु देवता, तिर्यंच अने मनुष्यनां उपसर्ग सम्यक् बुद्धिथी (रुडी रीते) सहन करेछे ते चतुर्गति ससारथी मुक्त थाय छे.[५]. जे साधु चार प्रकारनी विकथा [राज्य, देश, भोजन अने स्त्रीना रुप संबंधी], चार कषाय, [क्रोध, मान, माया अने लोभ], चार सज्ञा, (आहार, भय, परिग्रह अने मैथुन), अने चार ध्यान पैकी वे ध्याननो [आर्त्त अने रौद्र ध्याननो] परित्याग करे छे ते चतुर्गति ससारथी मुक्त थाय छे. [६].

आयरिय माइए वेयावच्चंमि दसविहे । आसेवणं जहाथामं वेयावच्चं तमाहियं ॥ ३३ ॥ वायणा पुछणाचेव तहेवय परियट्टणा । अणुप्पेहा धम्म कहा सझायं पंचहा भवे ॥३४॥ अट्ट रूद्दाणि वज्जित्ता झाएज्जा सुसमाहिए । धम्म सुक्काइं झाणाइं झाणंतंतु बुहावए ॥ ३५ ॥ सयणासण ठाणेवा जेउभिक्खू नवाचरे । कायरस विउरसग्गो छट्ठोसोपरिकित्तिओ ॥ ३६ ॥ एवंतवंतु दुविहंजे सम्मं आयरेमुणी । सेखिणं सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ पंडिए त्तिबेमि ॥ ३७ ॥

॥ इति तवमग्ग नाम झयणं तयोदसं सम्मत्तं ॥ ३० ॥

३ वैयावृत्य :—*आचार्यादिने आहारादि आणी आपवाथी दश विधे पोताथी बने तेटली सेवा करवी ते वैयावृत्य-अभ्यंतर तप केहवाय. (३३). ४. स्वाध्याय—स्वाध्यायना पाच भेद छे:—१गुरु समीपे पाठ बोली जवो ते. २संदेह विषे पूछवु ते, ३ परिवर्त्तन एटले वारंवार पाठ बोली जवो ते. ४ अनुप्रेक्षा एटले चिंतवन अथवा मनन करवुं ते. ५ धर्म-कथा एटले धर्मोपदेश देवो ते. [३४]. ५. ध्यान—आर्त्त-रौद्र ध्यान वर्जिने द्रढ चित्तथी धर्म ध्यान (शुक्ल-ध्यान) धरवुं तेने श्री बुद्ध तीर्थंकर भगवाने ध्यान-अभ्यंतर तप कह्युं छे. (३५). ६. उत्सर्ग-शयने आसने अने अभ्युत्थाने [एटले सूता, बेसतां, उठतां] जे साधु कायानो व्यापार [हालवुं, चालवुं] न करे ते छठ्ठा प्रकारनो कायोत्सर्ग-अभ्यंतर तप केहवाय. [३६]. जे मुनि बन्ने प्रकारना एटले बाह्य अने अभ्यंतर तप रुडी रीते आचरे ते चतुर्गति भव भ्रमणमांथी (संसारमाथी) शीघ्रपणे मुक्त थाय छे. [३७].

* त्रीसमुं अध्ययन संपूर्ण. *

* सेवाने योग्य दशनां नाम—आचार्य, उपाध्याय, स्थविर, तपस्वी, ग्लान, साहण, साधर्मिक, कुल, गण अने संघ.

अध्ययन ३१. चारित्र विधि.

चरणविह पवक्खामि जीवस्सउ सुहा वहं जं चरित्ता बहुजीवा तिन्ना संसारसागरं ॥ १ ॥ एगओ विरइ कुज्जा एगओय पवत्तणं । असंजमे नियतच सजमेय पवत्तणं ॥ २ ॥ रागदोसेय दो पावे पावकम्म पवत्तणे । जे भिक्खू रुभई निच्चसेन अच्छइ मडले ॥३॥ दडाण गारवाणच्च सल्लाणंच तिय तिय।जे भिक्खू चयई निच्चसेन अच्छइमडले ॥ ४ ॥ दिव्वेयजे उवसग्गे तहातेरिच्छ माणुसे । जे भिक्खू सहई सम्मसेन अच्छइ मंडले ॥ ५ ॥ विगहा कसाय सन्नाण झाणाणंच दुयं तहा । जे भिक्खू वज्जई निच्चसेन अच्छइ मडले ॥ ६ ॥

❁ अध्ययन ३१. ❁

चारित्र-विधि जे जीवने सुखावह छे ते हुं वर्णवुं छु ; जे विधि आदरवाथी घणा जीव संसार सागर तरी गया छे. (१). एकथी निवर्त्तवु अने बीजामा प्रवर्त्तवुं :–अर्थात असंयमथी (हिंसादिथी) निवर्त्तवु अने संयममां प्रवर्त्तवु. [२]. राग अने द्वेप बन्ने पाप कर्मना उत्पन्न करनारा छे, माटे जे साधु तेने अलगा करे छे ते चतुर्गति ससारथी मुक्त थाय छे. (३). जे साधु दंड गारव अने शल्यनां त्रीगुण कृत्यनो (अर्थात–मन, वचन अने कायाये करीने दंडनो, रिद्धि, रस अने शातारुपी गारवनो, अने माया, निदान अने मिथ्या दर्शनरुपी शल्यनो) परित्याग करे छे ते चतुर्गति संसारथी मुक्त थाय छे. [४]. जे साधु देवता, तिर्यंच अने मनुष्यना उपसर्ग सम्यक् बुद्धिथी (रुडी रीते) सहन करेछे ते चतुर्गति संसारथी मुक्त थाय छे.[५]. जे साधु चार प्रकारनी विकथा [राज्य, देश, भोजन अने स्त्रीना रुप संबंधी], चार कषाय, [क्रोध, मान, माया अने लोभ], चार संज्ञा, (आहार, भय, परिग्रह अने मैथुन), अने चार ध्यान पैकी बे ध्याननो [आर्त्त अने रौद्र ध्याननो] परित्याग करे छे ते चतुर्गति संसारथी मुक्त थाय छे. [६].

वएसु इंदियथ्थेसु समिईसु किरियासुय । जे भिख्खू जयई निच्चंसेन अच्छइ मंडले ॥ ७ ॥ लेसासु छसु काएसु छक्के आहार कारणे । जे भिख्खू जयई निच्चंसेन अच्छइ मंडले ॥ ८ ॥ पिंडोग्गह 'पडिमासु भयट्ठाणेसु सत्तसु । जे भिख्खू जयई निच्चसेन अच्छइ मंडले ॥ ९ ॥ मएसु बंभगुत्तीसु भिख्खू धम्मंमि दसविहे । जे भिख्खू जयई निच्चसेन अच्छइ मंडले ॥१०॥ उवासगाणंपडिमासु भिख्खुणं पडिमासुय । जे भिख्खू जयई निच्चसेन अच्छइ मंडले ॥ ११ ॥ किरियासु भूयगामेसु परमाहम्मिएसुय । जे भिख्खू जयई निच्चसेन अच्छइ मंडले ॥१२॥

जे साधु पंच महाव्रत, पंच इन्द्रिओ, पंच समिति, अने पंच क्रियाने विषे *सदा यत्न करे छे* ते चतुर्गति संसारथी मुक्त थाय छे. (७). जे साधु छ लेश्या, छ काय, अने आहारनां छ कारणने विषे सदा यत्न करे छे ते चतुर्गति संसारथी मुक्त थाय छे. (८). जे साधु आहार लेवाना सप्त अभिग्रहने विषे अने आलोकादि सप्त भय स्थानकने विषे सदा यत्न करे छे ते चतुर्गति संसारथी मुक्त थाय छे. (९). जे साधु 'जाति मदादिक' आठ मदने विषे, ब्रह्मचर्यनी नव वाडने विषे अने 'क्षमादि' साधुना दश प्रकारना धर्मने विषे सदा यत्न करे छे, ते चतुर्गति संसारथी मुक्त थाय छे. (१०]. जे साधु उपासकना अगियार धर्मने, विषे, अने भिक्षुकना बार धर्मने विषे सदा यत्न करे छे ते चतुर्गति संसारथी मुक्त थाय छे. ११. जे साधु 'स्वार्थ-अनर्थादि' तेर क्रियाना परिहारने विषे, चौद प्रकारना प्राणीओना रक्षणने विषे अने पंदर प्रकारनां परमाधार्मिक [पाप-स्थानक]थी निवर्तवाने सदा यत्न करे छे ते चतुर्गति संसारथी मुक्त थाय छे. १२.

---

* दरेक गाथामां 'सदा यत्न करे छे' एम लखेलुं छे एनो अर्थ एवो समजवानो छे के 'जे जाणवा योग्य होय ते जाणवानो, आदरवा योग्य होय ते आदरवानो अने त्यागवा योग्य होय ते त्यागवानो सदा यत्न करे छे.'

गाहासोलसएहिं तहाअस्सं जमंमिय । जे भिख्खू जयई निच्चंसेन अच्छइ मडले ॥ १३ ॥ बंभमि नायजयणेसु ठाणेसु असमाहिए । जे भिख्खू जयई निच्चसेन अच्छइ मडले ॥ १४ ॥ एगविसाए सबलेसु बावीसाए परिसहे । जे भिख्खू जयई निच्चसेन अच्छइ मडले ॥१५॥ तेवीसइ सुयगडे रूवाहिएसु सुरेसुय । जे भिख्खू जयई निच्चसेन अच्छइ मडले ॥ १६ ॥ पणवीस भावणाहिं उद्देसेसु दसाइण । जे भिख्खू जयई निच्चसेन अच्छइ मडले ॥ १७ ॥

जे साधु सोळ गाथाना (एटले श्री सूत्र कृताग अथवा श्री सुगडागजी सूत्रना प्रथम श्रुत स्कन्धना) अध्ययनने विषे, अने सयमना सत्तर भेदथी विपरीत न वर्तवाने विषे सदा यत्न करे छे, ते चतुर्गति ससारथी मुक्त थाय छे. (१३). जे साधु ब्रह्मचर्यना अढार भेदने विषे, श्री ज्ञाताजीना ओगणीस अध्ययन [प्रथम स्कन्ध]ने विषे अने समाधिना वीश स्थानकथी विपरीत न वर्तवाने सदा यत्न करे छे ते चतुर्गति ससारथी मुक्त थाय छे. (१४). जे साधु एकवीश प्रकारना शबल [अशुभ कृत्यो]थी, अने बावीश परिसहथी दूर रहेवाने सदा यत्न करे छे ते चतुर्गति संसारथी मुक्त थाय छे. [१५]. जे साधु सूत्रकृतागना त्रेवीश अध्ययनने विषे अने तेथी एक अधिक एटले चोवीश देव [१० भवन पति+८ व्यतर+५ ज्योतिष+१ वैमानिक=२४ अथवा तो ऋषभ देवादि २४ तीर्थंकर]ने विषे सदा यत्न करे छे ते चतुर्गति ससारथी मुक्त थाय छे. (१६). जे साधु पंच महाव्रतनी पचीश भावनाने विषे अने दशाश्रुत स्कन्ध, कल्प अने व्यवहार सूत्रना छव्वीश उद्देशने विषे सदा यत्न करे छे ते चतुर्गति संसारथी मुक्त थाय छे. (१७).

अणगार गुणेहिंच पकप्पंमि तहे वय । जे भिक्खू जयई निच्चसेन अछइ मंडले ॥ १८ ॥ पावसुयप्पसंगेसु मोहट्ठाणेसु चे वय । जे भिक्खू जयई निच्चंसेन अछइ मडले ॥ १९ ॥ सिद्धाइगुण जोगेसु तित्तीसा सायणा सुय । जे भिक्खू जयई निच्चसेन अछुइ मडले ॥ २० ॥ इइ एएसु ठाणेसु जे भिक्खू जयई सया । खिप्पसे सव्वससारा विप्पमुच्चइ पडिए त्तिबेमि ॥ २१ ॥

॥ इति चरणविहनाम झयण एकत्तीसं सम्मत्त ॥

जे साधु *अणगारना सत्तावीश गुणने विषे अने प्रकल्पना [श्री आचाराग सूत्रना] १अठ्ठावीश अध्ययनने विषे सदा यत्न करे छे ते चतुर्गति संसारथी मुक्त थाय छे. [१८]. जे साधु ओगणत्रीस पापश्रुत प्रसंगथी अने त्रीस मोह स्थानथी निवर्त्तवाने सदा यत्न करे छे ते चतुर्गति ससारथी मुक्त थाय छे. [१९]. जे साधु श्री सिद्धना एकत्रीस गुणने विषे, अने [मन, वचन कायाना] योगना बत्रीस भेदने विषे सदा यत्न करे छे अने तेत्रीस प्रकारनी आशातनाथी निवर्त्ते छे ते चतुर्गति संसारथी मुक्त थाय छे.[२०]. जे पंडित साधु उपर वर्णवेला स्थानोने विषे सदा यत्न करेछे ते चतुर्गति रुप ससारथी शीघ्र मुक्त थायछे.[२१].

* एकत्रीसमुं अध्ययन संपूर्ण. *

* मूळ गाथामां ' अणगार ' शब्द छे छतां जेकोई तेनो अर्थ ' ससारी ' करे छे. १. श्री आचाराग सूत्रमा हाल चोवीश अध्ययन छे, पण अगाउ अठ्ठावीश हतां एम मनाय छे.

अध्ययन ३२. प्रमाद-स्थान.

अच्चंतकालस्स समूलयरग सव्वस्स दुख्खस्सउ जो पमोख्खो । त भासओ मे पडिपुन्न चित्ता सुणेहए गंत हियं हियथ्थ ॥ १ ॥ नाणस्स सव्वस्स पगासणाए अन्नाण मोहस्स विवज्जणाए । रागस्स दोसस्सय संखएणं एगंत सोख्खं समुवेइमोख्खं ॥ २ ॥ तस्से समग्गो गुरु विद्धसेवा विवज्जणा बालजणस्सदूरा । सझाय एगत निसेवणाए सुत्तथ्थ सचिंतणया धिईय ॥३॥ आहार मिछ्छे मियमेसणिज्जा सहाय मिछ्छे निउणठ्ठ बुद्धिं । निकेय मिछ्छेज्ज विवेग जोगं समाहि कामे समणे तवस्सी ॥ ४ ॥ न बालभेज्जा निउण सहाय गुणाहिय वा गुणओ समवा । एक्कोवि पावाइ विवज्जयतो विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥ ५ ॥

❀ अध्ययन ३२. ❀

अनादी कालनी अविरतिरुप सर्व दुःखमय संसारथी मुक्त थवाने तमने जे कहेवामां आवे छे ते एकाग्र चित्तथी श्रवण करो. [१]. ज्ञाननो प्रकाश करवाथी, अज्ञान अने मोह वर्जवाथी, अने राग द्वेषनो क्षय करवाथी एकात निरावाध सुख मोक्ष पामे. [२]. गुरु अने वडानी सेवा करवी, मूर्ख जनथी सदा दूर रहेवु, एकातमा अध्ययन करवु अने सूत्रार्थनु एकाग्र वृत्तिथी चिंतन करवुं–ए मोक्षनो मार्ग छे. (३). [ज्ञानादिकनी] समाधिने* इच्छनार अने तपनो करनार श्रमण (साधु) दोषरहित कल्पतो आहार, निपुण, बुद्धिशाळी शिष्य अने एकातवासने योग्य [स्त्री, पशु पंडक रहित] उपाश्रयने इच्छे छे. [४]. पोताथी गुणमा अधिक अथवा सरखो एवो निपुण शिष्य कदाच न मळे तो पाप कर्मथी अने काम भोगथी १ दूर रहीने तेणे एकला रहेवुं.(५).

---

* Who longs for righteousness. 1 Not devoted to pleasures.

जहाय अडप्पभवा बलागा अड बलागप्पभवं जहाय । एमेव मोहाय यणंखु तन्हा मोहंच तन्हाययणं वयंति ॥६॥ रागोय दोसोविय कम्मबीय कम्मच मोहप्पभव वयति । कम्मंच जाई मरणस्स मूल दुक्खं च जाई मरणं वयंति ॥ ७ ॥ दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो मोहो हओ जस्स न होइ तन्हा । तन्हा हया जस्स न होइ लोहो लोहो हओ जस्सनकिंचणाइं ॥ ८ ॥ रागच दोसंच तहेव मोहं उद्धत्तु कामेण समुळजाल । जे जे उवाया पडिवज्जियव्वा ते कित्तइस्सामि अहाणुपुव्वि ॥ ९ ॥

जेम पक्षी इंडामांथी उत्पन्न थाय छे अने इंडु पक्षीमांथी उत्पन्न थाय छे तेम तृष्णा मोहनुं उत्पत्ति स्थान छे अने मोह ए तृष्णानुं उत्पत्ति स्थान छे एम (तीर्थंकरे) कह्युं छे. [६]. राग-द्वेष कर्मथी उत्पन्न थाय छे अने कर्मनुं उत्पत्ति स्थान (तीर्थंकरे) मोह कह्युं छे. कर्म ए जन्म मरणनु मूळ छे अने जन्म-मरणने (भगवाने) दुःखनुं कारण कह्युं छे. [७]. मोहना अभावे दुःख हणाय छे तृष्णाना अभावे मोह हणाय छे, लोभना अभावे तृष्णा हणाय छे, अने द्रव्यना अभावे लोभ हणाय छे. *[अर्थात मोह न होय तो दुःख न होय, तृष्णा न होय तो मोह न होय, लोभ न होय तो तृष्णा न होय, अने द्रव्य न होय तो लोभ न होय.]* [८]. राग-द्वेष अने मोहने मूळमांथी [1] टाळवा इच्छनारे शुं शु उपाय आदरवा ते हुं अनुक्रमे कहु छुं. (९).

* Delusion the origin of desire मो. जेकोबी आ माटे एवा असरकारक शब्दो वापरेछे के " Misery ceases on the absence of delusion, delusion ceases on the absence of desire, desire ceases on the absence of greed, greed ceases on the absence of property " 1 Thoroughly uproot

रसापगाम न निसेवियव्वा पायं रसा दित्ति करा नराण । दित्तं च कामा समतिद्दवंति दुमं जहा सादु फलव पक्खा॥१०॥ जहा दवग्गी पउरिंधणे वणे समारुओ नोवसम उवेइ । एविंदियग्गीवि पगाम भोइणो न बंभयारिस्स हियाय कस्सई ॥ ११ ॥ विवित्त सेज्जासण जंतियाणं ओमासणाण दमिइंदियाणं । न राग सत्तू धरिसेइ चित्तं पराइओ वाहिरिवो सहेहिं ॥ १२ ॥ जहा विराला वसहस्स मूले न मूसगाणं वसही पसथ्था । एमेव इथ्थी निलयस्स मझे न बंभयारिस्स खमो निवासो ॥ १३ ॥ न रूव लावन्न विलास हास न जंपिय इंगियपेहियवा । इथ्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता दठु ववस्से समणे तवस्सी ॥ १४ ॥

रस [घृतादि विगय] घणा सेववा नहि. कारणके रस सेववाथी मनुष्य दीप्तिकर [वीर्यवान-उन्मादि] बने छे, अने जेम पक्षीओ स्वादिष्ठ फळवाळा वृक्ष उपर धसी आवे छे, तेम वीर्यवान मनुष्य उपर काम धसी आवे छे.*(१०) जेम काष्टथी भरेला वनने विषे पवनना झपाटा साथे लागेलो अग्नि बुझातो नथी तेम पचेंद्रिय रुपी अग्नि मनवांछित-उन्मादि आहार करनार ब्रह्मचारीने हितकारक नीवडतो नथी. (११), निर्दूषण (स्त्री, पशु, पडक रहित) शयन, उपाश्रय अने आसन सेवनारनो, ऊणो आहार करनारनो, अने इंद्रियोने दमनार साधुना चित्तनो रागरूपी शत्रु पराभव करी शकतो नथी; जेम औषध रोगनो पराभव करे छे तेम. [१२]. ज्यां बिलाडा वसता होय त्यां जेम उदरने रहेवुं सलामत नथी तेम ज्यां स्रीयो वसती होय त्यां ब्रह्मचारीने वसवु सलामत नथी, (१३). तपस्वी साधुए स्रीना रुप, लावण्य, विलास, हास्य, वचन, अंगनु मोडवु अने कटाक्ष-कुदृष्टि तरफ नजर करवी नहि, तेमज पोताना चित्तने विषे तेनी याददास्त राखवी नहि. [१४].

* लशण, डुंगळी, पटाटा वीगेरे उन्मादी आहार वर्जवाथी जीवदया उपरांत मन शान्त अने विषय वीरक्त थने छे. अन्न एवु मन-ए सिद्धांत अहि सत्य ठरे छे.

अदंसणंचेव अपथ्थणंच अचिंतणंचेव अकित्तणंच । इथ्थीजणसा रिय झाणजुग्गंहियं सया वंभचेरे रयाणं ॥ १५॥ कामतु देवीहिं विभूसियाहिं न चाइया खोभइउं तिगुत्ता । तहावि एगंत हियंति नच्चा विवित्त वासो मुणिणं पसथ्थो ॥ १६ ॥ मोख्खा भिकखिस्सवि माणवस्स संसार भीरुस्स ठियस्स धम्मे । न तारिसं दुत्तरमथ्थि लोए जाहिथ्थिओ बाल मणो हराओ ॥ १७ ॥ एएय संगे समइक्कमित्ता सुहुत्तराचेव भवंति सेसा । जहा महासागर मुत्तरित्ता नई भवे अवि गंगा समाणा ॥ १८ ॥ कामाणु गिद्धिप्पभवंखु दुख्खं सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स । जं काइयं माणसियंच किंचि तस्सं तगं गछुइ वीयरागो ॥ १९ ॥

धर्म-ध्यानमा अनुरक्त रहेनार आर्य अने सदा सर्वदा ब्रह्मचर्यना रागी पुरुषे स्त्री जाति तरफ जोवुं नहि, तेनी इच्छा करवी नहि, तेनुं चिंतवन करवु नहि तेमज तेनां वखाण करवां नहि. [१५]. जो के त्रण गुप्ते, गुप्ता पुरुषने अलंकारे करी सहित एवी देवांगनाओ पण क्षोभ पमाडवाने असमर्थ छे, तथापि साधुने माटे स्त्रीयादिक रहित एकांतवास (तीर्थंकरे) हितकारक कह्योछे. [१६] मोक्षना अभिलाषि, संसारथी डरनार अने धर्म प्रमाणे वर्त्तनारने पण, अज्ञानीनां मन हरण करनार स्त्रीना जेवुं आ लोकमा बीजुं कांइ दुस्तर [दोहिलुं] नथी. [१७]. जेवी रीते महासागर पार उतरनारने गंगा जेवी म्होटी नदी उतरवी अति सेहल छे, तेम स्त्री संगथी विरक्त थयेल्लाने आ लोकमा बीजुं बधुं त्यागवुं सेहल छे.* (१८). कामनी इच्छाथी देवता सहित सर्व लोकने दुःख उपजेछे. श्री वीतराग मुनीवर काया तथा मनना सर्व दुःखनो अंत आणी शके छे. [१९].

---

* All others will offer no difficulties.

जहाय किंपाग फला मणोरमा रसेण वन्नेणय भुज्जमाणा। ते खुद्दए जीविय पच्चमाणा एउत्र मा कामगुणा विवागे ॥२०॥ जे इंदियाण विसया मणुन्ना नतेसु भावं निसिरे कयाई। मया मणुन्नेसु मणपि कुज्जा समाहि कामे समणे तवस्सी ॥२१॥ चखुरस रूव गहण वयति त राग हेउ तु मणुन्न माहु। त दोस हेउ अमणुन्नमाहु समोय जो तेसु स वीयरागो ॥२२॥ रूवरस चक्खुं गहणं पयति चक्खुरस रूव गहणं वयति। रागस्स हेउ समणुन्न माहु दोसरस हेउ अमणुन्न माहु ॥ २३ ॥ रूवेसु जोगिद्धि मुवेइ तिव्व अकालिय पावइ से विणासं। रागाउरे से जह वापयंगे अलोय लोले समुवेइ मच्चुं ॥ २४ ॥

किम्पाकनां फळ जेम रस अने वर्ण (स्वाद अने देखाव)मा सुदर जणाय छे, परतु भक्षण करवाथी ते जेम जींदगीनो अत आणे छे, तेवोज गुण काम भोगनां फळने विषे रहेलो छे. [२०]. तपनो करनार अने समाधिनो अभिलापि श्रमण इन्द्रियोना विषयने विषे मनथी भाव करतो नथी, या तो अमनोज्ञ* विषय प्रति द्वेष करतो नथी. [२१]. रुप आंखनु आकर्षण करे छे. मनोहर रुपने रागनु अने अमनोहर रुपने द्वेषनु कारण (तीर्थकरे) कह्युं छे. भला भूंडा रुपने विषे राग द्वेष रहित होय ते वीतराग१ कहेवाय.२ [२२]. चक्षु रुपने ग्रहण करे छे अने रुप चक्षुनु आकर्षण करे छे. मनोहर रुप रागनु अने, अमनोहर रुप द्वेषनु कारण (तीर्थकरे) कह्यु छे. [२३]. जेवी रीते रागातुर पतंग दीपकथी आकर्षाइने तेमा झपलाइने विनाश पामे छे, तेवी रीते रुपने विषे तीव्र मूर्छा राखनार अकालिक विनाशने पामे छे. (२४).

---

*Unpleasant. १ Dispassionate. २ संसारमां शान्ति साधक जीज्ञासुओए आ शब्दो स्मरणमां राखवा जेवा छे.

जेयावि दोसं समुवेइ तिव्वं तंसिख्खणे सेउ उवेइ दुख्खं । दुदंत दोसेण सएण जंतूनकिंचिरूवंअवरझईसे ॥२५॥ एगंत रत्तो रुइरंमि रूवे अतालिसे से कुणई पओसं । दुख्खस्स संपील मुवेइ बाले न लिप्पई तेण मुणी विरागे ॥ २६ ॥ रूवाणुगासाणु गएय जीवे चराचरे हिंसइ णेग रूवे । चित्तेहिं ते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तठ्ठ गुरू किलिठ्ठे ॥२७॥ रूवाणुवाएण परिग्गहेण उप्पायणे रख्खण सनिओगे । वए विउ गेय कहिं सुहंसे संभोग कालेय अतित्त लाभे ॥२८॥ रूवे अतित्तेय परिग्गहंमि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुठ्ठिं । अतुठ्ठिं दोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्त ॥ २९ ॥

जे कोइ कुरुप देखीने अति द्वेष आणे छे, ते ततक्षण दुःख पामे छे. तेने जे दुःख उपजे छे तेमां तेनो पोतानोज दोष छे, तेमां रुपनो काइ दोष नथी.* [२५]. जे कोइ मनोहर रुप उपर अति राग करे छे तेने अमनोहर रुप उपर द्वेष उपजे छे. अने तेथी मूर्ख माणस दुःख पामे छे, ज्यारे वीतराग मुनि एवा राग द्वेषथी मुक्त रहे छे. (२६). रुपना भोगनी इच्छावाळो जीव अनेक चराचर [त्रस अने स्थावर] जीवने हणे छे, स्वार्थमां लीन थयेलो अज्ञानी जीव ए जीवोने अनेक प्रकारे पीडे छे अने तेमने दुःख उपजावे छे. [२७]. मनोहर रुपनो रागी जीव ते वस्तु प्राप्त करवानी, तेनुं रक्षण करवानी, तेनो उपभोग करवानी, तेना नाशनी अने तेना विरहनी मुर्च्छाने लीधे क्याथी सुखी थाय ? भोग भोगवती वखते पण तेने तेनाथी तृप्ति थती नथी. [२८]. ज्यारे ते रुपथी तृप्त थतो नथी अने मूर्च्छाने लीधे ते उपर तेनी आसक्ति वधतीज जाय छे त्यारे ते असंतोषना दोषथी दुःखी थाय छे अने लोभथी दोरवाइने पारकानी अण दीधी (अदत्ता) वस्तु हाथ करे छे.१ [२९].

---

*आ प्रमाणे पीडा पामता पामर प्राणीओ खरे दया पात्र छे. १ आवी रीते पायमाल थइ दुर्गुण अने दुर्गति पामेलां घणा दृष्टांतो आपणे अनुभव्या छे.

तन्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो रूवे अतित्तस्स परिग्गहेय । माया मुसं वड्ढइ लोभ दोसा तत्थावि दुक्खानवि मुच्चई से ॥३०॥ मोसस्स पच्छाय पुरत्थओय पओगकालेय दुही दुरते । एव अदत्ताणि समाययतो रूवे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥३१॥ रूवाणुरत्तस्स णरस्स एव कत्तो सुह होज्ज कयाइ किंचि । तत्थोव भोगेवि किलेस दुक्ख निवत्तई जस्स कएण दुक्ख ॥३२॥ एमेव रूवमि गओ पओस उवेइ दुक्खोह परपराओ । पदुट्ठ चित्तोय चिणाइ कम्म जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ३३ ॥ रूवे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोह परपेरण । न लिप्पए भवमज्झे व सतो जलेणवा पुक्खरिणी पलास ॥ ३४ ॥

तृष्णाथी पराभव पामेलो ते प्राणी पारकानी वस्तु ले छे, छता ए रुप अने परिग्रहथी तेने सतोष थतो नथी, अने पछी लोभना दोपथी तेनामा माया अने जुठ वधे छे. एटलु छता पण ते दु:खथी मुक्त थतो नथी. [३०]. जुठु बोल्या पूर्वे अने त्यार पछी तेमज जुठु बोलती वखते पण ते अति दु:खी थाय छे. आ प्रमाणे पारकानी वस्तु ग्रहण कर्या छता तेना रुपथी ते तृप्त थतो नथी, परतु दु:खी थाय छे अने एवा जीवनो कोइ रक्षक नथी. [अर्थात–ते दुर्गतिने पामेछे]. (३१). एवा रुपमा अनुरक्त मनुष्यने कदापि काळे किंचित सुख पण क्याथी सभवे ? जे वस्तु प्राप्त करवाने तेणे कष्ट वेठेलु ते वस्तुनो उपभोग करती वखते पण तेने दु ख (क्लेश) उपजे छे. [३२]. एवीज रीते रुप उपर द्वेष करनार जीव दु:खनी परपरा* उपार्जे छे. ज्यारे तेनु चित्त द्वेपथी भरेलु होय छे त्यारे ते घणा कर्म बाधे छे, जे कर्म परीणामे दु:खना कारण रुप थइ पडे छे. (३३). परतु रुपना मोहथी विरक्त मनुष्य शोकथी मुक्त रहे छे. जेम कमल पत्र जळमा रहेता छता भीजातु नथी, तेम जो के ते ससारमा रहे छे छता दु:खनी परपराथी ते खरडातो नथी. [३४].

*Succession of pains

जेयावि दोसं समुवेइ तिव्वं तंसिख्खणे सेउ उवेइ दुख्खं । दुदंत दोसेण सएण जंतूनकिंचिरूवंअवरझईसे ॥२५॥ एगंत रत्तो रुइरंमि रूवे अतालिसे से कुणई पओसं । दुख्खस्स संपील मुवेइ बाले न लिप्पई तेण मुणी विरागे ॥ २६ ॥ रूवाणुगासाणु गएय जीवे चराचरे हिंसइ णेग रूवे । चित्तेहिं ते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तट्ठ गुरू किलिट्ठे ॥२७॥ रूवाणुवाएण परिग्गहेण उप्पायणे रख्खण सनिओगे । बए विउ गेय कहिं सुहसे सभोग कालेय अतित्त लाभे ॥२८॥ रूवे अतित्तेय परिग्गहंमि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं । अतुट्ठिं दोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्त ॥ २९ ॥

जे कोइ कुरूप देखीने अति द्वेष जाणे छे, ते तत्क्षण दुःख पामे छे. तेने जे दुःख उपजे छे तेमां तेनो पोतानोज दोष छे, तेमां रूपनो काइ दोष नथी.* [२५]. जे कोइ मनोहर रूप उपर अति राग करे छे तेने अमनोहर रूप उपर द्वेष उपजे छे. अने तेथी मूर्ख माणस दुःख पामे छे, ज्यारे वीतराग मुनि एवा राग द्वेषथी मुक्त रहे छे. (२६). रूपना भोगनी इच्छावाळो जीव अनेक चराचर [त्रस अने स्थावर] जीवने हणे छे, स्वार्थमां लीन थयेलो अज्ञानी जीव ए जीवोने अनेक प्रकारे पीडे छे अने तेमने दुःख उपजावे छे. [२७]. मनोहर रूपनो रागी जीव ते वस्तु प्राप्त करवानी, तेनुं रक्षण करवानी, तेनो उपभोग करवानी, तेना नाशनी अने तेना विरहनी मुर्च्छाने लीधे क्याथी सुखी थाय ? भोग भोगवती वखते पण तेने तेनाथी तृप्ति थती नथी. [२८]. ज्यारे ते रूपथी तृप्त थतो नथी अने मूर्च्छाने लीधे ते उपर तेनी आसक्ति वधतीज जाय छे त्यारे ते असंतोषना दोषथी दुःखी थाय छे अने लोभथी दोरवाइने पारकानी अण दीधी (अदत्ता) वस्तु हाथ करे छे.१ [२९].

*आ प्रमाणे पीडा पामता पामर प्राणीओ खरे दया पात्र छे. १ आवी रीते पायमाल थइ दुर्गण अने दुर्गति पामेला घणां दृष्टांतो आपणे अनुभव्या छे.

तन्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो रूवे अतित्तस्स परिग्गहेय । माया मुसं वड्ढइ लोभ दोसा तत्थावि दुक्खानवि मुच्चई से ॥३०॥ मोसस्स पच्छाय पुरत्थओय पओगकालेय दुही दुरंते । एव अदत्ताणि समाययतो रूवे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥३१॥ रूवाणुरत्तस्स णरस्स एव कत्तो सुह होज्ज कयाइ किंचि । तत्थोव भोगेवि किलेस दुक्ख निव्वत्तई जस्स कएण दुक्ख ॥३२॥ एमेव रूवमि गओ पओस उवेइ दुक्खोह परपराओ । पदुट्ठ चित्तोय चिणाइ कम्म जं से पुणो होइ दुह विवागे ॥ ३३ ॥ रूवे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोह परपरेण । न लिप्पए भवमज्झे व सतो जलेणवा पुक्खरिणी पलास ॥ ३४ ॥

तृष्णाथी पराभव पामेलो ते प्राणी पारकानी वस्तु ले छे, छतां ए रूप अने परिग्रहथी तेने सतोष थतो नथी, अने पछी लोभना दोषथी तेनामा माया अने जुठ वधे छे. एटलु छता पण ते दु:खथी मुक्त थतो नथी. [३०]. जुठु बोल्या पूर्वे अने त्यार पछी तेमज जुठु बोलती वखते पण ते अति दु:खी थाय छे. आ प्रमाणे पारकानी वस्तु ग्रहण कर्या छता तेना रूपथी ते तृप्त थतो नथी, परतु दु:खी थाय छे. अने एवा जीवनो कोइ रक्षक नथी. [अर्थात–ते दुर्गतिने पामे छे]. (३१). एवा रूपमा अनुरक्त मनुष्यने कदापि काळे किंचित सुख पण क्याथी मळे ? जे वस्तु प्राप्त करवाने तेणे कष्ट वेठेलु ते वस्तुनो उपभोग करती वखते पण तेने दु:ख (क्लेश) उपजे छे. [३२]. एवीज रीते रूप उपर द्वेष करनार जीव दु:खनी परंपरा* उपार्जे छे. ज्यारे तेनु चित्त द्वेषथी भरेलु होय छे त्यारे ते घणा कर्म बांधे छे, जे पछी परीणामे दु:खना कारण रूप थइ पडे छे. (३३) परतु रूपना मोहथी विरक्त मनुष्य शोकथी मुक्त रहे छे. जेम कमल पत्र जळमा रहेवा छता भीजातु नथी, तेम जो के ते ससारमा रहे छे छता दु:खनी परपराथी ते खरडातो नथी. [३४]

*Succession of pains

सोयरस सद्द गहणं वयति तं राग हेउंतु मणुन्न माहु । त दोस हेउ अमणुन्न माहु समोय जो तेसु सवीयरागो ॥ ३५ ॥ सद्दस्स सोयं गहण वयति सोयरस सद्द गहण वयंति । रागस्स हेउ समणुन्न माहु दोसस्सहेउं अमणुन्न माहु ॥३६॥ सद्देसु जो गिद्धि मुवेइ तिव्व अकालियं पावइ से विणासं । रागाउरे हरिणमिएव्व मुद्धे सद्दे अतित्ते समुवेइ मच्चु ॥ ३७ ॥ जेयावि दोस समुवेइ तिव्वं तसिख्खणे सेउ उवेइ दुख्ख । दुद्दत दोसेण सएण जतू न किंचि सद्दं अवरज्झई से ॥ ३८ ॥ एगत रत्तो रुइ रसि सद्दे अतालिसेसे कुणई पओस । दुख्खस्स सपील मुवेइ वालेनलिप्पई तेण मुणीविरागे ॥ ३९ ॥ सद्दाणुगासाणु गएय जीवे चराचरे हिसइणे गरूवे चित्ते हिते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तठ्ठ गुरु किलिठ्ठे ॥ ४० ॥

शब्द कानतु आकर्षण करे छे. मधुर शब्द रागनु अने कठोर शब्द द्वेपनु कारण (तीर्थकरे) कह्युं छे. भला भूडा शब्दने विपे राग द्वेप रहित होय ते वीतराग केहवाय. [३५]. कान शब्दने ग्रहण करे छे अने शब्द कानतु आकर्पण करे छे. मधुर शब्द रागनु अने कठोर शब्द द्वेपनुं कारण [तीर्थकरे] कह्युं छे. [३६]. जेवी रीते रागातुर हरण मुग्ध शब्दथी ललचाइने अकालिक मरण पामे छे तेवी रीते शब्दने विपे तीव्र मूर्च्छा राखनार अकालिक विनाशने पामे छे. [३७]. जे कोइ कुशब्द साभळीने अति द्वेप आणे छे ते तत्क्षण दुःख पामे छे. तेने जे दुःख उपजे छे तेमां तेनो पोतानोज दोपछे, तेमा शब्दनो काइ दोप नथी. (३८). जे कोइ मधुर शब्द उपर अति राग करे छे, तेने कठोर शब्द उपर द्वेप उपजे छे अने तेथी मूर्ख माणस दुःख पामेछे, ज्यारे वीतराग मुनी एवा राग-द्वेपथी मुक्त रहे छे [३९]. मधुर शब्दने विपे लुब्ध थयेलो जीव अनेक चराचर जीवने हणे छे. स्वार्थमां लीन थयेलो अज्ञानी जीव ए जीवोने अनेक प्रकारे पीडे छे अने तेमने दुःख उपजावेछे. (४०).

सद्दाणुवाएण परिग्गहेण उप्पायणे रक्खण सन्निओगे । वए विओगे य कहं सुहंसे संभोग कालेय अतित्त लाभे ॥४१॥ सद्दे अतित्तेय परिग्गहम्मि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं । अतुट्ठि दोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्त ॥ ४२ ॥तण्हाभिभूयस्स अदत्त हारिणो सद्दे अतित्तस्स परिग्गहेय । माया मुसं वड्ढइ लोभ दोसा तत्थावि दुक्खा नवि मुच्चइसे ॥ ४३ ॥ मोसस्स पच्छाय पुरत्थओय पओग कालेय दुही दुरंते । एवं अदत्ताणि समाययंतो सद्दे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ४४ ॥ सद्दाणु रत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि । तत्थोवभोगेवि किलेस दुक्ख निव्वत्तई जस्स कएण दुक्ख ॥४५॥

मधुर शब्दनो रागी जीव ते वस्तु प्राप्त करवानी, तेनुं रक्षण करवानी, तेनो उपभोग करवानी, तेना नाशनी, अने तेना वि रहनी मूर्छाने लीधे क्याथी सुखी थाय ? ते भोगवती वखते पण तेनाथी ते तृप्त थतो नथी. [४१]. ज्यारे ते शब्दथी तृप्त थतो नथी, अने मूर्छाने लीधे ते उपर तेनी आसक्ति वधतीज जाय छे त्यारे ते असंतोषना दोषथी दुःखी थायछे अने लोभथी दोरवाइने पारकानी अण दीधी [अदत्ता] वस्तु हाथ करे छे. (४२). तृष्णाथी पराभव पामेलो ते प्राणी पारकानी वस्तु ले छे उता ए शब्द अने परिग्रहथी तेने संतोष थतो नथी, अने पछी लोभना दोषथी तेनामा माया अने जूठ वधे छे. एटलु छता पण ते दुःखथी मुक्त थतो नथी. [४३]. जूठ बोल्या पूर्वे अने त्यारपछी तेमज जूठ बोलती वखते पण ते अति दुःखी थाय छे. आ प्रमाणे पारकानी वस्तु ग्रहण कर्या छता तेना शब्दथी ते तृप्त थतो नथी परंतु दुःखी थाय छे अने एवा जीवनो कोइ रक्षक नथी. (४४). एवा शब्दमा अनुरक्त मनुष्यने कदापि काळे किंचित सुख पण क्याथी सभवे ? जे वस्तु प्राप्त करवाने तेणे कष्ट वेठेलु ते वस्तुनो उपभोग करती वखते पण तेने दुःख उपजे छे. [४५].

एमेव सद्दंमि गओ पओसं उवेइ दुक्खोह परंपराओ। पदुट्ठ चित्तोय चिणाइ कम्मं जंसे पुणो होइ दुहं विवागे ॥४६॥ सद्दे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोह परंपरेण। न लिप्पए भव मज्झेव संतो जलेणवा पुक्खरिणी पलासं ॥ ४७ ॥ घाणस्स गंधं गहण वयति त रागहेउंतु मणुन्न माहु। त दोसहेउं अमणुन्न माहु समोय जो तेसु स वीयरागो ॥ ४८ ॥ गंधस्स घाणं गहणं वयति घाणस्स गंध गहणं वयति। रागस्सहेउ समणुन्न माहु दोसस्स हेउ अमणुन्न माहु ॥४९॥ गंधेसु जो गिद्धि मुवेइ तिव्वं अकालिय पावइ से विणास। रागाउरे ओसहि गंधगिद्धे सप्पे विलाओविव निक्खमतो ॥५०॥ जेयावि दोस समुवेइ तिव्व त सिक्खणे सेउ उवेइ दुक्ख। दुद्दत दोसेण सएण जतू न किंचि गंध अवरज्झईसे ॥५१॥

एवीज रीते शब्द उपर द्वेष करनार जीव दुःखनी परंपरा उपार्जे छे. ज्यारे तेनुं चित्त द्वेषथी भरेलुं होय छे त्यारे ते घणां कर्म बांधे छे जे कर्म परीणामे दुःखना कारण रुप थइ पडे छे. (४६). परंतु शब्दथी विरक्त मनुष्य शोकथी मुक्त रहे छे. जेम कमल पत्र जळमा रहेवा छता भींजातुं नथी तेम ते जो के संसारमा रहे छे छता दुःखनी परंपराथी खरडातो नथी. [४७]. गंध नासिकानुं आकर्षण करे छे. सुगंध रागनुं अने दुर्गंध द्वेषनुं कारण [तीर्थकरे] कह्युं छे. भली भूंडी गंधने विषे राग द्वेष रहित होय ते वीतराग कहेवाय.* [४८].नासिका गंधने ग्रहण करेछे अने गंध नासिकानुं आकर्षण करे छे. सुगंध रागनुं अने दुर्गंध द्वेषनुं कारण (तीर्थकरे) कह्युं छे. [४९]. जेम रागातुर सर्प (चंदनादि) औषधिनी सुगंधथी ललचाइने पोताना राफडामाथी बहार नीकळी आवे छे अने दुःख पामेछे तेम गंधने विषे तीव्र मूर्च्छा राखनार अकालिक विनाशने पामेछे. [५०]. जे कोइ दुर्गंध उपर अति द्वेष आणे छे, ते तत्क्षण दुःख पामे छे. तेने जे दुःख उपजे छे तेमा तेनो पोतानोज दोष छे, तेमा गंधनो काइ दोष नथी. [५१].

---

*दरेक इन्द्रिय उपर तेर तेर गाथामा वर्णन छे.

एगत रत्तो रुइरासि गधे अयालिसेसे कुणई पओस । दुक्खस्स संपील मुवेइ बाले न लिप्पइ तेण मुणी विरागे ॥५२॥ गंधाणुगासाणु गएय जीवे चराचरे हिंसइणे गरूवे । चित्तेहिते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तठ गुरु किलिट्ठे ॥ ५३ ॥ गधाणुवाएण परिग्गहेण उप्पायणे रक्खण संनिओगे । वए विओगेय कहि सुहंमे सभोग कालेय अतित्त लाभे ॥५४॥ गधे अतित्तेय परिग्गहामि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं । अतुट्ठि दोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्त ॥ ५५ ॥ तण्हाभिभूयस्स अदत्त हारिणो गधे अतित्तस्स परिग्गहेय । माया मुस वड्ढइ लोभ दोसा तत्था विदुक्खा नवि मुच्चई से ॥ ५६ ॥ मोसस्स पच्छाय पुरत्थओय पओग कालेय दुही दुरंते । एव अदत्ताणि समाययतो गधे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥५७॥

जे कोइ सुगध उपर अति राग करे छे, तेने दुर्गंध उपर द्वेष उपजेछे, अने तेथी मूर्ख माणस दुःख पामे छे, ज्यारे वीतराग मुनी एवा रागद्वेषथी मुक्त रहे छे. [५२] सुगधने विषे लुब्ध थयेलो जीव अनेक चराचर जीवने हणे छे. स्वार्थमा लीन थयेलो अज्ञानी जीव ए जीवोने अनेक प्रकारे पीडे छे अने तेमने दुःख उपजावे छे. [५३]. सुगंधनो रागी जीव ते वस्तु प्राप्त करवानी, तेनु रक्षण करवानी, तेनो उपभोग करवानी, तेना नाशनी अने तेना विरहनी मूर्च्छाने लीधे क्यांथी सुखी थाय? ते भोगवती वखते पण तेनाथी तेने तृप्ति थती नथी. [५४]. ज्यारे ते गंधथी तृप्त थतो नथी, अने मूर्च्छाने लीधे ते उपर तेनी आसक्ति वधती जाय छे त्यारे ते असतोषना दोषथी दुःखी थाय छे अने लोभथी दोरवाइने पारकानी अणदीधी वस्तु हाथ करे छे. [५५]. तृष्णाथी पराभव पामेलो ते प्राणी पारकानी वस्तु ले छे छता ए गध अने परिग्रहथी तेने सतोष थतो नथी. अने पछी लोभना दोषथी तेनामा माया अने जूठ वधे छे. एटलु छता पण ते दुःखथी मुक्त थतो नथी. (५६). जूठु बोलवा पूर्वे अने त्यार पछी तेमज जूठु बोलती वखते पण ते अति दुःखी थाय छे. आ प्रमाणे पारकानी वस्तु ग्रहण कर्या छता तेनी गधथी ते तृप्त थतो नथी, परतु दुःखी थाय छे, अने एवा जीवनो कोइ रक्षक नथी. [५७].

गधाणरत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुह होज्ज कयाइ किंचि । तत्थोव भोगेवि किलेस दुक्खं । निव्वत्तए जस्स कएण दुक्खं ॥ ५८ ॥ एमेव गंधम्मि गओ पओसं उवेइ दुक्खोह परंपराओ । पदुट्ठ चित्तोय चिणाइ कम्म जंसे पुणो होइ दुहं विवागे ॥५९॥ गधे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोह परंपरेण । न लिप्पए भव मज्झेव सतो जलेण वा पुक्खरिणीपलासं ॥ ६० ॥ जीहाए रस गहण वयति त राग हेउतु मणुन्न माहु । त दोस हेउ अमणुन्न माहु समोय जो तेसु सवीयराओ ॥६१॥ रसस्स जीह गहणं वयति जिभ्भाए रसं गहण वयंति । रागरस हेउ समणुन्न माहु दोसस्सहेउं अमणुन्न माहु ॥ ६२ ॥ रसेसु जो गिध्दि मुवेइ तिव्वं अकालिय पावइ से विणासं । रागा उरे वडिस विभिन्न काए मच्छे जहा आमिसलोभ गिध्दे ॥ ६३ ॥

एवी गंधमा अनुरक्त मनुष्यने कदापि काळे किंचित सुख पण क्याथी संभवे ? जे वस्तु प्राप्त करवाने तेणे कष्ट वेठेलुं ते वस्तुनो उपभोग करती वखते पण तेने दुःख उपजे छे. [५८]. एवीज रीते गंध उपर द्वेष करनार जीव दुःखनी परंपरा उपार्जे छे. ज्यारे तेनुं चित्त द्वेपथी भरेलुं होय छे त्यारे ते घणा कर्म बांधे छे, जे कर्म परीणामे दुःखना कारणरुप थइ पडे छे. [५९]. परंतु गधथी विरक्त मनुष्य शोकथी मुक्त रहे छे. जेम कमलपत्र जळमा रहेवा छता भीजातु नथी तेम ते जोके संसारमा रहे छे छतां दुःखनी परंपराथी खरडातो नथी. [६०] रस जीभनुं आकर्षण करे छे. मधुर रस रागनुं अने कडु रस द्वेषनुं कारण [तीर्थंकरे] कह्युं छे. भलाभूंडा रसने विषे राग द्वेष रहित होय ते वीतराग केहवाय. [६१]. जीभ रसने ग्रहण करे छे अने रस जीभनुं आकर्षण करे छे, मधुर रस रागनुं अने कडु रस द्वेषनुं कारण (तीर्थंकरे) कह्युं छे. [६२]. जेम रागातुर माछलुं रसना लोभथी ललचाइने लोढाना कांटाथी भेदाइने अकाळे मरण पामे छे तेम रसने विषे तीव्र मूर्च्छा राखनार अकालिक विनाशने पामे छे. (६३)

जेयावि दोस समुवेइ तिव्वं तं सिख्खणे सेउ उवेइ दुख्ख । दुद्दत दोसेण सएण जंतू न किंचि रसं अवरज्झई से ॥६४॥एगत रत्तो रुइरेरसमि अतालिसे से कुणई पओस । दुख्खस्स संपील मुवेइ बाले न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥६५॥ रसाणुगासाणु गएय जीवे चराचरे हिसइ णेगरूवे । चित्ते हिंते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तट्ठ गुरु किलिट्ठे ॥ ६६ ॥ रसाणुवाएण परिग्गहेण उप्पायणे रख्खण सनिउगे । वए विओगेय कह सुहसे संभोग कालेय अतित्त लाभे ॥६७॥ रसे अतित्तेय परिग्गहमि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठि । अतुट्ठि दोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्त ॥ ६८ ॥ तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो रसे अतित्तस्स परिग्गहेय । मायामुसं वड्ढइ लोभ दोसा तथ्थावि दुख्खानवि मुच्चई से ॥६९॥

जे कोइ कटु रस उपर अति द्वेष आणे छे, ते तत्क्षण दुःख पामे छे. तेने जे दुःख उपजे छे तेमा तेनी जीभनो दोष छे, तेमा रसनो काइ दोष नथी [६४]. जे कोइ मधुर रस उपर अति राग करे छे, तेने कटु रस उपर द्वेष उपजे छे. अने तेथी मूर्ख माणस दुःख पामे छे, ज्यारे वीतराग मुनी एवा राग द्वेषथी मुक्त रहे छे. [६५] मुरसने विषे लुब्ध थयेलो जीव अनेक चराचर जीवने हणे छे. स्वार्थमा लीन थयेलो अज्ञानी जीव ए जीवोने अनेक प्रकारे पीडे छे अने तेमने दुःख उपजावे छे. [६६]. मुरसनो रागी जीव ते वस्तु प्राप्त करवानी, तेनु रक्षण करवानी, तेनो उपभोग करवानी, तेना नाशनी अने तेना विरहनी मूर्च्छाने लीधे क्याथी सुखी थाय ? ते भोगवती वखते पण तेनाथी तेने तृप्ति थती नथी. [६७]. ज्यारे ते रसथी तृप्त थतो नथी, अने मूर्च्छाने लीधे ते उपर तेनी आसक्ति वधतीज जाय छे त्यारे ते असतोषना दोषथी दुःखी थाय छे, अने लोभथी दोरवाइने पारकानी अणदीधी वस्तु हाथ करे छे (६८). तृष्णाथी पराभव पामेलो ते प्राणी पारकानी वस्तु ले छे छता ए रस अने परिग्रहथी तेने सतोष थतो नथी. अने पछी लोभना दोषथी तेनामा माया अने जूठ वधे छे. एटलु छता पण ते दुःखथी मुक्त थतो नथी. [६९].

गंधाणुरत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुह होज्ज कयाइ किंचि । तथ्थोव भोगेवि किलेस दुक्खं । निव्वत्तए जस्स कएण दुक्ख ॥ ५८ ॥ एमेव गधमि गओ पओस उवेइ दुक्खोह परंपराओ । पदुठ्ठ चित्तोय चिणाइ कम्मं जंसे पुणो होइ दुहं विवागे ॥५९॥ गधे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुख्खोह परंपरेण । न लिप्पए भव मझेव संतो जलेण वा पुख्खरिणीपलास ॥ ६० ॥ जीहाए रस गहणं वयति त राग हेउत्तु मणुन्न माहु । त दोस हेउ अमणुन्न माहु समोय जो तेसु सवीयराओ ॥६१॥ रसस्स जीहं गहणं वयति जिब्भाए रसं गहण वयंति । रागस्स हेउ समणुन्न माहु दोसस्सहेउ अमणुन्न माहु ॥ ६२ ॥ रसेसु जो गिद्धि मुवेइ तिव्वं अकालियं पावइ से विणास । रागा उरे वडिस विभिन्न काए मच्छे जहा आमिसलोभ गिद्धे ॥ ६३ ॥

एवी गंधमा अनुरक्त मनुष्यने कदापि काळे किंचित सुख पण क्याथी संभवे ? जे वस्तु प्राप्त करवाने तेणे कष्ट वेठेलुं ते वस्तुनो उपभोग करती वखते पण तेने दुःख उपजे छे. [५८]. एवीज रीते गंध उपर द्वेष करनार जीव दुःखनी परंपरा उपार्जे छे. ज्यारे तेनुं चित्त द्वेषथी भरेलुं होय छे त्यारे ते घणा कर्म बांधेछे, जे कर्म परीणामे दुःखना कारणरूप थइ पडे छे. [५९]. परंतु गंधथी विरक्त मनुष्य शोकथी मुक्त रहे छे. जेम कमलपत्र जळमा रहेवा छता भींजातुं नथी तेम ते जोके संसारमा रहे छे छता दुःखनी परंपराथी खरडातो नथी. [६०] रस जीभनुं आकर्षण करे छे. मधुर रस रागनुं अने कडु रस द्वेषनुं कारण [तीर्थंकरे] कह्युं छे. भलाभूंडा रसने विषे राग द्वेष रहित होय ते वीतराग केहवाय. [६१]. जीभ रसने ग्रहण करे छे अने रस जीभनुं आकर्षण करे छे, मधुर रस रागनु अने कडु रस द्वेषनुं कारण (तीर्थंकरे) कह्युं छे. [६२]. जेम रागातुर माछलुं रसना लोभथी ललचाइने लोढाना कांटाथी भेदाइने अकाळे मरण पामे छे तेम रसने विषे तीव्र मूर्च्छा राखनार अकालिक विनाशने पामे छे. (६३)

जेयावि दोस समुवेइ तिव्वं तं सिख्खणे सेउ उवेइ दुख्खं । दुदंत दोसेण सएण जंतू न किंचि रस अवरज्झई से ॥६४॥एगत रत्तो रुइरेरसंमि अतालिसे से कुणई पओस । दुख्खस्स सपील मुवेइ बाले न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥६५॥ रसाणुगासाणु गएय जीवे चराचरे हिसइ णेगरूवे । चित्ते हिंते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तट्ठ गुरु किलिट्ठे ॥ ६६ ॥ रसाणुवाएण परिग्गहेण उप्पायणे रख्खण सनिउगे । वए विओगेय कह सुहसे सभोग कालेय अतित्त लाभे ॥६७॥ रसे अतित्तेय परिग्गहमि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुठ्ठि । अतुठ्ठि दोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्त ॥ ६८ ॥ तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो रसे अतित्तस्स परिग्गहेय । मायामुसं वढ्ढइ लोभ दोसा तथ्थावि दुख्खानवि मुच्चई से ॥६९॥

जे कोइ कडु रस उपर अति द्वेप आणे छे, ते तत्क्षण दुःख पामे छे. तेने जे दुःख उपजे छे तेमा तेनी जीभनो दोप छे, तेमा रसनो काइ दोप नथी [६४]. जे कोइ मधुर रस उपर अति राग करे छे, तेने कडु रस उपर द्वेप उपजे छे. अने तेथी मूर्ख माणस दुःख पामे छे, ज्यारे वीतराग मुनी एवा राग द्वेपथी मुक्त रहे छे. [६५]. सुरसने विपे लुब्ध थयेलो जीव अनेक चराचर जीवने हणे छे. स्वार्थमा लीन थयेलो अज्ञानी जीव ए जीवोने अनेक प्रकारे पीडे छे अने तेमने दुःख उपजावे छे. [६६]. सुरसनो रागी जीव ते वस्तु प्राप्त करवानी, तेनु रक्षण करवानी, तेनो उपभोग करवानी, तेना नाशनी अने तेना विरहनी मूर्छाने लीधे क्याथी सुखी थाय ? ते भोगवती वखते पण तेनाथी तेने तृप्ति थती नथी. [६७]. ज्यारे ते रसथी तृप्त थतो नथी, अने मूर्छाने लीधे ते उपर तेनी आसक्ति वधतीज जाय छे त्यारे ते असतोपना दोपथी दुःखी थाय छे, अने लोभथी दोरवाइने पारकानी अणदीधी वस्तु हाथ करे छे (६८). तृष्णाथी पराभव पामेलो ते प्राणी पारकानी वस्तु ले छे छता ए रस अने परिग्रहथी तेने सतोप थतो नथी. अने पछी लोभना दोपथी तेनामा माया अने जूठ वधे छे. एटलुं छता पण ते दुःखथी मुक्त थतो नथी. [६९].

मोसस्स पच्छाय पुरथ्थओय पओग कालेय दुही दुरंते । एव अदत्ताणि समाययंतो रसे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥७०॥ रसाणु रत्तस्स नरस्स एव कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि । तथ्थोवभोगेवि किलेस दुख्खं निव्वत्तई जस्सकएण दुख्खं ॥ ७१ ॥ एमेव रसंमि गओ पओसं उवेइ दुख्खोह परंपराओ । पदुठ्ठ चित्तोय चिणाइ कम्मं जं से पुणो होइ दुह विवागो ॥७२॥ रसे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुख्खोह परंपरेण । न लिप्पइ भवमझेवसतो जलेण वा पुख्खरिणीपलासं ॥७३॥ कायस्स फासं गहण वयति त रागहेउंतु मणुन्न माहु । त दोस हेउं अमणुन्न माहु समोयजो तेसु स वीयरागो ॥ ७४ ॥ फासस्स काय गहणं वयति कायस्स फास गहणं वयति । रागस्स हेउ समणुन्न माहु दोसस्स हेउ अमणुन्न माहु ॥७५॥

जूटु बोलवा पूर्वे अने त्यारपछी तेमज जूटु बोलती वखते पण ते अति दुःखी थाय छे. आ प्रमाणे पारकानी वस्तु ग्रहण कर्या छतां तेना रसथी ते तृप्त थतो नथी, परंतु दुःखी थाय छे अने एवा जीवनो कोइ रक्षक नथी. [७०]. एवा रसमा अनुरक्त मनुष्यने कदापि काळे किंचित सुख पण क्याथी संभवे ? जे वस्तु प्राप्त करवाने तेणे कष्ट वेठेलुं ते वस्तुनो उपभोग करती वखते पण तेने दुःख उपजे छे. [७१]. एवीज रीते रस उपर द्वेष करनार जीव दुःखनी परंपरा उपार्जे छे. ज्यारे तेनुं चित्त द्वेषथी भरेलुं होय छे त्यारे ते घणा कर्म बांधे छे, जे कर्म परीणामे दुःखना कारण रुप थइ पडे छे. (७२). परंतु रसथी विरक्त मनुष्य शोकथी मुक्त रहे छे. जेम कमल पत्र जळमा रहेवा छता भींजातुं नथी, तेम ते जो के ससारमा रहे छे, छतां ते दुःखनी परंपराथी खरडातो नथी. (७३). स्पर्श शरीरनु आकर्षण करे छे. सु स्पर्श रागनुं अने कु-स्पर्श द्वेषनुं कारण [तीर्थंकरे] कहयुं छे. भलाभूंडा स्पर्शने विषे राग द्वेष रहित होय ते वीतराग केहवाय. [७४]. शरीर स्पर्शने ग्रहण करे छे, स्पर्श शरीरनुं आकर्षण करे छे. सु स्पर्श रागनु अने कु-स्पर्श द्वेषनु कारण [तीर्थंकरे] कहयुं छे. [७५].

फासरसजो गिद्धि मुवेइ तिव्व अकालिय पावइ से विणासं । रागाउरे सीय जलावसन्ने गाह ग्गहीए महिसेवरन्ने ॥ ७६ ॥ जेयावि दोस स मुवेइ तिव्व त सिख्खणे सेउ उवेइ दुख्ख । दुद्दत दोसेण सएण जतू न किंचि फासं अवरज्झईसे ॥ ७७ ॥ एगत रत्तो रुइरसि फासे अतालिसेसे कुणई पओस । दुख्खस्स सपीलमुवेइबाले न लिप्पई तेण मुणीविरागो ॥ ७८ ॥ फासाणु गासाणु गएयजीवे चराचरे हिंसई णेगरूवे । चित्तेहिते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तठ्ठ गुरु किलिठ्ठे ॥ ७९ ॥ फासाणु वाएण परिग्गहेण ऊप्पायणे रख्खण सनिओगे । वए विओगेय कह सुहसे सभोग कालेय अतित्त लाभे ॥८०॥ फामे अतित्तेय परिग्गहमि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुठ्ठिं । अतुठ्ठि दोसेण दुही परस्स लोभाविले आययइ अदत्त ॥ ८१ ॥

जेम रागातुर महिष शीतळ जळथी ल्लचाइने मगरमच्छथी पकडाइने अकाळे मरण पामे छे तेम स्पर्शने विषे तिव्र मूर्च्छा राखनार अकालिक विनाशने पामेछे. [७६]. जे कोइ कु-स्पर्श उपर अति द्वेष आणे छे, ते तत्क्षण दुःख पामे छे. तेने जे दुःख उपजे छे तेमा तेनो पोतानोज दोप छे, तेमा स्पर्शनो काइ दोप नथी. [७७]. जे कोइ सु-स्पर्श उपर अति राग करे छे, तेने कु-स्पर्श उपर द्वेष उपजे छे. अने तेथी मूर्ख माणस दुःख पामेछे. ज्यारे वीतराग मुनी एवा रागद्वेषथी मुक्त रहे छे. [७८]. सु-स्पर्शने विषे लुब्ध थयेलो जीव अनेक चराचर जीवो हणे छे स्वार्थमा लीन थयेलो अज्ञानी जीव ए जीवोने अनेक प्रकारे पीडे छे अने तेमने दुःख उपजावे छे. (७९) सु-स्पर्शनो रागी जीव ते वस्तु प्राप्त करवानी, तेनु रक्षण करवानी, तेनो उपभोग करवानी, तेना नाशनी अने तेना विरहनी मूर्च्छाने लीधे क्याथी सुखी थाय ? ने भोगवती वखते पण तेनाथी तेने तृप्ति थती नथी. [८०]. ज्यारे ते स्पर्शथी तृप्त थतो नथी अने मूर्च्छाने लीधे ते उपर तेनी आसक्ति वधतीज जाय छे त्यारे ते असंतोषना दोपथी दुःखी थाय छे अने लोभथी दोरवाइने पारकानी अण दीधी वस्तु हाथ करे छे. [८१].

तन्हाभिभूयस्स अदत्ताहारिणो फासे अतित्तस्स परिग्गहेय। मायामुसं वड्ढइ लोभ दोसा तथ्थावि दुख्खानवि मुच्चई से ॥८२॥मोसस्स पच्छाय पुरथ्थओय पओग कालेय दुही दुरंते। एव अदत्ताणि समाययतो फासे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥८३॥ फासाणुरत्तस्स नरस्सएवं कत्तो सुह होज्ज कयाइ किंचि। तथ्थोव भोगेवि किलेस दुख्ख निव्वत्तई जस्स कएण दुख्खं ॥ ८४ ॥ एमेव फासंमि गओ पओसं उवेइ दुख्खोह परंपराओ। पदुट्ठ चित्तोय चिणाइ कम्म जसे पुणो होइ दुह विवागे ॥ ८५ ॥ फासे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुख्खोह परंपरेण। न लिप्पई भवमझ्झे वसंतो जलेण वा पुख्खरिणी पलास ॥८६॥ मणस्स भाव गहण वयंति त राग हेउतु मणुन्न माहु। त दोस हेउ अमणुन्न माहु समोय जो तेसु स वीयरागो ॥८७॥

तृष्णाथी पराभव पामेलो ते प्राणी पारकानी वस्तु ले छे छता ए स्पर्श अने परिग्रहथी तेने सतोष थतो नथी. अने पछी लोभना दोषथी तेनामा माया अने जूठ वधे छे. एटलुं छता पण ते दुःखथी मुक्त थतो नथी. [८२]. जूठुं बोलवा पूर्वे अने त्यारपछी तेमज जूठु बोलती वखते पण ते अति दुःखी थाय छे. आ प्रमाणे पारकानी वस्तु ग्रहण कर्या छता तेना स्पर्शथी ते तृप्त थतो नथी. परतु दुःखी थाय छे. अने एवा जीवनो कोइ रक्षक नथी. [८३]. एवा स्पर्शमा अनुरक्त मनुष्यने कदापि काळे किंचित सुख पण क्याथी समळे ? जे वस्तु प्राप्त करवाने तेणे कष्ट वेठेलु ते वस्तुनो उपभोग करती वखते पण तेने दुःख उपजे छे. (८४). एवीज रीते स्पर्श उपर द्वेष करनार जीव दुःखनी परंपरा उपार्जे छे. ज्यारे तेनु चित्त द्वेषथी भरेलु होय छे त्यारे ते घणा कर्म बाधे छे, जे कर्म परिणामे दुःखना कारणरुप थइ पडे छे. [८५]. परतु स्पर्शथी विरक्त मनुष्य शोकथी मुक्त रहे छे. कमळ-पत्र जळमा रहेवा छतां भींजातुं नथी, तेम ते जो के ससारमां रहे छे, छता ते दुःखनी परंपराथी खरडातो नथी. [८६]. भाव मननु आकर्षण करेछे. मनोहर भाव रागनु अने अमनोहर भाव द्वेषनु कारण (तीर्थंकरे) कह्युं छे. भला भूडा भावने विषे राग द्वेष रहित होय ते वीतराग कहेवाय. [८७].

भावस्स मण गहण वयति मणस्स भाव गहण वयति । रागस्स हेउं समणुन्न माहु दोसस्सहेउ अमणुन्न माहु ॥ ८८ ॥ भावेसु जो गिद्धि मुवेइ तिव्व अकालिय पावइ से विणासं । रागाउरे कामगुणेसु गिद्धे करेणु मग्गा वहिएव्व नागे ॥८९॥ जेयावि दोसं समुवेइ तिव्व त सिख्खणे सेउ उवेइ दुरस्स दुद्दतदोसेण सएण जंतून किचि भाव अवरज्झई से ॥ ९० ॥ एगतरत्तो रुइरसि भावे अतालिसेमेकुणई पओसं । दुख्खम्स सपील मुवेइ बाले न लिप्पई तेण मुणी विरागे ॥ ९१ ॥ भावाणुगासाणु गएय जीवे चराचरे हिंसइणेगरूवे । चित्तेहिते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तठ्ठ गुरू किलिट्ठे ॥ ९२ ॥ भावाणु वाएण परिग्गहेण उप्पायणे रख्खण सन्निओगे । वए विओगेय कह सुहसे सभोगकालेय अतित्त लाभे ॥९३॥

मन भावने ग्रहण करे छे अने भाव मननुं आकर्षण करे छे. मनोहर भाव रागनु अने अमनोहर भाव द्वेषनु कारण [तीर्थंकरे] कह्यु छे. [८८] कामातुर हाथी जेम हाथणीनी पाछळ आडे मार्गे जाय छे अने परवश पडी अकाले मरण पामे छे तेम भावने विषे तीव्र मूर्च्छा राखनार अकालिक विनाशने पामेछे. (८९). जे कोइ अमनोहर भाव उपर अति द्वेष आणे छे ते तत्क्षण दुःख पामेछे तेने जे दुःख उपजे छे तेमा तेना मननो दोष छे. तेमा भावनो काइ दोष नथी. [९०] जे कोइ मनोहर भाव उपर अति राग करेछे तेने अमनोहर भाव उपर द्वेष उपजेछे. अने तेथी मूर्ख माणस दुःख पामेछे ज्यारे वीतराग मुनी एवा राग द्वेषथी मुक्त रहेछे (९१) मनोहर भावने विषे लुब्ध थयेलो जीव अनेक चराचर जीवने हणे छे. स्वार्थमा लीन थयेलो अज्ञानी जीव ए जीवोने अनेक प्रकारे पीडे छे अने तेमने दुःख उपजावे छे (९२). मनोहर भावनो रागी जीव ते वस्तु प्राप्त करवानी, तेनु रक्षण करवानी, तेनो उपभोग करवानी, तेना नाशनी अने तेना विरहनी मूर्च्छाने लीधे क्याथी सुखी थाय? ते भोगवती वखते पण तेनाथी तेने तृप्ति थती नथी (९३).

भावे, अतित्तेय परिग्गहंमि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुठ्ठिं । अतुठ्ठि दोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्त ॥९४॥ तण्हाभिभुयस्स अदत्तहारिणो भावे अतित्तस्स परिग्गहेय । मायामुस वड्ढइ लोभ दोसा तथ्थावि दुक्खा नवि मुच्चई से ॥९५॥ मोसस्स पच्छाय पुरथ्थओय पओ गकालेय दुही दुरते । एवं अदत्ताणि समाययतो भावे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥९६॥ भावाणुरत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुह होज्ज कयाइ किंचि । तथ्थोव भोगेवि किलेस दुक्ख निव्वत्तई जस्स कएण दुक्ख॥९७॥ एमेव भावंमि गओ पओस उवेइ दुक्खोह परंपराओ । पदुठ्ठ चित्तोय चिणाइ कम्म जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ९८ ॥ भावे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोह परंपरेण । न लिप्पइ भवमझेवसतो जलेण वा पुक्खरिणीपलास ॥९९॥

ज्यारे ते भावथी तृप्त थतो नथी अने मूर्च्छाने लीधे ते उपर तेनी आसक्ति वधतीज जायछे त्यारे ते असंतोषना दोषथी दुःखी थाय छे. अने लोभथी दोरवाटने पारकानी अणदीधी वस्तु हाथ करेछे. [९४]. तृष्णाथी पराभव पामेलो ते प्राणी पारकानी वस्तु ले छे छता ए भाव अने परिग्रहथी तेने संतोष थतो नथी अने पछी लोभना दोषथी तेनामा माया अने जूठ वधे छे. एटलुं छतां पण ते दुःखथी मुक्त थतो नथी. (९५). जूठ बोलवा पूर्वे अने त्यारपछी तेमज जूठ बोलती वखते पण ते अति दुःखी थाय छे. आ प्रमाणे पारकानी वस्तु ग्रहण कर्या छतां पण तेना भावथी ते तृप्त थतो नथी, परतु दुःखी थाय छे. अने एवा जीवनो कोइ रक्षक नथी. (९६). एना भावमा अनुरक्त मनुष्यने कदापि काळे किंचित सुख पण क्याथी सभवे? जे वस्तु प्राप्त करवाने तेणे कष्ट वेठेलु ते वस्तुनो उपभोग करती वखते पण तेने दुःख उपजे छे. [९७]. एवीज रीते भाव उपर द्वेष करनार जीव दुःखनी परंपरा उपार्जे छे. ज्यारे तेनु चित्त द्वेषथी भरेलु होय छे त्यारे ते घणां कर्म बाधे छे, जे कर्म परीणामे दुःखनां कारणरुप थइ पडे छे. (९८). परंतु भावथी विरक्त मनुष्य शोकथी मुक्त रहे छे. जेम कमलपत्र जळमा रहेवा छता भीजातु नथी, तेम ते जो के संसारमा रहेवा छता ते दुःखनी परंपराथी खरडातो नथी. [९९].

एविंदियथ्थाय मणस्स अथ्था दुक्खस्स हेउ मणयस्स रागिणो॥ ते चेव थोवंपि कयाइ दुक्ख न वीयरागस्सकरेति किंचि॥१००॥ न कामभोगा समय उवेंति नयावि भोगा विगइं उवेंति । जे तप्पओसीय परिग्गहीय सो तेसु मोहाविगइ उवेइ ॥ १०१ ॥ कोहच्च माणच्च तहेव माय लोभं दुगछ अरइ रइच । हास भयं सोग पुमिथ्थियेय नपुसं वेय विविहेय भावे ॥१०२॥ आवज्जई एव मणे गरूवे एव विहे कामगुणेसु सत्तो । अन्नेय एयप्पभवे विसेसे कारुन्न दीणे हरिमे वइस्से ॥ १०३ ॥ कप्प न इच्छेज्ज सहायलिच्छु पच्छाणुतावेय तव प्पभाव । एव वियारे अभिय प्पयारे आवज्जई इदिय चोर वस्से ॥ १०४ ॥

आ प्रमाण इन्द्रिय अने मनना सकल्प-विकल्पो रागातुर मनुष्यने दुःख उपजावे छे. परतु तेओ राग द्वेष रहित वीतराग [जीतेन्द्रिय]ने लेश मात्र दुःख उपजावी शक्ता नथी. [१००]. काम भोगनी वस्तुओ पोते समता अथवा विकार उत्पन्न करती नथी, परतु तेमना प्रति राग द्वेष आणवाथी मायाने लीधे एवा विकार उत्पन्न थाय छे [१०१]. क्रोध, मान, माया, लोभ, दुर्गछा,अराति, रति, हर्ष, भय, शोक, स्त्री वेद, पुरुप वेद, अने नपुसक वेद* प्रति विषयनी अभिलाषा, आवा विविध प्रकारना भाव विषयासक्त मनुष्यना हृदयमा उत्पन्न थाय छे तेमज वळी उपर कहेला क्रोधादिकने लीधे अन्य विकारो पेदा थाय छे. एवो मनुष्य दयाने पात्र लज्जित अने सर्वत्र अप्रीतिकर थइ पडे छे. [१०२ १०३]. आ चार स्वाध्यायमा शीथील थइ, साधुए शिष्यनी इच्छा करवी नहि, चारित्र लीधा पछी तप वीगेरे माटे खेद न करवो तेम पोताना तपना प्रभावनी साधुए इच्छा करवी नही. एवा अनेक प्रकारना विकारो तो इन्द्रियोने वश थयेलामा उद्भवे छे १[१०४].

*चार कषाय अने नव नोकषाय. १ Such emotions of an infinite variety arise in one who is the slave of his senses

तओसे जायंति पओयणाइं निमिज्जिउ मोहमहन्नवंमि सुहेसिणो दुक्ख विणोयणठ्ठा तप्पच्चयं उज्जमएय रागी ॥१०५॥ विरज्जमाणस्सय इंदियथ्था सद्दाइया तावइय प्पगारा । न तस्स सव्वेवि मणुन्नयवा निव्वत्तयंती अमणुन्नयंवा ॥१०६॥ एवस सकप्पविकप्पणासु सजायई समय मुवट्ठियस्स । अथ्थेय सक नओ तओ से पही यप काम गुणेसु तन्हा ॥ १०७ ॥ स वीयरागोकय सव्व किच्चो खवेइ नाणावरणं खणेणं । तहेव ज दरिसण मावरेइ जच तराय पकरेइ कम्मं॥१०८॥ सव्व तओ जाणइ पासएय अमोहणे होइ निरंतराए । अणासवे भाण समाहि जुत्तेआ उखखए मोख्ख मुवेइ सुद्धो ॥१०९॥

इन्द्रिय सुखनी अभिलाषाथी जीव मोह समुद्रने विषे डूबी दुःखथी दूर रहेवाने अनेक युक्ति प्रयुक्ति रचे छे अने ए निमित्ते रागी द्वेषी जीव [हिंसादिक] उद्यम आदरे छे. [१०५]. इन्द्रिय अने शब्दादिक [शब्द, रुप, रस, गंध, स्पर्शादि] विषयो वीरागी (विरक्त) पुरुषने राग द्वेष उपजावी शक्ता नथी. (१०६). राग द्वेपादि सकल्प-विकल्प एज समस्त दोषना मूळ छे, एवी भावनाने विषे प्रवर्त्तनारने संपूर्ण समता [समत्वपणु] प्राप्त थाय छे. ज्यारे इन्द्रिय अने शब्दादि वस्तुनी तृष्णा ओछी थाय छे, त्यारे भोग भोगववानी तृष्णा बंध पडे छे. (१०७). आवी तृष्णाओने त्यजनार वीतराग जे सर्व कार्य सिद्ध करे छे ते क्षण मात्रमां ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय अने अंतराय कर्म सर्व खपावी दे छे. [१०८]. [कर्म खपाव्या] पछी ते ज्ञान वडे सर्व लोकालोकने देखी शके छे, ते मोहनी कर्म अने अंतराय कर्म रहित थाय छे, तेना आश्रव (पाप) दूर थाय छे अने ते शुद्ध शुक्ल ध्यान* अने समाधि ग्रस्त थइने, आयुष्य खपावीने, मोक्ष प्राप्त करे छे. (१०९).

*He is proficient in meditation and concentration of thoughts

सोतरस सव्वरस दुहरस मुक्खो जंवाहई सययं जंतुमेयं । दीहामय विप्पमुक्को पसत्थो तोहोइ अच्चंत सुही कयत्थो ॥११०॥ अणाइ कल प्पभवरस एसो सव्वरस दुक्खस्स पमोक्खमग्गो । वियाहिओ ज समुवेच्च सत्ता कमेण अच्चंत सुही भवति त्तिबेमि ॥ १११ ॥ ❀ इति श्री पमायठाण नाम झयण दुव्वात्तिरस सम्मत्त ॥ ३२ ॥ ❀

अध्ययन ३३. कर्म-प्रकृति.

अठ्ठ कम्माइ वोच्छामि आणुपुव्वि जहक्कमं जेहि बद्धो अय जीवो ससारे परिवत्तई ॥ १ ॥ नाणा वरण चेव दसणा वरण तहा । वेयणिज्जा तहा मोह आउ कम्म तहेवय ॥ २ ॥ नामकम्मंच गोयच अतराय तहेवय ।

जे दुःखो जीवने निरतर पीडा कर्या करेछे ते दुःखथी ते मुक्त थाय छे. अने आ प्रमाणे कर्म रूपी रोगनी पीडाथी मुक्त थइने ते अत्यत सुखी थाय छे अने सिद्ध दशाने पामे छे. [११०]. अनादि काळथी उत्पन्न थयेलां सर्व दुःखरुप जे कर्म तेनाथी मुक्त थवानो मार्ग श्री तीर्थकर भगवाने कही सभळाव्यो छे. जे जीव ए मार्गे प्रवर्त्तशे ते क्रमे क्रमे अत्यत सुखने पामशे. (१११).

* अध्ययन बत्रीशमु सपूर्ण.

❀ अध्ययन ३३ ❀

हवे आठ प्रकारना कर्म अनुक्रमे कहुं छु, जे कर्मथी बधायेलो जीव (चार गति रुप) ससारमा परिवर्त्तन करे छे. [१]. ए आठ प्रकारना कर्म सक्षिप्ते नीचे प्रमाणे छेः—¹[१] ज्ञानावरणीय कर्म [जेम वादळा सूर्यनी कान्ति ढाके छे तेम आखना पाटा समान आ कर्म ज्ञानने रोके छे].

¹ Which acts as an obstruction to right knowledge आ ज्ञानावरणीय कर्म अनत ज्ञान गुण पामवामां अतराय रुप छे,

एत्र मेयाइं कम्माइ अठ्ठेवउ समासओ ॥३॥

१[२] दर्शनावरणीय कर्म [जेम प्रतिहार राजाना दर्शन करतां अटकावे छे तेम आ कर्म दर्शनने रोके छे]. २[३] वेदनीय कर्म (मधथी खरडेली खड्गधाराने पेठे शाता अशाता आ कर्मथी उपजे छे). ३[४] मोहनीय कर्म (मदिरानी पेठे अज्ञानी विकल अने बेभान आ कर्म करे छे). ४[५] आयुः कर्म (नर्कादि गतिथी नीकळवा इच्छे पण आ कर्मथी हेडमा पुरेला केदी पेठे नीकळी न शके). ५[६] नाम कर्म [चितारानी पेठे चार गति रुप संसारमां घणा भव पमाडेछे]. ६[७] गोत्र कर्म (कुंभारना चाकडानी पेठे उंच निच गोत्रमा आ कर्म जन्म लेवरावे छे). ७[८] अंतराय कर्म (राजानी तेजुरी साचवनार पोताना उपयोग माटे एक पाइ न लइ शके तेम आ कर्मथी बधायेला सदुपयोग न करी शके). [२–३].

१ Which acts as an obstiaction to iight faith आ दर्शनावरणीय कर्मे अनंत दर्शन गुण रोकेला छे. २ Which leads to experiencing pain and pleasuie अनंत अव्याबाध आत्मिक सुख आ कर्मने लीधे प्राप्त थइ शकतु नथी. ३ Which leads to delusion आ कर्म क्षायक समकित गुण रोक्यो छे. ४ Which determines the length of life आ कर्म अक्षय स्थिति गुण गुमावे छे. ५ Which deteimines the name oi individuality of the embodied soul आथी अमूर्त्ति गुण रोकायछे. ६Which determines his Gotra. आ कर्मथी अगुरु लघु गुण गुम थाय छे. ७Which pievents one's entiance on the path that leads to eternal bliss अनंत आत्म शक्ति गुण आ कर्मथी दबाइ जाय छे. आ आठ कर्मनो क्रम विचारवा जेवोछे, नाम कर्मने छठुं केम मुक्युं अने अतराय कर्मने आठमु शा माटे गोठव्युं ए ज्ञान गोष्टि समजवा जेवी छे. ज्ञान अने दर्शन ए जीवत्वना मुख्य तत्व छे तेमांए ज्ञान प्रधान छे. ज्ञानथीज सारासारनुं भान थता जीवन सार्थक थाय छे माटे ज्ञानने प्रथम पद आपी तेने रोकनार ज्ञानावरणीय कर्मने प्रथम अने बीजो नंबर दर्शनावरणीय कर्मने आपेलछे. आ बे कर्मना विपाकना उदय निमित्त वेदनिय कर्मछे. वेदनिय कर्मथी सुख दुःख थता, राग द्वेषने जन्म मळेछे जे मोहनीय कर्मछे. मोहांध थतां फरी जन्म भ्रमण करवुं पडेछे एथी आयुष्यनी आवश्यकता उभी थायछे. आयुष्य उत्पन्न थवाथी नाम कर्म आवी मळेछे ते साथे गोत्रनो पण संबंधछे अने गोत्रानुसार अतराय कर्मने आधीन थया विना छुटको थतो नथी.

नाणावरण पच विहं सुय आभि णिबोहियं । ओहिनाणच तइयं मणनाणंच केवलं ॥ ४ ॥ निद्दा तहेव पयला निद्दानिद्दाय पयलपयलाय । तत्तोय थीणगिद्धीउ पचमा होइ नायव्वा ॥ ५ ॥ चक्खु मचक्खु ओहिस्स दंसणे केवलेय आवरणे । एवतु नव विगप्प नायव्वं दसणावरणं ॥ ६ ॥

[१] ज्ञानावरणीय कर्मना पांच भेद कया छे:-(१) श्रुत- ज्ञानावरणीय, [२]अभिनिबोधिक-ज्ञानावरणीय (मति ज्ञानावरणीय) (३) अवधि ज्ञानावरणीय, [४] मन-पर्याय-ज्ञानावरणीय, [५] केवल-ज्ञानावरणीय. [४] [२] दर्शना-वरणीय कर्मना नव भेद कह्या छे:-(१) निद्रा,* (२) प्रचला,* [३] निद्रा निद्रा,* (४) प्रचला प्रचला,* [५] थीणद्धि निद्रा,१* (६)चक्षु-दर्शनावरणीय, [७] अचक्षु-दर्शनावरणीय, [८] अवधि दर्शनावरणीय, (९) केवल दर्शनावरणीय. [५-६].

*प्रो. जेकोबी आ पांच प्रकारनी निद्रानो जुदो जुदो अर्थ करे छे. जुदा जुदा ग्रन्थो तपासता आ अर्थ नीकळे छे. निद्रा-जगाडता तुरत जगाय एवी उंघ प्रचला—The slumber of a standing or sitting person उभा के बेठां झोको आवी जाय छे. निद्रा निद्रा-Deep sleep जगाडता घणी महेनत पडे तेवी उंघ. प्रचला प्रचला चालतां चालता उंघ आवी जाय ते. प्रो जेकोबी तेने High degree of activity पण खरो अर्थ तो Sleep of a person in motion थइ शके छे. १चारे निद्रा करता आ अति तीव्र छे. आ निद्रावस्थाए अर्ध वासुदेवनु बळ होय छे. दिवस दरम्यान चिंतवेल कार्य रात्रीए सुता पछी आ निद्रा वाळा उंघमाने उंघमा करे छे. बहुधा आ निद्रामा अनर्थज थाय छे तो पण हालमां एक सारु काम थयानो दाखलो अमेरिकामा बन्यो छे. चोपान्याओमा लखाण करनार एक लेखकने सवारमा एक चोपान्याना तंत्री तरफथी बेन्कनो चेक मळ्यो के तमारा कल्याणा लखाण माटे आ बदलो मोकल्यो छे, लेखके विचार कर्यो के आ लेख में लख्योज नथी ने मोकल्यो पण नथी. वधारे भोजन लइ निराते आलोचता याद आव्यु के चार दिवस पेहेला आवो विषय लखवा तेनी इच्छा हती. स्मरण शक्तिनी साक्षता लेता छेवट सिद्ध थयु के ते दीवसे रात्रीना बार वागते लेखक उंघमाने उंघमा उठ्यो हतो. बत्ती सळगावी लखवाना साधन एकठा कर्या, लख्युं अने जाते पोष्ट ओफीसमा नाखी आवी सूइ गयो. त्रण दिवस वीती गया अने आ पत्र आव्यो त्यारे भान थयुं. आ प्रमाणे उंघमाने उंघमा अर्धी रात्रीए रस्ता वच्चे चाल्या जतां घणा माणसो पोलीसने मळे छे.

वेयणियंपिय दुविहं साय मसायंच आहियं । सायरसओ वहू भेया एमेव असायस्सवि ॥७॥ मोहाणिज्जंपि दुविहं दसणे चरणे तहा । दसणे तिविह वुत्त चरणे दुविह भवे ॥८॥ सम्मत्तचेव मिच्छत्त सम्माभिच्छत्त मेवय । एयाओ तिन्नि पयडीओ मोहणिज्जस्स दसणे ॥९॥ चरित्त मोहण कम्म दुविहतु वियाहियं । कसाय मोहणिज्जंच नोकसाय तहेवय ॥१०॥ सोलस विह भेएण कम्मतु कसायज । सत्तविह नवविहवा कम्म नोकसायज ॥ ११ ॥

(३) वेदनिय-कर्म बे प्रकारना छे :–[१] शाता-वेदनीय कर्म, (२) अशाता-वेदनीय-कर्म. शाता अने अशाता-वेदनीय कर्मना घणा भेद छे. (७). [४] मोहनीय-कर्म बे प्रकारना छे :–[१] दर्शन-मोहनी-कर्म, [२] चारित्र-मोहनी कर्म. वळी दर्शन-मोहनी-कर्मना त्रण भेद छे अने चारित्र-मोहनी-कर्मना बे भेद छे. दर्शन-मोहनी-कर्मना त्रण भेद :–[१] सम्यक्, (२) मिथ्यात्व, [३] सम्यक्-मिथ्यात्व. चारित्र-मोहनी-कर्मना बे भेद :–[१] कषाय-मोहनी-कर्म अने [२] नोकषाय-मोहनी-कर्म. कषाय मोहनी-कर्मना सोळ अने नोकषाय-मोहनी-कर्मना सात अथवा नव भेद छे. [अनन्तानु बंधी, प्रत्याख्यानी, अप्रत्याख्यानी अने *संजल ए प्रत्येकमां क्रोध, मान, माया, लोभ ए रीते कषाय-मोहनी-कर्मना सोळ भेद थाय छे. नोकषाय मोहनी कर्मना भेद—हास्य, रति, अरति, भय, शोक, दुगंछा अने त्रणवेद, ए प्रमाणे सात, अने जो त्रणवेद अर्थात स्त्रीवेद, पुरुषवेद अने नपुसकवेद ए त्रणे जुदा जुदा गणीए तो नव भेद थाय छे]. मोहनी कर्मना कुल २८ भेद थया. (८–११).

*संजवलन—थोडा वखतनुं. जेम पाणीमा लींटी दोरी ते थोडा वखतमा भेगी थइ जाय छे तेम संजलना क्रोध, मान, माया, लोभ थोडा वखत माटेना होय छे.

नेरइय तिरिख्खाउ मणुस्साउ तहेवय । देवाउयं चउथ्थंतु आउ कम्मं चउव्विहं ॥ १२ ॥ नाम कम्मंतु दुविह सुह मसुहच्च आहिय। सुहस्सउ बहूभेया एमेव असुहस्सवि ॥१३॥ गोयं कम्म दुविह उच्च नीयंच आहियं । उच्च अठ्ठ विह होइ एवनीयावि आहिय ॥ १४ ॥ दाणे लाभेय भोगेय उवभोगे वीरिए तहा । पंचविह मतरायं समासेण विया हिय ॥१५॥

---

[५] आयुःकर्म चार प्रकारना छे :—नर्क, तिर्यच, मनुष्य अने देवता. [१२]* (६) नाम कर्म बे प्रकारना छे :—[१] शुभ-नाम-कर्म, [२] अशुभ-नाम-कर्म. शुभ-नाम कर्मना अनेक (सामान्य रीते ३७) भेद, अने अशुभ-नाम-कर्मना पण अनेक (सामान्य रीते ३४) भेद कह्या छे [१३]. (७) गोत्र-कर्म बे प्रकारना छे :—[१] उच्च-गोत्र-कर्म, [२] नीच गोत्र-कर्म. उच्च गोत्रना आठ भेद छे तेमज निच गोत्रना पण आठ भेद छे.२ [१४] [८] अतराय-कर्म पाच प्रकारना छे :—[१]दान-अतराय कर्म, [२]लाभ-अतराय कर्म, (३) भोग अतराय-कर्म, [४] उपभोग-अतराय-कर्म, [५] वीर्य-अतराय कर्म.१[१५].

---

*महा आरभ करवाथी, महा परिग्रहथी, मास मदीरा वापरवाथी, पचेन्द्रि जीवनो वध करवाथी नारकीनु आयुष्य बधाय छे. कपट करवाथी, माया जाळ पाथरवाथी, जुठ्ठ बोलवाथी, जुठा तोल माप राखवाथी, खोटा लेख लखाण उभा करवाथी तिर्यचनु आयुष्य बधाय छे भद्रीक प्रकृतिथी, विनयवत स्वभावथी, पर जीवनी दया राखवाथी अने मत्सर भावनो त्याग करवाथी मनुष्यनु आयुष्य बधाय छे. सराग संयमथी, सयमा सयमथी, बाळ तपश्चर्याथी, अकाम निर्जराथी देवतानु आयुष्य बधाय छे. १ काया, भाषा अने भावना सरळताथी शुभनाम कर्म बधाय छे. २ जाती, कूळ, बळ, रुप, तप, श्रुत, लाभ अने सत्ता. ३वधी जोगवाइ छता आ कर्मने प्रभावे भोगवी शकातु नथी.प्रो. जेकोबीना शब्दो सत्यछे के—The Karman in question brings about an obstruction to the enjoyment &c though all other circumstances be favourable अनाज वीगेरे एक वखत भोगवाय ते भोग अने वस्त्रादि वीगेरे अनेक वखत भोगवाय ते उपभोग.

एयाओ मूल पयडीओ उत्तराओय आहिया । पएसग्गं खित्त कालेय भावंवा दुत्तरं सुण ॥ १६ ॥ सव्वेसिं चेव कम्माणं पएसग्ग मणतगं । गाठियसत्ताईय अतो सिद्धाण आहिय ॥१७॥ सव्व जीवाण कम्मंतु संगहे छद्दिसा गय । सव्वेसुवि पएसेसु सव्वं सव्वेण बद्धगं ॥१८॥ उदहिसरि नामाणं तीसइं कोडिकोडीओ । उक्कोसिया ठिई होइ अतोमुहुत्त जहन्निया ॥१९॥ आवरणिज्जाण दुन्हपि वेयणिज्जे तहेवय । अंतराएय कम्मंमि ठिई एसा वियाहिया॥२०॥ उदहीसरिस नामाणं सत्तर कोडिकोडीओ । मोहणिज्जस्स उक्कोसा अंतो मुहुत्त जहन्निया॥२१॥ तित्तीस सागरोवम उक्कोसेण वियाहिया । ठिई आउकम्मस्स अतोमुहुत्त जहन्निया ॥२२॥

ए प्रमाणे आठ मूळ प्रकृति अने श्रुत-ज्ञानावरणीयादि उत्तर प्रकृति कही. (अर्थात कर्मना प्रकार अने तेना भेद कह्या). हवे तेना प्रदेशाग्र, क्षेत्र, काल अने भावना स्वरुप कहुं छुं ते सांभळो. [१६]. (द्रव्यथी) प्रत्येक कर्मना प्रदेशाग्र [परमाणुं] अनंत छे. तेनी संख्या (राग-द्वेषादि) गाठमा गंठायेला [अभव्य]जीवोना करतां अनंत गणी वधारे छे, परतु सिद्ध जीवोना करता (अनतमे भागे) ओछी छे. [१७]. (क्षेत्रथी) कर्म सर्व जीवोने छए दिशामा बांधी लेछे अने कर्म आत्म-प्रदेशने सर्वांशे (दूध पाणीनी पेठे) बंधन रुप छे. [१८]. (काळथी) बन्ने आवरणीय (अर्थात-ज्ञानावरणीय अने दर्शनावरणीय) तेमज वेदनीय अने अंतराय ए चारे कर्मनी उत्कृष्ट स्थिति त्रीस* कोटानकोटी सागरोपमनी अने तेमनी जघन्य [टुंकामां टुंकी] स्थिति अंत-मुहूर्त्तनी [बे घडीथी माठेरी] होय छे.,(१९-२०). मोहनीय कर्मथी उत्कृष्ट स्थिति सित्तेर कोटानकोटी सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति अंत-मुहूर्त्तनी होय छे. (२१). आयुः कर्मनी उत्कृष्ट स्थिति तेत्रीश कोटानकोटी सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति अंत मुहूर्त्तनी होय छे. [२२].

*३००००००००००००००० सागरोपम.

उदहिसरिस नामाणं वीसइ कोडिकोडीओ । नाम गोयाण उक्कोसा अठ्ठ मुहुत्ता जहन्निया ॥ २३ ॥ सिद्धाणणत भागोय अणुभागा हवंतिओ । संव्वे सुवि पएसग्ग सव्वजीवे सइछ्छियं ॥ २४ ॥ तम्हा एएसिं कम्माणं अणुभागे वियाणिया । एएसिं सवरे चेव खवणेय जए बुहे त्तिबेमि ॥२५॥

॥ इति कम्मप्पगडीय नाम झयण सम्मत्त ॥ ३३ ॥

अध्ययन ३४. लेश्या विषे.

लेस झयण पवख्खामि आणुपुव्वि जहक्कमं । छन्हपि कम्म लेसाण अणुभावे सुणेहमे ॥१॥

नाम अने गोत्र कर्मनी उत्कृष्ट स्थिति वीश कोटानकोटी सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति आठ मुहूर्त्तनी होय छे. (२३). [भावथी] सिद्ध अनत छे अने कर्मना अनुभाग (भेद) पण अनत छे. अने आ सर्व अनुभागने विषे प्रदेशाग्र [परमाणुओ] सर्व जीव करता अनतगणा छे (२४). एटला माटे उपर कहेला आठ कर्मना अनुभागने ससारना कारणरुप जाणीने पंडितोए तेनो क्षय करवानो यत्न करवो. [२५]. आ प्रमाणे सुधर्मा स्वामी जंबु स्वामीने कहेछे.

* तेत्रीसमुं अध्ययन सपूर्ण. *

अध्ययन ३४

हवे लेश्या* संबंधी अध्ययन अनुक्रमे कहु छुं कर्मथी उत्पन्न थती छ लेश्यानुं स्वरुपादि कहुं छुं ते सांभळो. (१).

---

* Different conditions produced in the soul by the influence of different Karman.

नामाइं वन्न रस गंध फास परिणाम लख्खणं । ठाणं ठिइं गइं चाउं लेसाणंतु सुणेहमे ॥२॥ किन्हा नीला काऊ तेऊ पम्हा तहेवय । सुक्कलेसाय छट्टाय नामाइतु जहक्कमं ॥३॥ जीमूय निद्ध सकासा गवल रिठ्ठ गसन्निभा । खज ञ्ण नयण निभा किन्ह लेसाओ वन्नओ ॥ ४ ॥ नीला सोग संकासा चास पिछ्छु सम प्पभा । वेरुलिय निद्ध संकासा नील लेसाओ वन्नओ ॥ ५ ॥ अयसीपुप्फ संकासा कोइल छद सन्निभा । पारेवय गीव निभा काउ लेसाओ वन्नओ ॥६॥ हिंगुलयधाउ सकासा तरुणा इच्च सन्निभा । सुय तुड पईव निभा तेउ लेसाओ वन्नओ ॥७॥ हरियाल भेय सकासा हलिद्दा भेय सन्निभा । सणासण कुसम निभा पम्ह लेसाओ वन्नओ ॥८॥

लेश्याना [१] नाम, [२] वर्ण, [३] रस, [४] गंध, [५] स्पर्श, [६] परिणाम, [७] लक्षण, [८] स्थान, [९] स्थिति, [१०] गति अने [११] आयुष्य साभळो. (२) १ लेश्याना अनुक्रमे नाम :–[१] कृष्ण-लेश्या, [२] नील-लेश्या, [३] कापोत-लेश्या, [४] तेजो-लेश्या, [५] पद्म-लेश्या अने [६] शुक्ल-लेश्या.* (३).[२]कृष्ण-लेश्यानो वर्ण (रंग) जीमूत एटले काळा मेघ जेवो पाडानां शींगडा जेवो, अरीठाना फळ जेवो अथवा तो खज पक्षीनी आखनी कीकी जेवो होय छे. (४). नील-लेश्यानो वर्ण नील-अशोक वृक्ष जेवो, नील-चास पक्षीनी पाख जेवो अथवा तो वैडूर्य [नील-मणि] जेवो होय छे. (५). कापोत-लेश्यानो वर्ण अलसीना फुल जेवो, कोयलनी पाख जेवो अथवा तो पारेवानी डोक जेवो होय छे. (६). तेजो-लेश्यानो वर्ण हिंगळा जेवो, उगता सूर्यना जेवो, अथवा तो पोपटनी चाच जेवो होय छे (७). पद्म-लेश्यानो वर्ण हरतालना भूका जेवो, हळदरना भूका जेवो अथवा तो शण अने अशणना फुल जेवो होय छे. (८).

---

*तेना रग Black, Blue, Grey, Red, Yellow and white

संखक कुंद सकासा खीर पूर समप्पभा (रयय हार संकासा सुक्क लेसाओ वन्नओ ॥९॥ जह कडुय तुंबग रसो निंब रसो कडुय रोहिणि रसोवा । इत्तोउ अणंत गुणो। रसोउ किण्हाए नायव्वो ॥ १० ॥ जह तिक्कडुयरस रसो तिख्खो जह हथ्थियपिप्पली एवा । इत्तोवि अणत गुणो रसोउ नीलाए नायव्वो ॥ ११ ॥ जह तरुण अवग रसो तुवर कविठ्ठरस वावि जारिसओ । इत्तोवि अणत गुणो रसोउ काऊण नायव्वो ॥१२॥ जह परिणयंवग रसो पक्क कविठ्ठरसवावि जारिसओ । इत्तोवि अणत गुणो रसोउ तेऊए नायव्वो ॥१३॥ वर वारुणीएव रसो विविहाणन आसवाण जारिसओ । महु मेरगरसव रसो इत्तो पम्हाए परएण ॥ १४ ॥ खज्जूर मुदिय रसो खीर रसो खड सक्कर रसोवा । इत्तोवि अणत गुणो रसोउ सुक्काए नायव्वो ॥१५॥

शुक्ल-लेश्यानो रग शख जेवो, अक-मणि [शुक्ल-मणि] जेवो, कुन्द वृक्षना फुल जेवो, दूधनी धारा जेवो, रुपा जेवो अथवा मुक्ताहार [मोतीनी माळा] जेवो होय छे. (९). २ कृष्ण लेश्यानो रस कडवी तुमडीना, कडवा लींबडाना अथवा तो रोहिणीना स्वाद करतां अनंत गणो वधारे कडवो होय छे. [१०]. नील लेश्यानो रस त्रिकटुक [सुंठ, मरी अने पीपर]ना अने हस्ति-पिप्पिली [गज-पीपर]ना स्वाद करतां अनत गणो तीक्ष्ण [तीखो] होय छे. [११]. कापोत-लेश्यानो रस काची केरीना अने काचा कपित्थ (कोठां)ना स्वाद करता अनत गणो खाटो होयछे. [१२] तेजो लेश्यानो रस पाकी केरीना अने पक कपित्थ[पाका कोठां]ना स्वाद करता अनत गणो [खट] मीठो होय छे. [१३]. पद्म-लेश्यानो रस उत्तम मदिराना, विविध प्रकारना आसवना, मधु मद्यना अने मेरकना स्वाद करतां अनत गणो [खट] मीठो होय छे. [१४]. शुक्ल-लेश्यानो रस खजूर, द्राक्ष, दूध, खांड अने साकरना स्वाद करतां अनंत गणो मधुर [मीठो] होय छे. (१५).

जह गोम डस्स गंधो सुणग मडस्सव जहा अहिमडस्स । इत्तोवि अणत गुणो लेसाणं अप्पसथ्थाणं ॥ १६ ॥ जह सुरहि कुसुम गधो गध वासाण पिस्स माणाणं । इत्तोवि अणंत गुणो पसथ्थ लेसाण तिन्हंपि ॥ १७ ॥ जह कर गयस्स फासो गोजिम्भा एव सागपत्ताणं । इत्तोवि अणंत गुणो लेसाणं अप्पसथ्थाणं ॥ १८ ॥ जह बूरस्सव फासो नव णीयस्सव सरीस कुसुमाणं । इत्तोवि अणत गुणो पसथ्थ लेसाण तिन्हांपि ॥ १९ ॥ तिविहोव नवविहोवा सत्तावीसइ विहे क्कसीउवा । दुसओ तेयालोवा लेसाणं होइ परिणामो ॥२०॥

४. अप्रशस्त (कनिष्ठ) लेश्या अर्थात कृष्ण, नील अने कापोत लेश्यानी गंध गाय, कूतरा अने सर्पनां (सडेलां) कलेवरनी दुर्गंध करतां अनंत गणी वधारे खराब होय छे. [१६]. प्रशस्त [उत्तम] लेश्या अर्थात तेजो, पद्म अने शुक्ल लेश्यानी गंध सुरभि कुसुमनी अने वटातां [पीसातां] वसाणा (कपुर-काचली वगेरे)नी सुगंध करता अनंत गणी वधारे सारी होय छे.(१७). अप्रशस्त अर्थात कृष्ण नील अने कापोत लेश्यानो स्पर्श करवतना,गायनी जीभना अथवा तो साग वृक्षना पांदडाना स्पर्श करतां अनंत गणो वधारे कठोर होय छे. [१८]. प्रशस्त अर्थात तेजो, पद्म अने शुक्ल लेश्यानो स्पर्श कपासना फुल, माखण यातो शिरीषनां फुलना स्पर्श करतां अनत गणो वधारे कोमळ होय छे. (१९). ६ लेश्याना परिणाम त्रण प्रकारनां छे :—[१] जघन्य (कनिष्ठ); [२] मध्यम अने [३] उत्कृष्ट. ए प्रत्येकना उपर प्रमाणे त्रण त्रण भेद पाडवाथी नव, एना त्रण त्रण भेद पाडवाथी सत्तावीश, एना त्रण त्रण भेद पाडवाथी एकाशी अने एना त्रण त्रण भेद पाडवाथी कुल २४३ परिणाम थाय छे. (२०).

पचासव प्पवत्तो तीहि अगुत्तोछ्रसुअविरओय । तिव्वारम्भ परिणओ खुद्दो साहस्सिओ नरो ॥२१॥निद्धंधस परिणामो निस्संसो अजिइंदिओ । एय जोग समाउत्तो किन्ह लेसंतु परिणमे ॥२२॥ ईसा अमरिस अतवो अविज्ज माया अहिरियाय । गिद्धि पओसेयसढे पमत्ते रसलोलुए ॥ २३ ॥ साय गवेसे यारम्भ अविरओ खुद्दो साहसिओ नरो । एय जोग समाउत्तो नील लेसतु परिणमे ॥ २४ ॥ वंके वंकसमायारे नियडिल्ले अणुज्जुए । पलिउंचगओ विहिए मिच्छादिट्ठी अणारिए ॥ २५ ॥ उप्फालग दुट्ठवाईयतेणेया विय मच्छरी । एय जोग समाउत्तो काउ लेसतु परिणमे ॥२६॥

---

७ लेश्याना लक्षण '—पाच आश्रवे करी प्रमादी, त्रण गुप्तिथी मोकळो, छकायनी रक्षाथी रहित, क्रुर कार्यनो करनार, सर्वेनुं अहित इच्छनार, अविचारी कार्यनो करनार, निद्धस परिणाम वाळो (आ लोकादिना कष्ट, दुःखनी बीक रहित), जीवहिंसाथी न डरनार, अने इन्द्रियोने न जीतनार, एवो मनुष्य कृष्ण लेश्यावाळो गणाय. [२१-२२]. इर्षा, कदाग्रह, तप प्रति अभाव, अविद्या, कपट, निर्लजता, लंपटता, द्वेष, शठता, प्रमाद,रस-लोलुपता, एटला दुर्गुणे करी सहित, अने वळी इन्द्रिओना सुखनो अभिलाषी, आरंभथी अविरत, क्षुद्र अने साहसिक, एवो मनुष्य नील-लेश्या वाळो गणाय. (२३-२४). जे मनुष्य वचन अने आचारमा वक्र [अप्रमाणिक] होय, कपटथी वर्ततो होय, असरल (अप्रमाणिक) होय, अन्यना उपर आक्रोश करनार होय, राग-द्वेषथी दुष्ट बोलनार होय, अश्रद्धावान होय, सम्यक्ना लक्षण रहित [अनार्य] होय, बीजाने दुःख उत्पन्न थाय एवु बोलनार होय, चोर होय, अने अन्यनी संपत्ति जेनाथी देखी न खमाय, एवो मनुष्य कापोत-लेश्या वाळो गणाय. [२५-२६].

नीयावत्ती अचवले अमाई अकुतूहले । विणीय विणए दंते जोगवं उवहाणव ॥२७॥ पियधम्मे दढवम्मे वज्ज-भीरु हिएसए । एय जोग समाउत्तो तेउ लेसतु परिणमे ॥ २८ ॥ पयणु कोह माणेय माया लोभेय पयणुए । पसतचित्ते दतप्पा जोगवं उवहाणवं ॥२९॥ तहा पयणु वाईय उवसतोजि इदिए । एय जोग समाउत्तो पम्हलेसंतु परिणमे ॥३०॥ अट्ट रुद्दाणि वज्जित्ता धम्म सुक्काइ झायए । पसतचित्ते दतप्पा समिए गुत्तेय गुत्तिसु ॥३१॥ सरागे वीयरागेवा उवसंते जिइदिए । एय जोग समाउत्तो सुक्क लेसतु परिणमे ॥३२॥ असखिज्जाणो सप्पिणीण उसप्पिणीण जेसमया । संखाईया लोगा लेसाण हवंति ठाणाई ॥३३॥

जे मनुष्य नम्रता युक्त, अचल, माया अने कुतूहल रहित, विनीत, इन्द्रियोने दमनार, योगवान अने उपधानवान होय, धर्म जेने प्रिय होय, धर्ममा जे दृढ होय, पापथी जे डरतो होय अने मोक्षाभिलाषी होय, एवो मनुष्य तेजो-लेश्या वाळो गणाय. (२७-२८). जे मनुष्यने क्रोध, मान, माया अने लोभ बहु ओछा होय, जेनु चित्त शान्त होय, जे आत्माने दमनार होय, जे योग तथा उपधानवान होय, वळी जे स्वल्प-भाषी [थोडुं बोलनार] अने शान्त होय, अने जेणे इन्द्रियोने वश करी होय, एवो मनुष्य पद्म-लेश्या वाळो गणाय. [२९-३०]. जे मनुष्य आर्त्तध्यान अने रौद्रध्यान तजीने धर्म ध्यान अने शुक्ल ध्यान धरनार होय, जेनु चित्त शान्त होय, जे आत्माने दमनार होय, जे पाच समिति अने त्रण गुप्ति युक्त होय, जे सराग अथवा राग रहित होय, शान्त होय, अने जेणे इन्द्रियोने वश करी होय, एवो मनुष्य शुक्ल लेश्या वाळो गणाय. (३१-३२). ८ लेश्याना स्थान :—असख्य अवसर्पिणी अने उत्सर्पिणीना जेटला समय अने असंख्याता लोक-आकाशना जेटला प्रदेश, तेटला (शुभ-अशुभ) स्थान लेश्याना जाणवा. [३३].

मुहुत्तद्धतु जहन्ना तित्तीस सागरा मुहुत्तहिया । उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा किन्ह लेसाए ॥३४॥ मुहुत्तद्धतु जहन्ना दस उदही पलीय मसंखभागमब्भहिया । उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा नीललेसाए ॥ ३५ ॥ मुहुत्तद्धतु जहन्ना तिन्नुदही पलिय मसंखभाग मब्भहिया । उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा काउ लेसाए ॥ ३६ ॥ मुहुत्तद्धतु जहन्ना दुन्नुदही पलिय मसंखभाग मब्भहिया । उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा तेउ लेसाए ॥३७॥ मुहुत्तद्धतु जहन्ना दस उदही हुंति मुहुत्त मब्भहिया । उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा पम्ह लेसाए ॥३८॥ मुहुत्तद्धतु जहन्ना तित्तीसं सा-गरा मुहुत्तहिया । उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा सुक्क लेसाए ॥३९॥ एसा खलु लेसाणओहेणं ठिईओ वन्नियाहोइ । चउसुवि गईसुइत्तो लेसाण ठिईओ वोच्छामि ॥४०॥

---

९ लेश्यानी स्थिति :—कृष्ण लेश्यानी जघन्य [ओछामां ओछी] स्थिति अर्धा मुहूर्त्तनी (बे घडी माहेली), अने उत्कृष्ट स्थिति तेत्रीश सागरोपम अने एक मुहूर्त्तनी जाणवी. [३४]. नील-लेश्यानी जघन्य स्थिति अर्धा मुहूर्त्तनी अने उत्कृष्ट स्थिति दश सा-गरोपम अने पल्योपमना असंख्यातमा भागथी अधिक जाणवी.(३५). कापोत लेश्यानी जघन्य स्थिति अर्धा मुहूर्त्तनी अने उत्कृष्ट स्थिति त्रण सागरोपम अने पल्योपमना असंख्यातमा भागथी अधिक जाणवी.(३६) तेजो-लेश्यानी जघन्य स्थिति अर्धा मुहूर्त्तनी अने उत्कृष्ट स्थिति बे सागरोपम अने पल्योपमना असंख्यातमा भागथी अधिक जाणवी. [३७]. पद्म-लेश्यानी जघन्य स्थिति अर्धा मुहूर्त्तनी अने उत्कृष्ट स्थिति दश सागरोपम अने एक मुहूर्त्तनी जाणवी. (३८) शुक्ल लेश्यानी जघन्य स्थिति अर्धा मुहूर्त्तनी अने उत्कृष्ट स्थिति तेत्रीश सागरोपम अने एक मुहूर्त्तनी जाणवी. (३९). लेश्यानी सामान्य प्रकारनी स्थिति उपर प्रमाणे वर्णवी छे. हवे चार गति (नारकी, तिर्यंच, मनुष्य अने देवता)ने विषे लेश्यानी स्थिति यथास्थित वर्णवुं छुं. [४०].

दस वास सहस्साइं काउए ठिई जहन्नियाहोइ । तिन्नु दही पलिओनममसंखभागंच उक्कोसा ॥४१॥ तिन्नु दही पलिओवम मसंखभागोय जहन्ननीलठिई । दस उदहीपलिओवममसखभागचउक्कोसा ॥४२॥ दसउदही पलिओवममसखभाग जहन्निया होइ।तित्तीम सागराओ उक्कोसा होइ किन्हाए॥४३॥एसा नेरइयाण लेसाण ठिईउ वन्निया होइ । तेण पर वोच्छामी तिरिय मणुयाण देवाण॥४४॥ अतोमुहुत्तमध्धा लेसाण ठिई जहिं जहि जाओ । तिरियाण नराणंच वज्जित्ता केवल लेसं ॥ ४५ ॥ मुहुत्तध्धतु जहन्ना उक्कोसा होइ पुव्वकोडीओ । नवहि वरिसेहि ऊणा नायव्वा सुक्क लेसाए ॥ ४६ ॥ एसा तिरिय नराण लेसाण ठिईओ वन्निया होइ । तेण पर वोच्छामि लेसाण ठिईउ देवाण ॥ ४७ ॥

कापोत-लेश्यानी [नारकी जीव तरीकेनी] जघन्य स्थिति दश हजार वर्षनी अने उत्कृष्ट स्थिति त्रण सागरोपम अने पल्योपमना असंख्यातमा भागनी जाणवी (४१). नील-लेश्यानी (नारकी जीव तरीकेनी) जघन्य स्थिति त्रण सागरोपम अने पल्योपमना असंख्यातमा भागनी, अने उत्कृष्ट स्थिति दश सागरोपम अने पल्योपमना असंख्यातमा भागनी जाणवी. [४२]. कृष्ण-लेश्यानी (नारकी जीव तरीकेनी) जघन्य स्थिति दश सागरोपम अने पल्योपमना असंख्यातमा भागनी अने उत्कृष्ट स्थिति तेत्रीश सागरोपमनी जाणवी. [४३]. नारकी जीवनी लेश्यानी (जघन्य अने उत्कृष्ट) स्थिति उपर वर्णवी छे. हवे तिर्यच, मनुष्य अने देवतानी लेश्यानी स्थिति वर्णवुं छुं. (४४). शुक्ल लेश्या सिवाय बाकीनी कोइ पण लेश्यानी तिर्यच अने मनुष्यनी स्थिति अंतर्मुहुर्त्तनी जाणवी. [४५]. शुक्ल लेश्यानी (तिर्यच अने मनुष्यनी) जघन्य स्थिति अर्धा मुहूर्त्तनी अने उत्कृष्ट स्थिति एक पूर्व-कोटि वर्षमा नव वर्ष ओछा जाणवी.(४६). तिर्यच अने मनुष्यनी लेश्यानी स्थिति उपर वर्णवीछे. हवे देवतानी लेश्यानी स्थिति वर्णवु छु. (४७).

उ.अ. ३४

१०१

दस वास सहस्साइ किन्हाए ठिई जहन्निया होइ। पलिय मसखिज्जइमो उक्कोसा होइ किन्हाए॥४८॥ जाकिन्हाए ठिई खलु उक्कोसा साउ समय मब्भहिया। जहन्नेण नीलाए पलिय मसखच उक्कोसा ॥४९॥ जा नीलाए ठिई खलु उक्कोसा साउ समय मब्भहिया। जहन्नेण काऊए पलिय मसखच उक्कोसा ॥५०॥ तेग पर वोच्छामी तेऊ लेसा जहा सुर गणाणं। भवणवइ वाणमतर जो इस वेमाणिवाणच ॥५१॥ पलिओवम जहन्न उक्कोसा सागराओ दुन्निहिया पलिय मसखिज्जेण होइ भागेण तेऊए ॥ ५२ ॥ दस वास सहस्साइ तेऊए ठिई जहन्निया होइ। दुन्नुदही पलिओवम असख भागच उक्कोसा ॥ ५३ ॥

कृष्ण-लेश्यानी (देवतानी) जघन्य स्थिति दश हजार वर्षनी अने उत्कृष्ट स्थिति पल्योपमना असख्यातमा भागनी जाणवी (४८) नील-लेश्यानी [देवतानी] जघन्य स्थिति कृष्ण लेश्यानी उत्कृष्ट स्थिति करता एक समय वधारेनी, अने उत्कृष्ट स्थिति पल्योपमना असख्यातमा (म्होटा) भागनी जाणवी. [४९]. कापोत-लेश्यानी [देवतानी] जघन्य स्थिति नील लेश्यानी उत्कृष्ट स्थिति करतां एक समय वधारेनी, अने उत्कृष्ट स्थिति पल्योपमना असख्यातमा [एथी म्होटा] भागनी जाणवी (५०). भुवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिक देवताना समुहनी तेजो-लेश्यानी स्थिति हवे वर्णवु छु.[५१]. तेजो लेश्यानी (सामान्य देवतानी) जघन्य स्थिति एक पल्योपमनी अने उत्कृष्ट स्थिति बे सागरोपम अने पल्योपमना असख्यातमा भागनी जाणवी. [५२]. तेजो लेश्यानी (भुवनपति आदि देवतानी) जघन्य स्थिति दश हजार वर्षनी अने उत्कृष्ट स्थिति बे सागरोपम अने पल्योपमना असख्यातमा भागनी जाणवी. (५३)*

*नोट ?—गाथा ३९ थी ५३ सुधीमां ज्यां ज्यां "पल्योपमना असख्यातमा भागनी" लखेलु छे त्यां त्यां मो. जेकोबीए एवो शब्दार्थ करेलो छे के "पल्योपम अने असख्येयना एक भाग जेटली".

जा तेउए ठिई खलु उक्कोसा साउ समय मब्भहिया । जहन्नेण पम्हाए दसउ मुहुत्ता हियाइ उक्कोसा ॥ ५४ ॥ जा पम्हाए ठिई खलु उक्कोसा साउ समय मब्भहिया । जहन्नेण सुक्काए तित्तीस मुहुत्त मब्भहिया ॥ ५५ ॥ किण्हा नीला काऊ तिन्निवि एयाओ अहम लेसाओ । एयाहि तिहिवि जीवो दुग्गइ उववज्जइ ॥ ५६ ॥ तेऊ पम्हा सुक्का तिन्निवि एयाओ धम्म लेसाओ । एयाहिं तिहिंवि जीवो सुग्गइ उववज्जई ॥ ५७ ॥ लेसाहिं सव्वाहि पढमे समयम्मि परिणयाहिंतु । नहु कस्सइ उववाओ परभवे अथ्थि जीवस्स ॥५८॥ लेसाहिं सव्वाहि चरिमे समयम्मि परिणयाहिंतु । नहु कस्सवि उववाओ परभवे अथ्थि जीवस्स ॥ ५९ ॥ अंतोमुहुत्तमि गए अंतोमुहुत्तमि सेसे चेव लेसाहि परिणयाहिं जीवागच्छंति परलोय ॥ ६० ॥

पद्म लेश्यानी (देवतानी) जघन्य स्थिति तेजो लेश्यानी उत्कृष्ट स्थिति करता एक समय वधारेनी अने उत्कृष्ट स्थिति *दश सागरोपम अने एक मुहूर्त्तनी जाणवी. [५४]. शुक्ल लेश्यानी (देवतानी) जघन्य स्थिति पद्म लेश्यानी उत्कृष्ट स्थिति करता एक समय वधारेनी अने उत्कृष्ट स्थिति *तेत्रीश सागरोपम अने एक मुहूर्त्तनी जाणवी. (५५). १० लेश्यानी गतिः—कृष्ण, नील अने कापोत ए त्रण अधर्म लेश्याओ छे. ए त्रण लेश्याए करीने जीव दुर्गतिने पामे छे. (५६). तेजो, पद्म अने शुक्ल ए त्रण धर्म लेश्याओ छे. ए त्रण लेश्याए करीने जीव सद्गतिने पामे छे. (५७). ११ लेश्यानुं आयुष्यः—आ सर्व लेश्याओ जीवने प्राप्त थाय तेना प्रथम समयने विषे उपजवापणु रहेतु नथी. (५८) आ सर्व लेश्याओ जीवने प्राप्त थाय तेना चरम [आखर] समयने विषे उपजवापणु रहेतु नथी. [५९]. लेश्यानुं अंतमुहूर्त्त चालतु होय अने तेनो शेष भाग बाकी रह्यो होय ते समये लेश्याना परिणामना प्रमाणमा जीव नवो जन्म प्राप्त करेछे. [६०].

* नोट २—गाथा ५४ अने ५५ मा "दश सागरोपम अने एक मुहूर्त्तनी" अने "तेत्रीश सागरोपम अने एक मुहूर्त्तनी" लखेलुं छे तेने बदले प्रो. जेकोबीए एवो अर्थ करेलो छे के "दश मुहूर्त्त वधारेनी" अने "तेत्रीश मुहूर्त्त वधारेनी".

तम्हा एयासि लेसाण अणुभावे वियाणिया । अप्पसथ्य ओवज्जित्ता पसथ्थाओ अहिट्ठए मुणित्तिबेमि ॥ ६१ ॥

○ ॥ इति श्री लेसझयणं सम्मत्तं ॥ ३४ ॥ ○

अध्ययन ३५. अणगार मार्ग (साधुनो धर्म).

सुणेहमे एगग्ग मणे मग्ग बुद्धेहिं देसिय । जमाय रतो भिक्खू दुक्खाणंत करो भवे ॥ १ ॥ गिहिवासं परिच्चज्ज पव्वज्जा मस्सिए मुणी । इमे संगे वियाणिज्जा जेहिं सज्जति माणवा ॥२॥ तहेवहिंसं अलियं चोज्जं अबम्भसेवण । इच्छा कामचलोहच्च सजओ परिवज्जए ॥ ३ ॥ मणोहरचित्त घरं मल्लधूवेण वासियं । सकवाड पंडुरुल्लोय मणसावि न पथ्थए ॥४॥

तेटला माटे साधु पुरुषोए सर्व लेश्याना अनुभाग जाणीने अप्रशस्त [कृष्ण, नील, कापोत] लेश्याओनो त्याग करवो अने प्रशस्त (तेजो, पद्म अने शुक्ल) लेश्याओ प्राप्त करवी. [६१]. आ प्रमाणे सुधर्मा स्वामी जंबु स्वामीने कहेछे.

॥ अध्ययन चोत्रीसमुं संपुर्ण. ॥

॥ अध्ययन ३५. ॥

जे मार्ग चालवाथी भिक्षुक (साधु) सर्व दुःखनो अंत आणी शके छे, एवो श्री बुद्ध [तीर्थंकर] देखाडेलो मार्ग हुं तमने कहीं संभळावुं छुं ते श्रवण करो (१). गृहवासनो परित्याग करीने अने प्रव्रज्या (दिक्षा) धारण करीने मुनिए [पुत्र कलत्रा दिनो] जे संग मनुष्यने बंधन कर्ता गणाय छे तेनो त्याग करवो. (२). तेमज वळी मुनिए हिंसा, मृषावाद, चोरी [अदत्तादान], अब्रह्मचर्य सेववुं [मैथुन-सेवन], इच्छा; काम भोग अने लोभनो परित्याग करवो. (३). चित्र कामथी सुशोभित करेला, पुष्प अने धूपनी सुगंधवाळा-कमाड (कपाट) वाळा, अने उजळा उलेचवाळा मनोहर मंदिर [उपाश्रय]नी साधुए मनथी पण इच्छा करवी नहि. (४).

इंदियाणिउ भिख्खूरसतारिसंमि उवस्सए । दुक्कराइ निवारेउ काम राग विवढ्ढणे ॥ ५ ॥ सुसाणे सुन्न गारेवा रुख्खमूलेव एगगो । पइरिके पर कडेवा वासं तथ्था भिरोयए ॥ ६ ॥ फासुयमि अणाबाहे इथ्थीहिं अणभिदुए । तथ्थ संकप्पए वासं भिख्खू परम संजए ॥ ७ ॥ न सय गिहाइ कुव्वेज्जानेव अन्नेहि कारए । गिह कम्म समारंभे भूयाणदिस्सए वहो ॥८॥ तसाणं थावराणच्च सुहुमाण बायराणय । तम्हागिह समारंभं संजओ परिवज्जाए ॥९॥ तहेव भत्त पाणेसु पयणे पयावणेसुय । पाणभूय दयठ्ठाए नपए नपया वए॥१०॥ जल धन्न निरिसिया जीवा पुढवी कठ्ठ निरिसया । हम्मति भत्तपाणेसु तम्हा भिख्खू नपयावए ॥११॥

कारण के काम-रागने वधारनार एवा मनोहर उपाश्रयमा पोतानी इन्द्रिओने वश राखवानु काम साधुने मुश्केल थइ पडे छे. (५). स्मशानमा, सूना घरमा, वृक्षना थड तळे, एकान्त (स्त्री, पशु, पंडक रहित) स्थळमा, अथवा तो अन्यने माटे बंधावेल मकानमां साधुए रहेवु जोइए. (६). संयम पाळनार साधुए जीव जतु रहित, आत्माने अबाध [स्वाध्यायमा अंतराय न आवे एवा], अने स्त्री रहित स्थळमां रहेवुं. [७]* साधुए पोते मकान बाधवुं नहि तेमज बीजा पासे बंधाववुं नहि, कारण के घर बाधवामा त्रस अने स्थावर तेमज सूक्ष्म अने बादर जीवनी हिंसा थाय छे. माटे साधुए घर बाधवाना आरंभ समारंभथी दूर रहेवु. (८-९). तेमज वळी साधुए पोते आहार-पाणी राधवु नहि तेमज बीजा पासे रधाववु नहि. त्रस अने स्थावर जीवनी दया जाणीने साधुए पोते राधवुं नहि, अन्य पासे रंधाववु नहि. (१०]. जळ, धान्य, पृथ्वी अने काष्टने विषे रहेता जीवो आहार-पाणीथी [पकाववाथी] हणाय छे, तेटला माटे साधुए राधवुं-रंधाववु नहि. [११].

*प्रो. जेकोबी आ गाथानो एवो अर्थ करेछे के " संयमवान साधुए स्वच्छ, गीच वस्ती वगरना अने स्त्री रहित स्थळमां रहेवु.

विसप्पे सव्वओ धारे बहुपाणि विणासणे । नत्थि जोइ समे सत्थे तम्हा जोइ नदी वए ॥ १२ ॥ हिरन्नं जाव रूवच मणसावि नपथ्थए । समलेट्ठु कचणे भिक्खू विरए कय विक्कए ॥ १३ ॥ किणंतो कइओ होइ विक्कणंतोय वाणिओ । कय विक्कयमि वट्टतो भिक्खू न हवइ तारिसो ॥१४॥ भिक्खियव्वं नकेयव्व भिक्खुणा भिक्खुवित्तिणा । कय विक्कओ महादोसो भिक्खावित्ती सुहावहा ॥१५॥ समुयाण उछ मेसेज्जा जहा सुत्त मणिदियं। लाभा लाभमि सतुट्ठे पिंडवाय चरे मुणी ॥१६॥ अलोले न रसे गिद्धे जिब्भा दते अमुछिए । न रसट्ठाए भुंजेज्जा जवणट्ठाए महामुणी ॥१७॥ अच्चण सेवणच्चेव वदण पूयण तहा । इड्ढी सक्कार सम्माण मणसावि न पथ्थए ॥१८॥

अग्नि जेवु विनाशनु बीजु कोइ शस्त्र नथी, कारण के ते सर्व दिशामां पथराइने घणा जीवनो नाश करे छे. तेटला माटे साधुए अग्नि सळगाववो नहि (१२). साधुए सोना रूपानी मनथी पण इच्छा करवी नहि. कांचन अने पाषाणने समान गणीने साधुए क्रयविक्रयथी [लेवा-वेचवाथी] दूर रहेवु. (१३) मूल्य आपी वस्तु लेवाथी ते ग्राहक बनेछे, अने मूल्य लइ वस्तु वेचवाथी ते वाणिओ [वेपारी] बनेछे. क्रय-विक्रय [सूत्र प्रमाणे] साधुनु लक्षण नथी (१४). भिक्षावृत्तिथी पेट भरनारनु नाम भिक्षुक [साधु]; माटे भिक्षुके [साधुए] भिक्षा मागवी जोइए, मूल्य आपीने लेवु न जोइए, क्रय विक्रय महान दोषछे, परतु भिक्षावृत्ति सुखने आपनारछे. (१५). साधुए घणा घरना समुदायमाथी थोडी थोडी दोषरहित भिक्षा सूत्रोक्त रीते लेवी. भिक्षाना लाभालाभथी [भिक्षा मळे या न मळे तेथी] सतोष मानीने साधुए भिक्षावृत्तिने माटे फरवु जोइए. (१६). महामुनिए सरस आहारनी तीव्र अभिलाषा करवी नहि, पोताना जीभ अने दांतने वश राखवा, अने भोजननो [घी, गोळ वगेरेनो] सचय करवो [वासी राखवो] नहि. कारणके आहार संयम निर्वाहने अर्थेछे, स्वादने माटे नथी. (१७). पुष्पवडे पूजा, आसनवडे सत्कार, वंदणा, पूजन, [वस्त्रपात्रादिनी] भेट, अथवा सत्कार अने सन्माननी साधुए मनथी पण इच्छा करवी नहि. (१८).

सुक्कझाण झियाएज्जा अनियाणे अकिंचणे। वोसट्ठ काए विहरेज्जा जाव कालस्स पज्जओ॥१९॥निज्जूहिऊण आहार काल धम्मे उवट्ठिए चइऊण माणुस बोदिं पहू दुख्खे विमुच्चई ॥२०॥ निम्ममो निरहंकारो वीयरागो अणासवो। संपत्तो केवलं नाण सासए परि निव्वुडे त्तिबेमि ॥२१॥

❀ ॥ इति श्री अणगारमग्ग नाम झयण सम्मत ॥ ३५ ॥ ❀

अध्ययन ३६. जीव-अजीव विचार.

जीवाजीव विभत्ति सुणेह मे एगमणाइओ। ज जाणिऊण भिख्खू सम्म जयइ संजमे ॥ १ ॥ जीवाचेव अजीवाय एस लोए वियाहिए। अजीवो दसमागासे अलोए से वियाहिए ॥२॥

शुक्ल ध्यान धरीने अने धन तथा शरीरना ममत्वने त्यागीने, मृत्यु समय आवता सुधी साधुए प्रतिबंध रहित विचरवुं. (१९). मरणकाळे आहार त्यागीने अने मनुष्य देह छोडीने ते औदारिक शरीर धारण करेछे अने दुःखथी मुक्त थायछे.(२०).लोभ, ममता, अहंकार, रागद्वेष अने आश्रव रहित बनीने ते केवलज्ञान पामीने सिद्धगतिने प्राप्त करेछे. (२१). सुधर्मास्वामी जंबु स्वामीने आ प्रमाणे कहेछे.

॥ अध्ययन पात्रीसमुं संपूर्ण. ॥

❀ अध्ययन ३६ ❀

हवे जीव-अजीवना विभाग कहू छु ते एकाग्र मनथी साभळो संयमने विषे यत्न करनार साधुए ए विभाग जाणवा जोइए. [१]. १जीव अने अजीवनो आ लोक बनेलो छे, परंतु अजीवनो देश आकाश तेने श्री तीर्थंकरे अलोक कह्यो छे.[२].

१ दीपिका टीकामा जीवने उपयोगवान अने अजीवने पुद्गल तरीके ओळखावेल छे.

दव्वओ खित्तओ चेव कालओ भावओ तहा । परूवणा तेसिं भवे जीवाण मजीवाणय ॥३॥ रूविणो चेव रूवीय अजीवा दुविहा भवे । अरूवी दसहा वुत्ता रूविणोवि चउव्विहा ॥४॥ धम्मत्थिकाए तद्देसे तप्पए सेय आहिए । अहम्मे तस्स देसेय तप्पएसेय आहिए ॥ ५ ॥ आगासे तस्स देसेय तप्पएसेय आहिए । अद्धा समए चेव अरूवी दसहा भवे ॥ ६ ॥ धम्मा धम्मेय दोएए लोगमित्तावियाहिया । लोगालोगेय आगासेसमए समयखेत्तिए ॥७॥ धम्मा धम्मागासातिन्निवि एए अणाइया । अपज्जवसिया चेव सव्वद्धतु वियाहिया ॥ ८ ॥ समएवि संतइपप्प एवमेव वियाहिए । आएसपप्प साइए सपज्जवसिएविय ॥ ९ ॥

१ [1]द्रव्य थकी २ [2]क्षेत्र थकी ३ [3]काल थकी ४ [4]भाव थकी जीव अजीवना विभाग वर्णवामा आवशे [३]. अजीव. अजीवना बे भेद छे (१) रुपी अने (२) अरुपी. अरुपीना दश प्रकार छे, अने रुपीना चार प्रकार छे. [४] अरुपी अजीवना दश प्रकार—[5]१ धर्मास्तिकाय, [6]२ तेना देश, ३ तेना प्रदेश,[7] ४ अधर्मास्तिकाय [8]५ तेना देश, ६ तेना प्रदेश, ७ आकाशास्तिकाय [9] ८ तेना देश, ९ तेना प्रदेश, [10]१० अद्धा समय (काल) ० [५-६] धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय लोक मात्रमा [11]व्याप्त छे , आकाशास्तिकाय लोक-अलोक बन्नेमा व्याप्त छे; अने काळ समय क्षेत्र [अढी द्वीप]ने विषे व्याप्त छे. [७] धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकाय ए त्रणे सर्वदा आदि अने अन्त रहित छे. [८] अने समयने जो निरंतर [12]प्रवाहरुपे गणीए तो तेपण अनादि अने अनन्त छे, परंतु प्रत्येक कार्यना आरंभ अने समाप्ति रुपेगणीए तो तेने आदि अने अन्त बन्ने छे. (९).

- १ Substance २ Place ३ Time ४ Development ५ धर्मास्तिकायनो चलण सहाय गुण छे. संपूर्ण धर्मास्तिकाय होय ते तेनो स्कंध गणाय ६ स्कंधना विभाग ते देश ७ देशना विभाग ते प्रदेश ८ तेनो स्थिर सहाय गुण छे. ९ तेनो अवकाश विकाश गुण छे १० ते अविभागी छे. तेना विभाग थइ शक्ता नथी. ११ Are co extensive १२ As a continuous flow.

खधाय खधदेसाय तप्पएसा तहेवय । परमाणुणोय वोधव्वा रुविणोवि चउव्विहा ॥ १० ॥ एगत्तेणं पहुत्तेण खधाय परमाणुणो । लोएगदेसे लोएय भइव्वातेय खित्तओ । इत्तो काल विभागंतु तेसिंवोच्छ चउव्विहं ॥ ११ ॥ सतइपप्प तेणाई अपज्जवसियाविय । ठिइ पडुच्च साईया सपज्जवसियाविय ॥ १२ ॥ असख काल मुक्कोसं एक्को समओ जहन्नय । अजीवाणय रूवीणं ठिई एसा वियाहिया ॥ १३ ॥ अणतकाल मुक्कोस एक्कोसमओ जहन्नय । अजीवाणय रूवीणं अंतरेय वियाहियं ॥१४॥

रुपी अजीव चार प्रकारनाछे:– १ पुद्गळास्तिकायनो स्कन्ध, २ तेना देश, ३ तेना प्रदेश, अने ४ [1] परमाणुओ. (१०). परमाणुओने एकठा मळवानो तेमज जुदा थवानो स्वभावछे. एकठा मळे त्यारे स्कन्ध अने जुदा थाय त्यारे परमाणु कहेवाय छे. आ प्रमाणे स्कन्ध अने परमाणुओना द्रव्य सबधी भेद छे. हवे क्षेत्रथी भेद कहे छे परमाणुओ आखा लोकने विषे अने स्कन्ध तेना एक देशने विषे व्यापी छे. हवे हु तेना काळ सबधी चार भेद कहुं छु. (११)[2]. स्कन्ध अने परमाणुओने निरतर प्रवाह रुपे गणीए तो त आदि अने अन्त रहितछे, पगंतु ते नियम क्षेत्रने विषे अमुक रुप अथवा स्थिति धारण करे तो तेने आदि अने अन्त वन्ने छे. (१२)[3]. स्कन्ध अने परमाणुओनी उत्कृष्ट स्थिति असख्याता काळनी अने जघन्य स्थिति एक समयनी छे. (१३)[4]. अजीव रुपी पुद्गलोनुं उत्कृष्ट अतर (आतरो[5]) अनन्त काळनुं अने जघन्य अंतर एक समयनुं छे. [१४].

१ तेना एकना वे भाग न थइ शके–Which may not be divided into two parts २ वीजी गाथाओ चार पदनी छे, ज्यारे आ एकज गाथाने छ पद छे. ३ आ गाथानो एवो भावार्थ समजाय छे के जो के अमुक वस्तुनो ते रुपे नाश थयेलो देखाय छे, छता तेना तत्वोनो नाश थतो नथी. अने ए सिद्धात विज्ञान शास्त्रीओ पण स्वीकारेछे के Matter is indestructible ४ गाथाओना अनुक्रममा केटलीक प्रतोमा तफावत छे केटलीकमां २७०-२७१-२७२ छे. केटलीक गाथाओ भेगी करी दीधी छे. गाथा ११-१२ केटलीक प्रतोमा भेगी करी दीधी छे. ५ Interruption.

वन्नओ गधओ चेव रसओ फासओ तहा । संठाणओय विन्नेओ परिणामो तेसिं पचहा ॥१५॥ वन्नओ परिणया जेउ पचहा ते पकित्तिया। किन्हा नीलाय लोहिया हालिद्दा सुक्किला तहा ॥ १६ ॥ गधओ परिणया जेउ दुविहा ते वियाहिया। सुब्भि गध परिणामा दुब्भि गंधा तहेवय ॥१७॥ रसओ परिणया जेउ पचहा ते पकित्तिया। तित्त कडुय कसाया अंबिला महुरा तहा ॥ १८ ॥ फासओ परिणया जेउ अठ्ठहा ते पकित्तिया । कक्खडा मउयाचेव गुरुयालहुयातहा ॥१९॥ सीया उन्हाय निद्धाय तहा लुक्खाय आहिया । इइ फास परिणया एए पुग्गला समुदाहिया ॥२०॥ सठाण परिणया जेउ पचहा ते पकित्तिया । परिमडलाय वट्टा तसा चउरस मायया ॥ २१ ॥

भावथी अजीवरुपी पुद्गलना पाच प्रकार छेः—१ वर्णथी २ गधथी ३ रसथी ४ स्पर्शथी अने ५ सस्थान (सठाण-आकार)थी. [१५]. पुद्गलोना वर्णना परिणाम पाच प्रकारना छेः—१ कृष्ण[काळा], २ निला, ३ रक्त[लाल], ४ हारिद्र[पीळा],अने ५ शुक्ल [धोळा] (१६). पुद्गलोनी गधना परिणाम बे प्रकारना छेः—१ सुरभि गध [सुगंधवाळा]अने २ दुरभि-गध [दुर्गंधवाळा]. (१७). पुद्गलोना रसना परिणाम पाच प्रकारना छे'—१ तीखा, २ कडवा, ३ कषायला, ४ खाटा अने ५ मीठा. (१८). पुद्गलोना स्पर्शना परिणाम आठ प्रकारना छे'—१ कर्कश [कठण पाणा जेवा], २ कोमल [माखण जेवा], ३ भारे [लोढा जेवा], ४ हळवा, ५ टाढा [चदन जेवा], ६ उना [अग्नि जेवा], ७ स्निग्ध [सुवाळा] अने ८ रुक्ष [लुखा-खरबचडा].[1] आ प्रमाणे स्पर्शथी परिणमेला पुद्गलो सम्यक प्रकारे कह्या छे (१९-२०) पुद्गलोना सस्थान [सठाण-आकार]ना परिणाम पांच प्रकारना छेः—१ परिमडल २ [ककणना आकारना] २ वर्तुल ३ [लाडुना आकारना] ३ त्रिकोण ४ चतुष्कोण अने ५ लाबा. (२१).

---

१ Rough २ Globular ३ Circular

वन्नओ जे भवे किन्हे भइए सेउ गंधओ । रसओ फासओ चेव भइए सठाणओविय ॥२२॥ वन्नओ जे भवे नीले भइए सेउ गंधओ । रसओ फासओ चेव भइए संठाणओविय ॥२३॥ वन्नओ लोहिए जेउ भइए सेउगधओ । रसओ फासओ चेव भइए संठाणओविय ॥ २४ ॥ वन्नओ पीयए जेउ भइए सेउ गधओ । रसओ फासओ चेव भइए संठाणओविय ॥२५॥ वन्नओ सुक्किले जेउ भइए सेउ गंधओ । रसओ फासओ चेव भइए संठाणओविय ॥२६॥

कृष्ण वर्णना पुद्गलोना गंध, रस, स्पर्श अने संस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. (२२).* नील वर्णना पुद्गलोना गंध, रस, स्पर्श अने संस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. (२३). रक्त वर्णना पुद्गलोना गध, रस, स्पर्श अने संस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. (२४). हारिद्र [पीळा] वर्णना पुद्गलोना गध, रस, स्पर्श अने संस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. (२५). शुक्ल वर्णना पुद्गलोना गध, रस, स्पर्श अने संस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. [२६].

---

* गाथा २२थी४७ सुधीनो एवो भावार्थ छे के–प्रत्येक वर्णना पुद्गलो बेमाथी एक गंधवाळा, पाचमाथी एकाद रसवाळा, आठमाथी एकाद स्पर्शवाळा, अने पाचमाथी एकाद आकारवाळा होय छे, एवीज रीते प्रत्येक गंधवाळा पुद्गलो पाचमाथी एकाद वर्णना, पाचमाथी एकाद रसवाळा, आठमाथी एकाद स्पर्शवाळा अने पाचमाथी एकाद आकारना होय छे. एवीज रीते प्रत्येक रसवाळा पुद्गलो पाचमाथी एकाद वर्णना, बेमाथी एकाद गधवाळा, आठमाथी एकाद स्पर्शवाळा अने पांचमाथी एकाद आकारना होय छे. तेमज वळी प्रत्येक स्पर्शवाळा पुद्गलो पाचमाथी एकाद वर्णना, बेमाथी एकाद गंधवाळा, पाचमाथी एकाद रसवाळा, अने पाचमाथी एकाद आकारना होय छे एवीज रीते प्रत्येक संस्थानना पुद्गलो पाचमाथी एकाद वर्णना, बेमाथी एक गधवाळा, पाचमाथी एकाद रसवाळा अने आठमाथी एकाद स्पर्शवाळा होय छे.

उ.अ ३६

३११

गधओ जे भवे सुब्भी भइए सेउ वन्नओ । रसओ फासओ चेव भइए सठाणओविय ॥२७॥ गंधओ जे भवे दुब्भी भइए सेउ वन्नओ । रसओ फासओ चेव भइए संठाणओविय ॥२८॥ रसओ तित्तओ जेउ भइए सेउ वन्नओ । गधओ फासओ चेव भइए संठाणओविय ॥२९॥ रसओ कडूओ जेउ भइए सेउ वन्नओ । गंधओ फासओ चेव भइए सठाणओविय ॥३०॥ रसओ कसाए जेउ भइए सेउ वन्नओ । गंधओ फासओ चेव भइए संठाणओविय ॥३१॥ रसओ अंबिले जेउ भइए सेउ वन्नओ । गंधओ फासओ चेव भइए संठाणओविय ॥ ३२ ॥ रसओ महुरए जेउ भइए सेउ वन्नओ । गधओ फासओ चेव भइए संठाणओविय॥३३॥ फासओ कक्खडे जेउ भइए सेउ वन्नओ । गधओ रसओ चेव भइए सठाणओविय ॥ ३४ ॥ फासओ मउए जेउ भइए सेउ वन्नओ । गधओ रसओ चेव भइए सठाणओविय ॥ ३५ ॥

सुगधवाळा पुद्गलोना वर्ण, रस, स्पर्श अने सस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. [२७] दुर्गंधवाळा पुद्गलोना वर्ण, रस, स्पर्श अने सस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे [२८]. तीखा रसना पुद्गलोना वर्ण, गध, स्पर्श अने सस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. [२९] कडवा रसना पुद्गलोना वर्ण, गध, स्पर्श अने संस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. [३०]. कषाय रसना पुद्गलोना वर्ण, गंध, स्पर्श अने सस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. (३१). खाटा रसना पुद्गलोना वर्ण, गध, स्पर्श अने संस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. [३२]. मीठा रसना पुद्गलोना वर्ण, गध, स्पर्श अने सस्थान प्रमाणे विभागो पाडेला छे (३३). कर्कश स्पर्शना पुद्गलोना वर्ण, गध, रस अने सस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे (३४). कोमल स्पर्शना पुद्गलोना वर्ण, गध, रस अने संस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. (३५).

फासओ गुरुए जेउ भइए सेउ वन्नओ। गधओ रसओ चेव भइए संठाणओविय ॥ ३६ ॥ फासओ लहुए जेउ भइए सेउ वन्नओ। गंधओ रसओ चेव भइए सठाणओविय ॥३७॥ फासओ सीयए जेउ भइए सेउ वन्नओ। गंधओ रसओ चेव भइए सठाणओविय ॥ ३८ ॥ फासओ उन्हए जेउ भइए सेउ वन्नओ। गंधओ रसओ चेव भइए संठाणओविय ॥३९॥ फासओ निद्धए जेउ भइए सेउ वन्नओ। गंधओ रसओ चेव भइए संठाणओविय ॥४०॥ फासओ लुक्खए जेउ भइए सेउ वन्नओ। गंधओ रसओ चेव भइए सठाणओविय ॥ ४१ ॥ परिमडल संठाणे भइए सेउ वन्नओ। गधओ रसओ चेव भइए फासओविय ॥ ४२ ॥ सठाणओ भवे वट्टे भइए सेउ वन्नओ। गंधओ रसओ चेव भइए फासओविय ॥ ४३ ॥ सठाणओ भवे तसे भइए सेउ वन्नओ। गंधओ रसओ चेव भइए फासओविय ॥ ४४ ॥

भारे स्पर्शना पुद्गलोना वर्ण, गध, रस अने संस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. [३६]. हळवा स्पर्शना पुद्गलोना वर्ण, गंध, रस अने सस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. (३७). टाढा स्पर्शना पुद्गलोना वर्ण, गंध, रस अने संस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. [३८]. उना स्पर्शना पुद्गलोना वर्ण, गध, रस अने सस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. [३९]. स्निग्ध स्पर्शना पुद्गलोना वर्ण, गध, रस अने संस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे (४०) रुक्ष स्पर्शना पुद्गलोना वर्ण, गंध, रस अने संस्थान प्रमाणे विभाग पाडेला छे. (४१). परिमडल सस्थानना पुद्गलोना वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श प्रमाणे विभाग पाडेला छे. [४२]. वर्तुल संस्थानना पुद्गलोना वर्ण, गध, रस अने स्पर्श प्रमाणे विभाग पाडेला छे (४३). त्रिकोण संस्थानना पुद्गलोना वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श प्रमाणे विभाग पाडेला छे [४४]

सठाणओय चउरसे भइए सेउ वन्नओ । गंधओ रसओ चेव भइए फासओविय ॥ ४५ ॥ जेआयय सठाणे भइए सेउ वन्नओ । गधओ रसओ चेव भइए फासओविय ॥४६॥ असख काल मुक्कोस एक्कोममओ जहन्नय । अजीवाणय रूवीण अतरेय वियाहिय ॥४७॥ एसा अजीव विभत्ती समासेण वियाहिया । इत्तो जीव विभत्तिं वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥४८॥ ससारत्थाय सिद्धाय दुविहा जीवा वियाहिया । सिद्धा णेग विहा वुत्ता त मे कित्तयउं सुण ॥४९॥ इत्थी पुरिस सिद्धाय तहेवय नपुसगा । सलिगे अन्न लिगेय गिहिलिगे तहेवय ॥ ५० ॥ उक्कोसा गाहणाएय जहन्न मज्झिमाइय । उड्ढ अहेय तिरियच समुद्दमि जलमिय ॥५१ ॥

चतुष्कोण सस्थानना पुद्गलोना वर्ण, गध, रस अने स्पर्श प्रमाणे विभाग पाडेला छे ४५) लाबा सस्थानना पुद्गलोना वर्ण, गध, रस अने स्पर्श प्रमाणे विभाग पाडेला छे (४६). अजीव रूपी पुद्गलोनु उत्कृष्ट अतर [आतरो] असंख्याता कालनु अने जघन्य अतर एक समयनु कह्यु छे. [४७] * रूपी अजीवना ५३० अने अरूपी अजीवना ३० मळी कुल ५६० भेद आ प्रमाणे अजीवना विभाग सक्षिप्त कह्या हवे जीव-विभक्ति (विभाग) अनुक्रमे कहुं छु. [४८] जीव बे प्रकारना कह्या छेः–१ ससारी जीव अने सिद्ध (कर्म-मल रहित) जीव. सिद्ध जीव अनेक प्रकारना छे तेना भेद कहु छुं ते साभळो [४९]. पुरुष, स्त्री, नपुसक, स्वलिंग (जैन दर्शनी), अन्यलिंग (अन्यमार्गी) अने गृहलिंग (गृहस्थाश्रमी) ए छ जीवमाथी सिद्ध थइ शके. [५०]. उत्कृष्ट (पाचसें धनुष्यनी), जघन्य (बे हाथनी) अने मध्यम अवगाहन(कदनी)देहे, उर्ध्व लोकने विषे, अधो लोकने विषे, अढी द्वीपने विषे, समुद्रने विषे अने अन्य जळने विषे सिद्ध दशा प्राप्त थइ शके [५१]।.

*आ गाथा प्रो. जेकोबीना भाषान्तरमा नथी. १ गमे ते स्थळे, गमे तेवे शरीरे सिद्ध दशा प्राप्त थइ शके छे ए हेतु आ गाथानो छे

दसय नपुसएसु वीस इथ्थियासुय । पुरिसेसुय अठ्ठसय समएणेगेण सिझई ॥५२॥ चत्तारिय गिहिलिंगे अन्नलिंगे दसेवय। सलिंगेणय अठ्ठसय समएणेगेण सिझई ॥५३॥ उक्कोसो गाहणाएओ सिझते जुगवंदुवे । चत्तारिय जहन्नाए जवमझ्झुत्तरं सय ॥५४॥ चउरुद्धलोएय दुवे समुद्दे तओ जले वीस महे तहेवय । सयच अठ्ठुत्तर तिरियलोए समएणेगेण लिझई धुवं ॥५५॥ कहिपडिहयासिद्धा कहिंसिद्धा पइठ्ठिया । कहिंवोदि चइत्ताणं कथ्थ गतूण सिझई ॥ ५६ ॥ अलोए पडिहया सिद्धा लोयग्गेय पइठ्ठिया । इहं वोंदिंच इत्ताणं तथ्थ गंतूण सिझई ॥ ५७ ॥ वारसहि जोयणेहिं सव्वठ्ठस्सु वरि भवे । इसीपभ्भार नामाओ पुढवीछत्त संठिया ॥ ५८ ॥ पणयाण सयसहस्सा

नपुंसक लिंगमाथी दश, स्त्री लिंगमाथी वीश, पुरुष लिंगमाथी एक सोने आठ, गृहलिंग (गृहस्थ-वर्ग) माथी चार, अन्य लिंग [अन्य दर्शनी] माथी दश अने स्वलिंग [जैन दर्शनी] मांथी एक सोने आठ एकी साथे सिद्ध थइ शके. [५२-५३] उत्कृष्ट[1] कदना बे जघन्य[2] कदना चार, अने मध्यम कदना एक सो आठ जीव एकी साथे सिद्ध दशाने प्राप्त करी शके. [५४]. उर्ध्व लोकने विषे चार, समुद्र विषे बे, अन्य जळने विषे त्रण, अधो लोकने विषे वीश, अने अढी द्वीपने विषे एक सो आठ जीव एकी साथे सिद्ध थइ शके [५५]. सिद्ध जीवोने क्यां जवानो प्रतिबंध छे? तेओ क्यां रहे छे? तेओ पोताना शरीर क्यां छोडी जाय छे? अने सिद्ध थइने क्या जाय छे [५६]. सिद्ध जीवोने अलोकने विषे जवानो प्रतिबंध छे. तेओ लोकाग्रना मस्तकने विषे रहे छे तेओ पोताना शरीर आ लोकने विषे छोडी जाय छे अने त्यां [लोकाग्रे] जइने सिद्ध थाय छे. [५७]. सर्वार्थ सिद्ध विमानना उपर बार जोजन उंचे इष्ट-प्रागभारा (इसिपभारा) नामे पृथ्वी [सिद्ध-शिला] छत्रीने आकारे आवी रहेली छे. ते ४५ लाख जोजन लांबी अने तेटलीज पहोळी छे; अने तेथी त्रणथी वधारे गणो तेनो परिघ [घेरावो] छे. [१,४२,३०,२४९ जोजन]. ते

[1] पाचसो धनुष्यनु कद उत्कृष्ट कहेवाय [2] बे हाथनु कद जघन्य कहेवाय.

जोयणाणतु आयया । तावइयचेन विच्छिन्ना तिगुणो साहिय परिओ ॥ ५९ ॥ अट्ठ जोयण वाहल्ला सा मज्झंमि वियाहिया । परिहायती चरिमंते मच्छीयपत्ताओ तणुयरी॥६०॥ अज्जुण सुवन्नगमई सा पुढवी निम्मला सहावेण। उत्ताणय छत्त संठियाय भणिया जिणवरेहि ॥ ६१ ॥ संख क कुंद संकासा पंडुरा निम्मला सुहा । सीयाए जोयणे तत्तो लोयताओ वियाहिओ ॥६२॥ जोयणस्सउ जो तथ्थ कोसो उवरिमो भवे । तस्स कोसस्स छभ्भाए सिध्धाणो गाहणा भवे ॥६३॥ तथ्थ सिध्धा महाभागा लोयग्गामि पइट्ठिया । भव प्पवचउमुक्का सिध्धि वरगइं गया ॥६४॥ उस्सेहो जस्स जो होइ भवमि चरम मिओ । तिभाग हीणा तत्तोय सिध्धाणो गाहणा भवे ॥६५॥ एगत्तेण साईया अपज्जव मियाविय । पुहुत्तेण अणाईया अपज्जवासियाविय ॥ ६६ ॥

मध्य भागमा आठ जोजन जाडी छे अने घटतां घटतां छेडे जता माखीनी पाख थकी पण पातळी छे. ए पृथ्वी [सिद्ध-शिला] श्वेत कांचन समान, स्वभावे निर्मल अने छत्रना आकारनी श्री जिनवरे वर्णवी छे. ए सिद्ध-शिला शंख, अंक-रत्न अने कुन्दना फुल सरखी उजळी छे. अने त्यांथी एक जोजन उंचे लोकनो अन्त आवे छे. ते जोजनना छेल्ला कोसना छट्ठा भागने विषे, सिद्धनी अवगाहना छे त्यां लोकना अग्र भागने विषे महाभाग्यशाळी, अचिंत्य शक्तिना धणी, भव प्रपंचथी मुक्त, मोक्षने प्राप्त थयेला एवा श्री सिद्ध-भगवान विराजी रह्या छे. [५८-६४]. सिद्धनी अवगाहना पोताना छेल्ला भवने विषे देहनु जेटलुं प्रमाण होय तेनाथी त्रीजा भागनी ओछी होय छे [६५] सिद्धने पृथक तरीके (एक आश्री) गणीए तो तेने आदि होय पण अन्त न होय, अने जो समस्त तरीके गणीए तो तेने आदि के अन्त काइ न होय. [६६].

अरूविणो जीवघणा नाण दंसणसन्निया । अउलं सुह संपत्ता उवमा जस्स नथ्थिओ ॥ ६७ ॥ लोएग देसे तेसेव्वे
उ.अ ३६ नाणदंसण सन्निया । संसार पार निछिन्ना सिद्धिंवर गइं गया ॥६८॥ संसारथ्थाउ जें जीवा दुविहा ते वियाहिया ।
तसाय थावरा चेव थावरा तिविहा तहिं ॥ ६९ ॥ पुढवी आउ जीवाय तहेवय वणस्सई । इच्चेए थावरा तिविहा
३१६ तेसिं भेए सुणेहमे ॥७०॥ दुविहा पुढवि जीवा सुहुमा वायरा तहा । पज्जत्ता मपज्जत्ता एव भेए दुहा पुणो ॥७१॥
वायरा जेउ पज्जत्ता दुविहा ते वियाहिया । सन्हा खराय बोधव्वा सन्हा सत्त विहा तहि ॥ ७२ ॥ किन्हा नीलाय
रूहिराय हालिद्दा सुक्किला तहा । पडु पणग मट्टिया खरा छत्तीसई विहा ॥७३॥

सिद्ध अरूपी जीव, प्रदेशमय,[1] केवल-ज्ञान अने केवल-दर्शननी संज्ञा सहित होय छे अने अनुपम अतुल सुख भोगवे छे. [६७]. सर्व सिद्ध लोकना एक देशने विषे वसे छे. तेओ केवल ज्ञानअने केवल दर्शनना उपयोग सहित छे, अने ससार पार उतरीने सिद्ध रुपी उत्तम गतिने पहोच्या छे [६८]. संसारी जीव वे प्रकारना कह्या छेः—१ त्रस[2] अने स्थावर[3]. स्थावर जीवना त्रण प्रकार कह्या छेः—१ पृथ्वी काय, २ अप्प (जल) काय, ३ वनस्पति काय. ए प्रमाणे स्थावर जीवना त्रण प्रकार छे. हवे तेना भेद कहुं छुं ते साभळो. [६९-७०]. पृथ्वी कायना जीव बे प्रकारना छेः—सूक्ष्म अने बादर. अने ते बन्ने पर्याप्त (शरीर, इन्द्रियो सहित) अने अपर्याप्त (शरीर, इन्द्रियो रहित) होय छे [७१]. बादर पर्याप्त जीव बे प्रकारना कह्या छेः—सुंवाळा अने कठोर. सुंवाळा जीवना सात भेद छेः- १ काळो, २ नीला, ३ राता, ४ पीळा, ५ धोळा, ६ पाडुवर्ण, अने ७ माटीना रंगना. कठोर पृथ्वी जीवना नीचे प्रमाणे छत्रीस भेद कह्या छे [७२-७३].

---

[1] They consist of Life throughout [2] Movable [3] Immovable

पुढवीय सक्कराय वालुयाय उवले सिलाय लोणोसे। अय तंव तउय सीसग रुप्प सुवन्नेय वइरेय ॥ ७४ ॥ हरियाले हिंगलुए मणोसिला रीसग जण प्पवाले। अब्भपडलब्भ वालुय बायरकाए मणिविहाणा ॥७५॥ गोमिज्जएय रुयगे अंके फलिहेय लोहियक्खेय। मरगय मसारगल्ले भुयमोयग इंदनीलेय ॥७६॥ चंदण गेरुय हंसगब्भे पुलएय सोगंधिएय बोधव्वे। चंदप्पह वेरुलिए जलकंते सूरकंतेय॥७७॥ एए खर पुढवीए भेया छत्तीस माहिया। एगविहं मनाणत्ता सुहुमा तथ्थ वियाहिया ॥७८॥ सुहुमा सव्वलोगम्मि लोग देसेय बायरा। इत्तो काल विभागंतु तेसिं वोच्छं चउव्विहं ॥७९॥ संतइं पप्पणाईया अपज्जवसियावि य। ठिईपडुच्च साईया सपज्जवसियावि य ॥ ८० ॥ बावीस सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे। आउ ठिई पुढवीणं अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥८१॥

माटी मरडिया कांकरा, रेती, पाषाण, शीला, लवण, खारीमाटी, लोढु, त्रांबु, कलइ, सीसु, रुपु, सोनु, हीरा, हरियाल, हिंगलो, मणसिल, सीसक, (जसत), सुरमो, परवाळा, अभ्रपटल, अभ्रवालुका, गोमेधमणि, रुचक रत्न, अंक रत्न, स्फाटिक रत्न, लोहिताक्ष मणि, मरतक मणि, मसारगल्ल रत्न, भूजमोचक रत्न, इन्द्रनील रत्न, चंदन, गेरु, हंसगर्भ, पुलक, सौगंधिक रत्न, चंद्रप्रभ रत्न, वैडूर्य मणि, जलकान्त मणि अने सूर्यकान्त मणि. [७४-७७] * ए प्रमाणे कठोर (खर) पृथ्वी जीवना छत्रीस भेद वर्णव्या छे. सूक्ष्म पृथ्वी जीवनो एकज भेद छे, तेना जुदा जुदा भेद नथी. (७८) सूक्ष्म पृथ्वी जीव लोकने विषे सर्वत्र फेलाइ रह्या छे, परंतु बादर पृथ्वी जीव लोकना एक देशने विषे रहेल्या छे. हवे हु तेना चार प्रकारना काळ विभाग कहु छु [७९]. प्रवाह रुपे जोइए तो पृथ्वी जीव आदि अने अन्त रहित छे परंतु ते हाल जे रुपे छे ते रुपे जोइए तो ते आदि अने अन्त सहित छे. (८०). पृथ्वी जीवनी उत्कृष्ट स्थिति बावीश हजार वर्षनी अने जघन्य स्थिति अंत मुहूर्त्तनी छ. [८१]

नोट–छत्रीसने बदले चाळीस थाय छे.

असंख काल मुक्कोसं अतोमुहुत्त जहन्निय । कायठिई पुढवीणं तंकायंतु अमुंचओ ॥ ८२ ॥ अणंतकाल मुक्कोसं

उ.अ ३६ अतोमुहुत्त जहन्नयं । विजटंमि सए काए पुढवि जीवाण मंतरं ॥८३॥ एएसि वन्नओ चेव गंधओ रस फासओ।

३१८ संठाणा देसओवावि विहाणाइ सहस्ससो ॥ ८४ ॥ दुविहा आउ जीवाओ सुहुमा बायरा तहा । पज्जत्त मपज्जत्ता एवमेए दुहापुणो ॥८५॥ बायरा जेउपज्जत्ता पञ्चहा ते पकित्तिया सुद्धोदए य उस्सेय हरतणु महिया हिमे ॥ ८६ ॥ एगविह मनाणत्ता सुहुमा तथ्थ वियाहिया । सुहुमा सव्वलोगमि लोगदेसेय बायरा ॥८७॥ संतइं पप्पणाईया अपज्जवसियाविय । ठिईपडुच्च साईया सपज्जवसियाविय ॥८८॥ सत्तेव सहस्साइं वासाणु क्कोसिया भवे । आउ ठिई आऊण अतोमुहुत्त जहन्निया ॥८९॥

पृथ्वी जीव पृथ्वी कायथी न मूकायतो तेनी उत्कृष्ट स्थिति असंख्याता काळनी अने जघन्य स्थिति अतर मुहूर्त्तनी छे. [८२]. पृथ्वी जीव पृथ्वी कायथी चवीने उत्पन्न थाय तेनो उत्कृष्ट आंतरो अनंता काळनो अने जघन्य आंतरो अंत मुहूर्त्तनो छे. [८३]. पृथ्वी जीवोना वर्ण, गंध, रस, स्पर्श अने संस्थानने लइने हजारो भेद पडी शके. [८४]. (२) अप्पकाय जीवना बे प्रकार छेः– १ सूक्ष्म अने २ बादर तेना वळी पर्याप्त अने अपर्याप्त एवा बे भेद छे.[८५]. बादर पर्याप्त अप्पकायना पांच प्रकार छेः–१ शुद्ध जळ, २ मेघ, समुद्रादिनुं जळ, ३ झाकळ, ४ परसेवो, ५ हिम (बरफ). [८६]. सूक्ष्म अप्पकायनो एक प्रकार छे. तेना विविध भेद नथी. सूक्ष्म अप्पकाय आखा लोकने विषे व्यापी छे, परंतु बादर अप्पकाय लोकना एक देशने विषे व्याप्त छे. [८७]. प्रवाह रुपे जोइए तो अप्पकाय जीव आदि अने अंत रहित छे. परंतु तेओ हाल जे रुपे छे ते रुपे जोइए तो ते आदि अने अंत सहित छे. [८८]. अप्पकाय जीवनी उत्कृष्ट स्थिति सात हजार वर्षनी अने जघन्य स्थिति अंत मुहूर्त्तनी छे (८९).

अऽखकाल मुक्कोस अंतोमुहुत्तं जहन्निय । कायठिई 'आऊण त कायतु अमुंचओ ॥ ९० ॥ अणंतकाल मुक्कोसं अतोमुहुत्त जहन्नय । विजढमि सए काए आउ जीवाण अतर ॥९१॥ एएसिं वन्नओ चेव गधओ रस फासओ । सठाणा देसओवावि विहाणाइ सहस्ससो ॥९२॥ दुविहा वणस्सई जीवा सुहुमा बायरा तहा । पज्जत मपज्जत्ता एवमेए दुहापुणो ॥९३॥ बायरा जेउ पज्जत्ता दुविहा ते वियाहिया । साहारण सरी राय पत्तेगाय तहेवय ॥ ९४ ॥ पत्तेय सरीराओ णेगहा ते पकित्तिया । रुक्खा गुछाय गुम्माय लयावल्ली तणातहा ॥ ९५ ॥ वलया पव्वया कुहणा जलरुहा ओसहीतणा । हरीयकायाय बोधव्वा पत्तेयाइति आहिया ॥९६॥ साहारण सरीराओ णेगहा ते पकित्तिया । आलुए मूलए चेव सिंगवेरे तहेवय ॥ ९७ ॥ हिरिली सिरिली सिरिसिरिली जावई केय कदली । पलडु लसण

अप्काय जीव अप्कायथी न मूकाय तो तेनी उत्कृष्ट स्थिति असख्याता काळनी अने जघन्य स्थिति अत मुहूर्त्तनी छे (९०). अप्काय जीव अप्कायथी चवीने उत्पन्न थाय तेना उत्कृष्ट आतरो अनता काळनो अने जघन्य आतरो अत मुहूर्त्तनो छे (९१) अप्काय जीवोनां वर्ण, गध, रस, स्पर्श अने सस्थानने लइने हजारो भेद पडी शके [९२]. (३) वनस्पति जीवना बे प्रकार छेः–१ सूक्ष्म अने बादर तेना वळी पर्याप्त अने अपर्याप्त एवा बे भेदछे. (९३).बादर पर्याप्त वनस्पति जीव बे प्रकारना कह्या छेः-१साधारण शरीरवाळा (एक कायामा अनत जीववाळा), २ प्रत्येक शरीरवाळा (एक कायामां एक जीववाळा) [९४]. प्रत्येक जीवे जुदु शरीर एवा वनस्पति जीवना घणा भेद छेः-जेवाके–वृक्ष, गुच्छ (रींगणी वगेरे), गुल्म (नवमालती वगेरे), लता (चम्पकादि), वेली (तुवडी वगेरे), तृण (कुश वगेरे), वलय (नाळियेरी वगेरे), पर्वग (शेलडी वगेरे), कुहण (सर्पछत्र वगेरे), जलरुह (कमल वगेरे), ओषधि (डागर वगेरे), हरितकाय (तादलजो वगेरे). उपरना वनस्पति जीवने प्रत्येकने जुदु शरीर होयछे [९५-९६]. साधारण शरीरवाळा–वनस्पति जीवना घणा प्रकार छे. जेवाके–आलुक [रताळु वगेरे], मूलक (मूळा वगेरे), आदु, हरिली,

कदेय कंदलीय कुहुव्वए ॥ ९८ ॥ लोहिणी हूयथी हूयतुहगाय तहेवय । कन्हेय वज्जकंदेय कंदे सूरणए तहा ॥९९॥ अरसकन्नीय बोधव्वा सीहकन्नी तहेवय । मुसढीय हलिद्दाय णेगहा एवमायओ ॥ १०० ॥ एगविह मनाणत्ता सुहुमा तथ्थ वियाहिया । सुहुमा सव्वलोगंमि लोगदेसेय बायरा ॥१०१॥ संतइं पप्प णाईया अपज्जवसियाविय । ठिईपडुच्च साईया सपज्जवसियाविय ॥१०२॥ दस चेव सहस्साइ वासाणु क्कोसिया भवे । वणस्सईण आउंतु अंतोमुहुत्त जहन्निया ॥१०३॥ अणतकाल मुक्कोसा अतोमुहुत्त जहन्निया । कायठिई पणगाणं तंकायंतु अमुंचओ ॥१०४॥ असखकाल मुक्कोसं अतोमुहुत्तं जहन्नय । विजढंमि सए काए पणग जीवाण अतर ॥ १०५ ॥ एएसिं वन्नओ चेव गधओ रस फासओ । संठाणा देसओवावि विहाणाइं सहस्ससो ॥१०६॥

सिरिली, सिरिसिरिली, जावद, कन्दली, डुगली, लसण, कदली, लोहिनी, हुयर्थी, हुय, तुहग, कृष्ण कन्द, वज्र कन्द, सूरण, अश्वकर्णी, सिंहकर्णी, मुसढी कन्द, हळदर, अने एवी कन्द मूळनी अनेक जातो छे [९७ १००]. सूक्ष्म वनस्पति जीवनो एक प्रकार छे. तेना जुदा जुदा भेद नथी. सूक्ष्म वनस्पति जीव आखा लोकने विषे व्याप्त छे, परतु बादर वनस्पति जीव लोकना एक देशने विषे व्याप्त छे. [१०१] प्रवाह रुपे जोइए तो वनस्पति जीव आदि अने अंत रहित छे; परंतु हाल ते जे रुपे छे ते रुपे जोइए तो ते आदि अने अत सहित छे. [१०२]. वनस्पति जीवनी उत्कृष्ट स्थिति दश हजार वर्षनी अने जघन्य स्थिति अंत मुहूर्त्तनी छे. [१०३] वनस्पति (पनक) जीव वनस्पति कायथी न मूकाय तो तेनी उत्कृष्ट स्थिति असंख्याता काळनी अने जघन्य स्थिति अंत मुहूर्त्तनी छे. [१०४] वनस्पति जीव वनस्पति कायथी चवीने उत्पन्न थाय तेनो उत्कृष्ट आंतरो अनंता काळनो अने जघन्य आंतरो अंत मुहूर्त्तनो छे. [१०५]. वनस्पति जीवोना वर्ण, गंध, रस, स्पर्श अने संस्थानने लइने हजारो भेद पडी शके. [१०६].

इच्चेते थावरा तिविहा समासेण वियाहिया । इत्तोउ तसे तिविहे वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥१०७॥ तेऊ वाऊय बोधव्वा ओरालाय तसा तहा । इच्चेए तसा तिविहा तेसिं भेए सुणेहमे॥१०८॥ दुविहा तेउ जीवाओ सुहमा बायरा तहा । पज्जत्त मपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥ १०९ ॥ बायरा जेउ पज्जत्ता णेगहा ते वियाहिया । इंगारे मुम्मुरे अगणी अच्चिजाला तहेवय ॥ ११० ॥ उक्का विज्जुय बोधव्वा णेगहा एवमाइओ । एगविह मनाणत्ता सुहुमा ते वियाहिया ॥१११॥ सुहुमा सव्व लोगमि लोग देसेय बायरा । इत्तो काल विभागतु तेसिं वोच्छं चउव्विहं ॥११२॥ संतइंपप्प णाईया अपज्जवसियाविय । ठिईपडुच्च साईया सपज्जवसियाविय ॥११३॥ तिन्नेव अहोरत्ता उक्कोसेण वियाहिया । आऊ ठिई तेऊणं अंतोमुहुत्तं जहन्नय ॥११४॥

उपर प्रमाणे पृथ्वी, पाणी अने वनस्पति ए त्रण स्थावर जीवनु संक्षिप्त वर्णन कर्युं. हवे त्रस जीवोनुं अनुक्रमे वर्णन करु छु. [१०७]. १ तेउकाय (अग्निना जीव), २ वायुकाय, ३ उदारिक जीव[बे इन्द्रीयादि]ए त्रस जीवना त्रण प्रकार छे. तेना भेद कहु छु ते सांभळो [१०८] १ तेउकायना बे प्रकार छेः—सूक्ष्म अने बादर. तेना वळी पर्याप्त अने अपर्याप्त एवा बे भेद छे. [१०९]. बादर पर्याप्त तेउकायना घणा प्रकार छेः- जेवाके अंगारा, धूमाडा सहित बळतो अग्नि, झाळ, भडका, खरता तारा, विजळी आदि अग्निना जीव अनेक प्रकारना छे [११०]. सूक्ष्म तेउकायनो एक प्रकार छे. तेना जुदा जुदा भेद नथी. [१११]. सूक्ष्म तेउकाय जीव आखा लोकने विषे व्याप्त छे परतु बादर तेउकाय जीव लोकना एक देशने विषे व्याप्त छे. [११२]. प्रवाह रूपे जोइए तो तेउकाय जीव आदि अने अंत रहित छे, परतु ते हाल जे रूपे छे ते रूपे जोइए तो ते आदि अने अंत सहित छे. [११३]. तेउकाय जीवनी उत्कृष्ट स्थिति त्रण अहोरात्रि अने जघन्य स्थिति अंत मुहूर्त्तनी छे. [११४].

देसे ते सव्वे न सव्वथ्थ वियाहिया ॥ १३१ ॥ संतइप्प णाईया अपज्जव सियाविय ठिइं पडुच्च साईया सपज्जव सियाविय ॥१३२॥ वासाइ वारसेवउ उक्कोसेण वियाहिया । वेइदिय आउ ठिई अतोमुहुत्त जहन्निया ॥ १३३ ॥ सखेज्जकाल मुक्कोसा अतोमुहुत्त जहन्निया । वेइदिय काय ठिई तं कायंतु अमुचओ ॥ १३४ ॥ अणंतकाल मुक्कोमं अतोमुहुत्त जहन्नयं । वेइदिय जीवाणं अतरेय वियाहिय ॥ १३५ ॥ एएसि वन्नओ चेव गंधओ, रस फासओ । संठाणा देसओवावि विहाणाइ सहस्ससी ॥१३६॥ तेंदियाओ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया । पज्जत्त मपज्जत्ता तेसि भेए सुणेहमे ॥ १३७ ॥ कुथुं पिपीलि उदसा उक्कलुदेहिया तहा । तणहार कठहाराय मालुगा पत्तहारगा॥१३८॥ कप्पासट्ठिमिंजाय तिंदुगाओ ममिजगा । सयावरीय गुम्मीय बोधव्वा इंदगाईया ॥१३९॥ इंदगोवग

प्रकारनां बे इन्द्रिवाळा जीव लोकना एक देशने विषे व्याप्त छे; आखा लोकने विषे व्याप्त नथी. (१२९-१३१). प्रवाह रुपे जोइए तो बे इन्द्रिय जीव आदि अने अंत रहित छे, परंतु जे रुपे हाल ते छे ते रुपे जोइए तो ते आदि अने अंत सहित छे. [१३२]. बे इन्द्रिय जीवनी उत्कृष्ट स्थिति बार वर्षनी अने जघन्य स्थिति अंत मुहूर्त्तनी छे. [१३३]. बे इन्द्रिय जीव बे इन्द्रिय कायथी न मूकाय तो तेनी उत्कृष्ट स्थिति संख्याता काळनी अने जघन्य स्थिति अंत मुहूर्त्तनी छे. [१३४]. बे इन्द्रिय जीव बे इन्द्रिय कायथी चवीने उत्पन्न थाय तेनो उत्कृष्ट आंतरो अनंत काळनो अने जघन्य आंतरो अंत मुहूर्त्तनो छे. [१३५]. बे इन्द्रिय जीवनां वर्ण, गंध, रस, स्पर्श अने संस्थानने लइने हजारो भेद पडी शके. (१३६) २ त्रण इन्द्रिय [शरीर, जीभ अने नाकवाळा] जीवना बे प्रकार छेः—पर्याप्त अने अपर्याप्त तेना भेद कहुं छु ते सांभळो. (१३७). कुंथु [कथवा], कीडि, चाचड, उकल. (उत्कलिक जंतु,) तृणहार, काष्टहार, माळुका, पत्रहार, कपासना मिंजना जीव, सदावही, गुल्मी (कानखजुरा), इन्द्रगाय, काममोला,

माईया पेग । एव माइओ । लोएग देसे ते सव्वे न मव्वथ्थ वियाहिया ॥ १४० ॥ संतइपप्प णाईया अपज्जव सियाविय । ठिइ पडुच्च साईया सपज्जव सियाविय ॥१४१॥ एगुणपन्न होरत्ता उक्कोसेण वियाहिया । तेइदिय आउ ठिई अंतोमुहुत्त जहन्निया ॥१४२॥ सखेज्ज काल मुक्कोसा अंतोमुहुत्त जहन्निया । तेइंदिय काय ठिई त कायतु अमुचओ ॥ १४३ ॥ अणत काल मुक्कोसं अंतोमुहुत्त जहन्नय । तेइदिय जीवाण अतरेय विआहिय ॥ १४४ ॥ एएसिं वन्नओ चेव गंधओ रस फासओ सठाणा देसओवावि विहाणाइ सहस्ससो ॥१४५॥ चउरिंदियाओ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया । पज्जत्त मपज्जात्ता तेसिं भेए सुणेहमे ॥ १४६ ॥ अंधिया पुत्तिया चेव मच्छिया मसगा तहा । भमरे कीड पयंगेय ढिंकुणे कुकुणे तहा ॥१४७॥ कुक्कुडे सिंगिरीडीय णदावत्तेय विच्छिए । डोले भिंगारीय विराली

अने एवा बीजा अनेक प्रकारनां त्रण इन्द्रियवाळा जीव लोकना एक देशने विषे व्याप्त छे, तेओ आखा लोकने विषे व्याप्त नथी. [१३९-१४०]. प्रवाह रूपे जोइए तो त्रण इन्द्रिय जीव आदि अने अत रहित छे, परंतु हाल तेओ जे रूपे छे ते रूपे जोइए तो ते आदि अने अंत सहित छे. [१४१]. त्रण इन्द्रिय जीवनी उत्कृष्ट स्थिति ४९ दिवसनी अने जघन्य स्थिति अंत मुहूर्त्तनी छे. (१४२) त्रण इन्द्रिय जीव त्रण इन्द्रिय कायथी न मूकाय तो तनी उत्कृष्ट स्थिति सख्याता काळनी अने जघन्य स्थिति अत मुहूर्त्तनी छे. [१४३]. त्रण इन्द्रिय जीव त्रण इन्द्रिय कायथी चवीने उत्पन्न थाय तेनो उत्कृष्ट आतरो अनत काळनो अने जघन्य आतरो अत मुहूर्त्तनो छे [१४४] त्रण इन्द्रिय जीवना वर्ण, गध, रस, स्पर्श अने सस्थानने लइने हजारो भेद पडी शके. [१४५]. चार इन्द्रिय (शरीर, जीभ, नाक, अने आखवाळा) जीवना बे प्रकार छेः—पर्याप्त अने अपर्याप्त. तेना भेद कहु छु ते साभळो. [१४६]. अन्धिका, पौत्तिका, मक्षिका, मच्छर, भमरा, कीट (पतगीया), ढिकण, कुंकण, कुर्कट, शृगरीटी, नन्द्यावर्त्त, वींछी, डोल, भृगरीट,

आच्छिवेहए ॥१४८॥अथ्थिले मोहए अथ्यि रोडए विचित्ते चित्तपत्तए । उहिं जलिया जलकारिय नीयातंतव गाईया ॥१४९॥ इइ चउरिंदिया एए णेगहा एव माइओ । लोगस्स एग देसंमि ते सव्वे परिकित्तिया ॥१५०॥ संतइपप्प णाईया अपज्जाव सियाविय । ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसियाविय ॥१५१॥ छच्चेवय मासाउ उक्कोसेण वियाहिया। चउरिंदिय आउ ठिइ अंतोमुहुत्त जहन्निया ॥१५२॥ संखेज्जकालमुक्कोमं अंतोमुहुत्तं जहन्निया । चउरिंदियकाय ठिईं तंकायतुअमुंचओ ॥ १५३ ॥ अणंतकाल मुक्कोस अंतोमुहुत्तं जहन्नय । विजढंमि सएकाए अंतरेयं वियाहियं ॥१५४॥ एएसिं वन्नओ चेव गंधओरस फासओ । संठाणा देसओवावि विहाणाइं सहस्ससो ॥१५५॥ पांचेंदिया-ओ जेजीवा चउव्विहाते वियाहिया । नेरइय तिरिख्खाय मणुया देवाय आहिया ॥१५६॥

विरली, अक्षवेधक, आक्षिल, मागध, अक्ष, रोडक, विचित्र, चित्रपत्र, उहिंजलिया, जलकारी, नीया, तंतवगाइया, अने एवां बीजां अनेक प्रकारनां चार इन्द्रिवाळा जीव लोकना एक देशने विषे व्याप्त छे, तेओ आखा लोकने विषे व्याप्त नथी. [१४७-१५०]. प्रवाह रुपे जोइए तो चार इन्द्रिय जीव आदि अने अंत रहित छे, परंतु हाल ते जे रुपे छे ते रुपे जोइए तो ते आदि अने अंत सहित छे. [१५१]. चार इन्द्रिय जीवनी उत्कृष्ट स्थिति छ मासनी अने जघन्य स्थिति अंत मुहूर्त्तनी छे. [१५२]. चार इन्द्रिय जीव चार इन्द्रिय कायथी न मूकाय तो तेनी उत्कृष्ट स्थिति संख्याता काळनी अने जघन्य स्थिति अंत मुहूर्त्तनी छे. [१५३]. चार इन्द्रिय जीव चार इन्द्रिय कायथी चवीने उत्पन्न थाय तेनो उत्कृष्ट आंतरो अनंत काळनो अने जघन्य आंतरो अंत मुहूर्त्तनो छे. (१५४). चार इन्द्रिय जीवना वर्ण, गंध, रस, स्पर्श अने संस्थानने लइने हजारो भेद पडी शके. (१५५). ४ पचेन्द्रि जीवना चार प्रकार छेः—१ नारकी, २ तिर्यंच, ३ मनुष्य अने ४ देवता. (१५६).

नेरइया सत्तविहा पुढवीसू सत्तसू भवे । पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेहमे ॥१५७॥ रयणाभसक्कराभावालुयाभाय आहिया । पकाभा धूमाभातमा तमतमा तहा ॥१५८॥ धम्मावसगासेलातहा अंजणरिट्ठ गामघामाघवइचेवणारयाय पुणोपुणो । रयणाइगुत्तओचेवतहाधम्माइणामओ इइ नेरइया एएसत्तहापरिकित्तिया लोगस्स एगदेसमि तेसव्वेउ वियाहिया । इत्तो कालविभागतुतेसि वोच्छं चउव्विहं ॥ १५९ ॥ संतइपप्पणाईया अपज्जन सियाविय । ठिइ पडुच्च साईया सपज्जवसियाविय ॥१६०॥ सागरोवम मेगतु उक्कोसेण वियाहिया । पढमाए जहन्नेणं दस वास सहस्सिया ॥१६१॥ तिन्नेव सागराऊ उक्कोसेण वियाहिया । दुच्चाए जहन्नेणं एगतु सागरोवम ॥ १६२ ॥ सत्तेव सागराऊ उक्कोसेण वियाहिया । तइयाए जहन्नेणं तिन्नेवउ सागरोवमा ॥ १६३ ॥ दस सागरोवमाऊ उक्कोसेण वियाहिया । चउत्थीए जहन्नेण सत्तेवउ सागरोवमा ॥१६४॥

---

१ नारकी जीव सात नरक-पृथ्वीने विषे वसता होवाथी तेना सात प्रकार छे; तेनां नामः-रत्नप्रभा, शर्करप्रभा, वालुकप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमा अने तमतमा, आ प्रमाणे नारकी जीवना सात प्रकार वर्णव्या छे. (१५७-१५८) नारकी जीव लोकना एक देशने विषे व्याप्त छे, तेओ आखा लोकने विषे व्याप्त नथी. (१५९). प्रवाह रुपे जोइए तो नारकी जीव आदि अने अंत रहित छे, परतु हाल ते जे रुपे छे ते रुपे जोइए तो ते आदि अने अंत सहित छे. (१६०). पेली रत्नप्रभा नारकी जीवनी उत्कृष्ट स्थिति एक सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति दश हजार वर्षनी छे (१६१). बीजी शर्करप्रभा नारकी जीवनी उत्कृष्ट स्थिति त्रण सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति एक सागरोपमनी छे. (१६२). त्रीजी वालुकप्रभा नारकी जीवनी उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति त्रण सागरोपमनी छे (१६३). चोथी पंकप्रभा नारकी जीवनी उत्कृष्ट स्थिति दश सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति सात सागरोपमनी छे, (१६४).

सत्तरग सागराऊ उक्कोसेण वियाहिया। पचमाए जहन्नेण दसचेवउ सागरोवमा ॥१६५॥ बावीस सागराउ उक्कोसेण वियाहिया। छट्टीए जहन्नेण सत्तरस सागरोवमा ॥१६६॥ तित्तीस सागराऊ उक्कोसेण वियाहिया। सत्तमाए जहन्नेणं बावीसं सागरोवमा ॥१६७॥ जाचेवउ आउ ठिई नेरईयाण वियाहिया। सातेसिं काय ठिई जहन्नुक्कोसिया भवे ॥१६८॥ अणत काल मुक्कोसं अंतोमुहुत्त जहन्नय। विजढमि सए काए नेरइयाणतु अतरं ॥ १६९ ॥ एएसिं वन्नओ चेव गंधओ रस फासओ। संठाणा देसओवावि विहाणाइ सहस्ससी ॥ १७० ॥ पंचिदिय तिरिक्खाओ दुविहा ते वियाहिया। संमुच्छिम तिरिक्खाओ गभ्भ वक्कं तिया तहा ॥ १७१ ॥ दुविहा ते भवे तिविहा जलयरा थलयरा तहा। खहयराय बोधव्वा तेसिं भेए सुणेहमे ॥१७२॥

पांचमी धूममभा नारकी जीवनी उत्कृष्ट स्थिति सत्तर सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति दश सागरोपमनी छे. (१६५). छठी तमा नारकी जीवनी उत्कृष्ट स्थिति बावीश सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति सत्तर सागरोपमनी छे (१६६). सातमी तमतमा नारकी जीवनी उत्कृष्ट स्थिति तेत्रीश सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति बावीश सागरोपमनी छे. [१६७]. नारकी जीव नरकथी न मूकाय तो तेनी उत्कृष्ट अने जघन्य स्थिति जे जे नरकमां ते उपजे ते ते नरकनी उत्कृष्ट अने जघन्य स्थिति प्रमाणे जाणवी. [१६८] नारकी जीव नरकथी चवीने उत्पन्न थाय तेरो उत्कृष्ट आंतरो अनंत काळनो अने जघन्य आंतरो अंतमुहूर्त्तनो छे. [१६९]. नारकी जीवनां वर्ण, गंध, रस, स्पर्श अने संस्थानने लइने हजारो भेद पडी शके. [१७०]. (२) पचेंन्द्रि तिर्यंचना बे प्रकार छेः–संमूर्छिम [मन पर्याप्ति रहित]* अने गर्भव्युत्क्रान्तिका [गर्भज मन पर्याप्ति सहित]. [१७१]. ते प्रत्येकना वळी त्रण प्रकार छेः–जळचर, स्थळचर अने खेचर (पक्षीओ). तेना भेद हवे कहुं छुं ते सांभळो. [१७२].

* Generatio aequivoca

मच्छाय कच्छभाया गाहाय मगरा तहा । सु सुमाराय बोधव्वा पचहा जलयरा हिया ॥ १७३ ॥ लोऽगदेसे ते सव्वे न सव्वथ्थ वियाहिया । इत्तोकाल विभागतु तेसिंवोच्छं चउव्विह ॥१७४॥ सतइं पप्पणाईया अपज्जव सियाविय । ठिइ पडुच्च साईया सपज्जव सियाविय ॥ १७५ ॥ एक्काय पुव्वकोडी उक्कोसेण वियाहिया । आउ ठिई जलयराण अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १७६ ॥ पुव्वकोडी पुहत्तातु उक्कोसेण वियाहिया । काय ठिई जलयराण अंतोमुहुत्त जहन्निया ॥१७७॥ अणत काल मुक्कोस अंतोमुहुत्त जहन्नय । विजढमि सए काए जलयराणतु अतर ॥१७८॥ एएसि वन्नयो चेव गधओ रस फासओ । सठाणा देसओ वावि विहाणाइ सहस्ससो ॥१७९॥

माछला, काचबा, ग्राह, मगर अने शिशुमार ए प्रमाणे जळचर जीवना पाच भेद छे [१७३] जळचर जीव लोकना एक देशने विषे व्याप्त छे, तेओ आखा लोकने विषे व्याप्त नथी हवे हु तेना चार प्रकारे काळ विभाग कहु छुं [१७४]. प्रवाह रूपे जोइए तो जळचर जीव आदि अने अत रहित छे, परतु हाल ते जे रूपे छे ते रूपे जोइए तो ते आदि अने अत सहित छे. [१७५]. जळचर तिर्यच पचेंद्रि जीवनी उत्कृष्ट स्थिति पूर्व कोटि वर्षनी अने जघन्य स्थिति अंत मुहूर्त्तनी छे [१७६]. जळचर पचेंद्रि जीवनी काय स्थिति उत्कृष्ट स्थिति पृथक[1] पूर्व कोटि वर्षनी[2] अने जघन्य स्थिति अंत मुहूर्त्तनी छे. (१७७). जळचर जीव जळचर कायथी चवीने उत्पन्न थाय तेनो उत्कृष्ट आतरो अनंत काळनो अने जघन्य आतरो अत मुहूर्त्तनो छे (१७८) जळचर जीवना वर्ण, गध, रस, स्पर्श अने सस्थानने लइने हजारो भेद पडी शके. (१७९)[3]

---

[1] बेथी लइ नव सुधी पृथक कहेवाय छे. [2] त्रीजा अध्ययननी पहेली गाथा जुओ. [3] प्रो. जेकोबीए आ गाथा अहिंआ अने हवेपछी ज्या ज्यां आवे छे त्या पडती मूकी छे, तेथी अनुक्रम मळतो नथी.

मणुयादुविहाभेआओतेमेकित्त्यओसुण । समुच्छिमायमणुया गब्भवक्कतियातहा ॥ १९६ ॥ गब्भवक्कंतियाजेउतिविहा तेवियाहिया । अकम्मकम्मभूम य अतरद्दीवगा तहा ॥ १९७ ॥ पन्नरस तीसइ विहा भेया अट्ठावीसइ । सखाओ कमसो तेसि इइ एसा वियाहिया ॥१९८॥ संमुच्छिमाणएसेव भेउहोइ आहिओ । लोगस्स एगदेसमि ते सव्वे वियाहिया ॥१९९॥ संतइपप्प णाईया अपज्जव सियाविय । ठिइ पडुच्च साईया सपज्जव सियाविय ॥२००॥ पलिओवमाइ तिन्निओ उक्कोसेण वियाहिया । आउ ठिई मणुयाण अतोमुहुत्तं जहन्निया ॥२०१॥ पलिओवमाउ तिन्निओ उक्कोसेणंतु साहिया । पुव्वकोडि पुहुत्तेण अतोमुहुत्त जहन्निया ॥ २०२ ॥ काय ठिई मणुयाण अणतर तेसिम भवे । अणत काल मुक्कोस अतोमुहुत्त जहन्नय ॥ २०३ ॥

(३) मनुष्यना बे प्रकार छे, ते तमने कहु छु ते सांभळोः--१ समूर्च्छिम अने २ गर्भज-गर्भ व्युत्क्रान्तिका. [१९६]. गर्भ व्युत्क्रान्तिका मनुष्यना त्रण प्रकार कह्या छेः--अकर्म भूमिमा वसनारा, कर्म भूमिमा वसनारा अने अन्तर द्वीपमा वसनारा. [१९७]. कर्म भूमिमा पंदर जातना (भरत, ऐरावत अने महाविदेह दरेकमां पाच पांच जातना), अकर्म भूमिमा त्रीश जातना (हैमवत, हरिवर्ष, हैरण्यवत, देवकुरु, अने उत्तरकुरु दरेकमा पाच पाच जातना) अने अन्तर द्वीपमा २८ जातना मनुष्य वसे छे एम श्री तीर्थंकरे भाख्यु छे [१९८]. संमूर्च्छिम मनुष्यना घणा प्रकार छे तेओ लोकना एक देशने विषे व्याप्त छे. [१९९]. प्रवाह रुपे जोइए तो मनुष्य जीव आदि अने अंत रहित छे, परतु जे रुपे हाल ते छे ते रुपे जोइए तो ते आदि अने अत सहित छे. [२००]. मनुष्यनी उत्कृष्ट स्थिति त्रण पल्योपमनी अने जघन्य स्थिति अत मुहूर्त्तनी छे. (२०१). मनुष्य जीव मनुष्य कायथी न मूकाय तो तेनी उत्कृष्ट स्थिति त्रण पल्योपम अने पूर्व कोटि वर्षनी अने जघन्य स्थिति अंत मुहूर्त्तनी छे [२०२]. मनुष्य जीव मनुष्य कायथी चवीने उत्पन्न थाय तेनी उत्कृष्ट आतरो अनत काळनो अने जघन्य आंतरो अत मुहूर्त्तनो छे. (२०३).

उ.अ ३६

३३३

एएसि वन्नओ चेव गधओ रस फासओ । सठाणा देसओवावि विहाणाइ सहस्ससो ॥ २०४ ॥ देवा चउव्विहा वुत्ता ते मे कित्तयओ सुण । भोमिज्ज वाणमतर जोइस वेमाणिया तहा ॥ २०५ ॥ दसहाओ भवणवासी अट्ठहा वणचारिणो । पंचविहा जोइसिया दुविहा वेमाणिया तहा ॥२०६॥ असुरा नाग सुवन्ना विज्जु अग्गीय आहिया । दीवो दहि दिसा वाया थणिया भवणवा सिणो ॥२०७॥ पिसाय भूया जक्खाय रक्खसा किनराय किंपुरिसा ।महो-रगाय गधव्वा अट्ठविहा वाणमतरा ॥२०८॥ चदा सूराय नक्खत्ता गहा तारागणा तहा। ठिया विचारिणो चेव पंचहा जोइसालया ॥२०९॥ वेमाणियाओ जेदेवा दुविहा ते वियाहिया । कप्पोवगाय बोधव्वा, कप्पाईया तहेवय ॥२१०॥

मनुष्यना वर्ण, गध, रस, स्पर्श अने संस्थानने लईने हजारो भेद पडी शके. [२०४]. (४) देवताना चार प्रकार छे, ते कहु छु ते साभळो १ भौमेयक (भूवनपति), २ व्यन्तर, ३ ज्योतिष्क अने ४ वैमानिक. [२०५] भूवनपतिना दश भेद, व्यन्तरना आठ भेद, ज्योतिष्कना पाच भेद अने वैमानिकना बे भेद छे. [२०६] भूवनपतिना दश भेदः—असुर कुमार, नाग कुमार, सुवर्ण कुमार, विद्युत कुमार, अग्नि कुमार, द्वीप कुमार, उदधि कुमार, दिसि कुमार, वायु कुमार अने स्तनित कुमार.[२] [२०७]. व्यन्तरना आठ भेदः पिशाच, भूत, यक्ष, राक्षस, किन्नर, किम्पुरुष, महोरगा, गन्धर्व [२०८] ज्योतिष्क देवताना पाच स्थळः—चद्र, सूर्य, नक्षत्र, ग्रह अने तारागण * तेमां अमुक स्थिर अने अमुक फरता छे [२०९] * वैमानिक देवताना बे भेदः—कल्पोपगा (बार देव लोकमा उपजे ते) अने कल्पातीता (नव ग्रैवेयक अने पांच अनुत्तर विमानमां उपजे ते) [२१०].

---

[१] प्रो. जेकोबीए तेमज सस्कृत टीकाकारे आ नाम तदन मूकी दीधु छे तेथी नव भेद थाय छे. [२] आने बदले प्रो. जेकोबीए "थणिक कुमार" लख्युं छे. * गाथा २०९-आटलो भाग प्रो. जेकोबीए मूकी दीधो छे. सस्कृत टीकाकार एनो एवो अर्थ करे छे के तेओ अढी द्वीपमा फरे छे अने अढी द्वीप बहार स्थिर छे.

कप्पोवगा बारसहा सोहम्मी साणगा तहा । सणकुमारमाहिंदा बभलोगायलंतगा ॥२११॥ म्हासुक्कासहस्सारा आ-णया पाणयातहा । आरणा अच्चुया चेव इइ कप्पोवगा सुरा ॥२१२॥ कप्पाईयाय जेदेवा दुविहा ते वियाहिया । गेवेज्जा णुत्तरा चेव गेवेज्जा नव विहा तहिं ॥२१३॥ हिट्ठिमा हिट्ठिमा चेव हिट्ठिमा मज्झिमा तहा। हिट्ठिमा उवरिमा चेव मज्झिमा हिट्ठिमा तहा ॥२१४॥ मज्झिमा मज्झिमा चेव मज्झिमा उवरिमा तहा । उवरिमा हिट्ठिमा चेव उवरिमा मज्झिमा तहा ॥२१५॥ उवरिमा उवरिमा चेव इइ गेवेज्जगा सुरा। विजया वेजयंताय जयंता अपराजिया ॥२१६॥ सव्व ट्ठसिद्धिगा चेव पंचहा णुत्तरा सुरा । इइ वेमाणिया एए णेगहा एव माइओ ॥ २१७ ॥ लोगस्स एग देसंमि ते सव्वे परिकित्तिया । इत्तो काल विभागतु तेसिं वोच्छं चउव्विहं॥२१८॥ संतइपप्पणाईया अपज्जवसियाविय। ठिइ पडुच्च साईया मपज्जव सियाविय ॥ २१९ ॥

कल्पोपगा देवताना बार भेद छेः—१ सौधर्म, २ इशान, ३ सनत कुमार, ४ माहेन्द्र, ५ ब्रह्मलोक, ६ लान्तक, ७ महाशुक्र, ८ सहस्रार, ९ आणत, १० प्राणत ११ आरण अने १२ अच्युत. ए प्रमाणे बार देवलोकमां वसता देवताना बार भेद कह्या छे. (२११-२१२). कल्पातीत देवताना बे भेद छेः—१ ग्रैवेयक अने २ अनुत्तर. ग्रैवेयक देवताना नव भेद छे. [२१३]. १ अधस्तमा अधस्त (हेठलामां हेठला), २ अधस्तमां मध्यम, ३ अधस्तमां उपरि, ४ मध्यमां अधस्त, ५ मध्यममां मध्यम, ६ मध्यममां उपरि; ७ उपरिमा अधस्त, ८ उपरिमां मध्यम अने ९ उपरिमां उपरि. ए प्रमाणे ग्रैवेयक देवता छे. १ विजय, २ विजयन्त, ३ जयन्त, ४ अपराजित अने ५ सर्वार्थसिद्ध ए अनुत्तर देवताना पाच भेद छे. आ प्रमाणे वैमानिक देवताना अनेक भेद छे. [२१४-२१७]. ए देवता लोकना एक देशने विषे व्याप्त छे; हवे हु तेना चार प्रकारे काळ विभाग कहुं छु. [२१८]. प्रवाह रुपे जोइए तो देवता आदि अने अंत रहित छे, परंतु हाल तेओ जे रुपे छे ते रुपे जोइए तो ते आदि अने अंत सहित छे. [२१९].

साहियसा गरंएक्क उक्कोसेणठिईभवे । भोमेज्जाणजहन्नेणं दसवाससहस्सिया ॥२२०॥ पलिओवममेगंतु उक्कोसेण ठिई भवे । वतराण जहन्नेण दस वास सहस्सिया ॥२२१॥ पलिओवमतु एगं वासलक्खेण साहियं । पलिओवमट्ठ भागो जोइसेसु जहन्निया ॥२२२॥ दोचेव सागराइ उक्कोसेण वियाहिया । सोहम्मंमि जहन्नेण एगंच पलिओवमं ॥२२३॥ सागरा साहिया दुन्नि उक्कोसेण वियाहिया । ईसाणमि जहन्नेण साहिय पलिओवम ॥२२४॥ सागराणिय सत्तेव उक्कोसेण ठिई भवे । सणकुमारे जहन्नेण दुन्निऊ सागरोवमा ॥२२५॥ साहिया सागरा सत्त उक्कोसेण ठिई भवे । माहिदम्मि जहुन्नेण साहिया दुन्नि सागरा ॥ २२६ ॥ दसचेव सागराइ उक्कोसेण ठिई भवे । बमलोए जहन्नेण सत्ताऊ सागरोवमा ॥ २२७ ॥ चउद्दस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे । लतगमि जहन्नेण दसऊ सागरोवमा ॥२२८॥

भूवनपति देवतानी उत्कृष्ट स्थिति एक सागरोपमथी अधिक अने जघन्य स्थिति दश हजार वर्षनी छे [२२०]. व्यन्तर देवतानी उत्कृष्ट स्थिति एक पल्योपमनी अने जघन्य स्थिति दश हजार वर्षनी छे. [२२१]. ज्योतिष्क देवतानी उत्कृष्ट स्थिति एक पल्योपम अने एक लाख वर्षनी अने जघन्य स्थिति पल्योपमना आठमा भागनी छे. [२२२]. सौधर्म देवलोकना देवतानी उत्कृष्ट स्थिति बे सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति एक पल्योपमनी छे. [२२३]. इशान देवलोकना देवतानी उत्कृष्ट स्थिति बे सागरोपमथी अधिक अने जघन्य स्थिति एक पल्योपमथी अधिक छे. [२२४]. सनत कुमार देवलोकना देवतानी उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति बे सागरोपमनी छे [२२५] माहेन्द्र देवलोकना देवतानी उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपमथी अधिक अने जघन्य स्थिति बे सागरोपमथी अधिक छे. [२२६]. ब्रह्म देवलोकना देवतानी उत्कृष्ट स्थिति दश सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति सात सागरोपमनीछे (२२७).लान्तक देवलोकना देवतानी उत्कृष्ट स्थिति चौद सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति दश सागरोपमनीछे.[२२८].

२३६ सत्तरस सागराइ उक्कोसेण ठिई भवे । महासुक्के जहन्नेणं चउदस सागरोवमा ॥२२९॥ अट्ठारस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे । सहस्सारे जहन्नेण सत्तरस सागरोवमा ॥२३०॥ सागरा अउणवीसंतु उक्कोसेण ठिई भवे । आणयम्मि जहन्नेणं अट्ठारस सागरोवमा ॥२३१॥ वीसंतु सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे । पाणयम्मि जहन्नेण सागरा अउणवीसई ॥ २३२ ॥ सागराएक्कवीसतु उक्कोसेण ठिई भवे । आरणम्मि जहन्नेण वीसई सागरोवमा ॥ २३३ ॥ बावीस सागराइ उक्कोसेण ठिई भवे । अच्चुयमि जहन्नेण सागरा एक्कवीसई ॥२३५॥ तेवीस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे । पढमम्मि जहन्नेण बावीसं सागरोवमा ॥ २३५ ॥ चउवीस सागराइ उक्कोसेण ठिई भवे । बिइयम्मि जहन्नेण तेवीस सागरोवमा ॥२३६॥

महाशुक्र देव लोकना देवतानी उत्कृष्ट स्थिति सत्तर सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति चौद सागरोपमनीछे. [२२९]. सहस्रार देव लोकना देवतानी उत्कृष्ट स्थिति अठार सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति सत्तर सागरोपमनी छे [२३०] आणत देव लोकना देवतानी उत्कृष्ट स्थिति १९ सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति १८ सागरोपमनी छे. [२३१] प्राणत देव लोकना देवतानी उत्कृष्ट स्थिति २० सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति १९ सागरोपमनी छे. [२३२] आरण देव लोकना देवतानी उत्कृष्ट स्थिति २१ सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति २० सागरोपमनी छे. (२३३) अच्युत देव लोकना देवतानी उत्कृष्ट स्थिति २२ सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति २१ सागरोपमनी छे. (२३४) प्रथम ग्रैवेयकने विषे देवतानी उत्कृष्ट स्थिति २३ सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति २२ सागरोपमनी छे. (२३५) बीजा ग्रैवेयकने विषे देवतानी उत्कृष्ट स्थिति २४ सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति २३ सागरोपमनी छे. (२३६)

पणवीस सागराइ उक्कोसेण ठिई भवे । तइयमि जहन्नेणं चउवीस सागरोवमा ॥२३७॥ छव्वीसं सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे । चउत्थमि जहन्नेण सागरा पणवीसई ॥ २३८ ॥ सागरा सत्तवीसतु उक्कोसेण ठिई भवे । पचमभि जहन्नेण सागरा छवीसई ॥२३९॥ सागरा अट्ठवीसतु उक्कोसेण ठिई भवे । छट्ठमि जहन्नेण सागरा सत्तवीसई ॥२४०॥ सागरा अउणतीसतु उक्कोसेण ठिई भवे । सत्तममि जहन्नेण सागरा अट्ठवीसई ॥२४१॥ तीसतु सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे । अट्ठमम्मि जहन्नेण सागरा अउणतीसई॥२४२॥ सागरा एक्कतीसतु उक्कोसेण ठिई भवे। नवमम्मि जहन्नेण तीसई सागरोवमा ॥ २४३ ॥ तेत्तीस सागराऊ उक्कोसेण ठिई भवे । चउसुवि विजयाईसु जहन्नेणे क्कतीसई ॥२४४॥

त्रीजा ग्रैवेयकने विषे देवतानी उत्कृष्ट स्थिति २५ सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति २४ सागरोपमनी छे. [२३७]. चोथा ग्रैवेयकने विषे देवतानी उत्कृष्ट स्थिति २६ सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति २५ सागरोपमनी छे. [२३८]. पांचमा ग्रैवेयकने विषे देवतानी उत्कृष्ट स्थिति २७ सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति २६ सागरोपमनी छे. [२३९]. छट्टा ग्रैवेयकने विषे देवतानी उत्कृष्ट स्थिति २८ सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति २७ सागरोपमनी छे. [२४०]. सातमा ग्रैवेयकने विषे देवतानी उत्कृष्ट स्थिति २९ सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति २८ सागरोपमनी छे. [२४१]. आठमा ग्रैवेयकने विषे देवतानी उत्कृष्ट स्थिति ३० सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति २९ सागरोपमनी छे. [२४२]. नवमा ग्रैवेयकने विषे देवतानी उत्कृष्ट स्थिति ३१ सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति ३० सागरोपमनी छे. [२४३] अनुत्तर देवलोकना विजयादि पहेला चार (विजय, विजयन्त, जयन्त अने अपराजित) तानी उत्कृष्ट स्थिति ३३ सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति ३१ सागरोपमनी छे. [२४४].

अजहन्न मणुक्कोस तेत्तीसं सागरोवमा । महाविमाण-सव्वट्ठे ठिई एसा वियाहिया ॥ २४५ ॥ जाचेवउ आउ ठिई देवाणंतु वियाहिया । सातेसिं काय ठिई ,जहन्नुक्कोसिया भवे ॥२४६॥ अणत कालु मुक्कोसं अंतोमुहुत्तं जहन्नय । विजढंमि सएकाए देवाण, होज्ज अंतरं ॥२४७॥ अणत काल मुक्कोसं ,वास पुहत्त जहन्नयं । आणयाइण कप्पाणं गेविज्जाणतु अंतरं ॥२४८॥ सखिज्ज सागरो क्कोस वास पुहत्तं जहन्नय । अणुत्तराणय देवाण अतरंतु वियाहिया ॥ २४९ ॥ एएसिं वन्नओ चेव गंधओ रस फासओ । सठाणा देसओवावि विहाणाइ सहस्ससो ॥ २५० ॥ संसारत्थाय सिद्धाय इइ जीवा वियाहिया । रूविणो चेव अरूवीय अजीवा दुविहाविय ॥२५१॥

महा.विमान सर्वार्थसिद्धने विषे देवतानी उत्कृष्ट अने जघन्य स्थिति तफावत रहित ३३ सागरोपमनी छे. [२४५]. देवतानो जीव देवतानी कायाथी न मूकाय तो तेनी उत्कृष्ट अने जघन्य स्थिति प्रत्येक देवलोकना संबंधमा उपर दर्शाव्या प्रमाणे जाणवी. [२४६]. देवतानो,जीव देवतानी कायाथी चवीने उत्पन्न थाय तेनो उत्कृष्ट आतरो अनंत काळनो अने जघन्य आंतरो अंत मुहूर्त्तनो छे. [२४७]. आणत ग्रैवेयकादि देवलोकना देवता चवीने बीजे-उत्पन्न थाय अने पाछा स्वस्थाने आवी उपजे तेनी वच्चेनो उत्कृष्ट आतरो अनत काळनो अने जघन्य आतरो नव वर्षनो जाणवो. * [२४८]. अनुत्तर देवलोकना देवता चवीने बीजे उत्पन्न थाय, अने पाछा स्वस्थाने आवी उपजे तेना वच्चेनो उत्कृष्ट आतरो एक सागरोपम अने संख्याता काळनो अने जघन्य आंतरो नव वर्षनो जाणवो. * [२४९]. देवतानां वर्ण, गंध, रस, स्पर्श अने संस्थानने लइने हजारो भेद पडी शके. [२५०]. उपर प्रमाणे संसारी अने सिद्ध जीवोना भेद छे, तेमज रुपी, अरुपी अजीवना भेद पण वर्णव्या छे. [२५१].

---

* आ बे गाथाओ प्रो. जेकोबीए पडती मूकी छे

इइ जीव मजीवेय सोच्चा सद्दहिऊणय । सव्व नयाणं अणुमए रमेज्जा सजमे मुणी ॥२५२॥ तओ वहूणि वासाणि सामन्न मणुपालिया । इमेण कम्म जोगेणं अप्पाणं सलिहे मुणी ॥ २५३ ॥ वारसेवउ वासाइं सलेहु कोसिया भवे । सवच्छर मझमिया छम्मासाय जहन्निया ॥२५४॥ पटमे वास चउक्कमि विगई निज्जूहण करे । विइए वास चउक्कमि विचित्तंतु तवं चरे ॥ २५५ ॥ एगतर मायाम कट्टु सवच्छरे दुवे । तओ सवच्छरद्धतु नाइविगिठं तवं चरे ॥२५६॥ तओ संवच्छरद्धतु विगिठतु तवं चरे । परिमिय चेव आयाम तमि सवच्छरे करे ॥ २५७ ॥ कोडीसहिय मायाम कट्टु सवच्छरे मुणी । मासद्धमासिएणंतु आहारेणं तवचरे ॥ २५८ ॥ कदप्प माभि ओग किव्विसियं मोह मासुरत्ताच । एयाओ दुग्गईओ मरणमि विराहिया होंति ॥२५९॥

उपर प्रमाणे जीव अने अजीवना भेद गुरु पासेथी सांभळीने ते उपर श्रद्धा राखीने मुनिए सयमने विषे विचरवु. [२५२]. घणां वर्षसुधी संयम (चारित्र) पाळ्या बाद, मुनिए तपवडे नीचे प्रमाणे सलेखणा आदरवी, (कायाने कृश करवी). [२५३]. सलेखणानी[१] उत्कृष्ट मुदत बार वर्षनी, मध्यम एक वर्षनी, अने टुकामां टुंकी मुदत छ मासनी छे. [२५४]. पहेला चार वर्षने विषे विगयनो त्याग करीने आंबिल, नीवी करे; बीजा चार वर्षने विषे जात जातना तप (छठ, आठमादि) आदरे. [२५५]. पछी बे वर्ष सुधी एकांतर उपवास अने पारणे आंबिल करे अने छेल्ला छ मासमां कांइ कठिन तप न आदरे,(आम साडा दश वर्ष थाय).[२५६]. त्यारपछीना छ मासमां आकरा तप करे अने परिमि आंबिल करे. [२५७]. छेल्ला वर्षमां मासखमण अने अर्ध मासखमणना तप करे अने आहारनो त्याग करीने अणसणरूप तप करे. [२५८]. कन्दर्प भावना, अभियोग्य भावना, किल्विषी भावना, मोह भावना, अने असुरत्व भावना ए पाच भयंकर भावना पैकी कोइ भावना मरण समये उपजे तो दुर्गतिना कारण रूप थइ पडे छे. [२५९].

१ Last selfmortification which is to end with death.

मिच्छा दंसण रत्ता सन्नि याणाहु हिंसगा । इय जे मरंति जीवा तेसिं पुण दुल्लहा बोही ॥२६०॥ सम्मद्दंसण रत्ता अनियाणा सुक्कलेसमोगाढा । इय जे मरंति जीवा सुलहा तेसिं भवे बोही ॥ २६१ ॥ मिच्छा दंसण रत्ता सनियाणा किन्हलेसमोगाढा । इय जे मरंति जीवा तेसिंपुण दुल्लहा बोहि ॥२६२॥ जिणवयणे अणुरत्ता जिणवयण जे करंति भावेण । अमला असं किलिठ्ठा ते होंति परित्त संसारी ॥२६३॥ वाल मरणाणि वहुसो अकाम मरणाणि चेवय । वहुणि मरिहिति तेवराया जिणवयणजेनयाणंति ॥ २६४ ॥ वहु आगम विन्नाणा समाहि मुप्पायगाय गुणग्गाही । एएणं कारणेणं अरिहा आलोयणंसोउं ॥ २६५ ॥ कदप्प कोकुइयाइं तहसील सहाव हास विगहाहि । विम्हावितोय पर कंदप्पं भावणं कुणइ ॥२६६॥

जे जीव मिथ्या दर्शन (अन्य धर्म) मां अनुरक्त रहे छे, ते पाप अने जीव हिंसा करे छे अने एवा जीवने भवान्तरे पण जिन धर्मनी प्राप्ति थवी दुर्लभ छे. [२६०]. जे जीव सम्यक दर्शन (जिन धर्म) मां अनुरक्त रहे छे ते पाप रुपी मळ रहित अने शुक्ल लेश्यावाळा थाय छे अने एवा जीवने मोक्ष सुलभ थइ पडे छे. [२६१]. जे जीव मिथ्या दर्शनमां अनुरक्त रहे छे, ने पापकर्म करे छे अने कृष्ण लेश्यावाळा थाय छे, अने एवा जीवने वोधि (जिन धर्मनी प्राप्ति) दुर्लभ थइ पडे छे. [२६२]. जे जीव जिन वचन (सिद्धात) मा अनुरक्त रहे छे अने ते प्रमाणे भावथी वर्त्ते छे ते मळ रहित अने (मोह मतसरादि) क्लेश रहित थाय छे अने काळे करीने संसार (जन्म मरण) थी मुक्त थाय छे. [२६३]. जे जीव जिन वचनने विषे श्रद्धा राखतो नथी ते वारंवार अकाम मरणने पामे छे, (जन्म-मरणना फेरा फर्या करे छे). [२६४]. जेओ आगम (सिद्धातना अर्थ) ने जाणनारा छे, जेनुं ज्ञान विशिष्ट छे, जेओ अन्यने समाधि (श्रद्धा) उपजावी शके छे, अने जेओ अन्यने गुण ग्रहण करावी शके छे (अर्थात-अन्यना दुषण टाळी शके छे) एवा आचार्यो आवो मुक्तिनो मार्ग (आलोचना) साभळवाने योग्य छे. [२६५]. जेओ हास्य, विकथा, कर्मकथा, कायचेष्टा आदि करीने अन्यने विस्मय पमाडे छे ते कन्दर्प भावना भावे छे. [२६६].

मता जोग काउ भूई कम्म च जे पउजति । साय रस इड्ढि हेउ अभिओग भावण कुणइ ॥२६७॥ नाणस्स केवलीण धम्मायरियस्स सघ साहूण । माई अवन्नवाई किन्निमिय भावण कुणइ ॥२६८॥ अणुबद्ध रोस पसरो तहय निमित्तमि होइ पडिसेवी । एएहि कारणे हिं आसुरिय भावणं कुणइ ॥२६९॥ सत्थग्गहण विसभक्खणं च जलण च जलपवेसीय । अणायार भड सेवी जम्मण मरणाणि बधति ॥ २७० ॥ इइ पाउ करे बुद्धे नायए परिनिव्वुए । छत्तीस उत्तरज्झाए भवसिद्धिय सम्मएत्तिबेमि ॥२७१॥ जीवाजीव विभत्तिज्झयण सम्मत्तं ॥३६॥

जेओ मंत्र प्रयोग करे छे अने पोताना सुख, आनंद अने प्राप्तिने अर्थे शरीरे राख वगेरे चोळे छे ते अभियोग्य भावना भावे छे [२६७]. जे मूर्ख जीवो ज्ञाननी, केवलीनी, धर्माचार्यनी, सघनी अने साधुनी अशातना (निंदा) करे छे ते किल्बिष भावना भावे छे. [२६८]. जेओ हमेशा क्रोध करे छे अने जेओ शुभाशुभ भविष्य भाखे छे ते आसुरी भावना भावे छे. [२६९]. जेओ आत्म वध करवाने, शस्त्र वापरे छे, विषपान करे छे, जळ अथवा अग्निमा प्रवेश करे छे अने अनाचार आदरे छे, तेओ जन्म-मरणना बध बाधे छे, अर्थात अनता भव बाधे छे. (अने मोह भावना भावे छे) [२७०] ज्ञाता अने निर्वाण पहोचेला श्री महाविर भगवाने उपर प्रमाणे श्री उत्तराध्ययन सूत्रना छत्रीस अध्ययन प्रकट कर्या छे जे श्रवण करवाथी भव्य जीव भवसिद्धिने पामे छे. [२७१].*

आ प्रमाणे सुधर्मा स्वामी जबु स्वामीने कहे छे.

---

*प्रो. जेकोबी कृत भाषान्तरमा २६७ गाथा छे, सूत्रमां २७० गाथा छे, पण कोइ स्थळे अनुक्रम आपवामां सरत चूक थयेली छे तेथी कुल गाथा २७१ थाय छे.

श्री उत्तराध्ययनजी सूत्र समाप्त.